तने और कौन बड़ भागी । ब्रम्ह धस्यौ नरतन जिन लागी
न्दौ नन्द महर के चरणा । सहित जसोमति मंगल करणा
नकी महिमा भाग्य वड़ाई । निगमागम शिव शारद गाई
न्दौ रोहिणि पद जल जाता । कृष्णाग्रज वल देवकी माता
ीरति युत वृषभान गोप वर । वन्दौं चरण कमल जसि धर
त मात राधा रानी के ॥ त्रिभुवन ठाकुर ठकुरानी के ॥
ृष्ण कमल दृग कौ कमला के । कलुष विभंजन सब विमला के
न्दौ श्रीराधा अंबुज जिन ॥ जिनके ध्यान मिटत भवसेहन
ीत कुल सहज जहि वस ताके । प्रेम सहित गुण गावत जाके
न्दौं सो वृषभान दुलारी ॥ कृष्ण प्राण जीवन धन प्यारी

दो० राधा कृष्ण पदांबुजन वन्दौं महि सिर टेक
व्रज विलास सहित दोय तन प्रगट किये हैं एक
सो० वन्दौं युगुल किशोर रूप रासि आनंद घन ॥
दोउ चन्द चकोर प्रीति रीति रस वस सदा ॥

अपर गोप गोपी गोपाला ॥ जिनके संग विचरहिं नंदलाला ॥
गाय वच्छ वालक व्रजवासी । जिनके सखा कृष्ण अविनासी
और जाति जो व्रज हि निवासी । वन्दौं सकल सुकृत की रासी ॥
मथुरापुरी नारि नर नागर ॥ गोकुलादि जो ग्राम उजागर
श्रीयमुना सरि परम पुनीता । जासु दरस नहि यमपुर भीता
पावन वापी कूप तड़ागा ॥ श्री वृंदावनादि वन वागा ॥
खग मृग जलचर जीव विभागा । वन्दौं सकल सहित अनुरागा
वन्दौं गिरि गोवर्द्धन देवा ॥ अपर देव तिन सम नहि केवा
सुरपति मेटि जाहि हरि पूजा । आन देव तिन सम को दूजा ॥
अति रमनीय रेत यमुना तट । उपवन अमित सुभग वंसीवट
जहं जहं श्री हरि धेनु चराई । सुंदर श्यामल कुंवर कन्हाई

कीनो बाल विनोद नंद जसोमति के अजिर

गर्ग आइ लक्षण पुनि भाषे

पुनि बाल निसंग खेल निसारो | बाल खेल लीला अनुरागे

विप्र पाप जैसे छुद्र कीनो॥ | चंदा हेत बहुरि हठ

कानछेदन लीला सुखदाई॥ | कहिहौं सब आनंद बधाई

पुनि हरि खेलत माटी खाई | जसुमति ले सांटी उठि धाई

माता आगे जिमि मुख बायो

सालिग्राम मेलि मुख लीन्हों | नंदहि पूजा में सुख दीन्हों॥

सनकादिक हित जिमि अकुलाये

ग्वाल संग बहुरि अनुरागे॥ | माखन चोरी के रस पागे॥

बहुरी माता क्रोध उपायो॥ | भक्त हेत दांवरी बंधायो॥

यमलार्जुन वृक्ष उद्धराये | धनद सुतन के पाप नसाये।

पुनि बन गोचारन मन आन्यो | ग्वालन संग जान हठ ठान्यो

दो॰ बहुरि जाय बन में हन्यो बत्सासुर नंदनंद
ग्वाल संग आनंद सहित घर आये सुखकंद

सो॰ सो कवि के विस्तार प्रेम सहित अब वरनिहौं
निजमति के अनुसार ब्रजवासी प्रभु के गुणन॥

गोदोहन जैसे पुनि कीनो॥ | मातु मात ब्रजजन सुख दीनो

मोती बये नंद के धामे॥ | सुरनर लखि चकृत भये जामे॥

बहुरि जाय बन नंदकुमारा | बका असुर को बदन विदारा

बहुरी बाल चरित चित दीने | भौंरा चकई खेलन लीने॥

श्री राधा सों प्रीति दृढ़ाई॥ | कीने चरित लोलन सुखदाई॥

अघा असुर मारो पुनि जाई | ग्वालन संग छाक बन खाई॥

भयो मोह जिमि विधि के मन में | बालक बच्छ हरे तिन बन में॥

तिनको रूप आप प्रभु कीने॥ | ब्रज के बासिन को सुख दीने॥

सो सब कहिहौं करि बिस्तारा। अघनासन प्रभु चरित उदारा
श्री वृषभानलली पुनि आई जैसे हरि सौं गाय दुहाई ॥
कहिहौं सो रस कथा सुहाई। अति बिचित्र जन मन सुखदाई
बहुरौं धेनुक को वध कीनो ॥ बिष जल तें ग्वालन रख लीनो

दो० पुनि नाथ्यौ कालो उरग जल मैं पैठि मुरारि॥
जमुना जल निर्मल कियो ब्रज तें दियो निकारि।
सो० कियो दावा नल पान राखि लिये ब्रज लोग सब
जिनके कृपा निधान सदा भक्त संकट हरण॥

बहुरि प्रलंब असुर ब्रज आयो खेलन में हरि ताहि नसायो॥
पनघट जमुना तट पुनि जाई गोपिन सों रस कियो कन्हाई
चीर हरण लीला पुनि कीन्ही कहिहौं सकल प्रेम रस भीनी
पुनि वृंदावन मैं सुख शीला॥ ग्वालन संग करी जो लीला
वृंदावन की महत बड़ाई ॥ श्री मुख श्री बल जू सों गाई॥
ऋषि पत्निन सों भोजन लीनो ॥ भक्ति दान तिनकौं प्रभु दीनो
पुनि श्री गोवर्द्धन गिरि राई ॥ ब्रज थापे सुरपतिहि मिटाई
सुरपति कोप कियो यह जानी। बरख्यौ प्रलय काल को पानी
तब प्रभु गिरि कर धरि ब्रज राख्यो जै जै सब ब्रजवासिन भाख्यो
सो सब अनुपम कथा सुहाई॥ कृष्ण कृपा तें कहिहौं गाई॥
नंदहि पकरि वरुण के दासा॥ जिमि लै गये वरुण के पासा।
ल्याये श्याम तहां तें जाई ॥ ब्रज मैं भई अनंद वधाई॥

दो० बहुरौं पुर वैकुंठ जो अति पुनीत निजधाम
ब्रजवासिन कौं करि कृपा दिखरायौ घनश्याम॥
सो० सो सब कथा अनूप अति विचित्र पावन परम
कहिहौं मति अनुरूप संत जनन मन भावनी॥

पुनि जो करी श्याम सुख शीला॥ अति अद्भुत ब्रज मैं रस लीला।

श्री राधा वृषभान दुलारी ॥ और सकल व्रज गोप कुमारी ॥
तिन सो मिलि श्री कुंज विहारी । रस सिंगार लीला विस्तारी ॥
आनंद भई सकल सुखकारी । गाय तरत भव सव नरनारी ॥
जिमि गोपिन हरि सो मन लायो । प्रेम पंथ दृढ करि दरसायो ॥
गोरस ले निकसी व्रज नारी ॥ जिमि दधि दान लियो वनवारी ॥
भई प्रेम उन मन सुखारी ॥ लोक लाज तन दशा बिसारी ॥
वहुरि चरित्र कुंवर राधा के । परम पवित्र हरन बाधा के ॥
जैसे मिली श्याम सों जाई । वहुरि जैसे प्रीति दृढाई ॥
पुनि मन के चरित्र विविध वर । किये भया प्रीतम प्रान सुंदर
गर्व विरह लखि राधा परस्पर । अति रहस्य लीला सुंदर वर
कहिहौं सकल कथा सुखदाई । भक्ति रसज्ञन के मन भाई ॥

दो० देखि मुकर में राधिका पुनि जैसो निज रूप
विवस भई सो गाइहौं लीला परम अनूप ॥

सो० पुनि नैना अनुराग अरु मुरली की प्रिय कथा
कहिहौं सहित विभाग प्रेम सुधारस सो भरी

वहुरि शरद रैन अति पावन । श्री वृन्दावन परम सुहावन
तहाँ श्याम बांसुरी वजाई । घर घर ते व्रजनारि बुलाई
कियो राज रस रसिक विहारी । भई प्रेम गर्विन तहाँ नारी ॥
अन्तर ध्यान चरित नव कीनो । गर्व गोपिकनि को हरि लीनो
कियो महा मंगल पुनि रासा । वढ्यो परम आनंद हुलासा
पुनि जलकेलि करी मनभावन । कहिहौं चरित सकल अति पावन
मान चरित लीला सुखदाई ॥ कहौं वहुरि जिमि कुंवर कन्हाई
विस्तर सहित कहौं सो वरनी । भरी प्रेम रस आनंद करनी ॥
वहुरि जाइ हिंडोरा झूले ॥ भये सकल गोपिन अनुकूले
ऋतु वसंत फागुन जव आयो । कियो फागु रंग नव मन भायो

सो रस काया सकल सुख दानी ॥ मानि समान सब कहौ बषानी
पुनि विद्या घर आय नसायौ ॥ अजगर तन तैं नाहि नचायौ

दो॰ संषचूड़ मार्यो बहुरि अधम निशाचर नीच
पुनि मार्यौ वृषभासुर हरि ब्रज वासिन बीच ॥
सो॰ बध्यौ बहुरि गोपाल केसी भौमा असुर जिम
दुष्ट दलन नंदलाल कीन्हे हैं चरित पुनीत सब ॥

बहुरि आय नारद यश गायौ । सुनि कै स्याम बहुत सुष पायौ
तब हि कंस अक्रूर पठायौ ॥ लैन कृष्ण को सो ब्रज आयौ ॥
भये सुनत ब्रज लोग उदासी ॥ मधुपर चले बहुत सुख रासी
जब अक्रूर हृदय सुख पायौ । तब हरि जल मैं दरस दिखायौ
भये सुखी लखि प्रभु प्रभुताई । सो सब चरित कहौं सुखदाई
गये बहुरि मथुरा दधि दानी ॥ मार्यौ प्रथम रजक अभिमानी
बसन लुटाय सखन पहिराये । बहुरि सुदामा के घर आये
कुबजा नें चंदन हरि लीनौं ॥ ताकौं रूप अनूपम दीनौं ॥ ॥
तोर्यौ धनुष असुर बहु मारे ॥ द्विरद जीत पुनि दंत उषारे ॥
भिरे बहुरि मल्लन सौं जाई ॥ किये युद्ध तिन सों दोउ भाई ॥
जीति मल्लन कहुँ असुर संघारे । डर्यौ कंस लखि अति बल भारे
गये नृपति पहं तब दोउ भाई । दयौ मंत्र नें भूमि गिराई ॥

दो॰ मारि कंस पुनि केस धरि दियो यमुन जल डारि
उग्रसेनि राजा कियो चमर छत्र सिर ढारि ॥
सो॰ बहुरि दियो सुख जाय बंदि काटि पितु मातु की
सुन्दर दरश दिखाय भयो तहां मंगल परम ॥

कीन्है हौं चरित सकल विस्तारी । भौ भै भंजन मंगल कारी ॥
करी मधुपुरि केलो ससनाथा । कुबजा सदन बसे ब्रज नाथा ॥
नंदविदा करि ब्रज हि पठाये । किंकर तब ब्रजवासिन दुष पाये

हरि नन्दनंद आये ब्रजनाहीं । भई जसोधा व्याकुल तबहीं ॥
गोपिन सुनि हितकुबिजा हरिको । कियो परेखो अतिगिरधरको ॥
भई बिरहबस पुनि ब्रजबाला । कहिहौ सो सब प्रेम बिसाला ॥
पुनि कुलरीति जानि बसुदेऊ । हरि हलधरकों कियो जनेऊ ॥
विद्यानिधि पुनि जानन राई । विद्यापढन गये दोउ भाई ॥
पूरण काम गुरू के कीने ॥ मरेपुत्र प्रभु तिन को दीने ॥
ज्ञान गर्व ऊधो मन जानी । पठये ब्रज हरि श्याम सुखमानी ॥
सो ऊधो गोपी संवादा ॥ प्रेम भक्ति गोपिनकी मर्यादा ॥
कही सो कथा विचित्र सुहाई । भक्तिजननको अतिसुखदाई ॥

दो॰ पुनि ऊधौ जैसे गये प्रेमभक्ति कौं पाइ ॥
ब्रजवासिनकी व्यवस्था कही श्याम सों जाय ॥
सो॰ ब्रजहि रहे ब्रजराज ब्रजवासिन के प्रेमवस ।
किये सुरन के काज धारि चतुर्भुज रूप पुनि ॥

सो द्वारिका चरित्र सुहाये ॥ प्रगटपुरानन में सब गाये ॥
अतिविचित्र हरिचरित अपारा । काहू गाय लह्यो नहिं पारा ॥
संत समान बुधजन सब गावैं । गाय गाय बन पाप नसावैं ॥
हरिपदपंकज प्रीति बढावैं । मन चंचल को तहां रमावैं ॥
ब्रजविलास हरिको अतिपावन । रसमाधुर्य चरित्र सुहावन ॥
तातैं कछुक कहत हौं गाई । सब संतनके पद शिर नाई ॥
यामें कछु बुद्धि नहिं मेरी ॥ युक्ति युक्ति सब सूरहि केरी ॥
कियो सूर रस सिंधु उदारा ॥ तामें प्रेमतरंग अपारा ॥
हरि के चरित रत्न विधिनाना । ब्रजवि॰ासमो सुधासमाना ॥
पदरचना करि सूर बखान्यो । कोमल विमल मधुर रसमान्यो ॥
समय समय के राग सुहाये । अति विस्तार भाव मन भाये ॥
ताको स्वाद कह्यो नहिं जाई । कहत सुनत श्रवनन सुखदाई ॥

दो॰ आनि गाय कवि मोहन मनहिं संग गुणन के संग
कहत वनय तामें नहीं क्रम सों कथा प्रसंग।
सो॰ मेरे मन अभिलाष प्रभु प्रेरित ऐसो भयो।
कहिहौं यह रस भाव क्रम सौं कथा प्रसंग सब।

तातन निज मन की रुचि जानी। इहि विधि करौं प्रबंध सुबानी॥
द्वादश चौपाई प्रति दोहा। तहं पुनि एक सोरठा सोहा॥
कहूं कहूं शुभ छंद सुहाये। भाषा सरल न अर्थ दुराये॥
कहत सुनत समुझत मन भाई। ध्यान रूप मैं कथा सुहाई॥
धर्म कर्म नहिं नीति बषानी। केवल भक्ति प्रेम सुख दानी॥
जानि कृष्ण के चरित पुनीता। कहिहैं सुनिहैं संत सु प्रीता॥
वहुरि कहत दोऊ कर जोरी। सुनियो विनय कृपा करि मोरी॥
चूक परी जो मोतन होई। सुजन सुधारि लीजियो सोई॥
मैं नहिं कविन सुजान कहाऊं। कृष्ण विलास प्रीति कर गाऊं॥
सो विचारि कै अवगुन कीजे। काव्य दोष गुण मन नहिं दीजे॥
ऐसें सब कौं विनय सुनाई। कृष्ण चरित बरनौं सुखदाई॥
कृष्ण चरित आनंद को रासा। मंगल करण हरण भव त्रासा॥

दो॰ विघन विनासन शुभ करन तापत्रय उर शूल॥
चरित ललित नंदनंद के सकल सुखन के मूल॥
सो॰ चरण कमल उर धार श्री राधा नंदलाल के।
सुंदर रस आगार व्रज विलास वरणन करौं॥

संवत शुभ पुराण मत जानो। तापर और नक्षत्र न आनो॥
माघ सुमास पक्ष उजियारा। तिथि पंचमी शुभग शशि वारा॥
श्री वसंत उत्सव दिन जानो। सकल विश्व मन आनंद दानी॥
मन में करि आनंद हुलासा। व्रजविलास को करौं प्रकासा॥
वन्दौं प्रथम कमल पद नीके। श्री वल्लभ उर सचर जु जी के॥

सो० तिनके पद उर राषि ब्रजविलास वरणन करो
मो मन को अभिलाष पूरण करि हैं जानजन ॥

वंदन हौं सब सूर सुजाने ॥ तिन्है सूर सम सब कोउ जाने
प्रेम रूप वाणी पर कासा ॥ प्रफुल्लित अंबुज सुनि ही दासा
कृस्न रूप विन और न देख्यो जगत विषै तन सम करि लेख्यो
राखे नैन सदा करि ध्याना । दिव्य दृष्टि ही सुयश वखाना
लीला प्रयास जनम भरि गाई। रहसि केलि सब प्रगट जनाई
वाणी भांति अनेक वखानी ॥ कृस्न प्रेमरस सों लपटानी ॥
वड़े कठोर मोह वस जेऊ ॥ होत प्रेमवस सुनि कै तेऊ ॥
कीनों अति उपकार जगत कौ मारग दियो चलाय भगत कौ
मोहि वड़ाई कोउ नहि आवे। जिनको गायो सब कोउ गावे
चरण सीस धरि तिन्है मनाऊं। यह अपराध क्षमा करि पाऊं।
मोतें याहि अति होत ढिठाई। करत विस्स पद की चौपाई।
सो सम दोषन उर में धारिये ॥ सुफल मनोरथ मेरो करिये ॥

दो० अव संतन की मंडली वंदत हौं सिर नाय ॥
विना कृपा जिनकी भये हरि यश गाय न जाय।

सो० करिहैं मोहि सहाय गुण गाहक पर हित करन
तिनको सहज सुभाय संतन संत कृपाल चित ॥

संत मंडली को सिर नाऊं ॥ जिनकी कृपा विमल मति पाऊं
जिनकी कृपा विघ्न सब नासैं ॥ जिनकी कृपा कृस्न गुण भासैं
जिनकी प्रेम प्रीति फल पाई जिनकी कृपा कुमति मिटि जाई
जिनकी कृपा होइ गुण नाना॥ जिनकी कृपा सर्व कल्याना॥
जिनकी कृपा मोह तम नासैं॥ जिनकी कृपा ज्ञान परकासैं॥
जिनकी कृपा सकल सुखमूला होइ सुसंत मोहि अनुकूला॥
जैजै जै श्री कुंज विहारी ॥ नंद नंदन व्रषभान दुलारी ॥

दो॰ नमामि पद परम गुरु पुरुषोत्तम जगदीस ॥
कृष्ण कमल लोचन सुखद सकल देव मणि सीस ॥
सो॰ वन्दौ नंद किशोर वृंदावन वासी सदा ॥
श्री राधा चित चोर आनद धन मय मन हरण ॥

कहौं कथा सुन्दर सुख देनी। अघ हरणी बैकुंठ नसैनी ॥
कृष्ण चरण पंकज रति देनी जन पावन करता जिमि वेनी
श्री कालिंद तनया तट पावन बसत मधुपुरी परम सुहावन
जाकी महिमा सुर मुनि गावैं तीनि लोक पर वेद बतावैं ॥
दरसन तें नर पावन होई। कृष्ण कृपा बिन सुलभ न सोई
उग्रसेन तहां वसे नरेसा ॥ नीति निपुन सह सह धर्म सुवेशा
ताकौ सुवन कंस अति पापी असुर बुद्धि भव निज संतापी ॥
कियो तात गहि बंदी शाला आपन भयो कंस भूपाला ॥
तात अनुज तहां देवक नामा सुता तासु देवकी ललामा ॥
दई कंस वसुदेवहि ताही लोक वेद करि रीति विवाही
दायज दियो अनेक विधाना हय गज रथ पट भूषण नाना ॥
दासी दास बहुत संग दीने दान मान पर पूरण कीने ॥ ॥

दो॰ तब चढ़ाय रथ देवकी आप भयो रथ मान ॥
पहुंचावन अति हेत सों चल्यो सहित अभिमान
सो॰ तेहि छिन गिरा विशाल होत भई आकाश तें
होय कंस को काल देवकी कौ सुत आठवों ॥

कंस असुर सुनि वचन अकासा भयो चकित मन मिट्यो हुलासा
शत्रु समान देवकी मानी ॥ रथ तें उतरि पर्यो अभिमानी ॥
खड्ग निकास हाथ में लीन्हो यह विचार अपने मन कीन्हो
अबहीं याहि मारि दुख मेटौं पुनि कलेश काहे को भेटौं ॥
कोक पकरि देवै गति लानी नहि कछु का न चाहत्य कीनी

तबवसुदेव दीनह्वै कह्यौ । नृप संबोधन तौ भूप यश लह्यौ
कहीं यह पुत्रि सखा तिहारी । राजन कीजे काज विचारी ॥
सुनि वसुदेव भई न भवानी । तुमहुँ सुनी कछु नाहिं छिपानी
ताते अब सोच कित कारिये ॥ याके काहे कौ कुल मारिये ॥
रूख फलै जो विष फल भारो । नाहिं अनेक हि लेही त्यारो ॥
जौ न हि हनौं आज यह बाला । मिटै न उरते सोच त्रिकाला ॥
कन्या सौ स्याह कि तोहि दैहौं । याहि मारि उर शोच न सैहौं ।

दो० मुनि जन गुरु जन समाजे तिन्ह निकसी नहि काल
व्यथा होति है मृत्यु फल यह न उरिक मंहि पाल
सो० ये हैं तुम्हरे मान आनकदुंदुभी देवकी ॥
इन्हें न हतिये जान खेद विरोधन कीजिये ॥

पुनि वसुदेव कह्यौ कर जोरी । राजन सुनिय विनय कछु मोरी
व्यथा देवकी कौ जिन मारौ ॥ याकौ सुत है शत्रु तुम्हारौ ॥
सब सुत याके हम पै लीजौ । जीवदान याकौ प्रभु दीजे ॥
यह बाचा हम तुम ते भाखैं ॥ चंद सूर्य साखी दै राखैं ॥
भली बात यह अब हि न जानी । भावी विवश कंस हू मानी ॥
हरि कीनो चाहैं सोइ होई ॥ ताहि मिटावन हारन कोई
तिन्हैं छांडि नृप घर फिरि आये । करि अगोट दोऊ रखवाये ॥
प्रथम पुत्र जब देवकी जायौ ॥ लै वसुदेव कंस पै आयौ
बालक देखि कंस हँसि दीनो । इन तौ कछु अपराध न कीन्हों
अठवौं गर्भ शत्रु है मेरो ॥ सो दीजो तुम मोहि सवेरो ॥
यह कहि अपनो पाप कसायौ । तब वसुदेव हर्ष कौ पायौ ॥
रोसे बालक फेरि सु दीनो ॥ वसुदेव गवन भवन को कीनो

दो० तब कह्यौ पै नारद कंस पहँ लिये हस्त तल बीन
गुण गावत गोविंद के आये परम प्रवीन ॥

सो॰ उठ्यौ देखि कै कंस सीस नाय पद वंदि करि
बैठारे पर संस शुभ आसन ऋषि नारदहि ॥

समाचार जो कछु हुइ आये ॥ सो सब ऋषि कौं कंस सुनाये
सुनि नृप वचन बिहसि ऋषि बोले तुम कत रहत शत्रु सों भोले ॥
जाके भय तुम अति भय मान्यौ अठवौं कौन सु तुम कछु जान्यौ
जो वह प्रथमहि आयौ होई । देव चरित्र जान कछु कोई ॥
आठ लकीर खैंचि दिखराई ॥ गिनती मैं सब आठौं आई ॥
यह समुझाय गये ऋषि ज्ञानी कंस असुर उर अति भय मानी
तिहि छण बालक फेरि मंगायौ लै वसुदेव तुरत ही आयौ ॥
लियो मूढ गहि कर मैं ताही फटकट भयौ शिला पर वाही
याही विधि अठ बालक मारे मात पिता अति भये दुखारे ॥
कहत अहो श्री पति असुरारी तुम बिन कासौं करहु पुकारी
यह संताप मिटै कब भारी ॥ बेगि लेहु प्रभु सुरति हमारी
केहि विधि नाथ राखिये प्राना करत कंस निवंस निदाना ॥

दो॰ विपति विनासन दुख दमन जन रंजन सुरराय ॥
अब हम कौं कोउ नहीं तुम बिन और सहाय ॥

सो॰ विनती प्रभुहि सुनाय मन मन दंपति दुखित अति
होत न प्रगट जनाय कंस असुर के त्रास तें ॥

भई भूमि जब अधिक दुखारी बढ्यौ पाप असुरन कौं भारी ॥
सहि न सकी तब गौ तन धारी शिव विरंचि यह जाय पुकारी
सकल सुरन मिल कियो विचारा हम तैं नाहि उतरै भुव भारा ॥
विनय करीय चलि श्री पति पाहीं कृपा करैं तब सब दुख जाहीं
भूमि सहित सुर सकल सिधारे छीर सिंधु तट जाय पुकारे ॥
जहं श्री पति श्री सहित निवासी पुरुषोतम अविगत अविनासी
वेनुअय करि विनय सुनाई ॥ जै जै जै त्रिभुवन के साईं ॥

जै सुखकंद संत हितकारी॥ जै जगवंद भूमि भै हारी॥
जै जै असुर समूह निकंदन जै जै भक्तन के उर चंदन॥
जै जै जै प्रणतारत मोचन। दैत्य दलन सुर शोच विमोचन
जै जै जै प्रभु अंतर जामी सुनिये विनय सचराचर स्वामी
करिये प्रभु सो वेग उपाई॥ हरिये नाथ भूमि गरुआई॥

दो० धरिय मनुज तन दनुज हति करिये धरणि उद्धार
परसत पदपंकज मिटहिं सकल भूमि अघभार॥

सो० पाहि पाहि भगवंत शरणागत वत्सल हरे॥
कृपा करहु अनंत दीन दुखित जन जानि हरि

दीन वचन जब धेनु पुकारी भई गिरा नभ मंगल कारी॥
जाहु सकल सुर परभय त्यागी धरिहौं नरतनु तुम हित लागी॥
प्रथम जन्म देवै वसुदेवा॥ सो सब मांगि लियो करि सेवा॥
तुम सम पुत्र हमारे होई॥ मैं तिन्ह कौं वर दीन्हो सोई॥
तैसे नंद जसोदा जानो॥ ॥ दूध पियावन उनहि न मानो
गर्भ देवकी के अवतरिहौं बाल चरित गोकुल में करिहौं
तुमहू गोप भेष धरि होउ॥ मम संग सुख पावो सब कोउ॥
यह कहि सुरनि विदा हरि कीन्हो आयसु पुनि माया कहँ दीन्हौ
सप्तम गर्भ देवकी केरा॥ तहाँ शेष मम अंश बसेरा॥
सो आकर्षण करि छण माहीं राखौ गर्भ रोहिनी पाहीं॥
शक्ति जब हि हरि आयसु पायो तत छण ताहि तहीं पहुँचायो
हरि चरित्र कछु जानन कोई जो कछु करन चहैं सो होई

दो० तब कृपाल जन के सुखद पूर्ण शशि कलाकंत
निज आगम देवकी उदर दियो जगनाथ भगवंत॥

सो० तन दुति बढी अपार परम प्रकाशित भवन सब
आनन मुकुर निहारि अति प्रसन्न मन देवकी॥

निज मुख मुकर देवकी देख्यो। सरद चंद पूरण सम लेख्यो॥
मिट्यो तिमिर सम अति सुख पायो। जान्यो कंस काल हरि आयो॥
प्रभु आगमन जान करि देवा। आये सकल जनावन सेवा॥
नभ लें गर्भ स्तुति सब करहीं। जै जै जै जै जै उच्चरहीं॥
जै ब्रह्मा शिव सेव्य सदाई। जै वेदान्त वेद सुर माई॥
जै तीरथ पद भव निधि बोहित। प्रणत पाल जै दीनन के हित॥
जै संकल्प सत्य गुण धामा॥ जै जन वांछित पूरण कामा॥
जै गो द्विज हित नर तनु धारी। जै संतन पति गति अपहारी॥
जै कृपाल आनंद वरूथा॥ वंदत चरण सकल सुर यूथा॥
जै पुरुषारथ अमित अनूपा। महा पुरुष सचराचर भूपा॥
जै महीश नित नव गुण भावें। नदी पनाथ गुण अंत न पावें॥
जो मुनि जन मन ध्यान न आवें। भक्त अधीन वेद यश गावें॥

अलख अरूप अनीह अज प्रभु अद्वैत अनादि।
गर्भ वास सो देवकी कौतुक निधि सर्वादि॥
सो० किनहु न पायो भेव शेष महेश गणेश विधि।
नमो नमो नहिं देव पारस विचित्र चरित्र प्रभु॥

कर विनती सुर सदन सिधारे॥ परमानंद मगन मन भारे॥
तब देवै पति पास बखाने॥ कोमल वचन प्रेम सों साने॥
हो पिय सो उपाय कछु कीजे। अबकै यह बालक रख लीजे॥
बुधि बल छल पी कीजे सोई। जामें कुल को नास न होई॥
मैं मन वच अबकै यह जाना। है मम उदर देव भगवाना॥
कहा करौं कछु यत्न न पाऊं॥ कौन भांति यह गर्भ दुराऊं॥
सत्य धर्म वरु जाय तो जाऊं। पति यह सुत हित करिय उपाऊ॥
कंस धर्म सब हो हित भाखें॥ सो हरि तजि कहु धर्महि राखें॥
सुनहु प्रिया अस को हितकारी। जो यह बालक लेहि उबारी॥

सिर ऊपर बैठे रखवारे ॥ पाइन परे निगड़ अति भारे ॥
सुनहु असुरतय बंसबिनासन । केहि विधि सेउ परे तिय सासन ॥
ऐसो को समरथ जग माहीं । जो यह औसर होइ सहाई ॥

दो॰ घटघालक वध सुरति करि दंपति दुखित विचार ।
अति व्याकुल भय कंस के दृगन चली वहि धार ॥

सो॰ करुणासिंधु दयाल नात मान अति दंपतन्ह लोष ।
प्रगट भये तेहि काल दुखमोचन लोचन सुखद ॥

योगशक्ति हरि आयसु पाई । प्रगटी नंद भवन सो जाई ॥
ताके प्रगट नहो नर नारी ॥ भये नींद बस देह विसारी ॥
भादों कारी निसि अतिपावन ॥ आठे बुध रोहिणी सुहावन ॥
अखिललोकपति निजजन सुखदायक । आविजन्म लियो सुर नायक ॥
सीस मुकुट कल कुंडल कानन । सरद मयक सरस सुभ आनन ॥
चारु अरुण पंकज दल लोचन । चितवन सुखद ताप त्रयमोचन ॥
कुटिल अलक भ्रू सेचक ताई ॥ जन मन हरन परम सुखदाई ॥
पीत बसन तन स्याम तमाला ॥ उर श्रीवत्स चारु मणि माला ॥
भुजा विशाल मनोहर चारी ॥ शंख चक्र गद अंबुज धारी ॥
अंग अंग भूषण सब नीके ॥ परम विचित्र भावने जी के ॥
चरणसरोज उदित नख जोती । कमल दलन गखे जनु मोती ॥
परम प्रताप सुभग शिशु भेषा । अद्भुत रूप देवकी देखा ॥

दो॰ देखि असित छवि चकित मन पतिहि लियो बुलाय ।
दंपति परमा नंद मन परे हर्ष सुत पाय ॥

सो॰ भरे प्रेम जल नैन अति सनेह व्याकुल हियहु ।
बोले गद गद बैन जोर पाणि विनती करत ॥

प्रभु कोइ विधि गुण निषधानी । तुव माया वस तुमहि न जानी ॥
सहसानन जाके गुण गावै । नेतिनेति जेहि निगम बनावै ॥

जाका भ्रू विलास अन आसा। औरक्त लोक उपजे अरु नासा॥
जो स्वरूप मुनि ध्यान लगावैं। कृपा करहु नव दरसन पावैं॥
जो सबतें पर अज अविनासी। सो किमि कहिय उदर ममवासी॥
परम पवित्र चरित्र तुम्हारे॥ मोहत हैं प्रभु मनहि हमारी॥
सुने प्रेम रस प्रभु मन भाये। तात मात के वचन सुहाये॥
बोले तात मात सुख दानी। मधुर मनोहर अम्रत बानी॥
सुनहु मात मैं तुमहिं सुनाऊं। प्रथम जन्म की कथा बताऊं॥
तुम जाच्यौ मोहि करि तपभारे। तुम समान सुत होय हमारे॥
जन हित बिरद मोर श्रुति गायौ। सो कैसें करि जात लजायौ॥
तातें मैं वर तुमकौं दीनौं॥ सो हम आय सत्य अब कीनौं॥

दो॰ शिव ब्रम्हा सनकादि मुनि ध्यान सकत नहि पाय
सो मैं तुम्हरे प्रेम वस दियो दरस निज आय॥

सो॰ कौतुक निधि सुरराय करन चरित सुनि मन हरण
महा मोह उरछाय दियो बहुरि पितु मात मन॥

करहु तात अब वेग उपाई॥ हमहिं कंस तें लेहु बचाई॥
गोकुल हमहिं देहु पहुंचाई। जहां जसोदा कन्या जाई॥
मोहि राखि जसुदा के पासा। कन्या ले आवहु अन यासा॥
सो कन्या ले कंसहि दीजै॥ तात हमारो नाम न लीजे॥
ऐसेंहि मात पितहि समुझाई। भये तुरत शिशु यदुकुल राई॥
देखि चरित सुनि प्रभु की बाता। विस्मय हर्ष विवश पितु माता॥
सुत उठाय उर सों लपटायो॥ प्रेम विवश लोचन जल छायो॥
कहति देवकी पति सुनि लीजे। गवन वेग गोकुल को कीजे॥
जब लगि सुनहि न दुष्ट हत्यारो। मन बच क्रम नृप कोन पत्यारो॥
बने नाथ उर धीरज धारे॥ नाहिन इतने भाग्य हमारे॥
जो यह सुख नैनन पुट पीजे। ऐसे सुत को यश सुनि लीजे॥

दरसन सुखित दुखित महतारी । सोचति चित कलक सभय भारी ॥

दो० मनिमें धिय रीरू धीनी मिभट घेरे चहुँ ओर
कौन भाँति जैहै दई पाइन निगड़ अति घोर ॥
सो० परषत आनि अलजोर धनारा जव कमकलपघ
दीय यमुन आनि जोर पारुफत्व नाविधि पाइ हैं ॥

कहा करौं अब काहि पुकारौं । कौन भाति धीरज उर धारौं
कंस सरोस नवहि छिन मारो । विनती कर पति विया उवारो
ऐसे सुन विछुरत महतारी । कौन भाँति जीवै दुख भारी ॥
कृपा समुद्र भक्त सुख दाता । सुनत मात की आरत बानी ॥
कृपा करी सब भ्रम भय टारे ॥ गिरे निगड़ पायन ते भारे ॥
तब बसुदेव हरषि ते हि ठाहीं । लख धेनु मनसी मन मारौं ॥
पुत्र गोद लै तुरत सिधाये ॥ द्वारक पाट खुले सब पाये ॥
रखवारे सब सोवत देखे ॥ सपदि चले उर हरष विशेषे
तबहीं मघवा रोष निवारी । मंद समीर भई भ्रम हारी ॥
हरि मुख चंद प्रभा तम नासे ॥ क्षण क्षण तडित पंथ परकासै
प्रभु पर शेष छाह फन छाई ॥ आगे सिंह डहाडत जाई ॥
सो बसुदेव न जानत भेवा ॥ पहुँचे जाय यमुन तट देवा ॥

दो० सरिस देखि गंभीर अति मन में सोच विचारि
गोकुल के सन्मुख धस्यौ प्रभु प्रताप उर धारि ॥
सो० यमुना पति पहिचानि मन आनंद हुलसी हियो
परसन हित पद पानि अति प्रवाह उछ्यो उठ्यो

गुलफ जघ कटि लौं जव आयौ । तवहीं कौ कछु ऊर्द्ध उठायौ
ज्यौं ज्यौं सुत बसुदेव उठावैं । त्यौं त्यौं जल ऊपर चढ़ि आवैं
नाक परियत नीर जब आयौ । तवहरि पद अधकौं लटकायौ
पर्शि नीर हुंकार हिं दीनो ॥ तुरत हि भयो गुलफ तैं हीनो

भयो पार लै के घन स्यामहिं। गये वसुदेव नंद के धामहिं
तहां सकल जन सोवत पाये। सुत लै जसुमति पास सिधाये
कन्या तहां पुनीत निहारी॥ लई उठाइ राषि दै त्यारी॥
फिरि फिरि सुत कौ वदन निहारी। चले तुरत भै कंस विचारी॥
जो संपति निगमागम गाई॥ योगी जनन जानि नहिं पाई
सनकादिक सव वसविधि माना। शंकर जासु धरत हैं ध्याना
सारद नारदादि जस गावैं॥ सहसवदन हूं पार न पावैं॥
अहो विलोकहु भाग्य वडाई सोई सोवत जसुमति पाई॥

जहां देवकी प्रेम वस अति व्याकुल अकुलात
वालक अरु वसुदेव कहिं पठय वहुत पछतात
वैठत उठत अधीर व्याकुल सौरी सेज पर॥
सोचत नैनन नीर वोल सकत नहिं कंस भय

मन मन सुर मनाय सनमानै। मत यह भेद दई कोउ जानै
रखवार कहुं जानन जाहीं॥ मत कोउ दुष्ट मिलै मग माहीं
यातें अधिक सोच मोहि भारी। क्यों दुरी है शशि सुख उजियारी
मग महं यमुना अति गंभीरा। केहि विधि पहुंचै गे उहतीरा
गोकुल पहुंचे धौं मग माहीं। भई वेर पति आये नाहीं॥
एहि विधि सोच विवस अकुलाई। इक छण कल्प समान विहाई
पहुंचे वसुदेव तेहि छण जाई। पूछन लगी पुत्र कुशलाई॥
केहि विधि पुत्र राषि पति आये। समाचार वसुदेव सुनाये॥
कन्या दई देवकी हिं जवहीं। द्वारक पाट गये लग तवहीं।
वेरी हुइ गई पग तत काला। कन्या रोय उठी तेहि काला।
चहुं दिस जाग परे रखवारे॥ तुरत कंस पहिं जाय पुकारे।
सुनतहि रोदन धनि असुर आयो लीने खड्ग तहां चलि आयो
कन्या लै तव देवकी आगे राखी आय॥

दीन वचन आधीन ह्वै कंसहि दियो सुनाय ॥
सो॰ अहो भ्रात बलवान तुम हम कौं अब दीजिये
है कन्या जिय जान यातें भय तुम कौं नहीं ॥ ४ ॥

सुनत कंस भगनी की बानी ॥ मृत्यु त्रास तें सठ रिस मानी
यातें कछू होइ छल कोई ॥ को जानै विधना गति गोई ॥
यह विचार कन्या गहि लीनी । पटकन की मनसा तेहि कीनी
कर तें छूट गई आकाशा । दिव्य रूप तहँ कियो प्रकाशा
बोलत भई गगन तें बानी । अरे मंद मति अधम अज्ञानी
मम हत्या तें लई बलाहीं ॥ तेरौ रिपु प्रगट्यौ ब्रज माहीं
सर्प ग्रसित जिमि दादुर होई । मारौ खान चहत सठ सोई
तैसे तू चह मारन मोही ॥ आयौ काल निकट सठ तोही
ऐसें कहि कर स्वर्ग सिधारी । कंसहि सोच भयौ सुनि भारी
पर्यौ देवकी चरणन माहीं । मैं मारे तुव पुत्र वृथा हीं ॥
क्षमा करो मेरौ अपराधा ॥ है विधि की गति अलख अगाधा
वसुदेवहु मन क्षमा कराई । निगड़ दिये पग तें कटवाई

भयो सोच व्याकुल सदन पौढ़ि सेज पर जाहि ।
जागत ही बीती निसा नींद परी कहुँ नाहि ॥
सो॰ हरि के चरित अनूप असुर विमोहन सुखद
तरन परन भव कूप जे प्रेम गावहि सुनहि

जसुदा जब सोवत तें जागी । सुत मुख देखन ही अनुरागी
पुलक अंग उर आनंद भारी । देखि रही मुख सोभ उजियारी
गदगद कंठ न कछु कहि आयौ । हरषवंत ह्वै नंद बुलायौ
आयहु कंत पुत्र मुख देखो । बड़ो भाग्य अपनो करि लेखो
भये प्रसन्न आज सब देवा । सुफल भई सबहिन की सेवा
सुनत नंद पिय तिय की बानी । प्रेम मगन तन दशा भुलानी

हर्षनि उठि अति आतुर आयौ । जसुमति सुतकौ वदन दिखायौ ।
देखत सुख उर सुख भयौ जैसौ । कहि न सकहिं सुनि सादर तैसौ ।
कहा कहौं तिहिं सरणकी शोभा । मनहुं महा छीवन रू के गोभा ।
आनंद मगन नंद मन माहीं । जानत नाहिं हम कौ कोह ठाहीं ।
रोय उठे तब नंद के लाला ॥ जागि परे सब ग्वालनि ग्वाला ।
जित तित ते हर्षित उठ आये । मनहुं रंक धन लूटन आये ॥

दो०ः देहिं बधाई नंदकौ परे जसोधा पाय ॥ ॥
कहैं पियारे लाल कौं नैक हमहिं दिखराय ॥
सो०ः अति हर्षित नंदराय कह्यौ बजावन सोहिलौ
नारि उठीं सब गाय लाग्यौ बजन बधावरौ ॥

छंदः सुर सिद्ध मुनिंदा परम अनंदा सुनि गोकुल हरि आये
दुंदभी बजावत मंगल गावत तियन सहित उठि धाय
विद्याधर किन्नर सुघर कंठ वर करत गाव सचु पाये
गरजन तिहिं काला मधुर रसाला घन गनि जतन जनाये
बाजत करताला वरखत माला सुरतरु सुमन सुहाये ॥
सब करैं कलोलें हर्षित डोलैं जै जै जै सुख पाये ॥
नभ महं धुनि होई सुन सब कोई भये सबन मन भाये
संतन हितकारी असुर संघारी आवत क्षिति सुष छाये
शिव ब्रह्मादिक मुनि सनकादिक परम प्रफुल्लित गाना ।
गुण गण सब गावैं प्रभुहिं सुनावैं आनंद उर न समाना ।
भये मन चीते सब भय बीते प्रगटे दनुज निपाता ॥
अति मन महं हर्षे पुनि पुनि वर्षे सुमन जु सुर तरु जाता ।
सुर तिय मन माहीं निरषि सिहाहीं जसुमति के बड़े भागा
हम सम हम नाहीं पुन्यन माहीं कहै सहित अनुरागा
योगी जे हिं ध्यावैं ध्यान न आवैं करि कोरि योगादि सुमा

छं० जो वेदन जाने नेति वषाने सो सुत ह्वै घर मांग

दो० परे परम आनंद सुर उपजावत अनुराग ॥
वार वार वरनन करें नंद जसोमति भाग ॥

सो० ह्वै सदन सुर भूप गोकुल को उत्सव निरषि
जन्म मंगल मूल व्रजवासी हर्षित सवै ॥ ७ ॥

व्रजवासिन सवहिन सुन पायौ । नंद महर घर ढोटा जायौ ॥
परस्या नंद लोग सव धाये ॥ नंदराय नव विप्र वुलाये ॥
कादिल विप्र महत्यो गासि धायौ आनि विचित्र सव द्विजन सुनाये
करत वेद धुनि अति सुखदाई देहिं नंद को सकल वधाई ॥
तव स्नान महर उठि कीनो भाल तिलक चंदन ले दीनो ॥
जात कर्म करि पितर पुजाये भूषण वसन द्विजन पहिराये
गैया पयस सवत्स सुहाई ॥ वादी वृषन वीन मंगाई ॥
सव विधि सकल पलकुन कीनी करि संकल्प द्विजन कौं दीनी
मुदित विप्र सव देय असीसा चिरजीवहु सुत कोटि वरीसा
हेसि हेसि वहुरि महर नंदराई हितु कुटंव सव निकट वुलाई
वहु सुगंध सौं तिलक वनाये भूषण वसन विविध पहिराये
हुते जो कुल मे वांधव जिठेरे ॥ दिन सौ पाय परे सव केरे ॥

दो० वंदी मागध सूत गण भरे भुवन वहु आय ॥
लै लै नाम वुलाय सव परितोषे नंदराय ॥ ८ ॥

सो० मन वांछित सव लेहिं जो जाके भावै मनहिं
नंद भरे रस देहिं किये अजाची जाचकनि

सुनि सुनि धाई व्रज की नारी ॥ लेकर कमलन कंचन थारी
मंगल साज साज सव लीने ॥ सहज सिंगार सुभग तन कीने
चार चोरी लनदृग कजरारे ॥ भाल तिलक कच मांग संवारे
आनि संदूर रोना कानन ॥ येरी रंग किये कछु आनन ॥

अंगिया अंग कसे छवि छाजै । विविधि भांत उर हरष विराजै ॥
अति आनंद मगन मन फूली । अंचल उड़त समारन भूली ॥
निज निज मेल मिली सब गावैं । विरहति नंद धाम कों आवैं ॥
इक भीतर इक आंगन माहीं । इक द्वारे संग पावत नाहीं ॥
सब कों जसुमति निकट बुलावें । मुख उघार सुत कौं दिखरावें ॥
देहिं असीस परो शिशु पायन । जीवहु जब लगि नभ तारायन ॥
पूरण काम भयो व्रज सारो ॥ धन्य जसोदा भाग्य तिहारो ॥
धन सो कोख जहां सुत राख्यो । पुन्य तिहारो जात न भाख्यो ॥

दो० धन्य दिवस धन रात यह धन्य लग्न तिथि वार ।
जहं जायो ऐसो सुवन थिर थाप्यो परिवार ॥

सो० पुनि पुनि सीस नवाय देहिं असीस मनाय सुर ।
जियहु सुवन नंदराय रूप अचल कुल की धुजी ॥

परमानंद नंद अनुरागे ॥ चित्र विचित्र वस्त्र बहु मांगे ।
सारी सुरंग कसब के लहंगे । अति चटकीले सोभन महंगे ॥
सिगरी वधू बोलि पहिराई । जो जैसी जाके मन भाई ॥
देहिं असीस मुदित ब्रजनारी । फूली कमल कली सी न्यारी ॥
एक हसि निज निज ग्रह जाहीं । इक हुलसी आवैं ग्रह माहीं ॥
एक कहे एकन सों धाई ॥ हौं यह बात भली सुनि आई ॥
महरि जसोदा ढोटा जायो ॥ नंद द्वार सखि बजत बधायो ॥
चलहु वेगि सरिलदी ठिये सोई । विधिना चाह गली है चोई ॥
इक नाचें इक ढोल बजावें ॥ एक नंद को गारी गावें ॥ ॥
एक साथिये द्वार बनावें ॥ एक चंदन कौं वारि वधावें ॥
ध्वज पताक तोरण छिरकाई । घर घर होत अनंद बधाई ॥
पुनि पुनि कुसुम देव बरसावें । फूलन सों सब गोकुल छावें ॥

दो० ध्वज पताक तोरण कलस बंदनवार दुवार

गोपन के घर घर षैधी घर घर मंगलचार ॥ ॥

दो॰ नंद सदन सविचार वरनि सके सो कौन कवि
लियो जहां अवतार छविसागर त्रिभुवन धनी

ग्वाल वृंद सब सुनि उठि धाये । ग्वाल वृंद सब निकट बुलाये ॥
सषिपन धातु चित्र सब कीने । गुंजाभूषित भूषण लीने ॥
यद्यपि अरु भूषण तन माहीं । तद्यपि पहिरन गुंज सुहाहीं
एक कहै एकन समुझाई ॥ आजु बनाहि कोऊ नहिं जाई ॥
गैयों सेयन सहस बनावो ॥ चित्र विचित्र वेगि है ल्यावो
पूत नंद के घर है जायो ॥ भयो सबन को मन को भायो
करत है गहर करत बिन काजा । वेग चलो मत सहित समाजा
दधि माखन के माट भराये ॥ ककुहूक हरदी रंग मिलाये ॥
लिये सीस पर कौतिक गावें ॥ कौतिक नाच मृदंग बजावें ॥
मिल मिल निज निज यूथन माहीं । नंद सदन निरखन सब आहीं
देखि नंद अति आनंद पावै ॥ हँसि हँसि सबको निकट बुलावें
छुद्र छुद्र चरण भेट धरि आगे ॥ देहिं बधाई अति अनुरागे ॥

दो॰ नाचत गोपन मगन भई नंद सदन जो भीर
जनु आये उत्साह सब धरि धरि गोप शरीर ॥

सो॰ देह धरे आनंद मनहु नंद तिनमधि लसै ॥
जनमे आनंद कंद कहन सकहिं मुख सहस सुख

इक नाचत इक गावत ठाढ़े ॥ इक कूदत अति आनंद बाढ़े
छिड़कत एक दूध दधि डोलै । एक कुलाहल करत कलोलैं ॥
मचो नंद घर दधि को कांदो ॥ वर्षत दूध दही जनु भादो ॥
एक धाय एकन पै जाहीं ॥ एकै मिलन डार गल बाहीं ॥
एक एक के पायन परहीं ॥ इक दधि दूध अक्षत सिर धरहीं
अति उछाह सबके मन माहीं । रंक राव गवन कछु नाहीं ॥

गोकुल मध्य देखिये जित हीं करत गोप कौतूहल तितहीं
एक लूट नंद कौं लेहीं ॥ एकै एकन कौं धन देहीं ॥
एकन हित करि नंद बुलावैं पट भूषण तिन कौं पहिरावैं
एक कहैं हम तब कछु लेहैं जब लालन मुख देखन पैहैं
एक जो एकन तें कछु लेहीं ॥ ते निसंक एकन कौं देहीं ॥
अति आनंद मगन पसुपालक नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक

दो० गोकुल कौ आनंद सब काप वरनो जाय ॥
जहां परम आनंद मैं लियो जनम हरि आय ॥
सो० नित नव होय विलास हरि मुकुंद के जनम तें ॥
व्रज संपदा सुपास सुर मुनि हो कौतुक निरखि ॥

जब तें जन्म लियो हरि आई ॥ सुख संपति व्रज घर घर छाई
ये सब उदारस पर वीना ॥ सब सुन्दर सब रोग विहीना ॥
मुदित जहां तहं सब व्रजवासी सब जसुमति सुत प्रेम उपासी
संपा सदन वरन्यौ किमि जाहीं सत सुरेस लखि विभ्रम जाहीं
अति प्रकास मंदिर के माहीं केलि रही हरि छवि की छाहीं
ग्वाल गाय गोपन की भीरा ॥ कहुं दधि कहुं माखन हूं दीरा
भूमि बाग वन गिरि रमनीया खग मृग सरस वाक कमनीया
विटप बेलि सब सहित फूल फल दिशा प्रकाशित निरमल जल थल
सुरभी सुर सुरभी सम तूला ॥ भयो सकल व्रज मंगल मूला ॥
विभव भेद यह कोउ न जानैं । आदिहि वे हम ऐसें मानैं ॥
कृस जन्म आनंद वधाई ॥ सुर नर नाग तिहूं पुर गाई ॥
व्रजवासिन मन अधिक उछाहू ॥ कोहनहिं सकहिं सह समुख काहू

दो० व्रज को सुख को कहि सकै सुख सावधि अपार ॥
सुख निधान भगवान जहं लियो मनुज अवतार ॥
प्रगटे गोकुल चंद संत कुमुद वन मोद कर ॥ ॥

सो० तसकुल असुर निकंद ब्रजजन चारुचकोर हित

नितनव सौर नंद के द्वारे ॥ जाचकजन सब होंहि सुखारे
गांव गांव ते सुनि सुनि आवैं । मन भायौ सब कोऊ पावैं ॥
पांच दिवस इहि विधि सुख पायौ । छठ्यौ दिवस छठी कौ आयौ
मंदिर सकल सुवास लिपायौ । जहां तहां छिरकत करि धायौ
चौकी चारु सुगंधि मचाई । द्वारे बंदन वार सुहाई ॥
ज्ञाति कुटंब मित्र हितु जेते । नंदराय न्यौते सब तेते ॥
ठौर ठौर बहु व्यंजन होई ॥ द्वारन बंदन वार सु होई ॥
गोपवधू सब वनि वनि आवैं । लालन को पहिरावन ल्यावैं
जरकसि कुरता भूषण टोपी । रत्न समेत प्रेम रंग ओपी ॥
रोरी अक्षत पान मिठाई ॥ चौथरि कंचन थारनि ल्याई
गावहिं मंगल कोकिल बानी । नंद भवन आवहिं हरषानी ॥
करि आदर जसुदा बैठावैं ॥ देखि स्याम घन सब सुख पावैं

दो० वृषभानादिक गोप सब ब्रजवासी समुदाय
आये सब नंदराय गृह भूषण बसन बनाय ॥

सो० अति आदर करि नंद सुभ आसन दीने सबन
सबके मन आनंद बजत दुंदुभी नचत नट ॥

कहूं ग्वाल गावत हैं होरी । कहूं खिलावत गाय घनेरी
वंस प्रसंसा भाट सुनावैं ॥ किन्हूं ढाढी ढाढिन गावैं ॥
देहिं गोपगन तिन कौं दाना । भूषण वसन धेनु मणि नाना
परजा सकल खिलौना ल्यावैं । अति अद्भुत कापै कहि आवैं
धरहिं नंद के आगे आनी ॥ राखहिं सब अति प्रिय सुख मानी
तिनहीं देखिं निछावर हीरकी । कोमल स्याम सुंदर वपु की
विस्वकरमा पलना गढ़ि ल्यायौ । रत्न जटित सुरंग सुहायौ ॥
लगे विविधि खिलौना वामैं । देखत भूलि रहे मन जामैं ॥

लालन हित सौं नंद रखायौ । विस्वकरमा मनवांछित पायौ
ऐसें दिवस यामयुग पायौ । तव सव गोपन नंद जिमायौ
फिरिकि सुगंध पान करदीनौ । तव सव गोपन भोजन कीनौ
मंगल में रजनी जव आई ॥ गाय उठी सव नारि सुहाई ॥

दो॰ कुरता टोपी पीत रंग लालन को पहिराय ॥
लै उछंग पूजन छठी वैठी हरषित गाय ॥

सो॰ करि कुल कौ व्यौहार करी आरती स्याम की
करत निछावर नारि तन मन धन शशि मुख निरखि

नेग योग सव नेगिन पायौ ॥ दियो सवनि जसुदा मनभायौ
प्रातहि उठि लालन अन्हवायौ । सुदिन सोधि पलना पौढ़ायौ
निरखि निरखि जसुदा वलजाई । अरुण चरण कर कोमलताई
व्रजवासी जीवन नंदलाला । मात सुमंगल फल मदन गोपाला
नित नव मंगल होहिं सुहाये । मंगलनिधि जवतें हरि आये
नंद सुकृत वरषा ऋतु सोई ॥ जसुमति सुकृत अकाश वनोई
लहि घनस्याम स्यामतन उनये । मंदहसिनि दामिनि दुति जुनये
रदजन मंद मधुर किलकारी ॥ व्रजजन मोरन आमद कारी ॥
दादुर गुणगण गावहिं दासा । परम प्रीति अम परम हुलासा
पलना पचरंग मणिछविछाई । इंद्रधनुष उपमा निज पाई ॥
गजमुक्तन कीलर लटकाई । सोई मानो वगपांति सुहाई ॥
द्रग घर घर सुख संपति छाई । सोई मनहु भूमि हरि आई ॥

वरषत परमानंद जल नंद सदन जग माहिं ॥
ध्यान भूमि हरि सरित मग जनउर सिंधु समाहिं
पूरण होत सुनाहिं जद्यपि निसिवासर नरन ॥
वढत लहरि पुलकाहिं हरि मुख शशि एक निरखि

कंसहिं वहां नींद सुखनाहीं । आतचिंता व्याकुल मनमाहीं

ऐसो निकसि सभा उठि प्राता। मंत्री बोलि कही यह बाता॥
मेरो रिपु प्रगट्यो ब्रज माही। कौन भांति पाइ स्यावो ताही॥
जातें जाय वेगि वहु मारौ॥ ऐसो तुम कछु मंत्र विचारौ॥
दिन दिन वडो होय सब सोई। को जाने फिरि कैसो होई॥
बोल्यो एक असुर सुनि राजा। क्यो डरपत इतने के काजा॥
मोपै एक मंत्र सुनि लीजे॥ धर्मकाज कछु होन न दीजे॥
जपतप होम होन नहिं पावै। विप्र न साधन असुर सतावै॥
तो बुध देव होइ गो कोई॥ सो ह नहिं सकहि प्रगट है सोई॥
सब तेहि असुर आय संहारें। या विधि शत्रु तुह्मारो मारें॥
बोल्यो एक वात यह नीकी। औरौ सुनहु हमारे जीकी॥
देश देश को असुर पठावो। बालक मारक के जे पावो॥

दो॰ तिन सबहिन कों वध करें बचन न पावै कोइ।
इन नहीं में वहु होइगो मारो जेहै सोइ॥१॥

सो॰ कह्यो कंस हरखाइ कहे मंत्र दोऊ भले॥
पठवहु असुर निकाय जाय करौं का रज संभार॥

याविधि असुर विदा सब कीनो। बालक वधन कों आयसु दीनो॥
कह्यो आय ब्रज येगि हि सोई॥ तहां के बालक मारें जोई॥
कह्यो पूतना आयसु पाऊं॥ तो यह काज मैं करि ल्याऊं॥
सकल गोप शिशु जाय नसाऊं। जो कहिये तो जीवत ल्याऊं॥
क्षण में रूप मोहनी धारौं॥ वसीकरण पढ़ि सब पर डारौं॥
घसि कंकोल अरु रोचन ल्याऊं। ब्रजवासिन के बाल पियाऊं॥
तौ पूतना नाम कहवाऊं॥ जो नृप को काज करि आऊं॥
सुनत कंस नेहि आयसु दीनो। सुनत हिं वचन गवन तिन कीनो॥
ता दिन नंद मधुपुरी आये॥ राजकंस फल नृप कहं ल्याये॥
नृप दरवार ताहि पहुंचायो॥ समाचार वसुदेव को पायो॥

छांडि वंद तें नृपतें गाखें ॥ हते मित्र सुन कै अभिलाखें
मिलन गये तिन कौं नंदराई उठि वसुदेव मिले हरषाई

दो॰ कुसल पूछि कर परसपर वारंवार स प्रीति
वैठारे नंदराय ढिग कीरि कै आदर रीति ॥

सो॰ तव वोले नंदराय सुनिये देव भावी प्रवल
तासों कछुन वसाय जगत भ्रमत जाके विवस

तुम अति कष्ट कंस तें पायौ सुनि सुनि वहुत भयो पछितायौ
आजु देषि के चरण तिहारे भये हमारे नैन सुखारे ॥ ॥
तव वसुदेव कही मृदु वानी अहो नंद तुम सत्य वषानी ॥
कर्म रेख नाहिं जात मिटाई ॥ विधि की गति कछु कही न जाई
कह्यौ नंद सुत भयो तुम्हारे । तव तें अति सुख भयौ हमारे
तुम को जरा आय नियराई ॥ वड़ी वैस विधि भयौ सहाई ॥
तव नंद हलधर जन्म सुनायौ ॥ प्रथम हिं तिनहिं रोहिणी जायौ
तिनकौं उत्सव प्रगट न कीन्हौ कंस त्रास अपने उर लीन्हौं ॥
सुनि वसुदेव वहुत सुख पायौ तव ऐसें कहि वचन सुनायौ
सुनहु नंद तुम नीके जानों ॥ कंस नृपति कत नाहि छिपानों
तातें अव वे दोउ वालक ॥ अपने मान करौ प्रति पालक
अव तुम वेगि गोकुलहि जाहू वालक हित पतियाहु न काहू

अथ पूतना वध लीला ॥

दो॰ जित तित पठये कंस के करत असुर अनरीति
प्रजा लोग के वालकनि तातें हैं अति भीति ॥

सो॰ गई पूतना आज व्रज कौ वालक घातनी
करि है कछू अकाज वेगि धाम सुधि लीजिये

सुनि वसुदेव वचन नंद राई । भये विदा वुस्तै भय पाई ॥
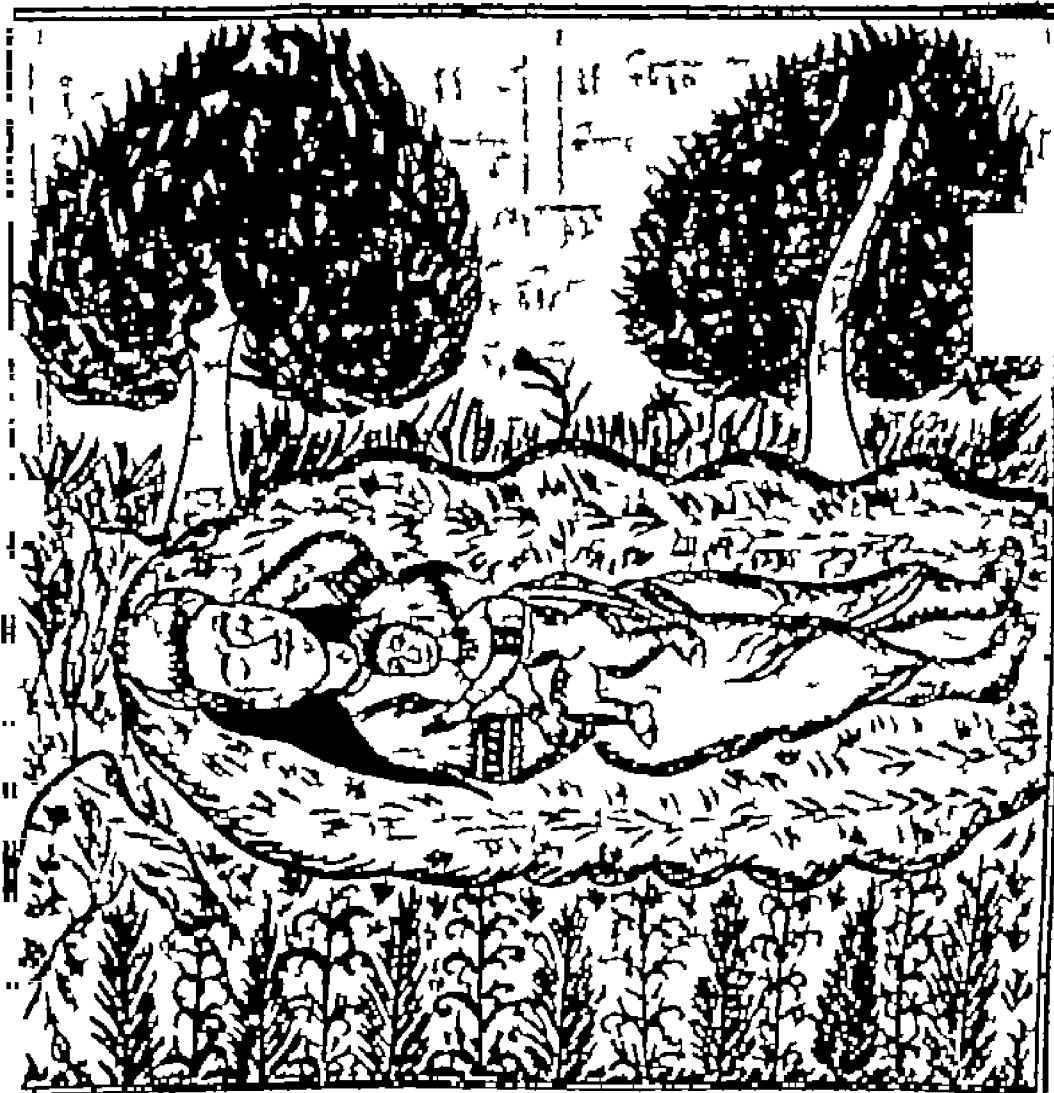
निकसत शकुन अशुभ भय मानो । ताते अधिक सोच उर आनो ॥
शिशु चखोकछु सुधि तन नाहीं । बालक कर्क चिता मन माहीं ॥
इहा पूतना ब्रज मैं आई ॥ रूप मोहनी प्रगट बनाई ॥
गरल घाटि कुच सौ लपटायो । ऊपर सरल सिंगार बनायो ॥
अतिहीं कपट छबीली सोहै । जो देखै ताको मन मोहै ॥
इत उत है नंद धाम हि पाई । देपि रूप जसुधा मन भाई
देखि रही मुख सुन्दरताई ॥ कै यह नर कै सुर की जाई ॥
काकी वधू कौन की बेटी ॥ अब लौं मन मैं कबहुन भेटी

विन पहि वाने आदर कीनौं ॥ वैठन कौं सुभ आसन दीनौं ॥
अहो महरपाल यान मेरो ॥ मैं आई सुत देखन तेरो ॥
हरि पलना परमन मुसकाई ॥ जसुमत कछु गृह काज सिधाई ॥

दो॰॥ तवहिं राक्षिसी दुष्ट अति पलना के ढिग जाय
निरखि वदन मुख चूमि कै लीनौं अंग उठाय ॥

सो॰॥ दियौ कमल मुख माहिं विष लपट्यौ अस्तन दुर
पकर दुहू कर माहिं लगे करन पय पाय हरि ॥

पय संग प्राण खिचे जव वाके ॥ है गय सिथल अंग तव ताके ॥
तव सो लगी कुढावन वालक ॥ सो को छुटे दुष्ट कुल घालक ॥
पय संग प्राण खेंचि हरि लीन्हा ॥ पठे स्वर्ग जननी गति दीन्हा ॥
परी मृतक है असुर सुनारी ॥ जोजन लौं निज तन विस्तारी ॥
जसुमति धाय देखि गृह गयो ॥ पालन पर वालक नहिं पायो ॥
त्राहि त्राहि करि ब्रजजन धाई ॥ व्याकुल विपुल नंद गृह आई ॥
अति व्याकुल जसुमति महतारी ॥ ढूंढहिं स्यामहिं रोवत भारी ॥
हरि ताकी छाती लपटाने ॥ करत चरित्र जो अचरज साने ॥
ढूंढत ढूंढत उर पर पाये ॥ लै उठाय माता उर लाये ॥
दुख सुख ताको कह्यो न जाई ॥ जिमि मणि गई भुजंग न पाई ॥
सुखित भई तव ब्रज की वाला ॥ कहति वच्यो अति नंद को लाला ॥
नंद जसोमति भाग्य वडेरी ॥ सुत की करवर टरी करेरी ॥+॥

दो॰॥ आई अद्भुत रूप धरि अति विपरीत सुनारि
कपट हेत नहिं लखि सक्यौ तेहि मार्यौ करतार ॥

सो॰॥ कहति जसोमति माय पुनि पुनि सवके पाय परि
उवर्यो आजु कन्हाइ तुम पंचन के सुराय ते ॥

वडे कष्ट यह सुत मैं पायो ॥ आज विधाता वहुत वचायो ॥
कोउ कहै भागवंत नंदराई ॥ कुल के देवन करी सहाई ॥+॥

कोऊ कहै नैकु सुतहि मोहि देरी
कोउ सुख चूमि वलैया लेई॥
क्यों कान्ह सव व्रज सुधि पाई
तवहि नंद गोकुल मे आये॥
जो वसुदेव कही ही वानी
तहे सव व्रजवासी जुरि आये
तव सुध पाय गये नंद धामहि
वदन विलोकि हरषि उर लाये
तव व्रजवासी सकल वुलाये
वाहिर एक ठौर सब कीने॥

देखहु सुख मैं पुनि तू लेरी॥
ले उछंग पुनि जसुदहि देई॥
घर घर वजी अनंद वधाई॥
देखि पूतनहि अतिभय पाये
सो सव मन मे सांची जानी॥
समाचार सव प्रगट सुनाये
देख्यो जाय सुवन घनस्यामहि
वहु नंद दान दै देव मनाये॥
अंग पूतना के कटवाये॥
अमित काय फकि तिन्ह दीने

दो॰ अतिसुगंध ता अंगते कीनो धूम प्रकाश॥
हरि अस्परस प्रताप ते व्रज सव भयो सुवास॥
सो॰ रहे अचभौ पाय व्रजवासी यकृत सवै॥
चरणकमल चित लाय नंदसुवनसोंहसागुनन

हरी ऐये माया की की कन्हिया
पुनि पलना पौढाय झुलावै॥
लालन के हित नींद वुलावै
रे लालन को आव निदरिया॥
जो कर कपट ग्वाल को आवै॥
सदा देवता या कुल केरे॥
वेगि वडो कर दे यह वालक॥
दुतिया के शशि ज्यों शिशु वाढै
सोवै मेरो वाल कन्हाई॥॥
सोवन देख मौन गहि रहई॥
अंग फरकाय अधर मुसकाने

दूध पियायो तव नंदरनियां
हुलरावैं दुलराय मल्हावैं॥
मधुरे सुर कछु जोइ सोइ गावैं
तोहि वुलावत श्याम सुंदरिया
ताहि वकी लौ विधि विनसावै
मैं पूजिहौं कमल पद तेरे॥
व्रज जन प्राण पूतना घालक
आवायो अरु डोरनि वाढै॥
माता सुख की वल वन जाई॥
जागत देखि वहुरि कछु कहई
ता छवि की उपमा को जानै॥

वार वार शिसुवदन निहारे । जसुमति अपनो भाग्य विचारे

दो० हुलरावत गावत मधुर हरि के बाल विनोद
जो सुख सुर मुनि को अगम सो सुख लेत जसोद

सो० कवहूँ लेत उछंग उर लगाय चूमति सुखहि
निरषि मनोहर अंग कवहुँ झुलावत पालने ॥

दरसन कौं नित सुर मुनि आवैं । बाल विनोद निरषि सुख पावैं
कहैं परस्पर सुर नर नारी ॥ हरि के अद्भुत चरित निहारी ॥
अलख अगोचर अज अविनासी । पुरुष पुरातन विश्व विनासी
जाको भेद न शिव मुनि जाने ॥ ब्रह्मा पढ़ि पढ़ि वेद वखाने
सो हुलरावत नंद की घरनी ॥ पूरण भई पुरातन करनी ॥
मन अभिलाष बढ़ावति भारी । हुलसन हँसन देत किलकारी
वरषि प्रसून हरषि मन माहीं । धन्य धन्य कहत ब्रज घर जाहीं
नित नव कौतुक होंहि प्रकासा । ब्रजवासिन मन अमित हुलासा
जसुदा नित नव लाड़ लड़ावैं । निरषि निरषि ब्रजजन सुख पावैं
नित नव मंगल नंद के धामा । नित नव रूप श्याम अभिरामा
भक्त वत्सल संत हितकारी । भक्तन हित नाना तन धारी ॥
भजत संत यह हृदे विचारी ॥ जन ब्रजवासी है बलिहारी

दो० जव हरि मारी पूतना सुनि डरप्यौ नृप कंस
प्रगट भयो ब्रज शत्रु मम यह जानी निरसंस ॥

सो० वसो तासु उर माहिं ताही क्षण ते अचल हरि
भूलत इक क्षण नाहिं शत्रुभाव लाग्यो भजन

अथ कागासुर वध वरनन

कागासुर नृप निकट बुलायो ॥ ताहि सतो सब काहि समुझायो
आवहु वेग नंद सुत मारी ॥ कीयहु काज वुद्धि विचारी

आयसु धरि सिर गर्व बढ़ायो ॥ काग रूप तेहि असुर बनायो ॥
वेगि चल्यो उड़ि गोकुल आयो ॥ बैरिन कालि सब थन थरायो ॥
वै कौ नंद धाम पर आई ॥ पलना पौढ़े बाल कन्हाई ॥
वाकौ आवत हीं हरि जान्यो ॥ कागन होय असुर महिं पान्यो ॥
जसुदा हरि को सोवत जानी ॥ कछु गृह काज में लपटानी ॥
तबहिं असुर पलना पर आयो ॥ चाहत हरि कौं चोंच चलायो ॥
कंठ पकरि हरि कर सों लीनौं ॥ नैक मरोरि फेंक तब दीनौं ॥
मरौ जाय नृप पास उतान्यो ॥ यह ब्रजवासी काहु न जान्यो ॥

दुष्ट कंस तेहि वृन्द न पायो ॥ बीते जाम बोलि नव आयो ॥
सुनहु कंस वुह बालन होई ॥ है अवतार महा बल कोई ॥

दो ॥ एक हाथ सों पकरि मोहि फेंक दियो तुम पास ।
है है तुमरो काल वुह मैं कीनो विश्वास ॥ २ ॥
सो ॥ सुनि डरप्यो महिपाल कागासुर के वचन सुनि
वुह सो गयो विशाल जग्यो जो उर मैं सोच तरु ॥
सभा मध्य सब असुर सुनाई ॥ वार वार सिर धुनि पछिताई ॥
व्रज मैं उपज्यो मेरो काला ॥ ताके अवही ते इह हाला ॥
दनुज सुता पूतना पठाई ॥ २ ॥ ताकौ इक क्षण मारु नसाई ॥
कागासुर के ऐसे हाला ॥ २ ॥ सो तौ दिन दिन होत विशाला ॥
है कोउ वीर जु ताहि नसावै ॥ मम कारज करि आप वचावै ॥
ऐसो कौन कहौ मैं जासों ॥ अवके जाय भिरे जो तासों ॥
असुरन कौं यो नृपति सुनायो ॥ सकटासुर मन गर्व वढायो ॥
उठि के पान नृपति सों मागे ॥ कहा काम यह मेरे आगे ॥ २
तुम प्रताप तेहि पल मैं मारौं ॥ कहौ तौ सब व्रज कौ संघारौं ॥
कंस हर्ष तेहि वीरा दीन्हो ॥ सूर सराहि विदा तेहिं कीन्हो ॥
इहां श्याम पलना पर खेलें ॥ कर गहि पग अंगुठा मुख मेलें ॥
अपने मन यह करत विचारा ॥ इह मम पद सन्तन आधारा ॥
दो ॥ ये पद पंकज सखी उर निरखत शंभु सुजान ॥
इनकौ रस मन मधुप करि करत निरंतर पान ॥ २ ॥
सो ॥ पुनि इह पद के ध्यान मगन ब्रह्म सनकादि मुनि
लक्ष्मी अति सुख मान उर ते क्षण टारत नहीं ॥ २ ॥
इन पद पंकज रस अनु रागा ॥ मगन सकल सुर नर मुनि नागा ॥
ऐसो धौं का रस इन माहीं ॥ सो तो मोहि विदित कछु नाहीं ॥
भो कौ इह रस दुर्लभ भारी ॥ देखौं धौं मैं ताहि विचारी ॥ २ ॥
ताते पद अंगुठा मुख मेलै ॥ लै लै स्वाद मगन रस खेलै ॥
ता अवसर सकटासुर आयो ॥ मगन रूप कान्हन लखि पायो ॥

भारेसकट नंद गृह केरे॥ पलना के ढिग हुते घनेरे॥
तिन मैं सो सठ आय समान्यौ। नंद सुवन तब हौं यह जान्यौ॥
ताकों हरि इक लात चलाई। गिरो सकट तब अति हर्षाई॥
दनुज निधन काहू नहिं जान्यौ। गिरो सकट गृह सबहिन मान्यौ॥
सुनत सब्द अति व्याकुल धाये। नंदादिक सब जुरि तहं आये॥
जसुमति दौरि स्याम कौं लयेऊ। सबके मन अति विस्मय भयेऊ॥
कारन कहा कहै नर नारी॥ गिर्यौ सकट आपुनि ते भारी॥

दो॰ पलना ढिग खेलत हुते कछुक गोप के बाल॥
तिनन कह्यौ डार्यौ सकट पलना नैं नंद लाल॥
सो॰ सो नहिं करी प्रतीति काहू बालन कौं कह्यौ॥
यह नौ कछु विपरीति भई कुशल अति स्याम की॥

जसुमति अति मन मन पछिताई। भये आजु कुल देव सहाई॥
बार बार उर सो सुत लाई॥ निरषि नंद पुनि पुनि बलि जाई॥
मेरे निधनी के धन छैया॥ लगे मोहि तेरी रोग बलैया॥
ऐसे बहु विधि लाड लड़ाये। पय पियाय पलना पौढाये॥
मंद मंद कर ठोक सुलावैं। कछु यक मधुर मधुर सुर गावैं॥
सोवत स्याम सुभग सुंदर वर। चौंकि चौंकि शिशु सदा प्रगट कर॥
लये मात कीनें यों सपटाई॥ मनों फाए मों एउर माहिं दुराई॥
प्रात निरषि सुख आनंद कीनो। चूमि वदन सुत कौ पय दीनो॥
कोमल धाम अजिर जब आयो। तहं तुम पलना पर पौढायो॥
आय मथन दधि भक्ति सिधारी। नंदहि सुत के ढिग बैठारी॥
निरषि नंद सुत आनंद भारी। कमल वदन छवि कहे निहारी॥
चुटकी दै दै सुतहि खिलावैं। निरषि निरषि सुख अति सुख पावैं॥

छिन लौंकि उठे लीं विताल सुषकर पद हग अनुराय।
रूप रसद कि उलटे परे सुख निधि त्रिभुवन राय॥

सो० सो छवि कहिय न जाय निरषि नंद टेरत महरि
आपन सकल उठाय अति कोमल मम संकुच मन

नंद हि टेरत सुनि नंदरानी॥ तजी तुरत दध मथन मथानी
जानै महरि गिरे सुखदाई । ताते अति आतुर उठि धाई
नंद हि देषि हंसत तिन पासा। नव धी रज धरि कियो हुलासा
उलटि पर्यो सुत देखो आई। उठन सकल कर से जल गाई॥
सो छवि निरषि मातु सुष पायो। तुरत मुदित उलटाय उठायो
उर लगाय मुख चूंबन लागी॥ कहत आज मैं भई सभागी॥
पिटु करि नाहीं उलटन लागे। डेढ़ मास के भये सभागे॥
चिर जीवहु मेरे कुंवर कन्हाई। आज करौं मैं अनंद वधाई॥
नंदरानी ब्रजनारि बुलाई॥ यह सुनि सब आनंद कर धाई
हरि कौं निरषि परम सुख पायो। हर्षित सबहिन मंगल गायो
बांटी घर घर पान मिठाई॥ नंद सुवन ब्रजजन सुखदाई
धनि धनि ब्रज की बाल सभागी। हरि के बाल चरित अनुरागी

जननी अति आनंद भरि निरषत श्यामल गात
जैसें निधनी पाय धन मुदित रहति दिन राति॥
धनि धनि ब्रज को वास धन्य यशोदा धन्य नंद
धनि ब्रजवासी दास जिनको मन या प्रेम मगन॥

अथ तृणावर्तवध लीला।

जसुदा भाग न जात वखानैं। त्रिभुवन पति कौं सुत करि मानैं
हरि कौं गोद लिये पय प्यावै। विविध भांति करि लाड लडावै
कवहूं हरि सुख सौं सुखलावै। कवहूं हर्षित कंठ लगावै॥
सो निधनी को धन सुत नान्हा। खेलत हंसत रहौ नित कान्हा
कव धौं मधुर वचन कछु कैहैं। कव जननी कहि मोहि बुलैहैं

कब नंदहि कोंह्व बाबा बोलै । खेलत कहूं तउत आंगन डोलै ॥
कब धौं तनक तनक कछु खैहै । अपने कर लै मुख मैं नैहै ॥
का विवि यह अभिलाष पुरावै । मनहीं मन कुलदेव मनावै ॥
किलकत हरि जननी की कनियां । करत चरित्र मात सुखदनियां
तृणावर्त हरि आवत जाना । पठयो कंस सहित अभिमाना

भयो गरू जननी भरपायो । सहन सकी नव भुव बैठायो
अप लगी गृहकाज कछु रखि बिसरि गोपाल
अति प्रचंड बौंडर उठ्यो गोकुल पर तेहि काल
घात चक्र विष आय तृणावर्त मानी असुर
हरि को लियो उठाय अंधधुंध गोकुल कियो
हरि को लै कै गयो अकासा ॥ धूरि धूंध गोकुल चहुं पासा ॥
तहां न तौ नर नारि दिखाने ॥ प्रलय काल सम की रव माने

जसुमति दौरि अजिर में आई ॥ नहीं न पाये कुंवर कन्हाई ॥
नंद नंद करि सोर लगायौ ॥ तेरौ सुत अंधवाय उड़ायौ ॥
दौरौ वेगि गुहार लगावौ ॥ ब्रजवासिन कौं टेर बुलावौ ॥
अति व्याकुल खोजत नंदरानी ॥ जित तित फिरत भवन बिललानी ॥
तृणावर्त्त कौं हरि यौं कीन्हो ॥ ग्रीव लपटि निज्हिनीचै लीन्हो ॥
कठिन शिलापर ताहि गिरायौ ॥ ताके ऊपर आपुन आयौ ॥
चूर चूर करि ताके गाता ॥ कीन्हौं मुक्त मुक्ति के दाता ॥
धूरि धुंध सब तुरत विनासी ॥ खोजत होरहि विकल नगवासी ॥
ब्रजवनिता उपवन में पाये ॥ लिये उठाय कंठ लपटाये ॥
ल्याइ आतुर जसुमति पै ल्याई ॥ हुई भई घर घर आनंद बधाई ॥

लिये धाय कै माय नैं छतिया रही लगाय ॥
नंद निरषि सुख पाय कै मन सौं बहुतक गाय ॥
वारि वारि ब्रजनारि देहिं वसन भूषण मगन ॥
जित तित कहैं विचारि नयौ जन्म हरि कौं भयौ ॥

उबस्यौ स्याम महरि बड़भागी ॥ देखौ धौं कहुं चोट न लागी ॥
ऐगलेरूं वलि जाउं कन्हाई ॥ हरि हैं ब्रज के जीवन माई ॥
भलौ न प्रकृति जसोदा तेरी ॥ इकलौ हरि कौं छांड़ति हेरी ॥
घर कौ काज इनहु तैं प्यारौ ॥ वैरी अजहूं सुरति संभारौ ॥
वहत बच्यौ री आज कन्हाई ॥ भयौ पूर्वलौ पुण्य सहाई ॥
जसुमति सब सौं कहत लजानी ॥ अब मैं सीख तिहारी मानी ॥
मोहिं कहां तौ यह सुख माई ॥ मैं तौ रंक परी निधि पाई ॥
अब मैं अपनो लाल न्हि चैनै हौं ॥ एकौ क्षण काहू न पतिये हौं ॥
ऐसें कहि सब सौं नंदरानी ॥ कीन्ही विदा सकल सनमानी ॥
जसुमति हरि कौं गोद षिलावै ॥ देखि देखि मुख नैन सिरावै ॥
अति कोमल स्याम तन देखी ॥ वारवार पछितात विसेषी ॥

कैसें बच्यौ जाउं बलिहारी । तृणावर्त्त को घात निवारी ॥
नाजानौं कोहि पुण्य नेको करि रोत सहाये ॥
कियो काम सब पूतना तृणावर्त्त यह भाय
मातदुखित जिय जानि कृपासिंधु करुणाभवन
वालिचरित सुखदानि करन लगे सुन्दर परम

खेलत मात उछंग कन्हाई । करत बाल लीला सुखदाई ॥
जननीवेसर लटकत देखी ॥ चितवत ताहि विसारि निमेषी
ताहि गहन कौं पाणि चलायौ तव जननी कछु वचन उचारयो
नहि पहुँचत वसन निउकनाई सो छवि निरषि मात वलिजाई
जननी वदन निकट करि लीनौं तव हरि हुलसि किलकि हंसि दीनौं
विहसत चमकि परी दुधदंतियां जनो विज्जु बीज की पंतियां
प्रमुदित निरषि जसोदा फूली प्रेम मगन तन की सुधि भूली
वाहिर तें तव नंद बुलाये ॥ परमानंद सहित उठि धाये
हो पति सुफल करो दृग आई देषहु सुत सुख दंतुलि सुहाई
हर्षित हरि हि गोद नंद लीनौं निरषि ताल सुख हरि हंसि दीनौं
देखत वदन नैन सिय राने ॥ दूध दांत धौं छवि के दाने ॥
अहो महरि वड़ भाग तुम्हारे सुफल फये मन काज हमारे ॥

कछु दिन घट षट मास के भये श्याम सुखदान ॥
अन्न पराशन को दिवस बूझहु विप्र विद्वान ॥ ॥
सुनि पुलके नंदराय भये परासन योग हरि ॥ ॥
प्रेम रह्यौ उरछाय सो सुख कापै जाय कहि ॥

अथ अन्न परासन लीला

मात कह्यो उठि विप्र बुलायो ॥ पोस वूझि सुभ दिवस धरायो
असुमनि सोदिन अबको पायो । सखिन बोलि सुभगान करायो

युवतिमहरि कौं गारी गावैं । और महर कौ नाम सुनावैं ॥
मणि कंचन के थार मंगाये । भांति भांति के वासन आये ॥
नंद घरनि व्रज वधू वुलाई ॥ जे सब अपनी जानि सुहाई
कोउ जिवनारि कोउ पकवाना । खटरस के वहु करत विधाना
वहु प्रकार के विंजन आने ॥ जिन के स्वादन जाइ वखाने
अति उज्जल कोमल सुठि नीके । किये विविधि विधि मनहू अमी के
जसुमति नंदहि वालि कह्यौ तव । वोलहु महर जाति अपनी सव
आइ गये उपनंद सकल घर ॥ ल्याये वोलि सवन आदर कर
वैठारे सव आन अथाई ॥ भीतर गये आप नंदराई ॥
जसुमति हरि कौं उवटि न्हवाये । सुन्दर पट भूषण पहिराये ॥

तन झंगुली सिर चौतनी कर चूरा दुहु पाय ॥
वारवार सुख निरषि के जसुमति लेत वलाय
लै वैठे नंदराय जानि सुभरी गोद हरि ॥ ॥
लीने सदन वुलाय गोप सकल आनंद भरे ॥

वैठे सकल गोप गन आई ॥ अति आनंद मगन नंदराई
कनक थार भरि खीर धराई । मिसरी घृत मधु डारि मिलाई
लगे नंद हरि मुख जुठरावन । गोप वधू लागी सब गावन ॥
आंगन वाजी विविधि वधाई ॥ शंख निशान भेर सहनाई ॥
षटरस के विंजन है जेते ॥ करि के अधर छुवाये तेते ॥
तनक अधर जल पोंछि सुहाये । हरि कौं जसुमति पै पहुंचाये
हर्षवंत युवती सचु पाये ॥ लै लै मुख चूमति उर लाये ॥
विप्रन वोलि दछिणा दीनी ॥ नाना वस्तु निछावर कीनी ॥
गोपन संग महर नंदराई ॥ वैठे पनवारे पर जाई ॥ ॥
अति रुचि सवहिन भोजन कीनौं । वीरा वहुरि सवन कौ दीनौं ॥
गोपवधू सव महर जिमाई ॥ दै कर पान सुगंध सिंचाई ॥

इहि विधि सुख विलसैं ब्रजवासी। निरखैं स्याम सुभग सुखरासी

सुर सिहाँहि ललचाँहि सुनि लखि ब्रजजन के भाग
धन्य धन्य कहि सुमन झरि करहि सहित अनुराग
नित नव मंगलचार नित नव लीला स्याम की
को कवि बरनै पार सेषन पावै पार जिहि॥

नेति नेति जिनकौं स्रुति गावैं। तिन्हकौं ब्रज जन गोद खिलावैं
सो सुख नंद भवन के माहीं॥ तीनि लोक महँ सो कहुँ नाहीं
नित नयौ सुख जसुमति पावैं। नये नये नित लाड़ लड़ावैं॥
नैन ओट होइ कर तन कैसे॥ जुगवत है फणि मणि कौं जैसे
चितवत निमिष होत पल ओटा। निरखत ही सुख पाय निठोटा
तनक कपोल अधर अरुनारे। मनक तनक कच घूघर वारे॥
कुटिल भृकुटि की रेख सुहाई॥ मसि बिंदु कना पर सुखदाई
नयन नासिका भाल विशाला। कल बल बोल मि परम रसाला
अल्प दसन चिबुक रद ग्रीवा। तन घन स्याम मृदुल छबि सीवा
मात निरखि नैनन सुख पावै। प्रेम विवश भति गति बिसरावै
निरखि रूप जब मनु अनुरागै। कहत कहूँ मम दीठ न लागे॥
नख पेंच राजन लै न छिपाई॥ डारति वार लौन बहराई॥

कबहुँ झुलावति पालनै कबहुँ खिलावति गोद
कबहुँ सुलावति पलंग पर जसुदा सहित विनोद
नित प्रति ब्रज की बाम आवै जसुमति के सदन॥
सुदिन निरखि घनस्याम लै लै गोद खिलावहीं

इहि बिधि बिहरत बालकन्हाई। कछु दिन में सकल सुखदाई॥
लागे चलन निघुटनि वन आंगन। लगे मात सौं माखन मांगन॥
खेलत मणिमय आंगन माहीं। देखत हँसत वदन निज परछाहीं
कबहुँक ताकहँ पकरन धावैं। जानु पाणि विचरत छबि पावैं

कवहूं किलक तात मुख पेखै । कवहूं हंसि जननी तन देखै
कवहूं वुलाय लेत नंदराई । कवहूं जननि ढिग आवत धाई
कवहूं किलक अनत रुचि भाजै । गिरत परत घुटुवन छवि छाजै
कवहूं कजात जहां बलभाई । खेलत गोपग्वाल समुदाई ॥
कवहूं कहत कछु तोतर वाता । सुनत होत सुख पूरण गाता ॥
कहन चहत कछु प्रगट न आवै । माखन मांगत सैन बतावै ॥
मात समुद्र सफल तै लेई ॥ कछु खवाइ कछु कर धर देई
खेलत खात कान्ह मणि अंगना । इत उत करत घुटनियन रिंगना

करचूरा पग पैंजनी तन रंजित रज पीत ॥
उर हार नख कौटि किंकिणि मुख मंडित नवनीत
झुनत चकित चित चाय वजत पैंजनी शब्द सुनि
सूर सुनि रहत लुभाय बाल कृष्ण के चरित लखि

खेलत आंगन बाल गुविंदा । तात मात उर करत अनंदा ॥
चलत पाणि पद की परिछाहीं । प्रतिविंवत मणि आंगन माहीं
मनहुं सुभग छवि मोहन पाई । जलज माझ जनु लेत भुराई ॥
किधौं जानि पद कोमल नासन । धरि धरि देन कमल के आसन
निरषि सुभग सोभा सुखदनियां । लिये हरषि सादर नंदरनियां
नील जलज तन सुन्दर स्यामा ॥ सुभग अंग सब छवि के धामा
अरुण तरन नखजोति सुहाई । कोमल कमल चरण सुखदाई
रुनझुनि पैंजनि पायन राजै । मनसिज यंत्र सुनत सुर लाजै ॥
कटि किंकिणि जटित रचकारी । पीत झगुलिया सुभग संवारी
कर कमलनि चूरा छवि छाजै । रुचिर बाहु भूषण अति राजै ॥
कठुला कंठ हीर वर सुहाये । कुच विच पदक मनोहर सुहाये
चारु चिवुक दंतवरनि न जाई । गोल कपोल परम छवि छाई
अरुण अधर अधिक दुसन दुति [illegible] हसन में होत

मानहु सुन्दरता सदन रूपरत्न की रीति ॥ ११ ॥

सो० मधुर तोतरे बैन श्रवणसुखद सुनि मनहरन
सुनत होत मन चैन समुझत कछू बनै नहीं ॥

नासा सुभग कमलदल लोचन । भाल बिशाल तिलक गोरोचन ॥
भ्रुकुटि निकट मसि बिंदु किलक्यौ । अलि सावक सो सोयन जाग्यौ ॥
लाल चौतनी सीस सुहाई । विविधि रंग मणि गण लटकाई ॥
बालदसा के कच घुंघुरारे । छिटकि रहे कछु घूम घुमारे ॥
मंजुल नारन की चपलाई । बाल दसा की ललित सुहाई ॥
चंदवदन सुखसदन कन्हाई । निरखि नंद आनंद अधिकाई ॥
कहन चूमि उर सो लपटायो । सोसुख कापै जात बतायो ॥
ब्रजयुवती सब चितवन ठाढी । मनहु चित्र पुतरी लिखकाढी ॥
प्रेममगन नंदसुवन निहारैं । गृहकाज की सुरत बिसारैं ॥
ब्रजयुवती हरि सो मन लावैं । नंदसुवन सबके मन भावैं ॥
ब्रजवासी प्रभु सबके नायक । प्रेम विवस जन के सुखदायक ॥
बालचरित लखि सुरसुख पावैं । योग दृश्य सनकादि भुलावैं ॥

करत बाल लीला ललित परम पुनीत उदार
सुन्दर स्याम सुजान हरि भक्तन के आधार ॥
कापै बरन्यौ जाय बालचरित नंदलाल को
कहन सकहि न गाय शेष कोटि सादर सहस ॥

अथ नाम करन लीला

एक दिन श्री वसुदेव विज्ञानी । पठये बोलि गर्ग मुनि ज्ञानी ॥
करि पूजा विधिवत बैठायो । युग पद कमल सीस सब नायो ॥
यह हरि कह्यौ सुनिये ऋषिराई । जब तैं भयो कंस दुखदाई ॥
तब तें गोकुल नंद अवासा । जाय रोहिणी कियो निवासा ॥

जाकेगर्भजन्म सुतलीनो ॥ कंसत्रास सौंप्रगटनकीनो ॥
नामकरण ताकौ अवताई ॥ भयौनाहिं तुम विनागुसाई
करिकैकृपातहां प्रभुजैयै ॥ ताकौनामराखि के ऐयै ॥
सुनिवसुदेववचन सुखपायौ हर्षसहित मुनिगोकुलआयौ
नंदरायऋषि आगमजान्यौ अपनोवडौभाग्यकरिमान्यौ
चरणधोय चरणोदकलीनो ॥ अर्घासनअति हितकरि दीनो
वडीकृपा कीन्हीऋषिराजू ॥ मोसम धन्य आन नहीं आजू ॥
अति पुनीतभोजनवनवायो। विविधि भाँति ऋषिरायजिमायो

बहुरि महरि ऋषिराय सों कह्यो जोरि कर दोय
केहि काज प्रभु आगमन कह्यो कृपा करि सोय
तब बोले ऋषिराज पठये हैं वसुदेव मोहिं॥
नामकरण के काज सुभग रोहिणीसुवन कों

सुनत नंद अति भये सुखारे। लै आये कनियां दोउ बारे॥
मुनि चरणन मेले दोउ भाई। दै असीस प्रमुदित ऋषिराई॥
हरि की छवि अति आनंदकारी। देखि रहे मुनि पलक बिसारी॥
प्रथम नंद बलि हाथ दिखायो। जन्म दिवस मुनि पास सुनायो॥
देखि गर्ग उठि कियो विचारा। है यह सिसु सब जग नृपधारा॥
अति सुभ लक्षण बलको धामा। धर्यो नाम तिनको बलिरामा॥
बहुरि नंद चरणनि सिर नायो। कह्यो कि ऋषि मम भाग नि आयो॥
तुम सर्वज्ञ अहो मुनि नाथा। देखिय या बालक को हाथा॥
मुनिवर देखत चित्त भुलान्यो। प्रेम मगन सब तन पुलकान्यो॥
पुनि पुनि हरि को बदन निहारी। बोल्यो मुनिवर सुत संभारी॥
धन्य नंद धनि मात जसोदा॥ धनि धनि धन्य खिलावत गोदा॥
सुनहु नंद मैं सत्य बखानों॥ इनको तुम सुत करि मत मानो॥

रूपरेख जाके नहीं अज अखंड अनूप॥
सो भक्तनहित अवतरे उ निज इच्छा मनरूप॥
इनतें बड़ो न कोय ये करता सब जगत के॥
जो ये करैं सो होय तुमसों हम सांची कहैं॥

इनके नाम अमित जग माहीं॥ नंद पि कहों मैं कछु तुम पाहीं॥
इन पहिले वसुदेव के धामा॥ लियो जन्म सुन्दर वर स्यामा॥
ताते वासुदेव इक नामा॥ सो सुमिरत अघ पावहिं कामा॥
कलिहिं कृष्ण बहुरि जग माहीं। जाके सुमिरत पाप नसाहीं॥
अरु ये जैसे कर्म निकरि हैं॥ तैसे नाम जगत बिस्तरि हैं॥

दुष्ट दलन संतन सुख दाता॥ भूमि भार हरी है दोउ भ्राता॥
तुम कबहूं तप कर यह मांगा। तुमहिं खिलावैं अति अनुरागा।
ताते सुत करि तुम ये पाये॥ मत जानो इनको निज जाये॥
ये अति सुख दाता ब्रज केरे । करि हैं ये आनंद घनेरे ॥
मुनि ऋषि सुख हरि यश सुख रासी। आन देव सब ब्रज के वासी॥
सुनत नंद जसुमत सुख पायौ। मुनि चरणनि कौं सीस नवायौ।
बहुत भेंट लै आगे राखी॥ अस्तुनि बहुत भांति सों भाखी।

विदा भये ऋषिराज तब नंद भाग्य बड़ भाखि
चले मधुपुरी कौं हरषि हरी मूरति उर राखि
कह्यौ हरषि ऋषिराय सब वृतांत वसुदेव कौं
सुनत बहुत सुख पाय ऋषिहिं पूजि कीन्हे बिदा

जसुमति समुझि गर्ग की बानी। आपनि अति बड़ भाग निजानी।
हरि कौं लै उर सौं लपटायौ। प्रमुदित अस्तन पान करायौ।
स्याम राम मुख निरखत मोदा। मात रोहिणी और जसोदा॥
खकि खकि हरि बैठत गोदा। भाषत हरि के बाल विनोदा।
हरि कौं गोद लिये दुलरावै॥ पुनि पुनि तुतुरे बोल बुलावैं।
कबहुंक गावत दै कर तारी। कबहूं सिखावत चलन मुरारी।
तनक तनक भुज टेक उठावैं॥ क्रम क्रम ठाढ़ो होन सिखावैं।
पुनि गहि भुज पद द्वैक चलावैं। लरखरात लखि मन सुख पावैं।
मनही मन यौं विधिहि मनावैं। कब धौं अपने पायन धावैं॥
कबहुंक छोड़ देत अँगनैया। खेलत मुदित तहां दोउ भैया।
गौर स्याम बलराम कन्हैया। संगहि संग फिरत दोउ भैया।
जिमि बछरन के पाछैं गैया। ब्रजवासी जन लेत बलैया॥

धौल धूरि धूसर तन बाल विभूषण अंग॥
अंजन रंजित दृग चपल निरखत लजत अनंग

विहरत आनंद कंद मोहि मैं खोगन कंद ॥ ॥
पट्कुल केरवि चंद दहन दनुजकुल कनक

कबहूं गाढ़ै होति गहि मैया । कबहूं चालन चलत कन्हैया
कुलही चित्र विचित्र कुसुम्भिय । दसक उठत है लखित दंतुलिय
मुनि मनहरन मंजु मसि बिंद । सुवद चारु लोचन अरविंद
कबहूंक बचन तोतरे बोलैं । मणिमणि खंभ डगन डग डोलैं
निरखन रूप रूकत प्रतिबिंबै । वे तप सम सुख पितु अरु अंबै ॥
मथिन जहाँ दधि नंद की रानी । होत खरे तहाँ टेक मथानी ॥
मात तनक दधि देत खवाई । लेत प्रीति सों सो सुख नाई ॥
क्षीरसमुद्र जासु रज धानी ॥ तनक दही सो तिन रुचि मानी
तनक सी वदन तनक सी दतियां तनक से अधर तनक सी बतियां
तनक वदन दधि तनक कपोलनि तनक हंसन मन हरत अमोलनि ॥
तनक तनक कर तनके माखन तनक अंगुरियां तनके चाखन
तनक तनक भुज चरण सुहाये तनक स्वरूप मनो उलजाये ॥

तनक दियो कनि जासु को सकल भुवन विस्तार
तनक सुने यश होत है तनक सिंधु संसार ॥
तनक रहत नहिं पाप तनक नाम जाको लिये ॥
मिटत सकल भव पाप तनक कृपा जापहि करहिं

अथ वरसगांठ लीला ॥

वरस गांठ लालन की आई ॥ द्विषट मास के भये कन्हाई
फूली फिरत जसोमति माई घर घर से सब बधू बुलाई ॥
प्रमुदित मंगल माट करायो आनंद उमगे तूर बजायो ॥
आंगन सकल सुगंध लिपायो रचि रचि मोतिन चौक पुरायो
फूले फिरत नंद सुख भारी ॥ लियो गोप गन सकल हंकारी

द्वारन वंदन वार बंधाये ॥ ध्वज पताक रचि विविध बनाये
पान फूल फल डार रसाला ॥ हरद दूब दधि अछत माला
मंगल द्रव्य सकल मंगवाई ॥ बहु मेवा बहु भाँति मिठाई
जसुमति कान्ह उबटि अन्हाये । अंग पोंछि भूषण पहिराये ॥
टोपो जरकसि पोत अंगुलिया । दमकति द्वै द्वै चार दंतुलिया
कठुला कंठ बघत हानो कौ ॥ कियो भाल केसर को टीकौ ॥
लटकत ललित ललाट लटूरी । बरनि न जाय वदन छवि सूरी

नयन अंजि भ्रुकुटी निकट कियो मात मसि बिंद
करि सिंगार हरि सुख निरखि चूम्यो सुख अरबिंद ॥
लिये गोद सुख कंद नंद बोलि जसुमति कह्यो
बोलहु भूसुर वृंद लग्न धरी आवत चली ॥

काहे कौ अब गहर लगावत । विप्र बेग काहे न बुलावत ॥
नंद छिप्र वर विप्र बुलायो ॥ पद पखारि आसन बैठायो
लै उछंग लालन नंदराई ॥ बैठे हरषि चौक पर जाई ॥
वेद मंत्र विधि सहित पढावत । वरस गांठ सुर सहित जुरावत
ब्रजनारी सब बन बन आवैं ॥ मंगल तिलक स्याम कौं ल्यावैं
गावैं मंगल कोकिल बैनी ॥ हरि दरसन प्यासो मृगनैनी
तिलक सबनि मोहन कौं दीनो । देखि देखि मुख अति सुख लीनो
विप्रण बहुत दक्षिणा पाई ॥ बांटी सबकौं पान मिठाई ॥
धन मणि चीर निछावर कीने । वारि वारि नेगिन कौं दीने ॥
नव सारी पचरंग मगाई ॥ हरषति महरि वधुन पहिराई
देत असीस सकल अति मोदा । लेत जसोमति भरि भरि गोदा
नित नव गोकुल होति वधाई । सदा स्याम जन के सुखदाई

धन्य जसोमति धन्य नंद धन धन बालि विनोद
धन्य सुमन जिन जनन के रहत सदा रस मोद

धनधनव्रजकी वालकोहिकाहिसुखरपहिंसुमन
धन्य धन्य नंदलाल दैत्यदलनसज्जनसुखद॥

कान्ह चलत पग द्वै द्वै धरनी। होति मुदित लखि नंदकी घरनी
करति हुती अभिलाष जोई। निरखति अपने नैननि सोई
रुनक झुनक नूपुर पग बाजैं। डगमगात डोलत छबि छाजैं
बैठि जाति पुनि उठन तुरतहीं। देहरि लौं चलि जात फुरतहीं
धाम अंगन घर खल अटकाई। गिरि गिरि परत नाघ नहिं जाई
कीनी तीनि पैंड़ जिन वसुधा। देहरि नाघि न जावत जसुधा
पकरि पाणि जसुमति उनरावै। लखि सुरमुनि मन विसमय आवै
कोटि ब्रह्मांड रचै पल माहीं। पल मैं बहुरि मिटावै नाहीं
ताहि खिलावति जसुमति प्यारी। नाना विधि सुख करि किलकारी
कबहूं दै कर तारि नचावै॥ कबहूं मधुर मधुर सुर गावै
देखि स्याम जननी के ताई॥ आपन गावत तार बजाई॥
पग नूपुर कटि किंकिणि कूजे। लखि छबि मन अभिलाषहिं पूजे

अमल कलुषा कठ कव उर हरि नख छबि रास
मनहु स्याम घन मैं कियौ नव शशि विमल प्रकास
जननि कहति बल जाउं नचहु लेहु नवनीत सद
धरत रुनक झुन पांउ त्रिभुवन पति नवनीत हित

बोलनि लगे स्याम कलबानी। कछुक तोतरी कछुक सयानी
नंद हि तात जसोदहि मैया॥ बलि सौं दाऊ कहत कन्हैया
मातहि उठि मांगत दोउ भैया। माखन रोटी देय री मैया॥
अंचर गहे न मानत बाता॥ अति आतुर दुन कन्द दोउ भ्रात
सुनि सुनि मधुर वचन सुख पावै। तातें जननी गहरु लगावै॥
जननि सध्य सुमुख शाकपेन। पाछे ठाढे सुभग स्याम तन॥
मनो सारसनी संग युग सुसी। राजहंस अरु मोर विचरसी॥

कबरी गही स्याम खिजवाई ॥ मुक्ता माय गहे बलि भाई ॥
मानहु दुहुंन निज निज भख लीनौ ॥ जननी सों झगरा बहु कीनौ ॥
नंद देखि हंस हंस रस लोटी ॥ जसुमति मुदित कम्प की मोटी ॥
कत हो आरि करत गहि चोटी ॥ यह है बात मोहन तेरी खोटी ॥
जो चाहौ सो लेउ दोऊ भैया ॥ कान्ह कलेऊ में बल भैया ॥

दियो कलेऊ मात उठि माखन रोटी हाथ ॥
खात खवावत बालकन सकल विस्व के नाथ ॥
जेहि ध्यावै योगीश सनक सनंदन आदि मुनि ॥
कौतुक निधि जगदीश करत चरित संतन सुखद ॥

अथ ब्राह्मण लीला

चलत लाल पैंजनि के चायन ॥ पुनि पुनि हर्षित लषि रुपायन ॥
विविध ग्वाल बालन संग लीने ॥ डगमगात डोलत रंग भीने ॥
कबहूं दौरि द्वार लौं जाहीं ॥ कबहुं भाजि आवैं घर माहीं ॥
ब्राह्मण एक नंद के आयौ ॥ महा भाग्य हरि भक्त सुहायौ ॥
गोपन कों सो पूज्य कहायो ॥ पुत्र जन्म सुनि के उठि धायो ॥
जसुमति देखि आनंद बढ़ायो ॥ आदर करि भीतर बैठायो ॥
पांय धोय जल सीस चढ़ायो ॥ पाक करन को भवन लिपायो ॥
अहो विप्र विनती सुनि लीजे ॥ जो भावै सो भोजन कीजे ॥
धेनु दुहाय दूध ले आई ॥ पांडे रुचि करि खीर बनाई ॥
घृत मिष्ठान खीर मिश्रित कर ॥ कंस भाग हित थार परसपर ॥
वेद मंत्र पढ़ि कै हरि ध्यायो ॥ नैन मूंदि कै ध्यान लगायो ॥
नैन उघारि विप्र जो देख्यो ॥ स्याम हिं आगे जेवत पेख्यो ॥

अहो जसोदा आपने सुकृत लल देख्यो आय ॥
सिद्ध पाक सब आय के डास्यो कान्ह जुठाय ॥

महरि जोरि युगपानि विनै करी द्विज प्रेम सन
बालक अति अज्ञान बहुरि पाक विधि कीजिये

बहुरि देव मिष्टान मगायौ ॥ ब्राम्हण जो फिरि पाक बनायौ
तबहीं ध्यान धर्यो मन लाई तबहीं आयौ खान कन्हाई
ऐसहि विप्रन जैंवन पावैं ॥ बार बार हरि दौरि के खावैं ॥
तब हरि सौं जसुमति रिस पाई कर्नहि पचक रीकरत कन्हाई
मै इच्छा करि विप्र जिमाऊं ॥ बार बार भोजन यन बाऊं ॥
यह अपने ठकुरहि जिमावै ताकौं तू गोपाल खिजावै ॥
मैया मोहि जिन दोष चावै ॥ बार बार यह मोहि बुलावै ॥
नैन मूंदि कर जोरि मनावै ॥ बहुत भांति करि विनै सुनावै
लै लै नाम कहत प्रभु ऐयै ॥ खीर खांड यह भोग लगैये
तब मै रहि न सकौं उठि धाऊं यासौं दोनौं भोजन पाऊं ॥
प्रेम सहित जब मोहि बुलावैं तब नहि रहत मोहि बनि आवैं
सुनत गद्गद हरि के बैना ॥ खुल गये विप्र हृदय के नैना ॥

धनि धनि गोकुल नंद धनि धन्य जसोदा माय
धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज जहँ प्रगटे हरि आय

सुफल जन्म प्रभु आज प्रगट भयो सब सुकृत फल
दीनबंधु ब्रज राज दियो दरस मोहि कृपा करि

बार बार कहि नंद के आंगन लोटत द्विज आनंद मगन मन
मै अपराध कियो बिन जाने ॥ को जाने किह भेष समाने ॥
भक्त हेत बस रहत सदाई ॥ यहै नाथ तुम्हारी बड़ियाई ॥
जे जे चरण तुम्हारी आए ॥ ताते भये पुनीत सुहाए ॥
पतित उधारन यश विस्तारा अघ जारन इक नाम तुम्हारा
देह धरत यो द्विज हित लागी पायौ दरस भयौ बड़ भागी ॥
हित की चित की मान निहारे सब के जिय की जान निहारे ॥

शरणि शरणि प्रभु शरणि तुम्हारी। दीनदयाल कृपाल मुरारी
हँसत श्यामजसुमति ढिग ठाढे ॥ प्रेम मगन मन आनंद बाढे
निजजन जानि कृपा अति कीन्ही। प्रेम भक्ति हरि ताकौं दीन्ही
प्रेम मगन द्विज बारम्बारा ॥ कहि जै जै जै नंदकुमारा ॥ ५ ॥
पुनि पुनि पुलकत देत असीसा ॥ बिदा भयो घर कौं द्विज ईसा ॥
दो॰ ॥ देषि चरित्र जसुमति चकि परी विप्र के पाय ॥
दये रत्न बहु दक्षिणा चले हर्षि द्विजराय ॥ ७ ॥
जसुमति लिये उछंग गोद खिलावत कान्ह कौं ॥
चितै वदन द्युति अंग आनंद निधि सुख कौ सदन

शोभा मेरे हरि पर सोहै ॥ मैं वलि वलि पट नर को को है ॥

हाथ लिये तोहि खेलत हरि है। नेक नहीं धरनी पर धरिहै ॥
जल पुट आनि धरणी पर राख्यौ। गहि आन्यौ शशि जननी भाखे

तोहि लाल यह चंद मैं लीनो निकट बुलाय ॥
रोवै इतने के लिये तेरी स्याम बलाय ॥ ॥
देखहु स्याम निहारि या भाजन मैं निकट शशि
करो इती तुम आरि जा कारण सुंदर सुवन ॥ ॥

ताहि देखि मुसिक्याय मनोहर ॥ बार बार डारत दोऊ कर ॥
चंदा पकरत जल के माहीं ॥ ॥ आवत कछु हाथ मै नाहीं ॥
तब जलपुट के नीचे देखै ॥ तहां चंद प्रति बिंबन पेखै ॥
देखत हंसी सकल ब्रज नारी ॥ मगन बाल छबि लखि महतारी
तबहिं स्याम कछु हंसि मुसिकाने। बहुरै माता सों बिरुझाने ॥
ल्यौ गोरी मा चंदा ल्यौगो ॥ बाहिर अपने हाथ गहौंगो ॥
यह तो कलमलात जल माहीं। मेरे कर में आवत नाहीं ॥ + ॥
बाहिर निकट देखि यत वाही ॥ कहै तो मैं गहि ल्याऊं ताही ॥
कहति जसोमति सुनहु कन्हाई ॥ तुम मुख लखि सकुचत उडराई
तुम तेहि पकरन चहत गुपाला ॥ ताते शशि भजि गयो पताला ॥
अब तुम ते शशि डरपति भारी ॥ कहत अहो हरि शरण तुह्मारी
बिरुझाने सोये दै तारी ॥ लिये लगाय छतिया महतारी ॥ ॥

लै पौढाय सेज पर हरुये जसुमति माय ॥ ॥
अति बिरुझाने आज हरि यह कहि रपाछु नाय
कर सों ठोंकि सुवाय मधुरे सुर गावत कछुक ॥
उठि बैठे अतुराय चट पटाय हरि चौंकि कै ॥

अथ पुरातन कथा लीला ॥

पौढे लाल कहत महतारी ॥ कहौ कथाइक अहै सानि प्यारी ॥

हर्षैयह सुनिमन घनवारी ॥ पौढ़िगये हसिदेत हुकारी ॥
नगर एक बर्णौक सुहावन ॥ नाम अवौध अतिसुंदर पावन
बहु मंदिलतहा अगम अटारी ॥ सुंदर विशद चारगघटारी ॥
बहुलगली पुरवीथ सुहाई ॥ रहै सदा सब सुगंध सिंचाई
भांति भांति बहु हाट बजारू ॥ अतिसुंदर जनों किम्ब सिंगारू
तहा नृपति दशरथ रजधानी ॥ तिनके तीन तीनि पटरानी ॥
कौशिल्या केकई सुमित्रा ॥ ॥ तिनजन्मे सुत चारि पवित्रा ॥
राम भरत लछमण रिपुहंता ॥ चारौ अति सुन्दर गुणवंता ॥
तिनमें एक राम ब्रतधारी ॥ अतिसुन्दर जनके हितकारी
विश्वामित्र एक ऋषिराई ॥ तिनहि सतावै निश्चर आई ॥
तिननृप सों द्वैसुत लिये मांगी ॥ अपनी रक्षा के हित लागी ॥

रामलषण ऋषिलैगयेदनुजहतेतिनजाय ॥
ऋषिदीनीविद्यावहुततिनकोंअतिसुषपाय
तहांजनकइकभूपधनुषजज्ञतातेंरच्यो ॥
कन्यातासुअनूपजुरेतहांभूपतिअमित ॥
ऋषिलैगयेकुंवरतहांदोऊ ॥जनकरायसनमानेसोऊ॥
धनुषतोरिभूपनमुखमारी ॥रामविवाहीजनककुमारी॥
चारहुकुंवरव्याहतहांआये ॥भयेअवधिपुरअनंदवधाये
रामहिंदेनलगेनृपराजू ॥ ॥सज्यौसकलअभिषेकसमाजू
ताहीसमयकेकईरानी ॥चेरीकीमतिसौंवौरानी ॥ + ॥
वचनमांगिराजासोंलीनो ॥वनकोवासरामकौदीनो ॥
सुनिपितुवचनधर्महितधारी।नारीसहितभयेवनचारी॥
तिन्हैचलतभ्रातासंगलाग्यो।उनकेतातपिनातनत्याग्यो।
चित्रकूटगएभरतमिलनजव।दैपदपावरिकृपाकरीतव ॥
युवतीहेतुकपटमृगमारा ॥राजिवलोचनरामउदारा ॥
रावणहरणकियोतवनारी।।सुनतस्यामघननींदविसारी
चौंकिकह्योलक्ष्मणधनुदेहू ॥देखभयेजसुदाहिसंदेहू ॥
छं॰॥संदेहजननीमनभयोहरिचौंकिधौंकाहेपरौ
कहूंदीठखेलनमैंलगीधौंस्वप्नमैंकाहूडरौ
वहुभांतिदेवमनायपढिकैमंत्रदोषनिवारई
लैपियावतपानीवारिपुटिपुनिराईलोनउतारई
दो॰॥सांरुहितेंविकरायहरिकरीचंदहितआरि
रिझकरउकौधौंताहितेंरह्योसुरतउरधारि ॥
सो॰॥वडभागिनिनंदनारिमहिमावेदनकहिसकै।
हरिकौवदननिहारिविसरावतित्रियतापदुष
अथकर्णछेदनलीला ॥

प्रात नंद्रट्ठि हरिपहँ आये॥ मुख छबि देखनको अतुराये
निसि के छुद नयन अति पारत॥ हरुवे करि मुखते पट टारत॥
स्वच्छ सेजतें बदन प्रकास्यो ॥ छुदतिमिर नयननिको नास्यो
मनहु मयनपै निधि उहराई॥ फेरणफोरिकै दई दिखाई॥
धाये ब्रजजन चतुर चकोरा॥ इकटक रहे बदन ससि ओरा।
फूली कुमद निसी महतारी॥ कहत उठहु सुतमें बलिहारी
माखन रोटी अरु मधु मेवा॥ जो भावै सो करहु कलेवा॥
सद माखन मिसिरी तव आनी॥ कछु खवाय धोये मुख पानी
देखि बदन छवि महरि सिहानी॥ कहति नंदसों जसुमति रानी
कन छेदन अब हरिको कीजे ॥ कुहल सहित देखि सुख लीजे
खोलि विप्र शुभ दिवस गनायो॥ जाति कुटुंब सब न्योत बुलायो
कुल व्यवहार रचिये सब साजा॥ विविध भाँति बहु बाजन बाजे

छं॰ बाजी बधाई बिबिधि आंगन नारि मंगल गावहीं ॥
सुर निरषि अति हर्षि सुमननि बर्षि गोकुल छावहीं
करि प्रथम मुंडन स्याम कौ पुनि करणवेधन विधि ठई
भरिकै सुपारी पान ऊपर बहुरि गुर भेली दई ॥ ॥
हंसत सुरगण सहित विधि हरि मात उर अति धुकधुकी
अतिहि कोमल श्रवण वेधत सकत नाहिं सम्हारि बलकी
भरि सोक रोचन देत श्रवणनि निकट करि अति चातुरी
हेंद्र मगाये कनक के कहु कहौ छेदन आतुरी ॥
देखि रोवत जननि लीने विहसि तब ही रुकि चली
हसत नंद सब युवति गावहिं रमकि भीतर लै चली
कहति सुर बनिता परस्पर धन्य धनि ब्रज भामिनी
नहि नयन की किंकिरी सम हम सकल सुर की कामिनी

दो॰ करति निछावरि ब्रज बधू धन मणि भूषण चीर ॥
सकल असी सत नंद सुत जहं तहं जाचक भीर ॥

सो॰ ॥ पहिरावत नंद राय ब्रज युवती भूषन वसन ॥
आनंद उर न समाय मनहुं उमग चहुं दिस चल्यो ॥

नितहीं नव सुद मंगल ताके ॥ मंगल मूरति हरि सुत जाके ॥
जेहि विधि तात मात सुख पावै ॥ सुखनिधान सोई चरित उपावै
जाको भेद वेद नहिं पावै ॥ नंद भवन सो कान्ह कहावै ॥
निज भक्तन हित नर तन धारी ॥ करत बाल लीला सुखकारी ॥
हरि अपने रंग निकछु गावैं ॥ नंद भवन भूषण मन भावैं ॥
तनक तनक चरणनि सों नाचै ॥ मन मन रीझि विविधि विधि राचै
मंद मंद पग नूपुर बाजें ॥ ॥ बाल बिभूषण अंग बिराजें ॥
कबहूं भुजा उठाय बुलावै ॥ धौरी धूमरि गाय बुलावै
कबहूं माखन लै मुख नावै ॥ कबहूं खंभ प्रति बिंब कचावै ॥

माखनभाग दुहूकर लेई ॥ एकभोग प्रति बिंबहि देई ॥
तासोंकहत लेव क्यो नाही ॥ डारदेत काहे महि माही ॥
दुरदेखत जसुमति महतारी। उर आनंद करति अति भारी

दो ॥ हरषित जननि मुख चूमि के लीनो गोद उठाय ॥
परमानंद सुमगन मन सो सुख किमि कहि जाय

सो ॥ कौतुक निधि भगवान करत चरित नित नित नये
सुन्दर स्याम सुजान ब्रजबासिन के प्रेम बस ॥
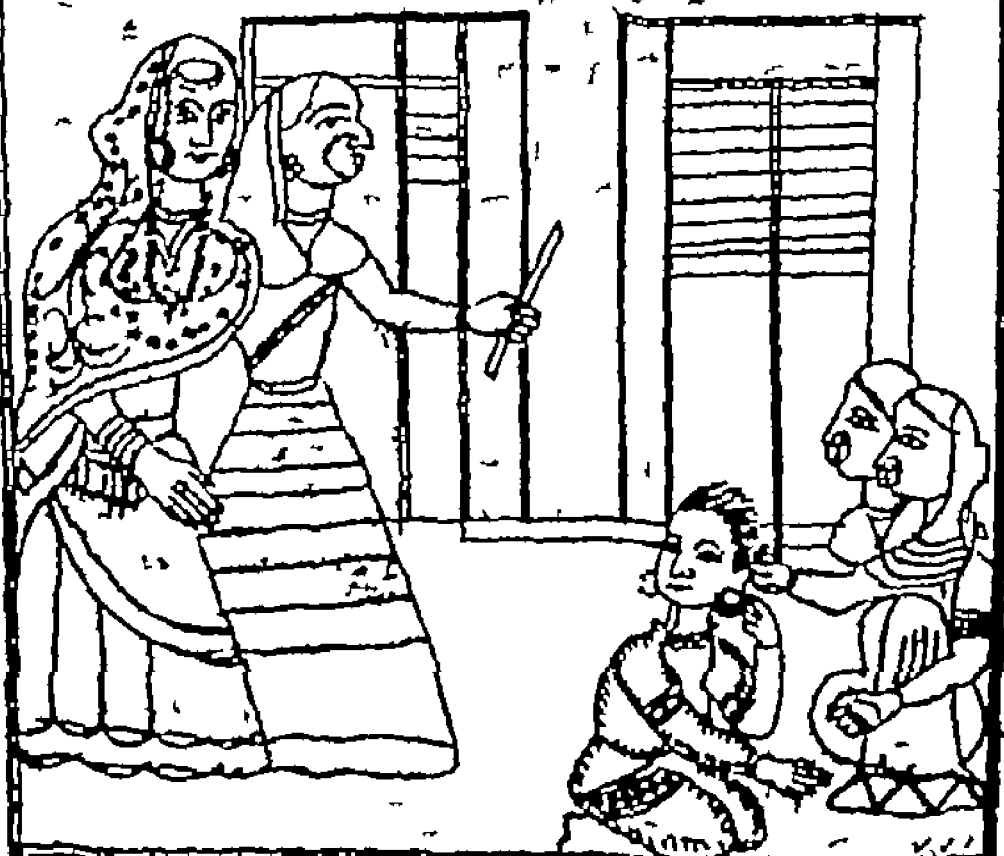
अथ माटी खान लीला

खेलत स्याम धाम के द्वारे ॥ सोहत ब्रजलरिका संग बारे
सति सज्ञान सदनि मति भोरी ॥ सबकी प्रीति स्याम संग जोरी

सकवेस सव परम सुहाये ॥ करतबाललीला सचुपाये।
गावतहंसत देत किलकारी ॥ लखिलखिसुखपावतमहतारी
निरषि रूप सव ब्रजजन मोहैं ॥ कोटिकामनहिंपटतरसोहैं।
तनपुलकितअतिगदगदवानी। निरषिमनहिंमनमहरिसिहा
तवहिं स्यामघन माटी खाई ॥ जसुमति देखि सांटीलेधाई॥
पकरीभुजा स्याम की नाई ॥ कहतिकहायहकरतकन्हाई
उगलहु वेग वदनते माटी ॥ नाहींतो मारति हौं सांटी ॥
सवदिनझूठवतहै सवग्वालन॥ मोसों अव कहकाहिहैलालन
तवहीं मोहन गनीलग राई ॥ कहति कि मैं माटी नहिखाई
झूठहिं मोंको लोग लगावैं ॥ माटी मोको नेकन भावे ॥

दो०॥ झूठकहततोसोंसवै माटी मोहिसुहाय ॥
नहिमानैजो मातु तू दिखराऊंमुखवाय ॥
दीनो वदन उघारि नयन मूंदि माता निकट
देखिचकित नंद नारि तनकी सुरतिरहीनही

दिखरायै त्रिभुवनमुखमाहीं॥ नभशशि रवि तारा इक ठाहीं
सरसागर सरिता गिरि कानन॥ सुरसुर नायक शिव चतुरानन
सकललोकलोलप यमकाला॥ महिमंडलसव अगम गजाला।
देषिचरितजसुमतिअकुलानी॥ करतेंसांटी गिरतन जानी ॥
वदनमूंदितवहरिदृगखोले ॥ डरसमेतमाता सों बोले ॥
मैया मैं माटी नहिं खाई ॥ जसुमतिचकितरहीअरगाई॥
कहतिनंदसोंजसुदा रानी ॥ हरिकीकथा नजातिवखानी ॥
मांटी के मिस करिसुखवायो। तीनिलोक तामाहिं दिखायो।
स्वर्गपताल धरणिवन वागा। सुरनरअसुर विपुल खगनागा।
अपर सृष्टि कहि जात सुनाहीं। देखी सकल वदन के माहीं।
मोको परत सांच सव जानी ॥ जोकुछ कहीगर्गमुखवानी

चकित नंद सुनि अचरज बानी ॥ मन मन करत विचार बिनानी ॥
नंद कहत सुनि बावरी हरि अति कोमल गात ॥
लै सांटी धावत बृथा पुनि पाछे पाछे जात ॥
अचरज तेरी बात को जाने देख्यो कहा ॥
कुशल रहो दोउ भ्रात राम स्याम खेलत हसत ॥
कहति स्याम सों जसुमति मैया ॥ मैं तेरी बलि हारि कन्हैया ॥
मैं अजान रिस बोचन जानी ॥ ॥ बृथा स्याम तुम को रिस आनी ॥
जरहु हाथ जिन माटी उठाई ॥ बरहु आखि जिन दीठ दिखाई ॥
मधु मेवा दधि माखन छांटी ॥ खात लाल तुम काहे माटी ॥
तू कलै दूध पियो तुम न्यारे ॥ बल कौ बांटिन देहु पियारे ॥
कहत नंद सों जसुमति मैया ॥ तुहीं लाल की ठाढी गैया ॥
कजरी को पै पियो गुपाला ॥ तेरी चोटी बढै बिशाला ॥
सब लरिकन में तो तन माहीं ॥ वेग बैस बल की सधि काहीं ॥
मात बचन सुनि कै अनुरागे ॥ ज्यौं त्यौं करि पय पीवन लागे ॥
रिस न पीवै खिन खिन कच टोवै ॥ देखि देखि मुख हसत असोवै ॥
मैया कब बाढै गो चोटी ॥ पहलो है अबहीं लौ छोटी ॥
तू जो कहति है बलि ली हुइहै ॥ कोढत गुहत गोहलौं जैहै ॥
किती बार भई पय पियत चोटी यही नहाई ॥
कहि कहि झूठी बात नित दूध पियावत मोहि ॥
सुनि सुनि भोरी बात सुंदर स्याम सुजान की ॥
जसुमति मन न समात हँसि लीनें उर लायकै ॥

अथ सालिग्राम लीला ।

भोर हि महर यमुन तट धाये ॥ दरसन करि अति ही सुख पाये ॥
करि स्नान नंद घर आये ॥ पूजा हित यमुना जल लाये ॥

तुलसी दल अरु कमल पुनीता॥ प्रभु निमित्त अति आनि प्रीता।
पायं धोय प्रभु मंदिर आये॥ करी दंडवत प्रेम बढ़ाये ॥ प्र
स्थल लीप पांय सब धोये ॥ पूजा के सब साज संजोये ॥
छाप तिलक सब अंग संवारे॥ प्रभु पूजा विधि करन संवारे॥
कुंवर कान्ह खेलत तें आये ॥ देखत पूजा विधि चितलाये।
विधिवत देव नंद अन्हवाये। चंदन तुलसी फूल चढ़ाये ॥
पट अंतर दे भोग लगायो ॥ आरति चरणनि सीस नवायो॥
तवहीं स्याम विहंसि उठि बोले। कहत तात सों वचन अमोले
बाबा तुम जो भोग लगायो ॥ सो तो देव कछू नहिं खायो ॥
सुनि हरि वचन श्रवण सुखदाई। चितै रहे मुख हंसि नंद राई।

कहत नंद सुखपाय कै यों नहिं कहिये तात
देवन को कर जोरि कै कुशल रहै जिहि गात॥
हंसत स्याम सुखदानि नंद सुरूप न जानहीं
रह्यौ तिनहिं सुत मानि करत सुव्रजलीला सगुण

देखति जननि तहां दुरि ठाढ़ी॥ मगन प्रेम रस आनंद बाढ़ी।
बैठे नंद समाधि लगाई ॥ तब एक लीला रची कन्हाई
सालिग्राम मेल मुख माहीं॥ बैठि रहे हरि बोलत नाहीं ॥
ध्यान विसर्जन करि नंद जागे॥ सालिग्राम न देखे आगे ॥
चितवत चकित चित्त नंदराई ॥ सुखदेव किन लिये चुराई ॥
इत उत खोजत पावत नाहीं ॥ भयो बड़ो अचरज मन मांहीं
विहसत हरि के मुख मे जाने। देखत महरि महर मुसकाने
मुख ले लाल जननी बलि जाई॥ उगिलहु सालिग्राम कन्हाई
मुख ते तवहिं काढि व्रजनाथा। दियो देवता नंद के हाथा ॥
हरि के चरित कहत नहिं आवै। बाल विनोद मोद उपजावै॥
लाख लखि मात पिता पुलकाहीं। देखि देखि सुर सिद्ध भुलाहीं

धन्यधन्य सब ब्रज के बासी ॥ बिहरत जहां ब्रह्म अबिनासी
परते परतें ब्रह्म जो निर्गुण अलख अनूप ॥
सो ब्रज भक्तन प्रेम बस बिहरत बालक रूप ॥
प्रेम मगन पितु मातु निस दिन जात न जानहीं
कौंहू मन न अघात सुनत बचन देखत दरस ॥

अथ अन्हवावन लीला ॥
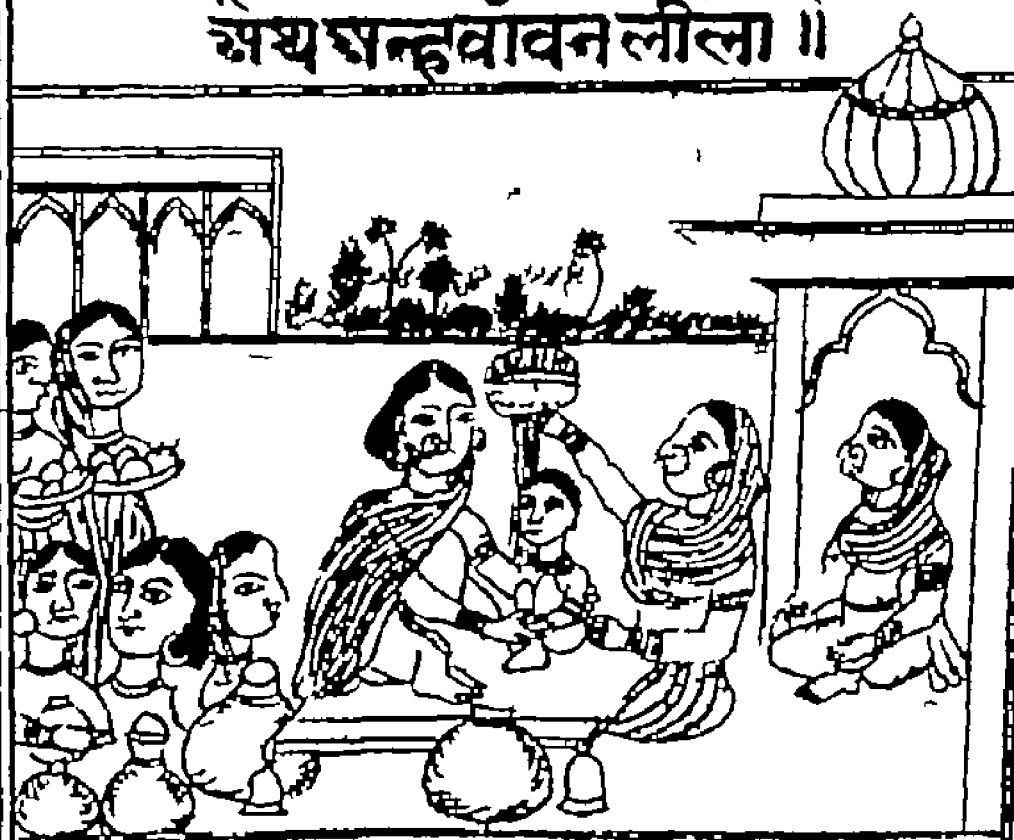
जसुमति स्याम सों कह्यो अन्हवावन । सुनतहिं मचल परे मनभावन
उबटन ले आगे गहि बाहीं ॥ लोटि गये हरि मानत नाहीं ॥
तब जसु मति बहु भांति दुलारे । मेवलि उठहु न्हाहु जिन प्यारे ।
उबटन पाछे धरे दुराई ॥ फुसलावति सुनु स्याम कन्हाई
मेवलि ऐसी आरि न कीजै । जो चाहै सो मांगे लीजै ॥ + ॥
कत हि लाल रोवै दुख पावै । ऐसो को जो तोहि खिजावै ॥

अतिरिस तें मैं बलि तन छीजे ॥ सुन्दर कोमल अंग पसीजे ॥
बरजत ही बरजन विरुझाने ॥ करि करि क्रोध मनहिं अकुलाने ॥
धरत धरल धरनी पर लोटैं ॥ गहि माता के चीरन मोटैं ॥ ११
गहि गहि अंग के भूषन तोरैं ॥ दधि माखन के भाजन फोरैं ॥
धस्यो तपत जल जननी पासे ॥ मानत नाहिं ताहि तैं त्रासे ॥
महरि बांह धरि कै तब आने ॥ जबही तेल उबटने साने ॥ ५ ॥

तब दुचतो करि मात कों गिरत परत गस भाज
नेक निकट आवे नहीं भल मोहन ब्रज राज ॥
तब चुचकारे मात सों मभेद कहि कहि वचन
मैं बलि आवहु तात नहिं आवहु तो जानिहौं

तुम मेरी रिस को हरि जानो ॥ मो कौनीकी विधि पहि चानो ।
जो नहिं आवहु मदन गुपाला। आज तुम्हें मैं बांधों लाला ॥
तबहिं नंद उत तें चलि आये। कहत हरि हि कित आनि हि षिजा
लै कनिया उर सों लपिटाये ॥ बदन चूमि जसुमति पहं लाये ॥
कत खिजवत मोहनहिं अयानी। लै हिय लाय लिये नंदरानी ॥
कौंहूं यत्न करी जब पाये ॥ तब उबटन हरि के अंग लाये ॥
सुनिता तो जल स्नान समोयो। दियो न्हवाय वदन शशि धोयो।
सरस बदन लैके तन पोंछ्यो। बहुरी बदन सरोज अंगोछ्यो
अंजन दोऊ दृग भरि दीनो ॥ भूपर चरु चरुणौ कीनो ॥ ६ ॥
सब अंग के भूषण मगवाये ॥ क्रम क्रम लालन को पहिराये।
ऐसी रिस नहि कीजे कान्हा ॥ अब कछु खाहु जाउं बलि न्हाना
तब तुतरान कह्यो का हैरी ॥ जो मो कों भावे सो दैरी ॥ ७ ॥

कहति जननि या वचन पर मैया बलि २ जाय ॥
जोइ जोइ भावे लाल को सोइ सोइ ल्यावे माय ॥
किये अमित पकवान मैं अपने सुत के लिये ॥

सोवतकहौं वखान जो भावै सो लीजिये

सद माखन घृत दह्यौ सजायौ ॥ तुम्हरे हित पर औटि जमायौ
सोवा औटयौं मधुर मलाई ॥ तापर मिसरी पीस मिलाई ॥
अरु प्यौसर अति सरस सवारौ । तामहि मोट मिरच रुच कारी
खीर वरा करिकै दधि वोरे ॥ मानहु चंद अमी मधु खोरे ॥
खुरमा औरु जलेवी वारी ॥ जेहि जेंवत रुच होति तिहारी ॥
अरु लाडू वहु भांति संवारे ॥ जे सुख मेलत कोमल प्यारे ॥
अरु गूझा वहु पूरनि पूरे ॥ अति सुवास उज्जल अति रूरे ॥
वावर घेवर घोउ अभोरे ॥ मिसिरी पीसि तल ऊपर वोरे ॥
सुन्दर मालपुवा मधु साने ॥ नमत तुरत करि रोहिणी आने ॥
अतिही सुंदर सरस अंदरसे ॥ घृत दधि मधु मिलि स्वादन सरसे
सरस सवारी दाल मसूरी ॥ अरु कीन्हौ सीरा घृत पूरी ॥
पूरी सुनके हिय हरि हरषे ॥ तव जेवन पर मन करि करषे ॥

सुनत जसोदा तुरत ही लै आई हरषाय ॥
वलदाऊ कौ टेरि कै लीनौ नंद वुलाय ॥
षट रस के परकार जे षट तेज सुद्ध प्रथम ॥
परसि धरे सव थार जेंवत हरि वलवीर दोउ

जेंवत एक थार दोउ वीरा ॥ हरषि स्याम रुचि राख्यौ सीरा
तव सीतल जल लियौ मगाई । भरि झारी जसुमति लै आई ॥
जल अचवावत नयन जुडाने । दोऊ हरषि हरषि मुसकाने
तव जननी हंसि मुख भराये ॥ तनक तनक कछु मुख पर आये ।
रचि रचि वजरे पान खवाये । अपनिहौं अधर अरुणाई छाये ॥
ठाढे तहाँ सकल व्रज दासा ॥ लागि रहीं जूठन की आसा ॥
तनक तनक कछु मोहन राखौ । ठवुरो सो व्रजदासिन पायौ ।
सखावंद सव द्वार पुकारे ॥ खेलन आवहु कान्ह पियारे ॥

ताहि तदरस रस चात्रिक दामा। हरि अव वर्षिय घन छवि पास
विनय वचन सुनि हर्षि गुपाला. चले मनोहर चाल रसाला।
लघु लघु ललित चरण करलाला। कमल नैन उर बाहु विसाला
चंद वदन तन छवि घनस्यामा॥ अंग अंग भूषण अभिरामा॥
निरषति छवि नंदलाल को थकित सकल सुखकंद
नित्त चल चखन चकोर ननु तकत सरद कौ चंद
अति आनंद उमंग मिले सवन कौं जाय हरि॥
ब्रीडत कोटि अनंग क्रीडत बालक वंद संग
खेलन दूर गये कहूं कान्हा॥ सखिन संग धावत है नान्हा॥
वहुत अवेर भई घनस्यामहिं। खेलत तें आये नहिं धामहिं॥
निंदहिं तात मात मोहि कानन। योह्लो सुनत सुहागनजु आनन॥
भन अव सेर करत महतारी॥ पलक ओट रहि सकत न न्यारी
देखत द्वार गली में ठाढ़ी॥ सुत सुख दरस लालसा बाढ़ी॥
तन छरा हरि खेलत नें आये। दौरि मात लै कंठ लगाये॥
खेलन दूर जात कत कान्हा। मैं बलि तुम्ह अबहीं अति नान्ह
आज एक वन हाऊ आयो॥ तुम नहिं जानत मैं सुनि पायो॥
इक लरिका भजि आयो तबही। सो मोसों बूह कहि गयो अवही
वहु नो पकरि लेत है तिनको॥ लरिका कारेजानत है जिनको
चलहु भाजि चलिये निजधामहिं। यह सुनि देखलिये वलरामहिं
कनियां करिलै आई धामहिं॥ वड़भागिनि जसुमति सुतस्याम
रूप रेख जाके नहीं विधिहू अंत न पाय॥॥
हाऊ सों डर पाय तिहिं जसुमति राखति लाय
भावबस्य भगवानि भावहिं करिके पाइये॥
भक्तन के सुखदानि तेहि तैसे जैसे भजहिं॥
ब्रजवीथन खेलत मनमोहन। हलधर सुवल सुदामा गोहन

और गोप बालक वहु वारे ॥ एक वैस सब हरि के प्यारे ॥ ॥
बाल विनोद मोद मन दीन्हे । नाना रंग करत रस भीने ॥ ॥
तारी हाथ मारि सब भाजे ॥ धावत धरत होड़ करि वाजे
बरजत बलिहरि तू मत दौरे । लागे है चोट गोड़ कहु तोरे
तव हरि कह्यौ दौरि मैं जानो ॥ मेरौ गात वहुत वल वानो
है श्रीदामा जोड़ हमारी ॥ तासौं मारि भज्यौ मैं तारी ॥
बोल उठ्यौ तव ही श्रीदामा ॥ तारि मारि भाजहु तुम स्यामा
अब ही स्याम भजे दै तारी । धर्‌यौ धाय श्रीदाम हकारी ॥
तव हरि कह्यौ खेलौ नहि तोहो । ठाढो भयौ छुयौ तव मोह्यौ ।
ऐसे कहि हरि ताहि रिसाने ॥ कहत सखा सव स्याम खिजाने
अव तौ कह्यौ दौरि मैं जानौ ॥ हारे स्याम वुरौ अव मानै
मोलि उठे बलराम तव इनके माय न वाप ॥
हार जीत जाने नहीं लरिकन लावत पाप ॥
ऐहे तनकै स्याम रूठ हि रुग रत सखन संग
रूठ चले हरि धाम लखि उदास प्रभु तिजनानि
मै बलि कौं उदास घर आयौ ॥ कौने मेरौ लाला खिजायौ ॥
मैया मोहि दाऊ दुख दीनौ ॥ मोसौ कहत मोल कौ लीनौ ॥
कहा करौ या रिस के मारे ॥ मैं नहिं खेलन जात दुमारे ॥
पुनि कहत कौन तेरी माता । को तेरो तात कौन तेरो भ्राता ॥
गोरे नंद जसोदा गोरी ॥ तुम तो कारे आये चोरी
मोसौ कहत देवकी जाये । ले वसुदेव इहां निशि साये
मोल कछू वसुदेव हि दीनौ । तब के पलटे तुमको लीनौ ॥
ऐसे काहि कहि मोहि खिजावै । यौ सब लरिकन यहै सिखावै
मोही को तू मारत धावै ॥ दाउहिं कबहुं न खीजइ एवै ॥
ऐसे साहित सुनुवति या भोरी । यह त मात दर प्रीति न थोरी

मधुर ग्रास लै तात निहारै ॥ लै वैठे फूंकलाल अकोरै ॥
जेंवत कान्हनंद की कनियां ॥ छबि निरखत जसुमति सैनियां ॥
वेसन के व्यंजन विधि नाना ॥ बराबरी बहुशाक विधाना ॥
मूंग ढरहरी हींग लगाई ॥ दार चनां की पीत सुहाई ॥
राज भोग को भात पसायो ॥ उज्जल कौल सुगंध सुहायो ॥
वेसन मिले कनक की रोटी ॥ सदघृत बोरी पतरी छोटी ॥
खाव आदि बहुभांति सभाने। दोउ भैया जेंवत रुचि माने ॥
मिश्री दधि ओदन मिश्रित कर ॥ लेत स्याम सुंदर अपने कर ॥
आपुनि खात नंद मुख नावै ॥ सो छबि कहत कौन पै आवै ॥

भोजन के आचमन कियो लै झारी नंदराय ॥
अपने कर सौं स्याम को दीनो वदन धुवाय ॥
को करि सकै बखान भाग्य जसो मति नंद के ॥
बस्य रहौ रुचि मान बाल रूप जेंवन के सरन

वैठे स्याम नंद की कनियां ॥ पीवत दूध सुन्दर सुख दनियां
बार बार जसु मति समुझावै ॥ हरि सो अस्तन पान छुड़ावै
कहति स्यों तूं भयो सयानो ॥ मेरो कह्यो लाल अब मानो
दूध पियत देखत लरिका सब ॥ हंसत तोहि नहिं लाज लगत अब
औहैं दांत बिगरि सब तेरे ॥ आजहि छाड़ि कह्यो करि मेरे ॥
सुनत बचन मुसक्याय कन्हाई ॥ सचरा तर सुख लियो छिपाई
आये तबही सखा सुलाबन ॥ मीत चलौ खेलहु मन भावन।
यह सुनि हर्षि उठे वनवारी ॥ मांगत दे चौगान कहारी ॥
महतारी के पाछे, कहि दीनो ॥ हर्षि तै स्याम तहां ते लीनो ॥
लै चौगान वटा करि आगे ॥ चले सखन देखत अनुरागी ॥
कहू निस खानि सौं हरि कह्यो आई। खेलहु गे कि हठी हरु भाई।
खेलत खानि है घोष निकास ॥ हरषि चले सब सखै तकु आस ॥

कान्ह रु हलधर वीर दोउ भये भुजा वरजोर ॥
श्रीदामा अरु सुबल मिलि जुरे सखा इक ओर
और सखन के वृंद वांटि लिये जुरि जोट जुर ॥
अति आनंद नंद नंद दियो वटा डर काय माहि

अय अपनी घातनि लै जाही ॥ एक एक सन पावत नाहीं ॥
इतनें उत उत तें इत घेरे ॥ वटा मारि चौ गाना ने फेरे ॥
दौरत हसत खसत उठि मारें ॥ आप आपनी जीत विचारें ॥
जम्यौ खेल अति मगन कन्हाई ॥ देखत सुरगन रहे लुभाई ॥
जीतत सखा स्याम जब जाने ॥ करी खेल तब कछु मचलाने ॥
कहत सखा सब सुनहु गुपाला ॥ रूठते या को कौन खियाला ॥
श्रीदामा सों हो तुम हारे ॥ झूठी सौंहै खात लत्तारे ॥ + ॥
खेलत में को काको सैंया ॥ कहा भयौ जो नंद गुसैंया ॥
तातें तुम गर्वित मन मांहिंया ॥ तनक वसत हम तुम्हारी छैंया ॥
अति अधिकार जनावत तातें ॥ तुम्हारे अधिक गाय कछु जातें ॥
अव नहिं खेलहिं संग तुम्हारे ॥ भये सखा सब रिस करि न्यारे ॥
खेल्यौ चाहत त्रिभुवन राई ॥ दियो दांव तब पीठि चढाई ॥
जाके गुण गण अगम अति निगम न पावत और
सो प्रभु खेलत ग्वाल संग वंधे प्रेम की डोर ॥ + ॥
खेलत भई अवेर जननी टेरत स्याम कौं ॥ + ॥
आवहु धाम सवेर सांझ समय नहिं खेलिये

सांझ भई घर आवहु प्यारे ॥ वहुरि खेलियो होत सवारे ॥
आपहि जाय वांह गहि आने ॥ सुभग स्याम तन रज लपटाने ॥
वोलि लिये जसु अति वलराम हिं ॥ लै आई दोऊ सुत धाम हिं ॥
धूरि झारि लाती जल ल्याई ॥ तेल परसि दीन्हे अन्हवाई ॥
सरस वसन तन पोंछि संवारे ॥ लै गोदी भीतर पग धारे ॥ + ॥

करहु बियारू कछु दोउ भाई ॥ पुनि तुमको राखों पौढाई ॥
सीरापूरी सरस सवारी ॥ खीर धरी मेवा बहु न्यारी ॥ + ॥
दीन्ही परसि कनक की थारी ॥ बल मोहन दोउ करत बियारी
मिसरी मिले दूध औटाई ॥ लै आई तब रोहिणि माई ॥
प्रेमसहित दोउ जननि जिमावत देषि देषि छवि नैन जुड़ावत
खात खात मोहन अलसाने ॥ बारहिं बार स्याम जमुहाने ॥
आरस सो कर कौर उठावत ॥ नैननि नीद रुमक रुक आवत

उठहु लाल तब मात कहि धोये सुख अरविंद ।
पौढाये लै सेज पर बलि अरु बाल गुविंद ॥
सोये बाल सुकुंद दोउ भैया सुख सेज पर ॥
जननी अति आनंद सो गावति गुण गोपाल के ।

माखन मोहन को प्रिय लागे ॥ भूखो क्षुधा नरहत जब जागे ।
तेहि बंदी जो गहरु लगावै ॥ नहि मानै जो इद्र मनावै ॥ +
मैं जु हि जानति बान स्याम की ॥ हगमीषै नवनीत खान की
ले मथनी दधि मथो बिलोई ॥ जब लगि बाल निउठहिं सोई
भोर भयो जागहु नंद नंदन ॥ संग सखा ठाढे जग बंदन ॥
सुरभी हित वच्छु पियाये ॥ पक्षी नरु तज चहुं दिस धाये ॥
चंद मलिन उडुगन द्युति नासी ॥ निसि निघटी रवि किरण प्रकासी
कुमुदिन सकुची बारिज फूले ॥ गुंजत मधुप लता लगि झूले
दरसन देहु मुदित नर नारी ॥ ब्रजवासी पुरजन सुखकारी ॥
सुनि जननी के बचन रसाला ॥ खोले द्रग राजीव बिसाला ॥
हंसत उठे सतन सुखदाई ॥ मुख छवि देखि मात बलि जाई
तरि कछु करहु कलेऊ प्यारे ॥ मै माखन मथ धरो सवारे ॥
रोटी अरु माखन तनक देरी मा मोहि हाय ॥
लै आई जननी तुरत कछु मेवा धरि साथ ॥

करत कलेऊ स्याम माखन रोटी मान छवि ॥
त्रिभुवन पति सुख धाम चार पदारथ हाथ जिहिं

अथ माखन चोरी लीला ॥

मैयारी मोहिं माखन भावे ॥ और कछु अति रुचि नहिं आवे
मधु मेवा पकवान मिठाई ॥ सो मोको नेकउ न सुहाई ॥
ब्रजयुवती इक पाछे ठाढी ॥ हरि के वचन सुन रूचि बाढी ॥
मन मन कहत कबहुं अपने घर। माखन खात लखौं सुन्दर वर
बैठे जाय मथनियां माहीं ॥ अपने कर निकाढि के खाहीं ॥
मैं वर देखहुं कहूं छुपाई ॥ कैसे मो घर जाहिं कन्हाई ॥ + ॥
हरि अंतरजामी सब जाने ॥ ग्वालिन मन की प्रीति छिपाने ॥
गये स्याम ता ग्वालिन के घर। ठाढे भये जाय द्वारे पर ॥ + ॥
इत उत देखत कोऊ नाहीं ॥ सब बैठे ताके घर माहीं ॥ + ॥
हरि कों आवत ग्वालिनि जानों ॥ परम मुदित अत ही सुख मानों
रही लुकि हरि दीठ लगाई ॥ हरि बैठे मथनी ढिग जाई ॥
देखी माखन भरी कमोरी ॥ खान लगे करि अति मति भोरी॥

निरखे रहे मणि खंभ में हरि अपनी प्रतिछांह ॥
जानि दूसरो ग्वाल तिहिं प्रभु सकुचे मन माहिं ॥
तासों करत सयान कहत लेहु आधो तुमहु ॥
हम तुम एक सयान भलो बनो है संग अब ॥

प्रथम आज मैं चोरी आयो ॥ तुम को देखि बहुत सुख पायो
अब तुम मेरे संग नित आवो ॥ यह काहू सों मति हिं जनावो ॥
सुनि सुनि हरि के मुख की वानी ॥ उमगि हंसी ब्रज युवति सयाने
स्याम चौंकि मुख ता सु निहारी ॥ भाजि चले ब्रज खोर मुरारी
अति आनंद ग्वाल मन माहीं ॥ पूछन सखी परस्पर नाहीं ॥

पायौ आज परसौं कछु तेरौ ॥ कहति तोहि अति आनंद हेरी
गदगद कंठ पुलक तन ने री ॥ सो किन कहै कहा सुख केरौ
तन न्यारौ जिय एक हमारौ ॥ हमें तुम्हें कछु भेद न न्यारौ
सुन हु सखी मैं तोहि बताऊं ॥ जो सुख भयौ सो तोहि सुनाऊं
जसुमति सुत सुन्दर सु गोरी ॥ आयौ आज हमारे चोरी
खंभ निकट मथनी ही माखन ॥ लियौ निकास लग्यो तेहि चाखन
मैं भीतर दुर देखन लागी ॥ वा मोहन कु वपर अनुरागी ॥
देखि खंभ प्रति बिंब कौ मन कछु सकुचे स्याम
अर्धभाग तेहि देत कहि प्रगट करौ निज नाम
तब न रह्यौ मोहि धीर हँसी मनोहर बचन सुनि
कह कहौ तोहि बीर मन हरि लीनो सांवरे ॥
मोहिं देखि तब गयो पराई ॥ सखि सो छबि कछु बरनि न जाई
सुनि हरि चरित सखी अनुरागी ॥ अति सुख पाय प्रेम रस पागी ॥
कहति कि मैं देखन नहिं पायो ॥ सोइ अभिलाष मनासु उरछायो
हरि अतरजामी सब जाने ॥ सब के मन की रुचि पहिचाने ॥
इहि विधि माखन प्रथम चुरायौ ॥ कीनो ग्वालिनि को मन भायौ
भक्त वत्सल संतन सुखकारी ॥ पुनि मन माहिं यह बात विचारी
अब सब ब्रज घर माखन खाऊं । माखन चोर नाम कहवाऊं ।
बालरूप मोहि जसुमति जाने । ग्वालिनि प्रेम भक्ति करि माने
मित्र भाव करि ग्वाल बखाने ॥ भोगनि रंग ति सब मोसो माने ॥
इनही के हित गोकुल आयो ॥ करौं सबन के मन को भायो ॥
यह बिचार हरि निज उर ठाना ॥ भक्त कृपा अंबुज भगवाना ॥
बाल सखा सबनि कर बुलाई ॥ तिन सों हाँसि हाँसि कहत कन्हाई
माखन लैये चोरि कै सब ब्रज घर घर जाय ॥
कीजै बाल बिहार यौं मेरे मन यह भाय ॥

सुनिहरखे सब ग्वाल देत परस्पर तारि सब॥
भली कही नंदलाल तुम वैन यह बुधि को करै।
चले सखन लै माखन चोरी ॥ एक बैस सब हिन मति भोरी ॥
देख्यौ झांकि झरोखा ओरी ॥ मथति एक ग्वालिनि दधि गोरी ॥
धर्यौ मठा मथनी में जानो ॥ ऊपर माखन है लपटानो ॥
ग्वालनि गई कमोरी मांगन ॥ पाई घात तबहि सुन्दरघन
सखनि समेत ताहि घर आये ॥ दधि माखन सब हिन मिल खाये
छूछी मटुकी डारि सिधाये ॥ हंसत हंसत सब बाहर आये ॥
आइ गई द्वारे सोई बाला ॥ घर सों निकसत देखे ग्वाला ॥
माखन कर मुख दधि लपटान्यो ॥ ग्वालनि यह कछु भेद न जान्यो
देखि रही हंसि मुख की शोभा ॥ निरखि रूप लाग्यो मन लोभा
चमकि गये हरि सखन समेता। तबहीं ग्वालनि गई निकेता।
देखी जाय मथनियां खाली ॥ चकित विलोकत इत उत ग्वाली
घर घर प्रगटी बात यह सखा वृंद लै साथ ॥
चोरी माखन खात हैं नंद सुवन ब्रज नाथ ॥
सबके मन अभिलाष चोरी पकरत पाइये ॥
धरियो माखन राख यह है ध्यान सबके हिये ॥
कहति परस्पर ग्वालि सयानी। सब मोहन के रूप भुलानी ॥
माखन खानि देहु गोपालहि। मत बरजो कोउ स्याम रसालहि
तुम जानति हरि कछु न जाने ॥ वे मोहन हैं परम सयाने ॥
कोउ कहति पकरि जो पाऊं ॥ तौ सपने गहि कंठ लगाऊं ॥
एक कहति जो मेरे आवे ॥ तो माखन हम हरि हि खवावे ॥
कहति एक जो मैं गहि पाऊं ॥ तौ हरि को बहु नाच नचाऊं
कोऊ कहति जो हरि को पैये ॥ तो गहि जसुमति पै लै जैये ॥
इक कहत आज हमारे आये ॥ द्वारहिं ते मो हि देखि पराये ॥

पायौ आज परसे कछु तेरी ॥ कहा तोहि अति आनद हेरी
गदगद कंठ पुलक तन तेरो ॥ सो किन कहै कहा सुख केरो
तन न्यारौ जिय एक हमारो ॥ हम मे तुम मे कछु भेद न न्यारो
सुन हंसत्ती मै तोहि बताऊं ॥ जो सुख भयो सो तोहि सुनाऊं
जसुमति सुत सुन्दर सुनु गोरी ॥ आयो आज हमारे चोरी
खंभ निकट मथनी ह्वै माखन ॥ लियौ निकास लग्यो तेहि चाखन
मैं भीतर दुरदेखन लागी ॥ वा मोहन छवि पर अनुरागी ॥

ऐसि खंभ प्रति बिंब को मन कछु मकु चे स्याम
अर्धभाग तेहि देत कहि प्रगट करी निज नाम
तब न रह्यौ मोहि धीर हंसी मनोहर बचन सुनि
कहा कहो तोहि बीर मन हरि लीनो सांवरे ॥

मोहिं देखि लव गयौ पराई ॥ सरिस सो छवि कछु बरनि न जाई
सुनि हरि चरित सखी अनुरागी ॥ अति सुख पाय प्रेम रस पागी ॥
कहति कि मैं देखन नहि पायो ॥ सोइ अभिलाष तासु उर छायै
हरि अंतरजामी सब जाने ॥ सब के मन को रूपहि चाने ॥
इहि विधि माखन प्रथम चुरायो ॥ कीनों ग्वालिनि को मन भायो
भक्तवत्सल संतन सुखकारी ॥ पुनि मन मांहि यह बात विचारी
अब सब ब्रज घर माखन खाऊं। माखन चोर नाम कहु वाऊं ।
बालरूप मोहि जसुमति जाने। ग्वालिनि प्रेम भक्ति करि माने
मित्र भाव करि ग्वाल बखाने ॥ मीतिरीति सब मोसो माने ॥
इनही के हित गोकुल आयो ॥ करौं सबन के मन को भायो ॥
यह विचारि हरि निज उर ठाना ॥ भक्ति रूप अंबुज भगवाना ॥
बाल सखा सब निकट बुलाई ॥ तिन सो हंसि कहत कन्हाई

माखन लैये चोरि कै सब ब्रज घर घर जाय ॥
कीजे यास विहारयौ मेरे मन यह भाय ॥

सुनि हरषे सब ग्वाल देत परस्पर गारि सब ॥
भली कही नंदलाल तुम बिन यह बुधि को करै ॥
चले सखन लै माखन चोरी ॥ एक बैस सब हिन मति भोरी ॥
देख्यो झांकि झरोखा ओरी ॥ मथति एक ग्वालिनि दधि गोरी ॥
धस्यौ मठा मथनी मैं जानी ॥ ऊपर माखन है लपटानी ॥
ग्वालनि गई कमोरी मांगन ॥ पाई घात तबहि सुन्दरघन
सखनि समेत ताहि घर आये ॥ दधि माखन सब हिन मिलखाये
कूंडी मटुकी डारि सिधाये ॥ हंसन हंसत सब बाहर आये ॥
आइ गई द्वारे सोई बाला ॥ घर सों निकसत देखे ग्वाला ॥
माखन कर मुख दधि लपटान्यो ॥ ग्वालनि यह कछु भेद न जान्यो
देखि रही हंसि मुख की शोभा ॥ निरखि रूप लाग्यो मन लोभा
चमकि गये हरि सखन समेता ॥ तबहीं ग्वालनि गई निकेता ॥
देखी जाय मथनियां खाली ॥ चकित बिलोकत इत उत आली
घर घर प्रगटी बात यह सखा वृंद लै साथ ॥
चोरी माखन खात हैं नंद सुवन ब्रज नाथ ॥
सबके मन अभिलाष चोरी पकरत पाइये ॥
धरियो माखन राखयहै ध्यान सबके हिये ॥
कहति परस्पर ग्वालि सयानी ॥ सब मोहन के रूप भुलानी ॥
माखन खानि देहु गोपालहि ॥ मत बरजो कोउ स्यामरसालहि
तुम जानति हरि कछु न जाने ॥ वे मोहन है परम सयाने ॥
कोऊ कहति पकरि जो पाऊं ॥ तौ अपने गहि कंठ लगाऊं ॥
एक कहति जो मेरे आवे ॥ तो माखन हम हरि हि खवावे ॥
कहति एक जो मैं गहि पाऊं ॥ तौ हरि को वह नाच नचाऊं
कोऊ कहति जो हरि को पैये ॥ तो गहि जसुमति पैं लै जैये ॥
इक कहै आज हमारे आये ॥ द्वारहिं ते मोहि देखि पराये ॥

इहि विधि प्रेम मगन सब बाला ॥ सबके हृदय ध्यान नंदलाला
निशिदिन सरनहि नैक बिसारै ॥ मिलिबे कारण बुद्धि बिचारैं
गये श्याम सूने ग्वालनि घर ॥ सखा सबै ठाढ़े द्वारे पर ॥
देख्यौ भीतर जाय कन्हाई ॥ दधि अरु माखन धर्यो बनाई
सद माखन देख्यो धर्यो हरषे स्याम सुजान ॥
सखा बुलाये सैन दै लै लै लागे खान ॥ + ॥
इत उन चितवत जात कछु सो मोमन में कियो
बांटत दधि अरु खात उठि उठि राकत द्वारतन
देखत सो ग्वालिनि अंतर करि ॥ मगन भई अति उर आनंद भरि
लीन्हीं बोलि सखी ढिग वासी ॥ तिन्हैं दिखावति हरि मुख रासी
देखि सखी सोभा अति बाढ़ी ॥ रहि सब लोक सो ओट है ठाढ़ी
किहि विधि है दधि लेत कन्हाई ॥ सखन देत अरु आपुन खाई
पदन समीप पयारि अति राजै ॥ माखन सहित महा छवि छाजै
लै उपहार जलज मनों आई ॥ मिलन चंद सों वैर बिहाई ॥
गिर गिर परत बदन ते ऊपर ॥ द्रव दधि सुत के बुंद सुभग तर ॥
मनों प्रलय जल सागर हर्षत ॥ इंदु सुधा के कनका बरषत ॥
सुख छबि देखि थकित ब्रजनारी ॥ कहत न बने रहीं उर धारी
बाल विनोद मोद मन फूली ॥ भई सिथल सब तन सुधि भूली
ब्रजजन को अस्फुरत न बानो ॥ रही बिचारि बिचारि सयानी
गाये ठगोरी लाय कन्हाई ॥ रही ठगी सी सब सुख पाई ॥
विश्व भरन पोषण करन कल्पतरो वर मान
सो प्रभु दधि चोरी करत प्रेम विवस भगवान
नित उठि करत बिहार ब्रज में घर घर सांवरो
ब्रजजन प्राण अधार मालन चोरी व्याज करि
श्याम एक ग्वालनि घर आये ॥ चोरी करत पकरि तिन पाये

सुनतस्यामसबरोहिणीबानियां। सकुचतहसतमंदमुसकनिय
ग्वालिविहसिहरितनडरवायौ॥ माखनचोरपकरि मैं पायौ
करौंतोयकीदावरी बांधौ अपने धाम ॥
लायलियेउररोहिणीबाधसकैकोस्याम ॥
जसुमतिउरआनंदबाल चरित सुनुस्यामके
कहतिसुनोनंदनंद ऐसोकामनकरहुसुत।
सुनेइकदिनगयनंददुलारे॥ देखिफिरे तहांग्वालदुवारे ॥
तबहरिऐसीबुद्धिउपाई ॥ फांदिपरे पिछवारेजाई ॥
सूनोभवन कहूकोउनाही॥ मानहुइनकौराजसदाही ॥
भांडे मूंदतधरतउतारत ॥दधिअरु माखनदूधनिहारत।
रैनजमायौ गोरसपायौ ।लगेखान मनु आपुजमायौ ॥
आहटसुनियुवतीघरआई॥लखतदेखेकुंवरकन्हाई॥
आधियारेघर स्याम गयेदुरि।दधि मटुकी ढिगबैठि रहेसुरि
सकलजीवउरअंतरवासी॥ तहांकछु चोटीपरकासी ॥+॥
ग्वालनिहरिकौहृतुअनहेरै॥पावतनाही धामअंधेरै ॥+॥
कहतिअबहिंदेख्योनंदनंदन।कितहिगयौपछतातमनहिमन
परिगयेदीठओटमथनी के।सुंदरस्यामप्राणगथनी के॥
तबही ग्वालनिभुजगहिलीन्हौ।कहततुहीअबतौमैचीन्हौं
कहौकहाचाहतफिरतधामअंधेरमाहि ॥
वृषभदनदुरावते सूधे चितवत नाहिं ॥ ॥
दधिमथनीमैहाथअबकहाउतरबनाइही
सखानहीकोउसाथकहियेअबकैसीबनै ॥
मैजान्योयहघरहैमेरी ॥ताधोकैधूतकै गयौफेरी ॥+॥
हष्टिपरीचैंटीदधिमाही॥ काढनिलग्यौतिन्हैंइहिठाहीं
सुनिमृदुवचनग्वालिमुसकानी।तुमहौरतिनागरहरिस्यानी

उरलगाय मुखचुंबन कीनो ॥ विधिहि मनाय विदा करिदीने
हरिदरसन विनछ्रण न सुहाई। उरहनमिसजसुमतिपहं आई।
सुनहु महरि निजसुतकी करनी ॥ करत अचकरी जात न वरनी।
नित अति करत दूधदधिहानी ॥ कहूंलग करै कान नंदरानी ॥
मैं अपने मंदिर अंधियारे ॥ माखन धस्यो दुराय संवारे ॥+॥
सोई ढूंढि लियो हरि जाई ॥ अति निशंक नहि नेक डराई ॥
वूंठ ऊनर तुरत वनायो ॥ ॥ चैंटी काढनि कौ कर नायो ॥+॥
सुनि ग्वालनिके वचन मयानी। हांसिकै वोलि लियो नंदरानी
जसुमति कहनि स्याम सों प्यारे। परघर काहे जात लला रे

मम लोचन आगे सदा खेलहु सखन वुलाय
तुम्हरे वाल विनोद लखि मेरो हियो सिराय ॥
मोपै लीजे स्याम दधि माखन मेवा मधुर ॥
सवक कु मेरे धाम पर घर जायवलायनुव

माखन माग्यो कुंवर कन्हाई ॥ मुदित मात तुरतहि ले आई
लगी खवावन हिय हरषानी। स्याम कह्यो खैहों निज पानी
दियो हाथ धरि भरिकै दौना। चले खवान खलत हरि लौना।
सखन संग खलन वनमाली॥ यमुना जाति सखी इक ग्वाली
आप चले तिकेघर माहीं ॥ पूछत वाल कौन है काही ॥+॥
लखे नहां शिशु दोय अयाने। भीन रहो खेलने रावहराने ॥
इतउत देख्यो गोरस नाहीं ॥ ऊंचे धस्यो सिकहरन माहीं
तव मनमोहन रचो उपाई ॥ आनित हां ऊखल औं धाई।
तापर एक सखा वैठारी ॥ ताके कंध चढे वनवारी ॥ ॥
ऐसी विधि करि गोरस पायो। दधि माखन सवही मिलिखायो
इमडारि वछरुन सव छोरे ॥ दिये निकास वनही की ओरे ॥
मही फिरकिलरि कनडरपाई। चले अगन करि सव कन्हाई

सुनतस्याम सघरोहिरणीकानिया। सकुचतहसतमदमुसकानि।
ग्वालिविहंसिहरितनउरवायौ॥माखनचोरपकरिमैपायौ
करौंनोयकीदांवरीबांधौअपनेधाम॥
लायलियेउरगेहिरणीबाधसकैकोस्याम॥
जसुमतिउरआनंदवालचरितसुनुस्यामके
कहतिसुनोनंदनंदऐसोकामनकरहुसुत।
पुनिइकगृहगयनंददुलारे॥देखिफिरेतहाग्वालदुवारे॥
तबहरिऐसीबुद्धिउपाई॥फांदिपरेपिछवारेजाई॥+॥
सूनौभवनकहूकोउनाही॥मानहुइनकौराजसदाही॥
भांडेमूंदतधरतउतारत॥दधिअरुमाखनदूधनिहारत।
रैनजमायौगोरसपायौ॥लगेखानमनुआपुजमायौ॥
आहटसुनियुवतीघरआई।रलकतदेखेकुंवरकन्हाई॥
अंधियारेघरस्यामगयेदुरि।दधिमटुकीढिगवैठिरहेमुरि
सकलजीवउरअंतरवासी॥तहांककूचोटीपरकासी॥+॥
ग्वालनिहरिकौइतउतहेरै॥पावतनाहीधामअंधेरे॥+॥
कहतिसवहिदेख्यौनंदनंदन।कितहिगयौपछतातमनहिमन
परिगयेदीठओटमथनीके।सुंदरस्याममाणगथनीके॥
तवहीग्वालनिभुजगहिलीन्हो।कहततुहैसवतोमैचीन्हीं
कहौकहाचाहतफिरतधामअंधेरेमाहि॥
वूझैवदनदुरायतेसूधेचितवतनाहिं॥॥
दधिमथनीमेहाथअवकहाउतरवनाइहौ
सखानहीकोउसाथकहियेअवकैसीवनै॥
मैजान्योयहघरहैमेरो॥ताधोकेइतहैगयोफेरो॥+॥
द्दष्टिपरीचैंटीदधिमाही॥काढनिलग्योतिन्हैइहिठाहीं
सुनिमृदुवचनग्वालिमुसकानी।तुमहौरतिनागरहरिजानी

उर लगाय मुखचुंबन कीनौ ॥ विधिहि मनाय विदा करि दीनौ
हरि दरसन बिन छण न सुहाई । उरहन मिस जसुमति पहं आई ।
सुनहु महरि निज सुत की करनी ॥ करत अचकरी जात न बरनी ।
नित अति करत दूध दधि हानी ॥ कहं लग करै कान नंदरानी ॥
मैं अपने मंदिर औंधियारे ॥ माखन धस्यौ दुराय संवारे ॥ ५ ॥
सोई ढूंढि लियौ हरि जाई ॥ अति निशंक नहि नेक डराई ॥
वृंदकुंवर तुरत बनायौ ॥ ॥ चैंटी काढनि कौ करनायौ ॥ ६ ॥
सुनि ग्वालनि के वचन सयानी । हांसि कै बोलि लियौ नंदरानी
जसुमति कहनि स्याम सौं प्यारे । पर घर काहे जात लला रे

मम लोचन आगे सदा खेलहु सखन बुलाय
तुम्हरे बाल विनोद लखि मेरौ हियौ सिराय ॥
मो पै लीजै स्याम दधि माखन मेवा मधुर ॥
सबक कु मेरे धाम पर घर जाय वलाय तुव

माखन माग्यौ कुंवर कन्हाई । मुदित मात तुरतहि लै आई
लगी खवावन हिय हरषानी । श्याम कह्यौ खैहौं निज पानी
लियौ हाथ धरि भरि कै दौना । चले खान खेलन हरि लौना ।
सखन संग खेलन वन माली ॥ यमुना जात लखी इक ग्वाली
आप चले ताके घर माहीं ॥ पूछत बाल कौन है काही ॥ १ ॥
लखे नहीं शिशु होय अयाने । भीतर ढोबे ने रोय डराने ॥
इत उत देख्यौ गोरस नाहीं ॥ ऊंचे धस्यौ सिकहरन माहीं
तब मनमोहन रचौ उपाई ॥ आनि तहां ऊखल औंधाई ।
तापर एक सखा बैठारी ॥ ताके कंध चढे बनवारी ॥ ॥
ऐसी विधि करि गोरस पायौ । दधि माखन सबही मिलि षायौ
दूध डारि बछरू सब छोरे ॥ दिये निकास बनहीं की ओरे ॥
मही छिरकि लरिकन डरपाई । चले अगन करि सखा कन्हाई

घरघर करत बिलास नाना भेष दिखाय हरि
ब्रजजन परम हुलास देखि चरित गोपाल के
देखी स्याम ग्वालि इक ठाढ़ी ॥ गोरस मथति मात छवि बाढ़ै
डोलत तन बंध्यो सिर अंचल ॥ बैनी चलत पीठ पर चंचल
जोबन मद माती इक ठानी ॥ कर पकरत दृढ़ कै कर मथानी
छूटत अंग मोरति रुक झोरी ॥ गोरे अंग दिनन की थोरी ॥
मढ़ी उरोजनि अंगिया गाढ़ी ॥ मनहु काम सांचे भरि काढ़ी ॥
रीझ रहे लखि नंददुलारे ॥ लागे खेलन नासु दुआरे ॥ + ॥
फिर खिलइ ग्वालनि छूरेलन । पारि गये इत उन स्याम सुन्दर घन
चोलि लिये हरुवे सूने घर ॥ लिये लगाय उरसों सुन्दर वर ॥
उमग अंग अंगिया उर दरकी । निहिं अब सर सुधि रही न घर की
नवही सुन्दर स्याम सुजाना ॥ भये वरष द्वादश अनुमाना ॥
सो छवि देखि छकी ब्रजनारी ॥ बहुरि भये शिशु रूप मुरारी ॥
हरि के कौतुक अति सुखदाई । देखि रही मति गति बिसराई ॥
माखन लेत व स्याम सुख धरनि आपने पान
अति आनंद उमग उर बिसरी ग्वालि सुजान
रसिक सिरोमणि स्याम माखन खाय रिझाय तिय
आये अपने धाम कवि सागर नागर नवल ॥
मन हर लीनो कुंवर कन्हाई ॥ बिन देखे छन रहो न जाई ॥
उर छन के मिस ग्वालि सयानी । आई देखन हरि सुखदानी ॥
सुनहु महरि सुत के गुण जैसे ॥ कहा कहौं कहे जात न तैसे ॥
माखन खाय मही ढरिकायो । खोली फारि अबही भजि आयो
गोरस हानि सही नै माई ॥ अब कैसे सहि जात खुटाई ॥
बीचहि बोलि उठे बनमाली ॥ झूठहि मोहि लगावति ग्वाली ॥
खेलत ते मोहि लियो बुलाई । दोउ भुज भरि लीनो उर लाई ॥

मेरे कर अपने उर धारी ॥ आपुन हीं चोली पुनि फारी ॥
माखन आपहिं मोहि खवायौ। मैं कब दही मह्यौ ढरिकायौ
अति भोरी सुनि हरि की बानी॥ जसुमति ग्वालनि सौं रिस ठानी
जानति हौं जु कटाछ तिहारे ॥ अति भोरौ सुत मेरौ वारौ ॥+ ॥
दै दै दगा बुलावति ताही॥ सोई सोइ करति जो भावत जाही

बोलि बोलि निज निज भवन भेंटति भरिभरि अंग
मेरे भोरे बालकौं ग्वालनि निलज निशंक ॥
तापर उर न खलाय फिरति दिखावति लाज तजि
कान्है दोष लगाय आपुन अति भोरी भई ॥

नित उठि उरहन लै उठि धावै॥ बिना भीत ही चित्र बनावै ॥
मिस करि करि मेरे गृह आई॥ रहत स्याम तन दीठ लगाई
मेरौ पांच वरष को कान्हा ॥ अजहुं रोय पय मागत नान्हा
कहा तू जोबन के मद माती॥ हरि के संग फिरति इठलाती।
ग्वालनि सुनत जसोमति बैना। मन हरि लीन्हो राजिव नैना
आनन गोरस प्रीति मन माहीं। ऊतर देत बनत कछु नाहीं ॥
कछु मन ऊतर कहि रिस पाई। चली भवन उर राषि कन्हाई
जसुमति यह है सिखावति स्यामहिं कत ही जात पराये धामहि
ये सब गोरस की मद माती ॥ फिरति ढीठ ग्वालनि इतराती।
नित उठि उरहन देति बिहाने। मुख संभारि नाहि बात बखाने
रुचि उपजै तुह्मरे मन जोई ॥ मोपै मागि लेहु किन सोई ॥
कहि कहि मधुर बचन निज ताता। सुख उपजावहु मेरे गाता।

अपने हि आंगन खेलिये सखन साहित दोउ भाइ
मुहि सुख दीजै आपने बाल विनोद दिखाई ॥ ॥
सुन्दर घन ब्रजनाथ कोटि काम शोभा हरण ॥
गोप बाल लै साथ करत बाल लीला ललित ॥

महरि कहति चली जाहि इहांते ॥ मैं जनति सब तुम्हरी बातें ॥
हरि के चरित कहा कोउ जानै ॥ ग्वालिनि नन्द घरनि सुख मानै ॥
हरि तें हारि चली ग्रह ग्वाली ॥ बुधि कर जीते श्याम तमाली ॥

वहुरि गये इक ग्वालि घर मनमोहन घनश्याम
सखन सहित हरिषत भये मनौ पायो धाम ॥ ॥
सब घर ढूंढियो ढ ढोरि माखन खायो चोरि हरि
भाजन डारे फोरि गोरस दियो लुटाय महि ॥

सोवति लरिकनि चुटकि जगाये। महो छिरकि हर पायन खाये।
बड़ौ माट इक घी कौ पेखौ ॥ बहुत दिनानि कौ चिकनौ चोखौ
सोऊ फोरि कियो बहु टूका ॥ चले हंसत सब मिलि दै कूका ॥
आइ गई ग्वालनि तेहि काला। निकसत धरि पाये नंद लाला
देख्यो घर वासन सब फोरे ॥ रोवत बाल महीं सों बोरे ॥ + ॥
दोउ भुज गाढे गहि लीन्हे ॥ जाय महरि ढिग ठाढे कीन्हे ॥
कहति सरोस जसोमति आगे। सब पत रहि है या ब्रज त्यागे।
ऐसे हाल किये ग्रह मेरे ॥ सुनहु महरि लच्छन सुत केरे ॥
माखन खाय दह्यो ढरिकायो। महो छिरक बालक न रुवाये।
वासन फोरि धरे सब घर के ॥ उपज्यौ पूत सपूत महर के ॥
घी कौ माट जुगनि कौ राख्यौ ॥ सोऊ फोरि टूक करि नाख्यौ।
चलहु दिखाऊं घर कौ हाला ॥ राखहु बांधि आपनो लाला।

जननी खीजति कान्ह कौ करत फिरत उतपात ॥
नित उठ उरहन सहत हौं तू नहिं मानत बात ॥
बड़े बाप के पूत चोर नाम भग त्यो जगत ॥ ॥
उपजे पूत सपूत नाम धरावत तात कौ ॥ ॥

जननी के खीजत हरि रोये ॥ भरि आये नैनन के कोये। ॥
झूठहि मोहि लगावति ग्वारी। मेरे ख्याल परी है सबारी ॥

सुनहु महरि सुतके गुण काने। समुझहु हैं भोरे कै स्याने ॥

करत फिरत उतपात अति सब ब्रज घर घर जाय

नित उठि खेलत फागसी गारियावन नल जाय

बाहु तरुण किशोर बोलत वचन विचित्र वर

इहां होत शिशु भोर तुम अचरज मानत नहीं ॥

यौ कहि चली ग्वालनी धामहिं। जसुमति वरजति पुनि २ स्यामहि

घर गोरस जिनि जाहु पराये ॥ नातरि सब उरहनो लाये ॥

लघु दीरघता कछु नहिं जाने ॥ झगरो आय कूठ सब ठाने ॥

नौलख धेनि दूध के तेरे ॥ और बहुत बन चरें घनेरे ॥ + ॥

तू कत माखन खात चुराई ॥ छांडि देहु अब यह लरिकाई

यौं कहि जननी कंठ लगायौ ॥ सुन्दर स्याम हरष तब पायौ

खेलन गये बहुरि नंदलाला ॥ कियें जाय पुनि सोई ख्याला

अपर ग्वालि उरहनले धाई ॥ आई जसुमति पहं रिसपाई

तेरे कान्ह मेरो माखन खायौ। सखन सहित अबहीं भजि आयौ

मैं गई जमुन भरे वेको पानी। दुपहर द्यौस सून घर जानी ॥

गयौ भवन में खोलि किवारी ॥ छींकनतें दधि लियौ उतारी ॥

खात खुवाय बहायौ पराने ॥ बालक है बरजौ नहिं माने ॥

कीन्हौ अति ही लाडलो लाड लडाय बहूत ॥

अबही ते रदगर करत जायौ अनो खौ पूत ॥

सुनि ग्वालिनि के बैन कहति जसोमति कान्हसौं

सिखयौ मानत नें नले सटिया छांडति भई ॥

माखन खात पराये घर कौ ॥ मेरे रहत जहां लहं दरकौ ॥

नित प्रति मथियत सहस मथानी। तेरे कौन वस्तु की हानी

कितने आहिर जियत घर मेरे ॥ बेचत खात मही बहुतेरे ॥

पूत कहावत नंद महर कौ ॥ चोरी करत उघारत फरकौ

मैयामैनहिंमाखनखायौ॥मेरेवदनसखनलपटायौ
भाजनऊंचेछींकनधरायौ॥समुझिदेखिमैकैसेपायौ॥
मैयेनान्हेहाथपसारी॥किहिविधिमाखनलियोउतारी
मुखदधिपोंछतकहतकन्हाई॥दोनापाछेंपीठिदुराई॥
धरिसांटीजसुमतिमुसकानी॥गहिउरलायलियसुखदानी
बालविनोदमोदमनमोह्यौ॥निरखतवदनजासुतसोह्यौ
भक्ताधीनवेदयशगावै॥सोहरिभक्तप्रतापदिखावै
जसुमतिकोसुखनिरखिअगाधा॥विसरीशिवमुनिब्रह्मसमाधा

धनब्रजवासीधन्यब्रजधनधनब्रजकीगाय॥
जिनकोमाखनचोरिहरिनितउठघरघरखाय
रहेसफलसुरभूलब्रजविलासहरिकोनिरखि
हर्षहिंवर्षहिंफूलधन्यधन्यब्रजधन्यकहि

आईकहतिखोरइकग्वाली॥सुनहुंजसोमतिसुतकीचाली
भाजगयेमेरेभाजनफोरी॥माखनखायमहीमहिंढोरी॥
हाकदेतपैठतघरमाहीं॥काहूविधिकोरिमानतनाहीं॥
सखासगलीन्हेइकठौरी॥नाचतफिरतसांकरीखोरी
बाटघाटकोउचलनपावै॥गारीदैदैसवनबुलावै॥
गोरसहानिकरतहैसिगरौ॥कहंलगकीजैतिनउढगरौ
घरघरकरतफिरतसुतचोरी॥ऐसीविधिवसिहैब्रजकोरी
सुनतगोपिकाकीरिसवानी॥कहतिस्यामसोंनंदकीरानी
तूनहिंमोहिंडरातमुरारी॥वकतवकततोसोंपचिहारी॥
खटरसधरेमेरेघरमाहीं॥तातेतूलैखानक्योनाहीं॥
घरघरचोरीकोनितजाई॥देतउरहनोग्वालिसवाई॥
मोकोकूपरागकहतसवआई॥तेरेघरढोटाहुनअघाई
सुनिसुनेलज्जानिमरतिमैतूनहिमानतबात

अब नीकै हि राखौ बाँधिकै जानी तेरी घात
सुनु री ग्वालिन बात कहे देत अब तोहि मे
जबही पावहु घात मेरी सौं यह मारियो

अबते मोकहँ वहुत खिजाई ॥ सांटिनि मारि करो यह नाई
अजहू मान कह्यो करि मेरो ॥ तू घर घर मति फिरो अनेरो
जननी रिसहाये श्याम डराने । अब नहि जेहौं धाम विराने
यों कहि निकरि गये हरि द्वारे । खेलत सखन संग गलियारे
तबही ग्वालि और इक आई । सो जसुमति सौं कहति सुनाई
नंद महरि सुत भलो पढ़ायो ॥ ब्रज बीथिनि सोर मचायो
मारि भजत काहू के लरिका ॥ खोलत है काहू को फरिका ॥
काहू को दधि माखन खाई ॥ काहू के घर करत भड़ाई ॥
गारी देत सकुच नहि माने ॥ गैल चैलत हरि कगरो ठाने
कह कहहु हरि के गुण नवतेये । तो सौं उरहन देत लजैये ॥
कछु टोना सो पढ़ि करि आई ॥ जो वु भावत सोइ करत कन्हाई
पीताम्बर ओढ़त सिर नाई ॥ अचल दे दे सुरि मुसकाई ॥

तेरी सौं तोसों कहति मैं सकुचति यह बात ॥
तेरे मुख हरि लखत हौं सकुचित नक ह्वै जात
नेकु दिखा बहु आंखि नहि अबते ए ढंग भले
कबलागि कहिये राखि करत अचकरी श्याम अति

॥ अथ दावरी बंधन लीला ॥

जसुमति सुनि हरि के गुण नाथा ॥ रिस करि उठि सांटी ले हाथा ॥
कहति जो ऐसी रिस मैं पाऊं ॥ तो हरि की गति तुमहिं दिखाऊं
कैसे हाल करौं हरि केरे ॥ लागे तात आज कहु मेरे ॥ + ॥
कांहे नहीं आज विन मारे ॥ भये श्याम अब बहुत दुलारे

बदत वेदबाणी विदितभक्तबच्छल नंदनंद ॥
जननिहि अति रिस जानि यमलार्जुन सुनिकी रि
दीनबंधु भगवान जनहित गये बंधाय प्रभु ॥
जननी के मनकी रुचि जानी ॥ आप बंधायो सारंगपानी ॥
कहति जसोमति लै कर डोरी ॥ बांधौं तोहि सकै को छोरी ॥
लैलै रजु ऊखल सों जोरी ॥ हरि लषि बदन नैन जल ढोरी
यह सुनि ब्रज युवती उठि धाई ॥ देखि श्यामकौं सब मुसकाई
कहति कन्हैयौ कहत छोरौ ॥ कहु हरि श्याम अब माखन चोरौ
ऊखल बांधे जसोमति डोरी ॥ मारनकौं सांटिया कर तोरी ॥
सांटी देखि ग्वालि पछितानी ॥ बिकल भई सालि मन अकुलानी
कहति जसोमति सों सब गोपी ॥ ऐसी कहा पूत पै कोपी ॥ + ॥
कहा भयो जो बालक ग्राहीं ॥ डरकि गई मथनी महि माहीं
घर घर गोकुल दई दुहारी ॥ तू बांधति हरि की भुज कारी ॥
ऐसी तोहि बूझियै नाहीं ॥ गोरस लागि बांधति सुत वाहीं ॥
तू कपी हमतें बूझि भोरें ॥ उरहन दियौ अकसि कर जोरें ॥
बार बार जोवत बदन हिचुकि न रोवत श्याम
कबहु ते तेरो हियो कठिन महा नंदवाम ॥
काहे रिस करत अचेत छोर उदर ते दावरी ॥
डारि कठिन कर बेंत लोचन भरि भरि लेत हरि
जाहु चली अपने अपने घर ॥ तुमही सबै मिल ढीठ कियो हरि ॥
बंधन छोरनिकौं अब आई ॥ सो कौ मन धरतौ कोउ भाई ॥
मोहि आपने बाबा की सों ॥ अब न पत्याउं साम कौ बीसों ॥
देखि सुखी मैं तुमहि ग्वाला ॥ उपजे बड़े नंद के लाला ॥
मैं इन हित पै ओंटायौ ॥ कोरी मटकी दह्यो जमायौ ॥
माखन दियौ भेजन पायौ ॥ सो सब फोरि अनेहर कायो ॥

आश दीजिये वारि मोहन मदनगुपाल पर॥
तेरौ कठिन हियो है माई॥ कहति एकग्वालनि मुसुकाई॥
ऐसो माखन दधि वहि जाई॥ बांधे कमल नैन जिहि लाई॥
जो मूरति शिव ध्यान लगावें॥ सपनेहू सुर नहिं देखन पावें॥
निगमन हूं खोजत नहिं पाई॥ सो तैं दे कर तार नचाई॥
याही तें तूं गर्भ भुलाई॥ घर बैठे तेरे निधि आई॥
काहू को सुत रोवत देखी॥ लेत धाय उर लाइ विशेषी॥
अब यह कत सीखी चतुराई॥ निज सुत सों इतनी कठिनाई॥
कहत एक देखहु नंदनारी॥ कब के ऊखल बंधे मुरारी॥
नाचो क्षुधा तें मुख कुम्हलाई॥ अति कोमल तन स्याम कन्हाई॥
भई बेर बीते युग यामा॥ हरि के निकट जाय गयो धाम॥
तू लावी [illegible] माहीं॥ है निरदई दया कछु नाहीं॥
घर को काज [illegible] ते प्यारे॥ जसुमति नेक न हृदै विचारे॥
[illegible] लोचन सजल भये त्रास ते दीन
चितवत तेरे वदन तन मनमोहन आधीन
केतिक गोरस हानि जाको तोरत कान तू॥
वारि दीजिये मान रोम रोम पर स्याम के
हरि को देखि सखा इक धायो॥ तिन हलधर सों जाय सुनायो॥
अहो राम तुम्हरो लघु भैया॥ बांध्यो आज जसोधा मैया॥
काहू के लरिकहि हरि मार्यो॥ जसुमति पै तिन जाय पुकार्यो॥
तब तें हरिहि बांधि बैठायो॥ छांड़ति नाहिन सबनि छुड़ायो॥
सो हम तुमहि जनावनि आये॥ हलधर सुनत तुरत उठि धाये॥
माता डरत न भीति हिन सांये॥ हरिहि देखि लोचन भरि आये॥
कहत भले दोउ भुजा बंधाये॥ ऊखल सों बांधे भरि पाये॥
मैं बरजे कै बार कन्हाई॥ अजहूं छांड़ देहु लंगराई॥

कौतुमकोरमवांधनहारा ॥ तुमछ्रुतबांधत संसारा ॥ +॥
कारनकसनकरतमनमाने ॥ आतिहितजसुमतिहाथविकाने
असुरसंघारनजनदुषमोचन। कमलापति राजीवविमोचन
भक्तनकेवसरहतसदाई ॥ ताहीतैंकछुमौन विसाई ॥ +
हरियमलाअर्जुनतनहेरे ॥ मनमनकहतसदाये मेरे ॥ +॥
अवहींआजुइन्है उद्धारो ॥ दुसहश्रापमुनिवरकोटारो ॥
इनहीकेहितभुजा बंधाई ॥ परसिविटप अवदेहुगिराई
हारुणादुखइनकौंसवटारौं ॥ इहिमिसकरिवंधननिरवारौं
भक्तवत्सलहरिदीनदयाला ॥ करुणासिंधुअगाधकृपाला
भक्ताधीनवेदयशगावै ॥ पावनपतितकहावैंवानै ॥ +॥
भक्तहेतुनानातनधारी ॥ करतचरितभक्तनसुखकारी ॥

ब्रजवासीप्रभुभक्तहितआपवंधायोदाम
ताहींदिनतैंप्रगटहैदामोदरसोनाम ॥
नंदनंदनघनश्यामजनरंजनभंजनविपति
भेटतजिनकौनामपापश्रापत्रयतापदुष

जसुदाबाहिरछांडिकन्हाई ॥ लागीमथनिदधिभीतरजाई
कहतवचनरसरिसलपटाने। खातफिरतदधिधायविराने
खटरसछांडिआपनेधामा ॥ चोरीप्रगटकरतहेनामा ॥
मांदेभजतब्रजलरिकनजाई ॥ जहांतहांब्रजधूममचाई ॥
रहतुमहहलधरचुपसाधी ॥ इनकीमेटनदेहुउपाधी ॥
ऊखलसोंवांधेवनवारी ॥ कहातिजसोमतिसोंब्रजनारी
कान्हहुतेंतोहिमाखनप्यारो ॥ रहीदेषिनरसतहरिवारो
डारिदेहिमथनीवदरानी ॥ हैहैहरिकीभुजापिरानी ॥
दूधदहीहरिपैसववारो ॥ मोहनजीवनप्राणहमारो ॥
हकपैवोलिकहीनंदरानी ॥ जाहुसबैतुमयुवतिसयानी ॥

स्याम कही मैं कछू न जानौ ॥ ऊषल ढिग मैं रह्यौ छिपानौ ।
कहत नंद हरि वदन निहारो ॥ बड़ी आज विधि करवरटारो
बहुत दान हरि हाथ दिवायौ ॥ द्विज परसान लैलै सिर नायौ
देहि असीस विप्र सुख मानी ॥ भये प्रसन्न नंद सुनि बानी ॥
तबहीं स्याम जननि पहं आये । हर्षे जसोमति कंठ लगाये
भूख भयौ आज मेरो वारो ॥ काकौ धौं सुख प्रात निहारो ॥
ल्याई उर [illegible] ग्वालनि मन हीं । यह सब कियो [illegible] तिन्हीं

पहिलै रोहिणि सों कह्यौ तुरत करौ जिवनार
ग्वाल बाल सब बोलि कै बैठे नंद कुमार ॥ ५ ॥
वेग ल्यावरी मात भूख लगी मोको बहुत ॥
आजन खायौ प्रात सुनत वचन जसुमति हंसी

रोहिणी रही चितै जसु[illegible] सुनि उपा छितात मनहि भन
परस हु रोहि विलवन लावहु । भूषे हरि कित वेग जिमावहु ।
बहु व्यंजन बहु भांति रसोई । कहं लगि बरनि कहै कवि कोई
परसति जाति जसोमति मैया । जेमत स्याम सखा बलि भैया
जो जो व्यंजन जसुमति राखै ॥ तनक तनक मोहन सब चाखै
स्याम कही अब मात अघानो । अब मोको सीतल जल आनो
अचवन करि अचये दोउ भैया । अति सुख पायौ लखि दोउ मैया
सहित सुगंध पान कर लीनो । बांटि सकल ग्वालन को दीनो
मात सहित आय हरि खाये । अधिक अपचर अरुन ह्वै आये
निरखत वदन मुकुर के माहीं । ब्रजवासी जन बलि बलि जाहीं
भोजन करत भयौ सुख जेतो । वरन सकै नहिं सारद तेतो ॥
जो सुख नंद भवन के माहीं । सो सुख तीन लोक मैं नाहीं ॥

सुख जसुमति अरु नंद को को करि सकै बखान
सकल सुखन को खान हरि जहां रहै सुख मान

कहत नंदकी सौंह जनाय ॥ जननी ढिंग भुज गहि लै आये
हंसि हंसि कहति सखा बलिरामा अब तौ चोर भयो श्रीदामा
हंसि कहति जसोदा मैया ॥ जीत्यौ मेरो पूत कन्हैया ॥
जाकी माया जगत सिखावै । ब्रह्मा जाकौ अंत न पावै ॥
ताहि जसोदा खेल खिलावै । बालक जिमि वचननि फुसलावै

जाके डर त्रियलोक थल पंच तत्व चौखान ॥
सो बालक ह्वै खेलई जसुमति के अंगनान ॥
दुर्लभ जप तप योग यौगिन कूं व्रजनाथ हरि
धन्य सो ब्रज के लोग बालक करि मानत तिन्है

कहत भई जसुमति महतारी ॥ भई बात अब सुनहु मुरारी ॥
करहु बियारू अब कछु प्यारे ॥ बहु खेले यहु हांत सवारे ॥
मोकौं नैकहु रुचि नहि भावै । तू कहि भोजन कहा बनावै
बेसन मिले कनक की पूरी ॥ कोमल उज्वल है अति रूरी ॥
अबही ताती तुरत बनाई ॥ रोहिणि तुम्हरे हेतु कन्हाई ॥ + ॥
निंबू आम करील संधानौ ॥ जा सौं तुम अति ही रुचि मानौ ॥
बलि के संग बियारू कीजै ॥ मेरे नयननि कौ सुख दीजै ॥
कनक तनक धरि कंचन थारी ॥ लै आई रोहिणि महतारी ॥ + ॥
स्याम राम मिलि करत बियारी । अति आनंद दोउ जननि निहारैं
खात खात दोऊ अलसाने ॥ सुख जम्हात जननी पहिचाने ॥
जल अचवाय कमल मुख धोये । बांह पकरि पलका पौढाये ।
सोवत स्याम राम दोउ भैया ॥ हरुवे पाय पलोटत मैया ॥ + ।

सोये स्याम सुजान हरि सुख सौं बीती राति ॥
बहुरि कलेऊ के समय जननि जगाये प्रात ॥
दियो कलेऊ मात माखन प्यारे स्याम कौ ॥
मुदित निरखि दिन रात जसुमति मन मन हरि कि ओर

अथ वृंदावनगमनलीला ॥

महरि महर यह मनहि विचारी। गोकुल होत उपद्रव भारी ॥
जब तें जन्म भयो हरि केरो ॥ नित ही होत उतपात घनेरो ॥
अकस्मात गिरे तरु भारी ॥ बच्यौ बड़न के पुन्य मुरारी ॥
ता तें अब तजिये यह गाऊं ॥ चलिये चलि कहुं उत्तम ठाऊं ॥
नंदराय सब गोप बुलाये समाचार ये सबनि सुनाये ॥+॥
सबही के मन मैं यह आई ॥ बसिये अनत कहूं सब जाई ॥ ॥
नित हिं उपाधि नई जिहि ठाहीं। बसिवौ भलौ तहां कौ नाहीं
नंद कही मैं मन हिं विचारी ॥ है इक ठांउ बहुत सुखकारी ॥
वृंदावन गोवर्द्धन पासा ॥ वहं सबकौ सब भांति सुपासा ॥
तहां गोपगण सब सुख पैहैं। बन मे गोधन वृंद चरैहैं ॥+॥
यह विचार सबके मन भायो ॥ चलिवे कौं शुभ दिवस धरायो ॥
वृंदावन सब चले गुवाला ॥ पांच बरस के मदन गुपाला ॥

सकट सौंज सब साज के गोधन दिये हंकाय ॥
चले गोप गोपी हरष वृंदावन समुदाय ॥+॥
निरषि अनूपम धाम सकट दिये सब छोरि कै
सबके मन बस स्याम बसे सकल वृंदाविपन

बसे सकल वृंदावन पाहीं ॥ अति आनंद गोप मन माहीं ॥
गाय बच्छ सबही सुष पायो। चरत निकट त्रण हरित सुहायें
हलधर धेनु चरावन जाहीं ॥ मनमोहन लषि मनहि सिहाहीं
मात चले सब गाय चरावन ॥ जननी सौं बोले मन भावन ॥
मैहू गाय चरावन जैहौं ॥ बड़ो भयो अब नाहि डरैहौं
मया मन सुख्य हलधर भैया। इनके संग चरैहौ गैया ॥+॥
ग्वालन संग यमुना तट माहीं। खेलहिं गे सब वटकी छाहीं
अपनी रूप वन के फल सैहौं ॥ तेरी सौं जमुना नहि न्है हौं

एसीअवहिंकह्यौ जिनवारे ॥ देखहुअपनीभांतिललारे ॥
ततकपायचलिहौकेहिभांती॥गैयनआवतहैहेएती ॥
प्रातजातगैयन लै चारन ॥ आवतसांझलखौ सवग्वारन
तुह्म रौकमलवदनसुखैहै॥ रेंगतघाममांझदुखपैहै ॥
तेरीसौंमुहिंघामनहिंलागतिभूषननेक ॥
कह्यौकान्हमानतनहींपरेआपनीटेक ॥
चलेचरावनगायग्वालवालवलिदेववन ॥
हेरीटेरसुनायगोधनकरिआगेलियौ ॥
हेरीटेरसुनतलरिकनकी॥ गएदौरिहरिअतिरुचिमनकी
इतउतजसुमतिजवहिंनिहारी।दरशनपरेस्यामवनवारी।
वनतनजाने जातकन्हाई॥टेरतिजसुमतिपाछैधाई ॥
जातचलेगैयनसंगधावत।वलिदाऊकौटेरबुलावत ॥
पाछैजननीआवतजानी ॥फेरिफेरिचितवतभयमानी
हलधरआवत देषिकन्हाई।ठाढ़ेकियेसखासमुदाई ॥
पहुंचीजननिभयेजवठाढ़े।रिसकरिदोउभुजपकरेगाढ़े
वलिकहैजानदेहसंगमेरे।वनतेंऐहैंआजसवेरे ॥+॥
कह्यौजसोमतिवलिहिंनिहारी।देखतरहिहौमैंवलिहारी॥
भ्रातसंगगयेवनाहिंकन्हाई॥जसुमतियहैकहतिघरआई
देखहुहरिकेसौढंगलीनौ ॥अपनीटेकपर्यौसोईकीनौ
आजजायदेखहुवनमाहीं॥कहापरोसिधर्यौतिहिठाहीं
माखनरोटीऔरजलसीतलछाकवनाय ॥
दईवेगही ग्वालसंगजसुमति[illegible] ॥
चिंतामणिसुरधेनुपेचसुधारसकल्पतरू॥
अनुदिनजाकेऐनखातछाकसोग्वालसंग॥
वृंदावनखेलतनंदलाला।भयौहियेआनंदविसाला ॥

मैं सुपनेदाऊसंग रैहौं ॥ देखवृंदावनसुख पैहौं ॥
लागे दै त्यावत मगमाहीं सुनकेलालहरिकेगुणगाई
कहतिजसोमतिसौ बलिमैया। जानदेहुमोसंगकन्हैया।
अपनैढिगतेनेकुनटारौ ॥ जियपरतीततनकनहिधारौ
तूकहिडरपति मनमाहीं। जानदेतिहरिकोक्यौं नाहीं।
हंसीमहरिसुनिबलिकीबानी। जाहुंत्तिवायकहतनंदसनें
मैं बलिहारीतुम्हारे मुखकी ॥ सुमहूकहतबारकेरुखकी ॥
अतिआनंदमयोहरिधाये। दाऊसंगसखनमैंआये ॥
धायधायभेंटतसखनउरअतिहर्षबढाय ॥
पठयीमैयामोहिवनचलहिचरावनगाय ॥
कहतसखासुखपायचलहुश्यामदेरक्युनहि
बनमालापहिरायकरतचित्रबनधातुतन ॥
चलेवनहिंसबगायचरावन ॥ सखनसंगसोहतमनभावन
ग्वालबालसबकछुकसयाने। नंदसुवननिनमेंकछुनाई
गायगोपगोसुतवलिजाई ॥ तिनकेमध्यश्यामसुषदाई
हरिसौंसखाकहतसमुझाई। काहिकहूंजिनजाहुकन्हाई
वृंदावनअतिसघनबिशाला। जैहौभूलिकहूंनंदलाला ॥
सुनतश्यामघननिनकीबाता ॥ मनमनहंसतकहतजगत्राता
तुम्हारैसंगनछांडनजाई ॥ वनतेंडरतबहुतमैंभाई ॥
जातचलेसबहर्षबढाये ॥ खेलतश्यामसंगसुखपाये ॥
कोगावतकोऊवेणुवजावै। कोऊनाचतकोउकूदतधावै
देंपिदेंपिहरिअतिहर्षाहीं। कहतसखनसोंदेगलबांहीं।
भलीकरीतुममोकोल्याये ॥ आजजसोमतहर्षपठाये ॥
इहिविधिगोधनलेसबग्वाला। जमुनातटपहुंचेनंदलाला।
दईधेनुवगरायसब चरतआपनेरंग ॥

गायचरावतनंदसुतमिलिग्वालनिकेसंग
उरमुक्तनकीमालसीसमुकटकटिपीतपट
हाथलकुटियालालडोलतग्वालनसंगप्रभु

अथवत्सासुरवधलीला

खेलतस्यामसखनकेमाहीं ॥ यमुनाकेतटतरुकीछाहीं॥
वत्सासुरतेहिंअवसरआयो॥पठयोकंसकालनियरायो॥
वत्सरूपधरिआयसमान्यो॥कृस्नताहिआवतहीजान्यो
वलितनचितैकह्योमुसकाई॥तुमयाकौजानतहोभाई ॥
वुहतौअसुरवत्सह्वैआयो ॥हमकौंमारनकंसपठायो॥
हलधरहूदेख्योधरिध्यान॥कहतसाँचतुमस्यामसुजान॥
ग्वालनहंसिहंसिकहतकन्हाई॥वछराघेरिकरौइकठाई॥
ल्यायेघेरिवत्ससवग्वाल ॥वुहनहिंघिरतहियपलविकराल॥
वारवारहरिओरनिहारै ॥दावघातमनमाहिंविचारै ॥
तवहरिकह्योयाहिमैंल्यावत॥तुमतौयाकौछुवननपावत
हाथलकुटियालैहरिधाये॥वत्सासुरकेसन्मुखआये ॥
हरिकोजवहिंजुदौकरिपायो॥असुरकोपकरमारनआयो॥

छं॰ धायौअसुरकरिक्रोधमारनस्यामकेसन्मुखगयौ
विकलह्वैगयौविपायतवहीयोग्यसुरसुरकेभयौ ॥
धायकैहरिचपरिताकोपकरिपायपिराययौ
पटक्यौधरनितनअसुरप्रगस्योफेरिसांसवआइयौ

दो॰॥वत्सासुरसुरपुरगयौतुरतअसुरतनत्याग
सुरहर्षतवर्षतसुमनगगनसहितअनुराग
धायपरेसवग्वालचकितकृस्नवलदेषिकै॥
धन्यधन्यनंदलालकहतपरसआनंदभरे॥

असुरदेषिसबसखानिजपायौ॥कहतहमैंहरिआजबचायौ
बकुराकरिहमजान्यौयाही॥महतौअसुरभयानकआई
हरषिहरषिहरिकोउरलायो॥असुरनिकंदननामसुनायो
आजुसबनिधरिकैयहमानौ॥औरकौनपैजातनिपातौ॥
कहतग्वालधनिधन्यकन्हाई॥धन्यधन्यब्रजप्रगटेआई
यहऐसौतुमअतिसुकुमार॥किहिबिधिभुजनफिरायपछार
सबहीकेदेखतपलमाहीं॥मारयौअसुरडरयौतुमनाहीं॥
अबलौंहमनतुमहिंपहिचानौ॥हौतुमबडेसबनितेजानौ॥
कोउबनमालआनपहिरावै॥कोउबनधातुरंगरचिलावै
कोउकुंडलसिरमुकटसंवारै॥अलकावलिकोतिलकसुधारै
जातभुजनपरकोउबलिहारै॥तनदेखतकोउबदननिहारै
बनफलतोरिधरतकोउआगे॥कहतस्वादमीठेअतिलागे

इहिबिधिहरिकोपूजिकैग्वालबालहरषाय
सोरुनिकटआवतभयेघरकौंधेनुचराय॥+॥
परममुदितसबग्वालअसुरमारिआवतघरहिं
गावैंआनंदरसालब्रजवासीप्रभुकेगुनगन॥+॥

सखनमध्यसोहतनंदनंदन॥जलदस्यामतनछबिअतिचंदन
मोरमुकटपटपीतसुहावन॥इंद्रधनुषदामिनिलजावन
गुंजमालबनमालबिराजै॥बकसुकअवलिमनहुंछबिछाजै
हाथलकुटकलकुंडलकानन॥कोटिकामछबिसोभितआनन
कुटिलअलकसुबनैनबिसाला॥गोपदरजकनद्युतिछबिजाला
बलिसोहनघनतेंबनिआवै॥निरषिनिरषिब्रजजनसुखपावै
सखनसहितहरिधामहिंआये॥हरषिजसोमतिकंठलगाये
कहतग्वालसुनजसुमतिमैया॥हैतेरौरणवीरकन्हैया॥
बत्सरूपइकदानवबनमें॥आयसमान्यौबछरागनमें

हम ताकों के कुजान न पायो सो सुख हरि कों मीर न धायो ॥
सगाहीं मांक ताहि हरि मारो हम देखत महि पटकपछारो
यह कोउ बड़े पूत ते जायो भाग हमारे ब्रज मे आयो ॥ ॥

सुनि ग्वालिन के बचन यों वत्सासुर को घात॥
जसुमति सब के पाय परि बार बार बिकतात
भयो मरहरि उर त्रास बन्ने आजु इहि असुर ते
मैं न बिचारो काजु भयो सहाय कृपाल हरि

असुर सोच करि गातु ताबे यह तो ग्वाल कान्ह के भावें ॥
मारत तुल्य बिकट बन माहीं कियो प्रगट बिन सागरे मारो
तुमरी रच्छा को यह नाहीं हम सब को रच्छक यह आहीं
जाके चरण कमल चित्त सेयै बार बार यासों बलि जैयै ॥
ग्वालिन यों हरि के गुण माने ब्रजजन सब आश्चर्य भुलाने
लीला सागर हरि सुखदानी मोहे सब नर नारि सुबानी ॥
हंसि जननी सों कहत कन्हाई देखैयैं वृंदावन जाई ॥
अति रमणीक भूमि द्रुम नीके कुंज सघन निरखत सुख जी के
अति कोमल तृण हरित सुहाये यमुना के तट बच्छ चराये ॥
बन फल मधुर मिष्ट अति नीके भूख मिटी खाये तिनही के ॥
सखन संग खेलत बट छांहीं बन में लगत मोहि डर नाहीं
रोहिणि सहित जसोदा माता सुदित सुनत हरि की मृदु बाता

मोहि लियो मन जननि को मधुर बचन सुनाय
बत्सासुर को सोच उर सण में दियो मिटाय॥
लगे दुहन सब गाय जहं तहं हर्षित गोपगन
गये तहां हरि धाय ताय दुहन चाहत सिखन

अथ धेनु दुहन लीला लि०॥

धेनु दुहत हरि देखत ग्वालैन कहत तो [illegible]

मैं दुहि हौं मोहि देहु सिखाई ॥ बैठि गये तिन संग कन्हाई
कै ये गैयां थन हि लपावत ॥ कैसे नोय थगन अब कायत
धुरु स्तन गहत दोहनी कैसें ॥ मोहि बताइ देउ तुम तैसें ॥
कैसे धार दूध की होई ॥१॥ देहु दिखाइ मोहि सब सोई ॥
कहत ग्वाल तुम कहत कन्हैया ॥ भई अबार आज अति भैया ॥
तुम कौं सिखवत काल सवारे ॥ अब कछु लगि है चोट तुम्हारे
स्याम कहै इ सबहीं समुझाई ॥ और दुहौं जिन नंद दुहाई ॥
मेरी सौं मो हि लाजी टेरी ॥२॥ मैं दुहि हौं निज गाय सबेरे
उपर दलन संतन सुखदाई ॥ राहे गैयन मोंह कन्हाई ॥
आवहु कान्ह और को विरिया ॥ कहत जननि यह [illegible]
लरिकाई कछु छांड़त नाहीं ॥ सो बहु लाल आइ घर माहीं

आये हरि यह सुनत हीं जननी लिये कुमार ॥
लै पौढ़ाये सेज पर आजिर चांदनी च्यार ॥
कहत कहत कछु बात ह्वै गये बस नींद के
कहत जु सो प्रीति अत सोय गयो हरि अजिर दी

द्वै जननी हरखे कै हरि कौं ॥ सेज सहित लीने भीतर कौ
कहत आज हरि सोइ गयो है ॥ खिलि हि नींद के बस हि भयो है
नेकन बैठत थिर घर माहीं ॥ खेलहि मैं मन रहत सदा ही ॥
रोहिणि कहत देहु किन सोवन ॥ खेलत हारि गयो मन मोहन ॥
माता हरखे पवन डुलावत ॥ निरखि बदन सुन्दर सुख पावत
प्रात जगावत नंद की रानी ॥ उठहु स्याम सुन्दर सुखदानी
जाहि न इतौ सोइयत लाला ॥ सुन सुत प्रात समय सुखकाला
उदयो तरणि कुमुदिनि सकुचानी ॥ घर घर ग्वालिन मथत मथानी
बार बार टेरत सब ग्वाला ॥ सांझ कहौ तुम दुहन गुपाला
होत सवार आय सब ठाढ़ी ॥ भरि भरि सीस भार थन वाढ़ी

वत्स पुकारत आरत ताई ॥ दोहन चवै हिं [illegible] हरि ताई
येसुन [illegible] नैउठे [illegible] मुखतें सु[illegible]
धेनु [illegible] मोहन नंद कुमार ॥
लगव रोहिणी मात [illegible] दोहनी ॥
कहौ सिखावत तात आज मोहि गैया दुहन
रोहिणि तुरत दोहनी ल्याई ॥ धूर घरतें देखन सब आई
अरवट आसन बैठ कन्हाई ॥ गायन करि लीनो सुखदाई
धार अनत हौं आल निहारी ॥ हँसे नंद जसुमति [illegible] नारी ॥
चितै चोरि चित हरि हँसि लीनो ॥ ब्रजवासी जब बलि र कीनो
किये जसोमति आनंद भारी ॥ दियो दान बहु विप्र हँकारी
गावति मंगल ब्रज की नारी ॥ दुहो गाय संतन हितकारी ॥
अति आनंद अंगन नंदराई ॥ बैठे प्रमुदित गोप अथाई ॥
लियो गोद सुंदर घनस्यामहि ॥ ब्रज के जीवन बन सुखधामहि
आयो तहां एक बनजारो ॥ मूंगा मोती बेचन हारो ॥१॥
तेहि लगि आरिगे नंदकुमारा ॥ देहि देहि कह वारंवारा ॥
दीरघ मोल कह्यो व्योपारी ॥ रहे ठगे सब गोप निहारी ॥
कर पर राखि रहे हरि मोती ॥ देत भई लालि सुंदर जोती

अथ मोती बोवे की लीला ॥

मुक्ता ले हरि गये परवये अजिर बलबीर
आलबाल थल रोपि के पुनि र सींचा नीर
हँसी जसोमति मात कहत करत मोहन कहा
यह नहिं जानत बाल येकरता सब जगत के
भये तुच [illegible] वलता में ॥ जसुमति अजिर मुक्ता फल जामे
फूलत फलत न लागी वारा ॥ ब्रम्हादिक छिन धरत बिचारा

नंदभवन हरि सुकृत जमाये । ब्रजवनितन सुख हेत प्रगटाये ॥
ब्रजवासी यह प्रभु की लीला । सब सुख संपति सब कुशलशील
दायक है जासु सुजस सुखदाय । प्रगट करत [illegible] गाय ॥
ब्रह्मादिक जेहि पार न पावे ॥ नंद अजिर सो ख्याल बतावे ॥
जाकी महिमा लखै न कोई । निर्गुण सगुण धरे वपु सोई ॥
लोक रचै नासै मति धारै ॥ सो ग्वालन संग लीला धारै ॥
शिव विरंचि मुनि ध्यान न पावै । ताहि जसोमति गोद खिलावै ॥
अगम अगोचर लीला भारी । सो वृन्दावन कुंज विहारी ॥
बड़े भाग्य सब ब्रज के वासी । जिनके संग विहरत अविनासी ॥

धनि धनि ब्रज के नारि नर धनि जसुदा धनि नंद
विहरत जिनके सदन नित ब्रह्म सच्चिदानंद
कहि कहि [illegible] धन्य धन्य ब्रजपावन
जहां चरावत गाय सखन सँग सुरनसिरमुकटमणि

अथ वकासुर वध लीला

प्रात चले उठि गायन चारन । हलधर सुंदर स्याम सुहावन
देखति छवि ब्रजसुंदरि ठाढी । करत परस्पर आनंद बाढी ॥
देखि सखी ब्रज तें वन जाहीं । बीच मोहन ग्वालन के माहीं ॥
रोहिणी कुँवि सुत गौर सुहाई । जसुमति सुवन स्याम सुखदाई
ओढे नील पीत पट सोहैं ॥ सो छवि देखि मदन मन मोहै ॥
युगुल जलद घन दामिनि जानो । जोरत नात परस्पर मानो ॥
सीस मुकुट कल कुंडल कानन झलकत दिव कपोल छवि आनन
सखन मध्य सोहत नंदलाला । मंद हसनि दृग कमल विशाला ।
कटि किंकिणि कर लकुट सुहाए । जात चले वन मन हरषाए ॥

रही थकित लखि छवि ब्रजनारी। गये वनहिं विहरन वनवारी॥
वन वन फिरत चरावत गैया॥ हलधर श्याम सखा इक ठैया॥
करत विहार विविधि वन माहीं। बालकेलि रस वरनि न जाहीं॥

कवहुं गावत सखन संग कवहुं बजावत वेनु
धौरी धूमरि नाम लै कवहुं बुलावत धेनु॥
कवहुं नचावत मोर सुंदर स्याम सजलद तन
गरजि मुरलि धुनि घोर वरषत परमानंद जल

खेलत विविध खेल मन भावन। श्रीवृंदावन परम सुहावन॥
तृषित जानि गैयन नंदलाला। कह्यो चलहु जल देन गुपाला॥
लेहु बुलाय सुरभि गन टेरी। सुनत ग्वाल सब लाये घेरी॥ ॥
गोधन वृंद हांकि सब लीनो। ग्वालन गमन यमुनतट कीनो॥
तहां बकासुर छल करि आयो। मायारचित स्वरूप बनायो॥
एक चोंच भूतल जहं लाई॥ एक रही आकाश समाई॥
मग महं बैठो बदन पसारी॥ ग्वालन देखि भयो भय भारी॥
बालक जात हते जे आगे॥ ताहि देखि सो थाके आगे॥ ॥
कहत भये सब हरि सों आई आगे एक बलाय कन्हाई॥ ॥
आवत नित हि ग्वाल इहि ठाहीं ऐसो कबहुं लख्यो हम नाहीं॥
तबहिं कृष्ण ताको पहिचान्यो आयो बकासुर मैं यह जान्यो॥
पल में आज याहि मैं मारौं ॥ असुर चोंच धरि बदन बिदारौं॥

निडर श्याम आगे भये चले बकासुर पास॥
कहत सखा सब श्याम सों नीके जीवन की आस
अजहूं नाहिं डरात बचे कितै उतपात सों॥
चले कहा हरि जात हम बरजत मानत नहीं

तबहीं कह्यो चलहु तेहि पासा। सखा सकल कर हृदय हुलासा।
जब हरि संग चले सब ग्वाला। देख्यो जाय बकहिं विकराला॥

ताके निकट गये सब जबही ॥ लियौ लील हरी कौं बकतबही
जान्यौ असुर काज मैं कीनौ ॥ तबही बदन मूंद कै लीनौ ॥
वाल पुकारत आरत भागे ॥ वलि सों आय कहन अब लागे
हम बरजत हरि गये कन्हाई ॥ लीनो लील असुर बक धाई ॥
हरिचरित्र कछु जानि न जाहीं ॥ उपजी आग असुर तन माहीं
लाग्यो जरन भयो अति व्याकुल ॥ हरि कौं उगल दियो अति अकुल
बहुरौ पकरन कौं मुख वायो ॥ चोंच पकरि हरि चीर वहायो
मरत चिकार असुर अति भारी ॥ व्याकुल भये ग्वाल अति भारी
ग्वालन विकल देखि वलरामा ॥ कहत असुर मार्यो घनस्याम
टेरि उठे उन कुंवर कन्हाई ॥ आवहु सखावृंद सब भाई ॥

वक विदारि हरि सखन कौं टेरत आवहु धाय ॥
चोंच फारि मार्यो असुर तुम हू करी सहाय ॥
गये सखा सब धाय सुन तस्याम के वचन वर
निरषि नयन सुख पाइ पुनि २ भेटत पुलकित तन

कहत परस्पर सखा सयाने ॥ ये कोउ अजभग टे हम जाने ॥
इनहिं नाहिं कोउ घात करैया ॥ ये है असुरन के दल वैया ॥
जबतें इनहिं जसोमति जाये ॥ तबतें असुर कितेक आये ॥
तृणा पूतना सकटा मारे ॥ तब ये रहे बहुत ही बारे ॥ ४ ॥
हम देखत वत्सासुर मार्यो ॥ कितिक बात यह बक बिदार्यो
इनके गुण कछु जानन जाहीं ॥ हम अपने जिय डरे वृथाहीं
धनि जसुमति जिन इनकौं जाये ॥ धनि हम इनके सखा कहाये
बकहि मारि सुन्दर घनस्यामा ॥ यमुना तट आये सुखधामा
सुरभीगन सब नीर पिवाये ॥ सखन समेत आप अन्हाये
धौ सब वनधातन चित्र तन कीनो ॥ मोर मुकट माथे धर लीनो ॥
वनमाला पंचरंग सखन बनाये ॥ प्रेम सहित हरि कौं पहिराये

वनफलमधुरगोपलैआये॥ सखनसहितहरिभोगलगाये

वलमोहनघरकोंचलेजानिसांझकीवेर॥
लीनीगैयाघेरसव मुरलीकीधुनिटेर॥
चलेवृजावतवेनुग्वालवृंदकेमध्यहरि
अंगअंगछविजो[illegible]

सुनिमुरलीकीटेररसाला॥ देखनकौंधाईव्रजबाला॥
कहतपरस्परअतिसुखपावत॥देखसखीवनतेहरिआवत
नानारंगसुमनकीमाला॥स्यामहियेछविदेतविसाला॥
मोरपक्षसिरमुकुटविराजे॥मधुरमधुरसुरमुरलीवाजे
भृकुटीविकटनिकटसुखदाई॥तिलकरेखछविवरनिनजाई
कुंडललोलअलकघुंघरारी॥निरखसखीलागतअतिप्यारी
नासानिकटअधरअरुणाई॥जनुसुकविंवनिचोंचचलाई
मंदहसनिघनदामिनिजैसे॥दुरिदुरिप्रगटहोतिहैजैसे
तनघनस्याम कमलदलनैना॥वोलतमधुरमनोहरवैना
मुखअरविंदमंदसुरगावत॥नटवररूपसखनमनभावत
सवअंगसदनखोरवनाये॥गुंजमालमनलेतचुराये॥
यामोहनछविपरवलिजैये॥ नंदनंदनदेखतसुखपैये

ग्वालवालगोधनलियेहरिहलधरदोउभाइ
सांझसमैवनतेंचलेआयेधेनुचराइ॥ ५॥
रांभतिधाईगायवत्ससुरकारिपयश्रवत
हरषिजसोदा[illegible] कहतिस्यामआवतिघरहि

इतनीकहतस्यामघरआये॥जननीदौरिहरषिउरलाये
व्रजलरिकासवसुरतहिधाये॥महरिमहरपदसीसनवाये
ऐसोपूतधन्यतुमजायो॥इनकोगुणकछुजातनगायो
तहांअसुरइकखगतनुधारी॥रह्योयसुनतटवदनपसारी

काहूसौं औरियों भटकावै
युवतिन के मन वसैं कन्हाई
हरिकौ खेलत मोरु खिजावैं
गेंदउरोजन माहिँ दुरावैं॥
कंचुकि फारि आपहू लेहीं
अंतर भुज मांहि हरिहि उरावैं
जसुमति पैं तुम कौं लै जैहैं॥

आपहु सौं औरातिन्हें सम
देखे चैन इक पल मैं सुह
करकोरी दै गारी गावै।
इहि विधि हरिसौं अंग
जसुदा हिंजाइ उरहनौं देहीं
कह्यौ चलौ नंदरानि सुता पै
कुटिल भौंह किये हम न डरै

यौं ब्रजवनितन नेह वस आनंद छवि घनरास
रसिक पुरंदर सांवरो ब्रजमैं करत विलास
अव वरनौं सुखखानि हरि वृषभानुकुमारिकौं
प्राणप कह्यौ जान अथ प्रथम मिलन दोउ देखकौ

अथ राधा जूकी प्रथम मिलन की लीला

खेलन हरि निकसे ब्रज खोरी
श्रवणनि कुंडल की छवि छाजै
दसन दमक दामिनि दुतिधारें
गये यमुन के तट मनमोहन
औंचक दृष्टि परी तहँ राधा॥
नयन विशाल भाल दिये रोरी
वैनी पीठ ढरत रुक कोरी॥
संग लरिकिनी आवनि देखी
रीझ रहे घनस्याम कन्हाई॥
नैन नैन सों मिलि परी ठगौरी॥
रहत कहौ काकी है बेटी॥

मेघस्याम तन पीत पिछौरी
मोरपंखन को मुकट विराजै
हाथ लिये फेरत चकडोरी॥
नाहीं तहाँ सखा कोउ गोहन
प्रेम रासि गुण रूप अगाधा
नील वसन तन की छवि गोरी
अति छवि पुंज दिनन की थोरी
चितै रहे सुर रोक निमेखी
अनुपम कमल सिरदै सुभाई
सूरत स्याम की मूरति भोरी॥
अवलौं नहीं कहूँ ब्रज भेंटी

काहे कौ हम ब्रज तन आवैं । खेलत रहत आपने गावैं ॥

सुनत रहत श्रवणन सदा नंद ढुटा ब्रज माहिं
घर घर तें नित चोरि के माखन दधि ले खाहिं
बिहसि कह्यो घन स्याम तुम रौ कहा चुराय हैं
आवहु किन ब्रज धाम नित हि खेलियें संग मिलि

रसिक सिरोमणि नागरि दोऊ । [illegible] ॥
ब्रजवासी प्रभु कुंज बिहारी ॥ बातन भुरै लई हरि प्यारी ॥
प्रथम सनेह दुहन मन मान्यो ॥ गुप्त प्रेम शिशुता आटान्यौ ॥
कहत स्याम कत मन सकुचावहु खेलन कबहु हमारे आवहु
दूर नहीं कछु सदन हमारो ॥ श्रवणन सुनियत बोल पुकारो ॥
लीजो मोहि टेर नंद पौरी ॥ कान्ह नाम मेरो सुन गौरी ॥
सूधी बहुत देषियत तुमहू ॥ ता तें साथ कीजियत हमहू ॥
तुम्हें खवा वृषभान दुहाई ॥ घरी पहर खेलो इत आई ॥
गैया गिनन नि नंद जब जैहैं तिनके संग हमहू उत रहैं ॥
जो तुम गाय दुहावन ऐहो ॥ खरक मांनौ मो कों पैहो ॥
रसिक सिरोमणि जान निराई ॥ इम प्यारी संकेत बुलाई ॥
सुनत गूढ हरि की मृदु वानी ॥ मन ही मन प्यारी मुसकानी ॥

गुप्त प्रीत प्रगटी नहीं दोउन हृदय छपाय
मनमोहन प्यारी चली घर को नैन चलाय ॥
चली सदन सुकुमार मन मैं उर मो सांवरो ॥
जानी बड़ी अवार मात त्रास उर आनि के ॥

क[illegible] सौं चली कुंवर । को जैहै खेलन इन के घर
चली वेग इन के घर जाहीं । भई अवार यमुन तट माहीं
वचन कहत रूप सुख माहीं । हृदै प्रेम दुख मन नहिं याहीं
गई भवन वृषभान कुमारी ॥ जननी कहति कहां [illegible]

अबलौ कहाँ अबार लगाई। गैया खरक दोहि मैं आई॥
ऐसे कहि मातहि बहराई॥ अंतर गति बस रहे कन्हाई॥
बिरह बिकल तन रहन सुहाई। सुंदर स्याम मोहनी लाई॥
खान पान कछु नेक न भावै॥ चंचल चित्त पुलकि तन पावै॥
मात पिता को मानति त्रासा। नैननि हरि दरसनि की प्यासा॥
कहति दोहनी दै मोहि मैया। जैहौं खरक दुहावनि गैया॥
अहिर दुहत नव गाय हमारी। जब अपनी दोहि लेत सवारी॥
खरिक मोहि लगि हैत हे जाई॥ तू मति आउ खरिक अतुराई॥

लई मात सों दोहनी चली दुहावन गाइ॥
मन अटक्यौ नंदलाल सों गई खरक सुहाइ॥
मग मग सोचति जात कब देखौं वह सांवरो॥
जिन मन लियो चुराइ खरक मिलन मोसों कह्यौ॥

देखे जाइ तहाँ हरि नाहीं॥ भई चकित प्यारी मन माहीं॥
कबहूँ इत कबहूँ उत डोलै। प्रेम बिबस कछु मुख न बोलै॥
देखे नंद संग हरि आवत॥ लली कि लगे लोचन सुख पावत॥
देखो स्याम राधिका ठाढ़ी। लई लगाइ प्रीति अति बाढ़ी॥
कह्यो महरि लाखि लेहु दोऊ। दूरि [illegible] रति जे यी कोऊ॥
सुनि वृषभान सुता इत आई। अपने [illegible] नाव कन्हाई॥
हरि तन रहि अनेक निहारे। कोई कहूँ गा [illegible] पूरे॥
नंद बबा की बात सुनो हरि॥ जाकुंन मो हित [illegible] भरि॥
महरि सौं पिहरि अक्यौ तुम दीने॥ राधे हारे हि बांहे गा [illegible]॥
तुम कों कहु जान नाहिं देहों॥ जो जै हौ तो पकरि लैहों॥
मेरी बांह छोड़ि दै राधा॥ कहत स्याम ऊपर मन साधा॥
तुम्हरी बांह न तजों कन्हाई। महर राणी जि हैं हम कौ आई॥

परम नागरी राधिका अति नागर व्रजचंद

प्यारी की सारी हरि लीन्ही ॥ पीत पिछौरी प्यारिहि दीन्ही ॥
पादर जहँ तहँ दियेउ डाई॥ आये सदन स्याम सुखदाई॥
रही जसोमति हरि हि निहारी ओढे देखि सीस पर सारी॥
मन धौं कहत कहाँ यह पाई पीत पिछौरी कहाँ गँवाई॥
जसुमति डरति आप पहिचानी व्रजयुवतिन भुरये यह जानी
पूछत हरि हि बिहसि नँद रानी तरुणिन को सिष ईसुधि गनी
पीत पिछौरी कित हि बिसारी यह तौ लाल तियन की सारी
जान लई जननी हरि जानी॥ तब इक बुद्धि सु रस उर आनी
मैं लै गाय गयौ यमुना री ॥ तहँ बहु भरति हुती पनिहारी
बिडरी गाय भजी सब नारी॥ बछी बसुरिया बजत सँवारी
हौं लै भज्यो और की सारी ॥ सो लै पादर गई हमारी ॥

पीत पिछौरी लै भजी मैं पहिचानति वाहि
मैया री मैं जाइ कै धरि लै आवत ताहि॥
हरि माया कौं जानि पीताम्बर ताकौ कियौ॥
जननि दिखायौ आनि कहनि लै आयौ ताहि सो

राधा गई सदन ससुहाई ॥ हाथ दोहनी दूध भराई ॥ ॥
परम प्रीति हरि बसन दुरायौ जननी सूरहि तें गृह पायौ ॥
और किशोर कहत मुख बानी जननी दौरि देखि भय मानी
कहत दीठ लागी कछु बारी उर लगाइ पछितात निहारी
झूरति नेह बिकल महतारी कहा भयौ राधा तो हि प्यारी
अब हीं खरक गई तू नीके॥ आवत कौन बिथा भई जीके
इक लरिकिनी संग ही मेरे॥ कारे डसी आइ तिहिं नेरे॥
मूर्छित परी वह धरणि मझारी मै डरपी अपने जिय भारी॥
स्याम बरन इक ढोटा आयौ कहत सुन्यौ वह नंद को जायौ
कछु पढि कै वह तुरत हि भागे जानति नहीं कौन को दारी॥

मेरेमनभारेत्रासगयोरी ॥ अवकछुनीकोनेकुभयोरी॥
अतिप्रवीनवृषभानदुलारी यहकहिसकुचाइमहतारी

सुनजननीराधावचनउरसौंलीनीलाय॥
कहतटरीकरवरवडोवारवारपछिताइ
एकसुताइहनातपायेवदनद्वारपरि॥
भईआजकुशलातवचीसर्पतैलाडिलो

खीजीकछूकुंवारिपैजननी घरनाहिरहतिफिरतिभयहरनी
कितनोकहतितोहिमैंहारी दूरकहूवाहरजिनजारी॥
हैलरिकिनीसवनिघरमाहीं तोसीनिडरकहूकोउनाही॥
कवहूखरकवहूवनजाई कवहूफिरतियमुनतटधाई
चितैअकाशधरतिपगधरनी वातकहतिलागतिताहिजरनी
सातवरषकीभईकुमारी॥ वहुतमहरवृषभानदुलारी
आजकुशलकुलदेवनकीनी विधिवचाइविषधरतैंलीनी
सीतलजलतैंतुरतन्हवाई अंगअंगोछवसनपहिराई
वारहिवारकहतिकछुषारी अवकहुंखेलनदूरनजारी॥
यहसुनिहंसैमनहिमन [illegible] हृदेध्यानहरिकुंजविहारी
कहतदूरअवकतहूंनजेहों गांवघरहिखेलतनितरैहों
जिनकेगुणनिविरंचभुलाने तिनकेचरितकहाकोउजाने

जनरंजनभंजनकलुषराधानंदकुमार॥
गुप्तप्रगटलीलाकरतव्रजमैंयुगुलविहार
देषिअनूपमवालमातपितागुरुजनहीरहि
असुरलखतविकरालनवकिशोरनितचोरतिय

सर्वरूपसवघटकेवासी॥ सर्वविधिकरनसकलसुखरासी
सर्वभावसवफलकेदायक सर्वोपरिसवगुणकेलायक
सर्वआदिसवअंतरजामी सवतेपरसकलकेस्वामी

माया ब्रह्म कृष्ण अरु राधा ॥ प्रेम प्रीति दोउ अगम अगाधा
छवि शृंगार मनहु शुभ जोरी करत विहार स्याम अरु गोरी ॥
बसे स्याम स्यामा उर माहीं ॥ देखे बिन भावत कछु नाहीं ॥
खेलन मिस वृषभान किशोरी आई नंद महरि की पौरी ॥
टेरत मधुर वचन सकुचाई ॥ घर भीतर है कुंवर कन्हाई ॥
सुनत स्याम कोकिल सम बानी ॥ अति आतुर राधा पहिचानी ॥
माता सौं कछु कलह करत धरि तुरत हि सौं बिसराय दियो हरि
तू पहिचानति है इनकौ मैया ॥ कहत बार है बार कन्हैया
मैं यमुना तट काल्हि भुलान्यौ वांह पकरि मोकौं इन आन्यौ

तुहि सकुचाति आवति इहां मैं देसौं हि बुलाइ
अति नागर जननी हृदयांस्यो प्रेम उपजाइ
भीतर लेहु बुलाइ कहति मात हरि सौं हरषि
चले स्याम सुख दाइ लषि प्यारी आनंद भयो

नैन सैन मिलि दोउ सुख पायो विरह जाइ दुख द्वंद नसायो
मनहीं मन आनंद अति भारी भये मगन दोउ रूप निहारी
कहत स्याम राधा किन आवै तुमकौं जसुमति माय बुलावै
बांह पकरि ल्याये वनवारी ॥ जसुमति बोली निकट बैठारी
देखि रूप मन मांझ सिहानी ॥ बूझति नंद महरि की रानी
ब्रज मैं तोहि न कबहु निहारी कौन गाव है तेरो प्यारी ॥
कौन री तात कौन महतारी कहा नाम तेरो है प्यारी ॥
भूलि गयो हौं काल्हि कन्हाई ॥ भली करी तू करगहि ल्याई
धन्य कोष जिन तो कहं धारी धन्य घरी तू जिहि अवनाये
देखि रूप जसुधा अभिलाषी सविता सौं विनती कछु भाषी
नैन विशाल वदन शुभ छोटी भली बनी है सुंदर जोटी
वारवार बूझति हरषाई ॥ है तू कौन महरि की जाई

मैं वेटी वृषभान की तुम कों जानति माय॥
बहुत बार मिलनों भयो यमुना के तट आय
अब मैं लीन्हीं जान बेटौ कुलटा है बड़ी
है लंगर वृषभान गारी दे हंसि नंद घरनि

राधा बोलि उठी इत आई॥ करी कछु बाबा लंगराई॥
ऐसी समरथ कब उन पाई॥ हंसि जसुमति राधा उरलाई॥
कहति महरि की रति मुहंजोरी। अब कीजत है तेरी चोटी॥
जसुमति राधा कुंवरि संवारे प्रेम सहित बारनि निरवारै॥
वड़े बार कोमल अति कारे॥ लै सुमना सुत ऐंछ संवारे
मांग पारि वैनी रचि गूंथी मानहु सुंदर छवि की यूथी
गोरे वदन विंदु करि वंदन मानौं इंदु मध्य भू वंदन॥
सारी नई सुरंग निकारी॥ जसुमति अपने हाथ संवारी
वदन पोंछि अंबर सों दीनो उर आनंद निरषि छवि कीनी
तिल चांवरी वतासे मेवा॥ कुंवरि गोद भरि विनवति देवा
कहेउ कान्ह संग खेलो जाई यह सुनि कुंवरि मनहिं हर्षाई
सुन्दर स्याम सुन्दरी राधा॥ खेलत दोउ छवि सिंधु अगाधा

छं० छवि सिंधु परम अगाध दोऊ नंद सदन विराजहीं
लखि रूप कोटिक काम रति घन दामिनी दुति लाजहीं
जसुमति विलोकति चकित दंपति रूप मन आनंद भरी
सोइ भाव देख्यो दुहुन के उर जोइ अभिलाषा करी
दो० खेलन दोऊ रंग रंग लगे भरे प्रेम अहलाद॥
मानो घन अरु दामिनी करत परस्पर वाद
अमिय वचन रस मूल अकथनीय छवि अमित गुण
रही जसोमति भूलि युगल किशोर रसिक रस लखि

चली महरि सों कहि सुकुमारी। सदन आय के अति अनुरागी

जसुमति निरषि कह्यौ हरषाई । खेलो करु हरि सुगनि गप्राई
षेलूं उठे मोहन संग राधे ॥ तूकत सकुच करै जिय बाधे
मो षेलत तू आवत नाही ॥ जननी सो डर पावि मन माही
तोकौ लाषि मैया सुखपावै । देखि कितौ करिकौ हवुलावै
सुनि मोहन के वचन सियानी । चितै रही सुख मन मुसिकानी
विहसि चली वृषभानदुलारी । हरिमूरति उर टरत न टारी ॥
गई सदन वूझति महतारी । कहाँ जती अव लौ री प्यारी
वैनी गूथ मांग किन कीनी ॥ वेंदी भाल लाल किन दीनी
खेलत रही नंद के द्वारे ॥ जसुमति वोल निकट वैठारे
वूझन लगी नाम ले मेरो ॥ वावा को पूछ यौ अस नेरो
मोतिं चितै पुनि सुतै निहारी । कछु सविवासी गोद पसारी

मेरी षिर वैनी गुही वेंदी लाल वनाइ ॥ ५ ॥
पहिराई निज हाथ सौं सारी नई मंगाइ ॥
तिलचांवरि दै गोद विधुना सो विनती करी
उर करि कै अति मोद ताहि विहसि गारी दई

विहसि कह्यौ तो को नंदरानी । वुह जैसी तैसी मैं जानी ॥
तोहि नाव धारे धस्यौ ववा को । कह्यौ धृत वृषभान सदा कौ
तव मैं कह्यौ ढग्यौ कव तुम्हीं । हेसिल पटन लगी नव हम्ही
सुनि कीरति राधा को वाते ॥ सरल सुभाव भरी सिसु ताते
केहन ज्यावत नीकौ दीनो । थेटी द्रव्य जननी लीनो ॥
जो कछु मोहिक ह्यौ नंद घरनी । सास वहै उनही की करनी
हँसि हँसि कीरति कहत सुभाय ॥ मन में अति आनंद वढाये
फेरि फेरि जसुदा की वाते ॥ वूझति है जननी राधा ते ॥
सुनि सुनि वरसाने की नारी । गावति जिन जसनि कौ ह गारी
सुनि वाते कीरति मुसकानी । नैदरानी के जिय की जानी

व्रज मै करत बिलास व्रजवासी जनजा हि बलि ॥

कहति स्याम सौं जसुमति मैया । पियहु दूध कछु लेहु कन्हैया
आज सवार दुहौं मै गैया ॥ सोई दूध पियो बलि मैया ॥
और दूध रुचि सौं हि न आवै । जो तू कोटि यत्न करि प्यावै
जननी तब हि सौंह करि स्याई । यह धौरी कौ दूध कन्हाई ॥
तुम तैं और कौन मुहि प्यारौ । जौ टिधलौ तु मेरे हित न्यारौ
तातो जानि वदन नहि लावै । फूकि फूकि पै जननि पियावै
पय पीवत मोहन भल समै । सुन्दर सेज जननि पौढाये ॥
मात जगावति नंद की रानी । उठहु लाडिले सारंग पानी
भोर भयौ जागहु मेरे प्यारे ॥ ठाढे ग्वाल बाल सब द्वारे ॥
हरहु ताप सुख कमल दिखाई । करहु कलेऊ मिलि बलि भाई
सद माखन दधि रैन जमायौ ॥ मांग लेहु सब जो मन भायौ
सखा वृंद सब लेहु बुलाई ॥ उठहु लाल जननी बलि जाई

नवहो सिच्चितये सुजतें उठे स्याम सुखदानि
जसुमति जल झारी लियें मुख धोयो निज पानि
बोल उठे बलराम उठे सांवरे आज हरि ॥
हरषि मिले घनस्याम दाऊजू कौ हिभ्रात सौं

द्वारे से सब सखन बुलायौ ॥ देखि वदन सबहिन सुख पायौ ॥
सखन सहित सुन्दर सुखदाई । कियौ कलेऊ कछु दोउ भाई
गैयन लै वन चले गुवाला ॥ संग चले मोहन नंदलाला
टेर सुनत बालक सब धाये । घर घर के बछरन लै आये
हरख कहत सब सुनौ कन्हैया । चलहु आज वृंदावन भैया
यमुना तट सब बच्छ चरैहैं । बंसीवट खेलत सुख पैहैं ॥
भलो कही हँसि कह्यौ गुपाला । चले सकल वृंदावन ग्वाला
कोउ टेरत कोउ घेर लै आवै । कोउ सुरभी गरा जोरि चलावै

कोउ स्रृंगी कोउ वेणु बजावै। कोउ परस्पर हेरी गावै॥
हेरी टेर सुनत मन मोहन॥ कहत मोहि सिष वड़ कि गोहन
हरि ग्वाल [illegible] हसे सकल पूरे नहि आई
कहत स्याम अब के फिर लीजे। अब के जाइ तबै हसि दीजे

गावत खेलत हसत सब सखा वृंद गोसाथ
पहुंचे वृंदावन सघन वृंदावन के नाथ॥
फिरत चरावत धैन ही नृप दु दुष्न दलन
कृष्न कमल दल नैन सबै अंग सुन्दर सुखद

अथ अघासुर बधलीला

तहां अघासुर वन मैं आयो। [illegible] रि कोप पठायो
ताके एक बहिन द्वै भैया॥ मारे प्रथम हि कुंवर कन्है[illegible]
एक पूतना जो ब्रज आई॥ [illegible] ऊ आई
तिनको वैर असुर उर धारी॥ कियो गर्व मन मै अति भारी
आज राजको कारज कीजे॥ औ वैर भाइन को कीजे॥
गिरि समान अजगर तन धारी भयो असुर मग वदन पसारी
वन धन नदी रची मुख माहीं माया कृत पहिचान जाहीं
वाही मग निकसे नंदलाला गाय वच्छ लीने सब ग्वाला
हरि अंतरजामी सब जानी कपट रूप यह खल अभिमानी
याको आज तुरत संघारौं॥ असुर मारि भू भार उतारौं
ग्वालन आहि वर्ष तको जानौ॥ तासु वदन गिरिकंदर मानौ
देखि सुहावन तृण हरि आई॥ गाय वच्छ वे सब [illegible]

गाय वच्छ ग्वालन सहित सब मुख गये समाइ
कहत परस्पर आज वन सुरभी चरें अघाइ॥
सब मुख गये समाइ असुर मकरायौ हित तब

अंधकार गयौ छाय मानौ घन घेर्‍यौ निज॥

अति अकुलाइ उठे तहँ ग्वाल। गाय बच्छ सब विकल बिहाल
कहत परे धौं हम कत आई॥ त्राहि त्राहि घनस्याम कन्हाई
सब के प्राण गये इहि बारा॥ तुम बिन कौन उबारनहारा
श्रवण सुनत प्रभु आरत बानी। भये दुखित चिंता मनि आनी
दीनबंधु भक्तन सुखदाई॥ पैठे पाइ अघा मुख जाई
अघा असुर उर अति हरखाई। लियौ ओठ सौं ओठ लगाई
विद्याधर मुनिधर गंधर्वा॥ अति भय विकल गगन सुर सर्वा
नवहि कुसुमन वृष्टि उपाई। आविगति गति भक्तन सुखदाई
मुखतें देह दुगुण विस्तारी॥ सधी सास भइ त्रासा भारी
सक्यौ नहीं तब असुर सँभारी। कियौ शब्द अघात पुकारी
फूट गयौ सिर दसम दुवारी। निकसी प्राण ज्योति उजियारी
सो वह ज्योति स्याम कौं धाई॥ बहुरि आय हरि मांझ समाई

वाही मग भगवदन तें निकसे गोकुल राइ॥
कहत सखन आवहु निकस मैं कीरि लई सहाय
आतिहि सकाने ग्वाल गाय बच्छ व्याकुल भ्रम
मिट्यौ तिमिर तिहिकाल कहत तहँ हर्ष वचन सुनि

हर्ष सहित बाहर सब आये॥ हरि कौं देखि परम सुख पाये
हम अज्ञान वृथा भय पाई॥ स्याम हमारे साथ सहाई
धन्य कान्ह धनि धनि पितुमाता। जिन जायौ तुम कौ ब्रजत्राता
गिरि सम असुर सर्प तनु धारी। ताहि हत्यौ तुम हे असुरारी
कहत कान्ह तुम करी सहाई॥ तब मारयौ मैं असुर अन्याई
जो तुम मेरे संग न होते॥ ॥ तौ यह मासौं जात न मोते
दीर्घ अघासुर वध अब जानी। यपि सुरगन कोहि जे बानी
विद्याधर किन्नर गंधर्वा॥ अति आनंद सुरगण सर्वा

अघासुर कौ करत बड़ाई । हरि मधि याकी ज्योति समाई
करत अनेक यत्न मुनि ग्रामा । अंतकाल दुर्लभ हरि नामा
सो हरि अंत काल जन पावन । वसे आय अघसुर दुखदावन
इहि सम और कौन के भागा । कहैं देव सब अति अनुरागा

जैजै जै प्रभु जुगत हित जगत्राता जगदीस ॥
जाकौ मारन हू प्रगट तारन विस्वावीस ॥
हरषि सुमन वर्षाय जैजै ध्वनि नभ करत ॥
ग्वाल गाय सुख पाय अति आनंद निरखत हरीहिं

तवहिं सखन सौं विहसि कृपाला ॥ वोले करुणासिंधु गोपाला
चलहु सकल वंसी वट छांहीं । आई है है छाक नहां हीं ॥
भोजन करि चैं सब मिल जाई । वछरा हाकि लेहु अगुवाई
हरषि चले तहं ते वलवीर । आये सब वंसी वट तीर ॥
वंसीवट अति सुभग सुहावन ॥ और चहूं दिस वृक्ष सुपावन
चरत वच्छ सब वन के माहीं ॥ वैठे आइ स्याम वट छाहीं
और पास गोपन के वालक ॥ मध्य स्याम सुन्दर जग पालक
मोर मुकुट कल कुंडल कानन ॥ कोटि काम छवि सोहत आनन
गैरकादि चित्रित तन स्यामा । पीतवसन वनमाल ललामा
बहु विधि सखन कुटक कीने । कुंजन के आभूषण कीने
सखा वृंद सब सुन्दर सोहैं ॥ निरखत रूप मदन मन मोहैं
प्रेम मगन मन परम हुलासा । करत परस्पर हास विलासा

तहां छाक घर घर तें आई भरि भरि भार ॥
जसुमति पठये कान्ह कौं व्यंजन वहुत प्रकार
छाक पठाई मात हरषि कहत हरि सखन सौं
दीपन लगी वहु भांति सब मिलि भोजन कीजिये

वन भोजन विधि प्रकट कन्हाई ॥ छाक सबै इक ठांव रखाई

जलतैं पुरइन पातमेंगाये ॥ दोनावहू परास केलाये
कछु फलवृंदावन केनीके ॥ लियेमंगायभावतेजीके
वैठे मंडल जोरि गुवाला ॥ मध्यस्यामसुंदर नंदलाला
भांतिभांतिविंजनसबपागे । परसिधरे सबहिन केआगे
कछुकहथ्येरिन परधरलीन्हे । छाकखोलि अंगुरिन विचकीन्हे
मुरली मुकटकाखतरलीने । भोजनकरनलगेरसभीने ॥
मधुमंगल परसैनसुदामा । सुबलसुखमनादासश्रीदामा
अपरअनेक गोपसुतलीने । जेंवतमिलिसंगस्यामसलीने
लेतपरस्पर कौरछुडाई ॥ कबहुकतिनको देतकन्हाई
कबहू कान्ह देतबुलावैं ॥ उह्हांकिताहि अपनेमुखनावैं
मीठे खाटे स्वाद बखाने ॥ हासविलासकरतसुखसाने

देखतसुरगणासिद्धमुनि चढ़ेबिमानअकास
लखिकौतुकअधिकितसबैगयेकमलभवपास
कह्योब्रम्हसोंजाइ कहतजाहिपरब्रम्हसुनि
सोंग्वालनसंगखाय छोरिछोरिकरतेकवर ॥

अथब्रम्हाके मोहकीलीला

हरिमाया मोहे सब प्रानी ॥ कहब्रम्हाकहसुरसुनि ज्ञानी
सुरविरंचि सुरमुनिकीवानी । भयोमोहउरमें यह आनी
गोकुलजन्म कौनयह आयो । मैंकछु याकौ भेवनपायो ॥
परखौ लै देखौ प्रभुताई ॥ बालकवच्छ हरिल्यावौ जाई
जो सुरवाहू ईस भगवाना ॥ लैहैं तुरत मंगाइ सुजाना
यहविचारविधिमनठहरायो । चल्योतुरतवृंदावनआयो
देखेसघेनवनमें समितपावन । रहपललताद्रुमपरमसुहावन
नदिरमणीककदनचहूपास । पैसीवटमधिसुखदीन्वास

गोप मंडली मंडल मोहन॥ भोजन करत सखन संग गोहन
देषि विरंच चकित चित भारी वक्षु रहि रीले नैवन मारी॥
हरि अंतर जामी सब जानी। विधि के मन की रुचि पहिचानी
तब पठये है ग्वाल कन्हाई [illegible] र सब जाई॥
ग्वाल सकल वन ढूंढि के फिरि आये हरि पाहि
कहत वच्छ गये दूर कहुं खोज पाइयत नाहिं
तब हसि कहेउ कन्हाई तुम सब यहां बैठ रहौ
मैं धौं देखहुं जाइ चले आप वह राइ तब॥
जब गये दूर बनहिं जन त्राता। तब ही बालक हरे विधाता
प्रभु लीला की गम कछु नाहीं गर्वि [illegible] नाहीं
निज माया सों करि मति भारी राखे बाल वच्छ इक गैरी॥
गुण सागर नागर नंदनंदन वंसी वट आये जग वंदन॥
दीनबंधु भक्तन हितकारी॥ यह अपने उर मांझ विचारी
बाल वच्छ जो ब्रज नहिं जैहें मात पिता इनके दुख पैहें
तातें रूप सबन को धारों॥ या विधि तिन को दुःख निवारों
बाल वच्छ विधि लै गयो जेते भये स्याम तब आपुन तेते॥
वैसोइ रूप बेश गुण शीला। भैसिय बुद्धि पराक्रम लीला
रंग रेख जैसो जिहि माहीं॥ अंग चिन्ह अंतर कछु नाहीं
बोलन हसन चलन चतुराई हेरन टेरन फेरन राई॥
भूषण वसन लकुट कर जैसे भये स्याम सब आपुन तैसे
मारन उद्धारन यदपि है समरथ भगवान
तदपि जान निज दास विधि करी ताहि की कान
अपनो करि विधि जान अन [illegible]
तातें कीनो ज्ञान मन भायो विधि को कियो
कहेउ स्याम सब सषन बुलाई स्याव [illegible] घेरि वत्स सब [illegible]

अथ मरद्यो विधि गर्व नवायो॥ ब्रजवासिनकछु भेद न पायो॥
वालवत्स हरि नये उपाये॥ सव जानत वेई हैं आये॥

वालक वत्स जो कृष्ण के ब्रजवनितागउ धेन
पूरव प्रीति कृते अधिक करत रहत उर चैन
ब्रज मंगल भगवान ब्रम्ह सच्चिदानंद प्रभु
भक्तनके सुखदान लगे देन सुख सवरेनि घर

तव विरंच के मन यह आई॥ ब्रजके लोगनि देखहु जाई॥
ह्वै है करत विलाप कलापू॥ विन वच्छन गोयन संतापू॥
आय विरंच तुरत तहां देख्यो॥ घर ही घर सव कौतुक पेख्यो॥
जहं तहं गाय दुहत प्रभु पालक॥ खेलत निज २ घर सव वालक॥
देखि विरंच चकित मन माहीं॥ है यह ब्रजके धों वह नाहीं॥
मैं विधना सव सृष्टि उपाई॥ यह रचना धों किन है वनाई॥
कैधों हों इह भ्रम महि भुलानों॥ कै हरि अविनाशी नहिं जानों॥
अंतरजामी जानत सवहीं॥ वालवच्छ धोरयाये तवहीं॥
आन संभ्रम विधि ज्ञान भुलायो॥ गयो फेरि निज लोकहि धायो॥
देखे वत्सवाल जहं राखे॥ ॥ चकित वहुरि ब्रजकों अभिलाखे॥
आगे कृष्णलखन लोक सिधारे॥ वालवत्स दुहुं ओर निहारे॥
वरष दिवस इहि भांति वितायो॥ चकित भयो अति उर भ्रम छायो॥

मोहि विकल अति देखि के सुन्दर स्याम सुजान
प्रगट कियो जन जानि निज विधिके उर मैं ज्ञान
हृदय भई तव वुद्धि स प्रकाश अपवार प्रभु
धक धक में रोवत है वैर पढ़ायो कहन सों

मैं मति हीन वैर नहिं जान्यो॥ मोह विवस प्रभु सों हठ ठान्यो॥
यह अपराध वहुत मैं कीन्हों॥ निज भक्तान न प्रभु को चीन्हों॥
भई गलानि वहुत मन माहीं॥ सनमुख होत सकत विधि नाहीं॥

भयो सो पउर मोंम विसेषा॥ प्रभु प्रभाव मनमें पुरदेखा
बालक बत्स सहित सब साथू। कृष्ण रूप सब नस्यो समाथू
शिव ब्रह्मादिक हू अनेका॥ देखे अधिक एक ते एका॥
चरण कमल बंदन प्रभु केरे॥ गावत गुण गण भये घनेरे॥
होविपरीत चित भ्रम तस भान्यो। पूरण ब्रह्म कृष्ण पहिचान्यो॥
धरणी पाहि किलकि अति चतुराई परो चरण कमलन पर आई॥
अनजानत मैं करी ढिठाई॥ क्षमा करहु त्रिभुवन के राई॥
मैं प्रभु तुव प्रताप नहिं जान्यो तुम्हरी माया मोहं भुलान्यो॥
चूक परी मोतें निज भोरे॥ नाथ न वनै तुम्हें सुख मोरे॥

मैं अपराधी हीनमति परो मोह के जाल
मम कृत दोष न मानिये तुम प्रभु दीन दयाल
कहु जानो तुम भेव मैं ब्रह्मा तुमरो कियो
तुम देवन के देव आदि सनातन [illegible]

जो मन में बिगरे बिन जाने॥ सो अपराध न प्रभु कछु मा
ज्यों शिशु यद्यपि दोष उर माहीं माता कबहूं मानत नाहीं।
तोष तोषता को बहु करई विकसित चित अकल मे भरई
रद रसना दलि जो रिस होई कहो कौन पर कीजै सोई
निज तन व्याधि भी [illegible] यद्यपि पर कारनहिं [illegible]
तैसे ही प्रभु मो को कीजे॥ क्षमि मम दोष शरण महि लीजे
तुम जाने बिन जीव सदा हीं॥ उतपति परलै मांझ समाहीं॥
तुम करि रूप अजना बहु जाको सो जाने तुम्हरे प्रभुता को॥
मैं विधि एक लोक को साईं॥ जिमि कृमि गूलर मांझ गुसाईं॥
तुम्हरे रोम रोम प्रति गाता। कोटि कोटि ब्रह्मांड विख्याता।
कोटि खद्योत प्रकाश कराहीं रवि सम क्यों है हाहि सुनाहीं।
अब प्रभु बने सवारे, गो हौ॥ गहि पद चरण सरन निज मोहीं

...गाधू ...गौतमा...जान
तासु परचा होलह्यों मैं बाध भात अज्ञान॥
करिये विरदकी लाज मम कृत दोषन मानिये॥
दीनबंधु ब्रजराज शरण गा...त पालन ...रे॥

चौ० जब विधि कही दीन बृजवानी॥ शरण ...कहि स्तुति मैं मानी॥
तबही बालबच्छ कछु देखे॥ एकै रूप कछ विधि पेखे॥
कृपा करी तब श्री ब्रजनाथा॥ हस्तकमल परस्यौं विधि माथा॥
अभय कियो विधि सब चिमि रायो॥ चरणकमल तें सीस उठायो॥
बारबार पदकमल निहारी॥ अस्तुति करत दुहु कर जोरी॥
जो जग धाम स्याम सुखरासी॥ ज्योति रूप सब उर के बासी॥
गुणागार अगम निगम नहि पावे॥ ताहि ब्रज सोद ...द खिलावे॥
धर जल अनल अनिल नभ काया॥ पांच तत्व मिलि जगत उपाया॥
काल डरै ताके भय भारी॥ सो ऊखल बांधे महतारी॥
जग करता पालन संहरता॥ विश्वंभर सब जग के भरता॥
ते गोधन संग ग्वालन माही॥ ब्रज में हांसे २ ...ठन खाही॥
बड़े भाग्य ब्रजबासिन केरे॥ तिनके प्रेम रहत तुम घेरे॥

छं० रहत जिनके प्रेम घेरे धन्य ब्रजबासी सबै॥
ब्रह्म एक अनीह अविगत घर निघर जिके फबै॥
धन्य श्री बसुदेव देवकि पुत्र करि जिन पाइयो॥
धन्य जसुमति नंद जिन पय प्याय गोद खिलाइयो॥
धन्य ब्रज के गोप जिन संग धन्य गाय चरावहीं॥
चार मुख मैं कहा बरनौ सहस मुख नित गावहीं॥
जन्य बालक बच्छ जनतेनाथ हृदरशन भयो॥
परसि चरण सरोज मस्तक पावन तिपावन भयो॥
अब देउ ब्रज को बास मुहि प्रभु आस यह मेरे हिये

ऐसे कीन्ह ब्रजराय सखन सहित भोजन कियो
कह्यौ रि यमुन तट जाइ जल अचय पाँय वदन
संध्या समै चले घर ग्वाला॥ मध्य स्याम सुन्दर नंदलाला
वच्छ घेरि आगे करि नीके॥ कांधन पर धरि लीन्है छीके
जन जन भृंग बजावत गावत॥ बनतें बने ब्रजहिं हरि आवत
घर आये ब्रज मोहनलाला॥ कहत निज सो माति सब ग्वाला
अहो महरि वन आज कन्हाई॥ महादुष्ट इक मार्यो जाई॥
पन्नग रूप निगिल शिसु वच्छा॥ करी आज सबकी हरि रच्छा
गिरि कंदर सम तिन्ह मुख बायो॥ पैठि स्याम तिहिं तुरत नसायो
याके बल हम बदत न काहू॥ फिरत सकल बल सहित उछाहू
जीते सब हि असुर वन माहीं॥ यह काहू तें हार्यौ नाहीं॥
वीते वरष कहत सब ग्वाला॥ आज अघा मार्यो नंदलाला
यह प्रभु लीला अपरंपारा॥ कौन कौन कौं भुरै न पारा॥
जसुमति सुनि चकित पछिताई॥ मैं वरजन वन जात कन्हाई
केती कर वरतें बच्यौ तऊ न नेक डरात॥
अति विचित्र गति ईसकी जानी जात न वात
खीज तिज सुमति मात मानति नहिं मैं त्यौ कह्यौ
स्याम मनहिं मुसकात अब न जाहीं वन जाइ हौं
हरि की लीला कहत न आवै॥ सुर नर असुर सबहिं भरमावै
पय पीवत पूतना नसाई॥ पटक्यौ तृणा शिला पर आई
तीनि लोक मुख में दिखराये॥ यमलार्जुन वसि ढहाये॥
वत्सासुर वक वदन नसायो॥ अघा मारि विधि गर्व नसायो
जसुमति यह पुरुषारथ देखी॥ ता पर निज पछिताति विशेषी
अघा मारये नंद के लाला॥ घर घर कहत फिरत सब ग्वाला
सुनि सुनि ब्रज युवती उठि धाई॥ चौकि [illegible] गौ सब आई

हँसि जननी सों कहति कन्हैया। दुहनी दै दुहिहौं मैं गैया ॥
नंदबबा मोहि दुहन सिखायौ। ग्वालन कौ सर दुहन चुकायौ॥
धौरी धूमरि कजरी गैया ॥ तुरतहि दुहि ल्याऊँ मैं मैया॥
भयो मोहि बल माखन खाई। अब न डरात कृष्ण बलभाई॥
तोहि नहीं पनियारी आवै॥ वैठि रठ करै भाव बतावै॥
अंगुरी भाव देखि हँसि माता। उरलगाय लिये सावलगात॥
कहत कहा दुहनी बुधि पाई। हरषि निरखि मुख बलि बलि जाई॥
लै दोहनी दई कर माता॥ हर्षित चले दुहन सुखदाता॥
बछरा छोरि तुरत थन लायौ। मात दुहत लखि हर्ष बढायौ॥
सखा परस्पर कहत कन्हाई। हमहू ते तुम करत बडाई॥
दुहन देहु कछु दिन तुहि गैया। तब कहियो मेरी सर भैया॥
जब लौ एक दुहौ तब ताई। दस न दुहौं तो नंद दुहाई॥

सखा कहत सब हू वही नंद दुहाई खात॥
मात साथ हम दुहहिंगे देखा हु को अधिकात
कहउ कान्ह हरषाइ भली कही यह बात कुं
प्रात दुहहिंगे गाय हम तुम होड़ लगाय कै

श्री वृषभान कुंवरि मन माही॥ स्याम [illegible] नाही
दरस लालसा दृग नन थोरी देखै चहत बहोरि बहोरी
उठि परवाह दोहनी लीनी सुरन स्याम दरसन की कीनी
जननी हेरि कहेउ दुलराई॥ जाति किते राधा अतुराई॥
खरक हि जात दुहावन गैया। दुहत सबै ग्वाल सब मैया
काल्हि तनक मैं बिलम लगाई। उठि अहीर सब मोहि रिसाई
गाय गई सब बच्छ पियाई रीती दुहनी फिरि लै आई॥
तुम हु खीजन लागि तब मोही॥ जात सबार आज कहत तोही
ऐसे कहि जननी समुझाई॥ घर ते चली ब्रजहि समुहाई

तेरे मुख सम शशि नहिं भ्राजै । नैनन लखि खंजन गति लाजै
चपलाहू ते चमकति है री ॥ करि है कहा स्याम कों तेरी ॥
मैय्यो कह्यो सुनत कछु नाहीं । है यों कहा गुनत मन माहीं ॥
इक टक दीठ कबहुं तें ल्याई । तन की सुरति सबै बिसराई ॥
अबहीं तें ऐसे ढंग योंही ॥ अबहीं बड़त होन है तोही ॥
ऐसे ढंग लगायो स्यामहि ॥ काज नहीं कछु तेरे धामहि ॥
चितयो मनहि करै रुकलाई । [illegible] संग आई
कै रहो बैठि आपने धामहि । धेनु दुहन दै मेरे स्यामहि ॥
देखत तोहि स्याम सुधि जाई । तू चितवति तन सुधि बिसराई
सूधे रहि जो इहां तु आवै ॥ ऐसो ढंग मोकों नहिं भावै ॥

करत अचकरी आइ तू यह नाहिं मोहि सुहाइ
सूधे खेलहि स्याम संग कै तू इत मत आइ ॥
ऐसे महरि रिसाइ सीख दई हरि भावतीहि ॥
तब कछु तनि सुधि पाइ बोली अति भोरे वचन

मुहि खीजति ब्रजजाति सुत नाहीं । नित उठि मोहि बुलावन जाहीं
मोहि कहत बिन तोहिं निहारे । रहत न मेरे प्राण सुखारे
छोहि लगत मोकों सुनि बानी ॥ तब आ[illegible] जानी
सुख पावति आवति मैं तातें । तुम कछु लावति औरहि बातें
जसुमति सुनि प्यारी की बानी । भोरे भाइ समुझि सकुचानी
बांह पकरि उरसौं लै लावति । प्यारी मन [illegible] मिटावति
हसत कहत मैं तोसों प्यारी । मन मैं कछु बिलग निन लारी
सिखवति मोहि सोच गुणकारी । मैं तेरी जैसी महतारी ॥
सुनि यति महरि सुख अधिकाई ॥ रहु काज कछु नाहीं सपाई
सुनि के जसुमति वचन सप्रीती ॥ [illegible]
मैया मोसों टहल करावै ॥ खीजत जात दौरि जो पावै

पुनि जसुमति राधा की बानी । सो वृषभान लाडिली आनी ॥

अति सप्रेम दुलराइ कै लई उछंग उर लाइ ॥
श्री राधा के चित्त ते दीनो काम मिटाइ ॥
का पै बरनी जाइ हरि प्यारी की चतुरता ।
लीनी सहज सुभाय बात नहीं जसुमति सुनै ॥

कहैं न सखा हरि सो मुसकाई । दुहन कहा तुम आज कन्हाई ॥
कालि दुहन है हौं लगाई ॥ बिसरि गये सब आज पढाई ॥
गहति दोहनी कौं पति हाथा । नोवत वृषभ वत्स लै साथा ॥
सुनि ग्वालन के बचन गुपाला । कछुक सकुच बिहसे नंदलाला ॥
बछरु छोरि दियो खरक खुलाई । आपजनानि सो कहत कन्हाई ॥
मुरली मुकट देहि पर मेरो ॥ सुनि आऊं दऊ मोहि टेरो ॥
जननी हरषि तुरत सब दीनो । लै हरि मुकट सीस धरि लीनो ॥
चारु पीत पट कटि लपटाई । कर मुरली लै मधुर बजाई ॥
मुरली में कहै प्यारी प्यारी ॥ गये खरक हरि सुखकारी ॥
लखि प्यारी हरि की चतुराई । कहति जसोमति सो चतुराई ॥
जाति घरहि मात हि मै धाई । खरक दुहावन कौं निज गाई ॥
पायो ग्वाल खरक कोउ नाहीं । सो जानि मैं आइ इत माहीं ॥

धेनु दुहावत लाडिली दुहन नंद को लाल ।
सो सुख का पै जाइ कहि देखि तियन की बाल ।
बछरू पद अटकाइ गौ थन लीनो हाथ हरि ।
पिया बदन दृग लाय दुध धार छाडत छलन ॥

दुहत धेनु अति ही छबि बाढ़ी ॥ प्यारी पल दुहावन ठाढ़ी ॥
एक धार दुहनी मे डारे ॥ प्यारी पै इक धार पसारे ॥
हरि कंगन पै धार छुटाही । लसत छीट प्यारी मुख माही ॥
मनहु मयंक कलंक पखारी । सोभित जहं नछत्र सुधारी ॥

बिरह बिकल प्यारी भई त्यौं त्यौं सखियन पास
सखियन आवत देखि कै वृषभानकुमारि कौ
उर आनंद बिशेष हरषि सबै ठाढी भई ॥

सुनत सखी सबै मुसकानी । कहहु राधिका कुंवर सयानी
कौ रस आहि रहुन्हु री किन प्यारी । हारि दहि दीनी गाय तुम्हारी
यह सुनि थकित भई मति भोरी ॥ गिरिधर पिय समुझाय किसोरी
लै सखि सब आतुर धाई ॥ लई उठाइ कुंवरि उर लाई ॥
ज्यौं नागरी गिरि सुरझाई ॥ दृग दोउ नैन दई गिर एई ॥
यह बानी कहि सोरखनु सुनाई । कौ रे मोहि डसौ री माई
भई बिकल कछु तन सुधि नाहीं ॥ कहत सखी सब आपस माहीं
अयहु देखत नीके आई ॥ कहा भयो कारे किन खाई
यह सो कारौ कुंवर कन्हाई ॥ हम हू कौ जिन फूक लगाई
जाकौ मुसुकन विष बांकौ ॥ याके रोम रोम विष ताकौ
मनमन भुगन सावरै छायौ । देह गेह सब नेह भुलायौ
सब सखियन मिलि यह ठहराई । लै राधिकहि सदन पहुचाई

लेहु महरि कौ रति सुता अपनी देखहु आइ
कहूं कारे याकौ डसी गिरिधर पिय सुरझाइ
गयौ वदन कुंभिलाय ज्यौं त्यौं कै ल्याईं इहै
लावहु रानी बुलाय वेगि यतन याकौ करहु ॥

जननी सुनत उठी अकुलाई । पुत्रत धाइ कवल पर आई ॥
भात भई नीके उठि घरतै ॥ मैं बरजी मान्यौ नाहि मरतै
अतिहि हबीली कहे उन माने । करति फुसाई मन मैं आने ॥
डरी मात लाये अंग सब जूडे । मानै हीं सिथल देह जल बूडे
महरि नगर ते गुनी बुलायै । सुनत सकल आतुर उठि धायै
मन्त्र यन्त्र बहु भांति जगावैं ॥ पके सकल कछु भेद न पावै

फिरि खूझति सखिन वुलाई ॥ कहु प्यारी कहि तुमहिं सुनाई
कहत सखी सवयम स्यानी ॥ सुनहु महरि इतनो हम जानी
हम आगे यह पाछे आई ॥ गिरी धरणि दुहनी ढरकाई
यही कहेउ कारे मुहि खाई ॥ तव हम आतुर लइ उठाई ॥
सो कारो हमहूं पुनि देख्यो ॥ लग्यो सवनि विषयाहि विशेष्यो
सो अव हम तुम सो कहैं मान लेहु यह वात ॥
वड़ो गारडू राय है नंद महर कौ तात ॥ ॥
स्याव हु ताहि वुलाइ देखत ही विष जाइगो
तुरतहि लेहि जियाय हम नीको यह जानहीं
देखहु धौं यह वात हमारी ॥ एकहि मंत्र जिवायहि मारी
त्रिभुवन धनी और नहि ऐसो ॥ है वह नंद महरि को जैसो
कीरति महरि सुनी यह वानी ॥ अपने मनहि सांच कर मानी
इक दिन राधा हू यह वानी ॥ भोसों कही इती यह जानी
दौरति चली नंद के धामहि ॥ मोलन आतुर गारडू स्यामहि
महरि जसोदहि जाय पुकारी ॥ अहो गारडू सुवन तुम्हारी
मेरी सुता लाडिली गोरी ॥ विह्वल विकल परी मति भोरी
प्रातहि खरक दुहावन आई ॥ तहां कहू कारे डसि खाई ॥
नेक पठै सुत काज विचारो ॥ यह यश है है वड़ो तुम्हारो
सुनि जसुमति कीरति की वानी ॥ [illegible] भई अयानी
मंत्र यंत्र कहु जाने मेरो ॥ अतिही वालु घरघर खटकेरो
किन तुम को दीनो वह काई ॥ यह तुम वूझे थारी न बुझाई
मै चकृत तुम वचन सुनि यह अचरज की वात
स्याम भयो कव गारडू तुम आई अतुरात ॥
अवलों सुनी न कान भयो कान कव गारडू
वालक अति अज्ञान यंत्र मंत्र जाने कहा

महरिगारइकुवरकन्हाई इकदिनपथामोहिसुनाई
एकलरिकिनी कारेखाई तासोतुरतहिस्यामजिआई
तातेमैंआईअतुरानी। पठवहुसुतहिनेकनंदरानी
है मम कुंवरिविकलअधिकाई आवकुवर्ककारेकछु खाई
वड़ो धर्मजसुमतियहकीजै। वेगवुलाइ कान्हको दीजै
तवयहसुनिजसुमतिमुस्काई अवहिहतौ मेरेघर आई॥
है राधा मोहन कछुकारन॥ चुपह्वै मन मैलगीविचारन
जहां सखी ललितादिसयानी प्यारी दीषि हृदय अतुमानी
याहिडसी वंसी धरकारे॥ चितवनफणमुसकनविषभरे
प्रेम प्रीति हैं डारत जारे॥ लगैनमत्रगुणी सव हारे
यके सकल हरिविविधिउपाई यहविषमोहनविननहिंजाई
सखीएकहरियासपठाई॥ तिनमोहनसोंजाइसुनाई

अहोमहरिकेलाडिलेमोहनस्यामसुजान
कितसीखेयहगोदुहनहमसोंकहौवषान
दुहिदीनोजिहिगायआजभोरहींखरकमें
वेगविलोकेजाइ निजनेनन ताकी दशा॥

जवतेदुहिदीनीतुमगैया अहोअनोषेगायदुहैया
घरलौंकुवरजाननहिंपाई वीचहिंधरणिगिरीमुरझाई
देखत संगसखीसवधाई॥ जैसेतैसेगृहपहुंचाई॥
सोअवननकोसुधिनसंभारी परीविकलनहिंद्गनउधारे
सकलसयानतनखेदवहाई॥ उलटिपलटिभरनैनजभाई
कहतेसाहिकारेअहिखाई कियोयतनवहुगारूआई
ताहिंकछउपचारनलागे तुम्हरोनामलेतकछुजागे
होयपरईइकसखीसयानी॥ यहविषतुम्हरेनिह्चैजानी
यहकारोअहिरूपतुम्हारो मुसकनिविषताऊपरडारो

अबजो चाहौ ताहि जिवावौ । बेग चलौ जिन अहर लगावौ
अतिहि विकल बहु विरह अधीरा॥ दरस दिखाय हरौ सब पीरा
सुनत अश्वनी कुमार कन्हाई॥ बेग चलौ हरि लेउ जिवाई॥

नजर दोष यह बावरी टेर कहत हम कान
नहिं जानति तौ देउंगी नंद द्वार सब प्रान
व्याकुल जननी तास घरनि मह वृषभान की
गई जसोमति पास बेग जाइ सुधि लीजिये

कीरति आगम सुनत कन्हाई । कीन्ही बिदा सखी मुसकाई॥
जो कहुं डसी भुजंगम प्यारी । तौ हम आइ देहिं गे झारी॥
ऐसे कहि हरि सदन नहिं आये । देखि जसोमति निकट बुलाये
कछु जानति मंत्र कन्हैया । कहति बिहसि जसोमति मैया॥
कीरति महरि बुलावन आई । कुंवरि राधिका कारे खाई॥
आवहु मोरि बेग संग आई॥ कुंवरि जिवाये अतिहि भलाई
गारुड़ भयो भले सुत जानी । आज सुनी श्रवनन यह बानी
मैया एक मंत्र मैं जानौ ॥ तेरी सौं कहि सत्य बखानौ
अहि का क्यौ मोहपु जो आवै । मोपै क्यौं हूं मरन न पावै॥
जननि कहेउ सुत जाहु कन्हाई । देहु राधिकहि जाय जिवाई॥
जननी वचन सुनत ब्रजनाया । चलौ हरषि कीरति के साथा॥
चली महरि हरि संग लिवाई । गई वृषभान पुरा समुहाई॥

रुदित महरि लषि कुंवरि कौं अतिहि गई कुम्हिलाइ
सिथल अंग बानी निरषि लीनी कंठ लगाइ
तबहि स्याम के पाय परी कुंवरि लेके महरि॥
मोहन देहु जिवाय अति व्याकुल मेरी सुता

आये गरुड़ कुंवर कन्हाई । कुंवरि कान्ह मैं यह सुनि पाई
धन्य धन्य आपुन कौं जानी । हृदय हरषि दृग आनंद पानी॥

अगर रोम तन स्वेद बहाई॥ | मैं हू चल देषि जनक कछु पकुलाई

अंतर भाव भेव हरि जानौ | रसिक सिरोमणि मन मुसकानै

तब कछु बुद्धि कै कुंवर कन्हाई | मुरली अंग सों दई छुवाई॥

तन्क राम लोचन कुंवरि उघारे | सन्मुख सुन्दर स्याम निहारे॥

देखत द्रगन परस मुसकानी | सकुचि सभारि बसन सम कीनी

बूझत बात जननी सों प्यारी | आज कहा यह है महतारी

जननी कहति हरषि उरलाई | मोहि मरत तें कान्ह जिवाई

कृपति लम्बन कारी प्यारी | करवर बड़ी आज विधि टारी

यों कहि महरि हृदय अनुरागी॥ | नंदसुवन के पायन लागी

बड़ो मंत्र तुम कियो कन्हाई। | सुता हमारी मरत जिवाई॥

उर लगाय सुख चूमि कै पुनि पुनि लेत बलाइ

धन्य कोषि जसुमति महरि जहां अवतरे आइ

कछु मेवा पकवान कह्यौ खान भगवान सौं॥

विदा किये दै पान कौ रति स्याम सुजान कौं

महरि मनैं मन में अनुमानी | जोरी भली विधाता वानी

अब घर घर यह फेर चलाई | बड़ौ गारुड़ कुंवर कन्हाई

सखी कहति हरि सौं मुसकाई | भले भले हौ गारुड़ राई॥

प्रगट्यौ गारुड़ नाम तुम्हारौ | भले आय तुम विषहि उतारौ

जननी कहति मेरी गात बारौ | अब धौं कौन करै निरवारौ

जा मों कठिन व्रसन ब्रज कारौ | अब यह मरहि मतिहि बिसारौ

फिर कारै कछु काहि पसारौ | हूनत बले है नाम तुम्हारौ

यह गारूड़ कहां तुम पाई॥ | प्यारी एक ही टेर जिवाई

अब हम जानी बात तुम्हारी | जाहु आपने सदन बिहारी

रसिक मुकट मणि कुंज बिहारी | हंसि बस कीनी घोस कुमारी

विवस भई अब ब्रज की बाला॥ | गये सदन मोहन नंदलाला

व्रजविलासविलासतव्रजप्यारे व्रजवासीजन मों रखवारे
कारोसुत नंदरायको जाकीलीला निस्त ॥ ॥
तिनहींकोंहितडुसति हैंजिनकोउज्वलचित
धन्य धन्य व्रजवाल धनिधनि व्रजकेवालसव
जिनके संग नंदलाल दुहत चरावत गायसव

प्रातहोतवलमोहन लाला॥ गायवच्छसवसंग लेग्वाला
चलेचरावनवन घनमाहीं॥ क्रीडाकरतसकलजगमाहीं
देखिमुदितसवव्रजकीवाला॥ वृंदावनगये मदनगुपाला
गैयाचारि गईं वनमाहीं॥ वैठेकान्हकदम कीछाहीं॥
सखालियेसंगसुवलसुदाम॥ क्रीडाकरतसहितवलराम॥
ग्वालजहांतहं गायचरावैं आनंद भरे कछ सुखमावैं
करतविहारविविधिसवग्वाला॥गयेदूरवनसघनविशाला
कोउगैयन कोघेरन धायो कोउवछरनलैविलमायो
हलधर रहेकहूंवनजाई॥ आप अकेले रहे कन्हाई॥
मनमनकहतस्यामसुखदाई सखारहेकतवनविरमाई॥
गोरभनकहूंसुनियतनाहीं गयेनिस्त चौंकितवनमाहीं
आलस गातजातमनमाहीं वैठेवंसीवट की छाहीं ॥

सखावृंद हलधर सहित लियेवच्छअरुगाय
वृंदावन घन छांडिकैं रहेलालवनजाइ॥
मनहरखे सव ग्वाल देखिभूमिसुन्दरपरम
फिरेविपुलतरुताल अतिरसमयमीठेमधुर

अथधेनुकवधलीला॥

गोधनवृंदलियेवलराई लगेस्वान फलमनहरखाई
तचयोवलरसतालरसाला॥ चाख्योउरआनंदविशाला

सुरत नंदनंदन की आई ॥ कह्यो सखन सों कहो कन्हाई
क्यों कहूं घेर जाइ सब गैया। वलभैयाजनहीं कुंवर कन्हैया
सुनत सखा हलधर की वानी। वन में स्याम अकेले जानी॥
आतुर गैयन घेरन धाये॥ टेर दई सब ग्वाल बुलाये॥
तहां असुर इक धेनुक नामा। खर के रूप रहैं यन धामा॥
छायो इतो विरप की छाया। सुनत शोर करता मसु भाया
अति बलवान विशालकराला। परम भयंकर मानूं काला।
दाऊ कहि सब ग्वाल पुकारे। भागे जित तित भय के मारे
असुर महावलगर्व वढाई। वल के सन्मुख गर्यो श्राई
मत्त ताल के रस बल राई॥ देषि असुर मन रिस उपजाई

वल संभारि उठि कोप करि असुर प्रहार्यो जाइ
अग्रज भ्राता स्याम को तिहुं पुर जासु वडाइ
वल को आवत जानि असुर जोरि दाऊ चरण
घपरि चलाई आनि वकरी हृद गहौ भयो

वहुरौ फिर मारन कों धायो॥ वल जू को नाम सखा ति आयो
जवहि असुर फिर चरण चलायो श्रगहि लीनो करि कोप फिरायो
पटक्यो लैत रूताल हि जाई। भयो प्रान विनत क्षिति गिरई
तरु सों तरु टूटे भहराई॥ ग्वाल वाल सब करत वडाई
और वहुत धेनुक परवारा। कीनो वल सब को संघारा॥
मार्यो असुर महा दुषदाई॥ ग्वाल वाल सब करत वडाई
आये सब वृंदा वन माहीं॥ जहं तहं स्याम हि टेरत जाहीं
चढ़ि चढ़ि द्रुमन पुकारत ग्वाला॥ आवहु हो मोहन नंदलाला
ल्याय घेरि मिली सब धेनू॥ अब हम सुर खजावहु वेनू॥
कोमल चरण कहूं मत धावहु॥ कंटक कोठन मही इन पावहु
ऐसे हरी को टेरत जाहीं॥ तृषित भये सब वन के माहीं

ग्वाल वाल सव यमुना ह्वै आयो | वल रस मत्तन पह्न तन पायो ॥

गोप गाय अचवत भये काली दह को नीर
निकसत सव अकुलाय कै वैठ गये जल तीर
परे सकल सुरझाइ तहाँ तहाँ विष झार ते ॥
ग्वाल वच्छ अरु गाय भये मौन सव प्राण सव

हरि उठि वैठे वंसीवट छाहीं ॥ | वारहिं वार कहत मन माहीं
अवहिं रहे सव संग चरावत | निकस गये धौं कित वन धावत
गोराभन ग्वालन के वैना ॥ | अनुकत कछु न सुनत वन सैना
तरु चढि इत उत गैयन हेरत | लै लै नाम सखन कौं टेरत ॥
काली दह तन आहट पाई | सोधलेत उत चले कन्हाई ॥
वन घन ढूंढत हरि तहं आये | ग्वाल गाय सव मूर्छित पाये
मन में ध्यान करत ही जान्यो ॥ | काली अहि ह्यां आय समान्यो
रहत इहां खगपति भय मानो | अँचयो इन ताकौ विष मानो
अमी दृष्टि प्रभु सकल निहारे | तुरत उठे सव भये सुखारे ॥
तौ पै कृष्ण को अति सुख भाई | मिले सकल प्रेमातुर धाई ॥
तौ से हरि मृदु वचन सुहाये | तुम सव मोहि छोंडि के आये
कित नैं कित इत निकसि आई | मैं वन ढूंढि रह्यो पछु ताई ॥

खोजलेत आयो इहां देखे सव वे हाल ॥
मुरछि परे काहे धरणि भयो कहा जंजाल
गाय वच्छ अरु ग्वाल उठे सकहीं वार पुनि
कहा कियो यह ख्याल देखि मोहि अचरज भयो

सुनि हरि वचन परम सुखदाई | कहत सखा सव सुनो कन्हाई
अचयो तृषत यमुन जल आई | तवहिं गिरे सव तृष्ण कुलाई
कारण कछु हम जान्यो नाहीं | भये प्राणविन सव क्षण माहीं
यह हम जानी कुंवर कन्हाई | तुमहीं हमहि जिवायो आई

हो तुम सज्जन के रखवारे ॥ जहाँ तहाँ तुम हम ही है उधारे ॥
नव हारि घल ग्राऊ को हेरो ॥ कहूँ उचूलो वन होत मंधेरो ॥
सखा बोल ल्याये बुझ राम आई ॥ हँसे दोख सुन्दर घन स्याम आई ॥
बड़ी बेर भई तुम्हें कन्हैया ॥ रहे अकेले घन में भैया ॥
चल ह्वै वेगि अब घर की माहीं ॥ सेऊँ निबाहि गाय वन माहीं ॥
हेरी देत चले सब ग्वाला ॥ गावत गुण सुन्दर गोपाला ॥
गोधन आगे दये चलाई ॥ सखन मध्य मोहन बलभाई ॥
चले ब्रज हि ब्रज भून सुख दाई ॥ निरखि वदन छवि मदन लजाई ॥

सुनि ब्रज सुंदर परस्पर कहति सुरलि सुर घोर
आवत वन वासि अह रनिसि आगमनंद किशोर
आई तज गृह काज निरखन कौं मन भावती
सुन्दर सुत ब्रजराज लाज तज सब साज कैं ॥

वेदेसे आवत बल मोहन ॥ सुबल सुदामा सुन्दर गोहन ॥
मेघ स्याम तन गैयन पोछे ॥ सीस मुकट कर कछनी काछें ॥
कमल वदन कर वेणु बजावै ॥ गौरी राग मिले सुर गावै ॥
नैन विशाल कमल से आछे ॥ कोटि मदन की छवि कौ वांछे ॥
कुंडल श्रवण वदन छवि पाई ॥ गोरज छवि कछु चदक पाई ॥
निरखि मुदित सकल ब्रजकी वाला ॥ पड़न्चे आइ सदन नंदलाला ॥
ब्रजजीवन बल मोहन भैया ॥ निरखि जननि दोउ ले निवलैया ॥
ग्वाल कहत धनि जसुधा माता ॥ धनि २ बल मोहन दोउ भ्राता ॥
नर तनु धरे देव य कोऊ ॥ ब्रज अवतार लियो इन दोऊ ॥
ए हैं सब ब्रज के रखवारे ॥ गाय गोप के रक्षन हारे ॥
गर्दभ रूप असुर इक मारे ॥ नाहिं आज हलधर वन मारे ॥
हम सब यमुना तट मुरझाये ॥ तहाँ कान्ह सब मरत जिवाये ॥
अब हम काहू डर तन आहि यहे हमें सहाय ॥

वलमोहनकेवलफिरतवनवनचारतगाइ
घरतगाइजवआयतवनवहीनसहायहरि
चिरजीवहुजवआयजसुमतियेतेरेकुंअर

जसुमतिसुनिग्वालनकीवानी कहेउगर्गसवसत्यवखानी
निजनवचरितसुनतइनकेरे हैंकोऊयेवडनवडेरे ॥
धन्यधन्यये व्रज में आये॥ धन्यधन्यहमसुतकरिपाये
अतुलितकर्मदुहुनकेजानी दोउजननीमनमांमोदसिहानी
स्यामरामदोऊनंदरानी ॥ लियेलायछातीहरषानी
भूषेजानतुरतअन्हवाये षटरसव्यंजनसरसजिवाये
भोजनिकरिअचयेदोउभाई लीनेपानसंतसुखदाई ॥
पौढेसेजदासहितकारी॥ व्रजजनवासीहैंहितकारी
चिंतामरिाहरिजनसुखदानी कालीकीचिंताउरआनी॥
ग्वालगायनितवनकोंजाहीं॥ सुखपावतकालीदहमाहीं
विषधरकोरहनोजलमाहीं वृंदावनढिगनीकोनाहीं ॥
कालहिकाढिदूहतेंदीजे जमुनाकोजलनिर्मलकीजे॥

यहविचारमनमेंकरतभयेनींदवसस्याम
जसुमतिहरिपौढाइकेआपलगीग्रहकाम
खरेनवोलनदेतघरमेंकाहूकोंमहरि॥
वलमोहनकेहेतजागिपरेभलनींदतें

शिवसनकादिकध्यानिसिध्यावें॥कवहूंजाकोअंतनपावें॥
व्रम्हसनातनआनंदखानी॥ सोनंदसदनसोवतसुखमानी
देखोनंदकान्हअलिसोवत॥ अमितजानवनकेमुखजोवत
मानतनाहिंकहौकिनकोऊ आपहहठौलेभैयादोऊ ॥
करसोंपोछतसुभगसरीरा॥ कहियतयहैममकोधीरा
निजपलकातहांलियेमगाई सोयेहरिकेढिगनंदराई

जसुमतिहू पौढी नहीं आई । निसि बीते अधिके अधिकाई
जागि उठे नंदकुंवर कन्हैया । कह्यौ गई मो ढिग ते मैया॥
संग सोवत जान्यौ बल भाई । अतिहीं स्याम उठे अकुलाई।
जागे नंद अरु महरि जसोदा । हरि कौं ऐंच लियौ नंद गोदा।
काहे निमकि उठौ अनियासा । तुरतहि दीपक कियौ प्रकासा
सपने उ गिरयौ यमुन जल जाई । काहू मोकौं दियौ गिराई॥

नितप्रति मैं घर रहत हौं तू हठि यमुना जाइ
सुधि रहि गई अब हम की जिन हो लाल डराइ
कोरै लै नंद पय पौढाये निज संग तब॥
वृंदावन मूं जाइ के हूं कारण जित तित फिरत

अब तू वृंदावन जिन जाई । नहीं कौन धौं रहत कन्हाई
सोई सपति बीच कन्हाई । तुरतहि गई नींद फिर आई
सपनौ सुनि जननी अकुलानी । कहत नंद सौं मधु बानी॥
देख्यौ धौं कहु सुपन कन्हाई । या ब्रज के जीवन दोउ भाई
यहै पद दूनन कौं अब कीजे । गाय धू रावन जननी दीजे
गृह संपति है तन कटु दोना । हूं नहीं लोक्य भोग ठ दौना।
ये घर जात वृंदावन गैया । हँसी करत ब्रज लोग लुगैया।
दंपति आपस मैं यह भांती । करत विचार बीति गई राती
तारागन सब गगन छिपाने । गयौ तिमिर अरु सुभ विकसाने
उठि जसुमति लागी गृह काजा॥ भूलि गयौ निसि सपन समाजा
प्रात स्नान यमुन नित जाई॥ नंदहि तुरतहि दियौ उठाई
मथन हार ग्वारिनि सब जागी॥ जित तित दही बिलोवन लागीं

हरिप्यारी सुरभीन कौ उमग्यौ जो दधि बिलगाइ
सो हरि हित माखन लियें मथति जसोदा माइ
सद माखन निज पानि मथत तुरत अपनी धरयौ

सुन्दर स्याम सुजान खेलत ग्वालन संग मिल

आये नंद जमुन जल न्हाये॥ पैठत सदन छींक भई बांये

महर मलिन मन असगुण जान्यौ॥ आज कहा उर सोच समान्यो॥

तबही चल्यौ दूत ब्रज आयौ नंद महर घर ही मैं पायौ॥

चोले लिये पाती कर राखी॥ नृप की कही मुख आगर राखी

काली दह के फूल मंगाये॥ ता कारण आलि डाट पठाये

जो नहिं मोकों फूल पठावहु तौ कोउ ब्रज रहन न पावहु॥

गोप नंद उपनंद जिन्हुका॥ डारौं मारन राखौं एका॥

जो नहिं कालकमल मैं पाऊं दोऊ सुत तेरे बांध मंगाऊं

यह सुनि नंद गये मुरझाई॥ और गोप सब लिये बुलाई

तिन सब को सब बात सुनाई परी आइ अति यह कठिनाई

काढ़ि कमल काली दह माहीं कहो कौन धौं काढ़न जाहीं

कहुं फूल जो काल्ह न पाऊं तौ सुत तेरे बांधि मंगाऊं॥

मेरे सुत दोउ नृपति उर खटकत है दिन रात

आज कही यह बात मो बल मोहन पर घात

चढ़ि है ब्रज पर धाय काल्ह कुसभाते का क्रूर

बन्यों मरन अब राय को राखै किल जाइये॥

सुहि अपने जिय कोउ रनाहीं॥ सोच स्याम बल को उरमाहीं

अब उबार दीखियत नहिं कोई॥ बल मोहन हि राखिये गोई॥

वरमो हिं राखहि बांधि नृपाल रहे सदन बल मोहन लाल

नंद वचन सुनि सब ब्रजवासी भये दुखित मन परम उदासी

काहू पै कछु बात न आई॥ अति भये त्रासित गये मुरझाई

चकित भये ब्रजवासी ठाढ़े॥ मानहु चित्र चिन्ह लिख काढ़े

नंद घरन ब्रज नारि विचारैं॥ अति व्याकुल नैनन जल ढारैं

ब्रज हि बसत सब जन्म सिरानौ इहि विधि कसन कबहूं ठानौ

सुन्दर स्याम सुजान खेलत ग्वालन संग मिल ।
आये नंद जमुन जल न्हाये ॥ पैठत सदन छींक भई बाये ॥
महर मलिन मन असगुण जान्यौ ॥ आज कहा उर सोच समान्यौ ॥
तबही चल्यौ दूत ब्रज आयौ ॥ नंद महर घर ही मैं पायौ ॥
वाल लिये पाती कर राखी ॥ नृप की कही मुख आगर राखी ॥
काली दह के फूल मंगाये ॥ ता कारण आलि डाट पठाये ॥
जो नहिं मोको फूल पठावहु ॥ तो कोउ ब्रज रहन न पावहु ॥
गोप नंद उपनंद जिन्हका ॥ डारौ मारन राखौं एका ॥
जो नहिं कालकमल मैं पाऊं ॥ दोउ सुत तेरे बांध मंगाऊं ॥
यह सुनि नंद गये मुरझाई ॥ और गोप सब लिये बुलाई ॥
तिन सब को सब बात सुनाई ॥ परी आइ अति यह कठिनाई ॥
काढ़ि कमल काली दह माहीं ॥ कहौ कौन धौं काढ़न जाहीं ॥
कहेउ फूल जो काल्ह न पाऊं ॥ तौ सुत तेरे बांधि मंगाऊं ॥

मेरे सुत तेरे नृपति उर खटकत है दिन रात ।
आज कही यह बात मो बल मोहन पर घात ॥
चढ़ि है ब्रज पर धाय काल्ह कंस अति कोप कर ।
बच्यो मरन अब राय को राखै कित जाइये ॥

मुहि अपने जिय को डर नाहीं ॥ सोच स्याम बल को उर माहीं ॥
अब उबार दीखियत नहिं कोई ॥ बल मोहन नहिं राखिये गोई ॥
बरु मोहिं राखहिं बांधि नृपाला ॥ रहैं सदन बल मोहन लाला ॥
नंद वचन सुनि सब ब्रजवासी ॥ भये दुखित मन परम उदासी ॥
काहू पै कछु बात न आई ॥ अति भये त्रिसित गये मुरझाई ॥
चकित महा ब्रजवासी ठाढ़े ॥ मानहु चित्र चित्र लिख काढ़े ॥
नंद घरन ब्रज नारि विचारैं ॥ अति व्याकुल नैनन जल ढारैं ॥
जा जा हि बसत सब जन्म सिरानो ॥ इहि विधि कंस न कबहूं रानो ॥

सो देवता ब्रजहि के माहीं ॥ रहत हमारे संग सदा हीं ॥
लीनो जिन सब ठौर बचाई ॥ कीले है सोइ देव सहाई ॥
सोई कंस हि फूल पठै है ॥ ब्रजबासिन को सोच मिटै है ॥
कंस केस गहि सोई मारै ॥ असुर मार भूभार उतारै ॥
सब मिलि सोई देव मनावै ॥ अपने मन ते सोच मिटावै ॥
सुनत महर हरि सुखकी बानी ॥ भये सुखी धीरज उर आनी ॥
इष्ट देव को सीस नवायो ॥ जहां तहां तुम स्याम बचायो ॥
शरण प्रभु शरण तुम्हारी ॥ अबहू करो सहाइ हमारी ॥
जाते कंस त्रास मिटि जाई ॥ रहे सुखी बल राम कन्हाई ॥
मात पिता हि हारि इहि हंग लाई ॥ आप चले खेलन हरखाई ॥
सखन मध्य गये कुंवर कन्हाई ॥ कहेउ खेलिये गेंद मंगाई ॥

श्री दामा यह सुनत ही गयो धाम निज धाय
अपनी गेंद लै आय के दीनी हरि को आइ ॥
चलो खेलिये धाय बाहर दोष निकास कै
जह कोउ आय न जाइ गेंद खेल बनि है तहां

ग्वाल संग लै बाहर आई ॥ रच्यो गेंद को खेल कन्हाई ॥
इक मारत इक भाजन जाहीं ॥ रोक लेत इक बीचहि माहीं ॥
आपस मांरु परस्पर मारै ॥ नाना रंग करि के किलकारै ॥
भाजत मारग दूजो जाहीं ॥ मारत धाय बहुरि सो ताहीं ॥
स्याम सखन को खेलत माहीं ॥ यमुना तट तन लीने जाहीं ॥
आपन जात कमल की नालन ॥ सखा संग लीने सब ग्वालन ॥
को जाने ये हरि के ख्याल ॥ यमुना निकट गये सब बाल ॥
स्याम सखा को गेंद चलाई ॥ अंग मोरि सो गयो बचाई ॥
परो गेंद यमुना जल माहीं ॥ कैगयो खेल मंग ने हि याहीं ॥
पकरी धाय फेर श्री दामा ॥ मेरी गेंद देहु तुम स्यामा ॥

जान बूझ तुम गेंद गिराई॥ | कहि है दीने गेंद मँगाई॥
और सखा मोको अति जानो | मोसों अति हि डिगाई ठानो
सखा सहित सब तारि दे भली करी तुम कान्ह।
दीनो गेंद वहाय अब देहु सो दाम हि आन॥
सकल लोक सिर ताज पार न पावे ब्रह्म शिव।
ताहि गेंद के काज फेंटपकरि सिग रत सखा॥
छोडि देहु मेरी फेंट सुदामा। | रय बढावत थोरेहि कामा।
वदले गेंद लेहु तुम मोसौ॥ | फेंट न गहो कहो मैं तोसौं॥
छोटो बडो न जानत काहू | करत बराबर पेक न चाहू
हम काहे के तुमहि वरावर | तुम उपजे भव वडे नंद घर
ऐसे भव हम गये विलाई॥ | तुमहिं वराबरि नाहे कन्हाई
सुनहु स्याम तुम हम इक जोरा॥ | कहा भयो तुम नंद के ढोटा॥
गेंद दियेही वने मेंगाई॥ | मोसो चलि है नाहि धुताई॥
मुह सँभारि बोलत न हि मोसो॥ | करि हौ कहा धुताई तोसो॥
पुनि पुनि करत बरावर आई॥ | ते नहि जानत मेरि धुताई॥
प्रथम पूतना सकटा मास्यो॥ | कागासुर अरु तृणा पछास्यो
वत्सवकासुर वन के माही॥ | मास्यो सो कहा जानत नाही
अघ मास्यो प्रभु देखत तोही | ऐसो धूत न जानत मोही॥
तुम मारे सोसव सब कनहीं लाल डराउ॥
कंसकमल अब देहु नव हमहि मारियो जाउ॥
कालहि परि है जान पकरि मगे है कंस जब।
देत फूल किन आनि कहत प्रचकरि कोरि कहि॥
साच कहो मैं सुनो श्रीदामा॥ | आयो यहां फूल के कामा॥
कितिक वापुरो कंस वतायो॥ | जाके भय तुम मोहि डरायो॥
कंस पकरि महि ताहि पछारौं | देखहु गे तुम देखत मारौं॥

चली रसोई करन ही जौं कभई मोहि षाज्ञ
भागे कह मजारि पुनि गई दूसरे भाज॥
जबते मो जिय सोच ही धौं खेलत है कहां
समुक सकत पाच मेरे मन मैं त्रास षति

नंद कहत पैंचत प्रसमाही॥ मोहि सकुन भये शुभ नाहीं॥
आज कहा यह समुझि न भाई। हैं धौं कितबल राम कन्हाई॥
महर महरि मन त्रास कुनाई। खोजत हरिहि चले अकुलाई॥
सखा सकल हरिहि अंतर धाये। रोवत ब्रजहि पुकारत भाये॥
महर महरि सौं धाय जनाई। यमुना बूड़े कुवर कन्हाई॥
सुन संपति वरत अकुलाई। कासैं कहा कहौं समुझाई॥
खेलत कदम चढ़े हरि धाई। कूद परे कालीदह जाई॥
सुनतहि परी धरणि गिर मैया॥ कह्यो सपनो सत्य कन्हैया
रोवत नंद यमुन तट आये॥ बालक सब नंदहि सगधाये
ब्रज घर जहां तहां इह बाता। ब्रजवासी धाये बिलखाता॥
कहां परेउ गिर कुंवर कन्हाई। दई बालकन ठौर बताई॥
ताहि चाहि कहि नंद पुकारे गिरे धरणि नंद अगदु सारे

लोटत अति व्याकुल धरणि पूरन षलत जल भाय
कहत स्याम तुम दियो दुष मो को वैस बुढ़ाइ
सो गउठे सब रोय दीन वचन सुनि नंद के॥
कहत विकल सब कोइ हरि तुम ब्रज सूनो कियो

नंदहि गिरत सबहि गहि राख्यो। पति सौराक दुष जात न भाख्यौ
कहत गोप नंदहि समुझाई। यन्यौ मरण सबही को भाई॥
हरि विन को जीवे ब्रज माहीं। कहौ कान्ह को हि जीवनु माहीं
मोहि मगन अति ब्रज सुनि मैया। टेरत मेरे लाल कन्हैया
आज कहां तुम खेलन गाई। माखन धरयौ रुउ कि न आई

अति कोमल तुम रे सुख जोगू। जेंवहु लाल लेहु मैं रोगू ॥
धरी दूध धर्यो औटाई॥ तुम निज कर दुहगये कन्हाई
सद माखन अति हित मैं राख्यो॥ आज नहीं तुम न कछु चाख्यो
भ्रात हिते मैं दिये जगाई॥ दतवन को जु गये दोउ भाई
मैं चितवति तुम पंथ कन्हाई खेलत आज अवार लगाई॥
शोक सिंधु बूड़ी नंद रानी॥ तन की सुधि बुधि सबै भुलानी
वेगहु आय संग दोउ भैया तुम जेंवहु मैं लेहु वलैया॥

ब्रज युवती सुनि महरि के वचन प्रेम अधीर
अकुलानी रोवत सबै वढी कठिन उर पीर
वरजति जसुदहि ग्वाल यह कहि रहारि है भले
सुत वियोग विकराल जात नहीं कहि मात को

चौंकि परी तन की सुधि आई रोवत देखे लोग लुगाई॥
तब जानी हरि गिरे कन्हाई पुत्र पुत्र कहि कहि उठि धाई
ब्रज वनिता सब संग ह्लानी॥ स्याम वियोग वियातन पागी
कान्ह २ कहि सकल पुकारे तोरत लट उर सो कर मारे॥
अति व्याकुल यमुना तट जाई गिरी धरणि जसुमति अकुलाई
सुरभि परी तन दसा भुलाई प्राण रहेउ हरि सुरति समाई
ब्रजवासी सब उठे पुकारी॥ जल भीतर कह करत मुरारी
संकट में तुम करत सहाई अब क्यों नाहिं बचावत आई
माता पिता अतहो दुख पावै राइ राइ सब कहा वुलावै
आइ गये हलधर तिहिकाल॥ देखी जननी विकल विहाल
नाक मूंद जल सींच जगाई॥ जननी कहि टेर लगाई ॥
वारवार जब हलधर टेर्यो॥ भयो चेत कछु वल तन हेर्यो

कहत उठी वलराम सों वन ही तजु हलु भ्रात
कान्ह तुम हिं विन रहत नहिं तुम सों क्यों रहिजात

पठयो मोहि कंस नृपराई ॥ तू वाकौ अव देह जगाई
कंस कह्या तू इनहि वतैहै ॥ एक फूंक मे तू जरि जैहै ॥
अजहू भाजि कह्यो करु मेरौ लगत छोह देखत मुख तेरौ
मरहु कंस जिन तोहि पठायौ तू कत इहां मरन कौं आयौ
वालक जानि दया अति मेरे दुख पैहै पितु माता तेरे ॥

अरी वावरी सर्प तो कहा डरावति मोहि
जैसो मै वालक प्रगट अवहि दिखाऊं तोहि
तू किन देत लगाय देखौं मै याके वलहि
यापर कमल लदाय लै जैहों इहि नाथ व्रज

सुनत वचन अहि नारि रिसानी छोटे वदन कहत वड़ वानी
खगपति सौं सर वरजिन ठानी ताहि कहत नाथन अस्तानी
देखत ही ह्वै है जर छारा ॥ केतक तू वपुरौ सुकुमारा ॥
वपुरे मोहि कहति अहि नारी ॥ वोलत नाहिन वात संभारी
अव हौं तोहि वपुरो करि डारौ एक हि लात खसम तुम मारौ
सोवत कहं मारिये नाही ॥ चलि आई यह वात सदाई
ताते तू पति दाहि जगाई ॥ देखौं मै याकी मनुसाई ॥
जो पै तोहि मरन वुधि आई तौ तू हो किन लेत जगाई ॥
तव हरि रूरकितीहि दै गारी दावी चरण पूछ अहि कारी
मसकी नेक धरणि सोलाई कालीउरग उठ्यो अकुलाई
आयौ जानि गरुड़ भय वाढो देख्यौ वालक आगे ठाढो
तवहि क्रोध करि गर्व वढायौ ॥ फटाक पूंछ अति रिस करि धायौ

दाव घात नाग्यो करन सहसो फन फटकार
वारवार फुंकार के डारत विष की धार ॥
जरत यमुन को नीर जात फेन उतरात विष
परतन नाहि शरीर अहि मद मोचन स्याम के

पगसौं चांपि नाक धरि फारी । लीनौ नाथ हाथ गहि डारी
कूदि चोढ़ हरि ताके सीसा ॥ मनमन करत विचार अहीसा
मैं यह सुन्यौ हतौ विधि पाही । कृष्ण अवतार होहिं ब्रज माहीं
ते गोकुल में अवतरे मैं जान्यौ निरधार ॥
ये अविनासी ब्रह्म हैं ब्रजकुल को अवतार
किये बहुत फन घात वारवार पछितात मन
अस्तुति करन लगे तहं हेतु दीन ह्वै दुखभरि ।
देख्यौ व्याल बिहाल कृपाला । दियौ दरस निज दीन दयाला
दे बिसरद मन हरष बढ़ाई । बोल्यौ दीन बचन अहिराई ॥
मैं अपराध कियौ बिन जाना । छमानाथ तुम छमा निधाना
तामस योनि कीट विष जान्यौ । कौन भांति तुमकौ पहचान्यौं
अब कीनौ प्रभु मोहि सनाथा । दीनौ दरस जगत के नाथा
असरण शरण नाथ तुम बाना । कहत संत तुम वेद पुराना
ते अपराध छमा सब कीजै ॥ अब प्रभु शरण राखि मुहि लीजै
आज धन्य यह मेरौ माथा ॥ जापर चरण दिये तुम नाथा
अब ये चरण परम प्रभु तेरे ॥ मिटे दोष दुख अघ सब मेरे
जे पद कमल पुनीत तुम्हारे । निस दिन रहत रमा उर धारे
शिव विरंचि सनकादिक ध्यावैं । जे पद योगी ध्यान लगावैं ॥
जे पद पद्म सलिल सुरसरिता । तीन लोक के पावन करता ॥
जिन पद पंकज परस तें गति पाई ऋषि नारि
सुर नर मुनि बंदित तिन्है संतन प्रान अधारि
फिरत चरावत गाय श्री वृंदावन ये चरण ॥
भक्तन के सुख दाइ ब्रजवासी जन दुख हरण
जे पद पंकज परम सुहाये ॥ प्रभु मैं आज सुलभ करि पाये
गरुड़ त्रास तें इतै भजि आयो । भलो कियौ सुह गरुड़ नवायौ

कियौ युद्ध बहु उरग सवाई ॥ मुरे नहीं नकछु सदुराई ॥
कहत परस्पर अहिकी नारी ॥ ह्वै बहु अहि बालक अति भारी ॥
विषज्वाला जल जरत यमुनकौ ॥ याकै तन परसत नहि नकौ ॥
यह कछु मंत्र यंत्र धौं जानै ॥ अति कोमल विषनकु तमानै ॥
सहसौ फन तकरत अहि घाता ॥ अबलग बच्यो पुन्य पितु माता ॥
तब अहिराज स्याम तन हेरी ॥ कहत पूछ दाबी इन मेरी ॥
अतिहि क्रोध करि आतुर धाई ॥ हरिकं धर लै लपटाई ॥
तब तैं सिखलौ अहि लपटाई ॥ कहत करी इन बहुत ढिठाई ॥
कौतुकनिधि हरि सब गुण खानी ॥ दियादाब ह्वैहि अहिकौ जानी ॥
तिहि अवसर सुर सुनि गंधर्बौ ॥ अति व्याकुल भाये ब्रज सबु ॥
उरग नारि मन मन पछताहीं ॥ हरिकौ रूप समुझ मन माहीं ॥
कहैं गर्व करि अति यह आयौ ॥ काल विवस मग इतहि कलायौ ॥

काली हरिसौं लिपटकै कर्म कियौ मन माहि ॥
कहत मोहि जो नेतलहि मसपन कौ नाह ॥
गंजन गर्व गोपाल गर्व भर सुनि पहि वचन ॥
कीनौ वपुष विशाल विकल भयो अहिराज तब ॥

जबहि स्याम तन अति विस्तारौ ॥ टूटन लगी अंग सब सारौ ॥
शरणो रत तब दरम पुकारौ ॥ मैं नहि जान्यौ रूप तिहारौ ॥
जीवदान प्रभु मोकौ दीजै ॥ अब मैं शरणागत पनि सुधि लीजै ॥
यह बाणी सुनतहि भगवाना ॥ आकुछि गये हरि कृपानिधाना ॥
यहै वचन गजराज सुनायौ ॥ गरुड़ छाड़ि वाके हित आयौ ॥
यहै वचन सुनि द्रुपदसुताकौ ॥ वसन बढ़ाय दियौ पुनि ताकौ ॥
यहै वचन सुनि लाख्या गृहतै ॥ लीने राखि पांडवनि जरतै ॥
यह बानी सांची जानत स्यामहिं ॥ दीनबंधु करुणाके धामहि ॥
लीनौ अंग संकोच कृपाला ॥ देख्यौ विकल सिथल ज्यों व्याला ॥

हलधरसबकहनकौंसमझावैं॥ बिनास्यामकोउधीरनपावैं

कहतिजसोदानंदसोंधृकधृकबाराहिंबार
औरकितिकदिनजियहुगेमरतनहींमोहिंमार
करदेखहुमनज्ञानऐसेदुषमेंमरनसुख॥
नंदभयेबिनप्रानसुरछिपरसुनितियबचन

तबहिधायबलपिताजगायो॥ बारबारकहिकहिसमुझायो
वृथामरतकाहेसबकोई॥ कान्हरमारनहारनकोई
हलधरकहतसबैब्रजबासी। वेअन्तरजामीअबिनासी
सबगुणसागरआनंदरासी। रमासहितजलहीकेबासी
मेरौकह्योसत्यकरिमानौ॥ आवतस्यामधीरउरआनौ
यमुनाकेभीतरतेहिकाला॥ उठ्यौसलिलभकोरिबिशाला
बोलउठेआतुरबलरामा॥ वैदेखहुआवतघनस्यामा
सुनतबचनलषिजबउठिधाये॥ यमुनानीरतीरतबआये
काउजलमेंकोउबाहरठाढ़े॥ दरसातुरबिरहानलबाढ़े
प्रगटभयेजलतेंतेहिकाला। ब्रजजनजीवननंदकेलाला
कमलभारकालीपरलीने॥ नटवरवेषमनोहरकीने॥
भयेसुखीसबब्रजकेबासी॥ लषिहरिबदनपरमसुखरासी

छं॰ हरिबदनलषिरासिसुखकीमुदितब्रजबासीभये॥
मनहुबूड़ितनावपाइपरमउरआनंदछये॥
मातुपितुलषिजोभयोसुखजातसोकापैकह्यो
पुलकिततनमनहरषिगदरप्रेमजललोचनबह्यो
चकितहरितनलषतइकइकमिलतकोआतुरहिये
स्यामनिर्तनअहिफननि[illegible]तिखौरचंदनतनकिये
श्रवणकुंडललोललोचनचारुमुकटबिराजहीं
मनहुमरकतगिरिसिर[illegible]हरिभारतापरराजहीं

जातै दरस भयो प्रभु तेरो ॥ अब भय भाप मिटयो मैं मेरो
आज भयो मैं नाथ सनाथा । गहो नाथ मम प्रभु निज हाथा ॥
सुनत दीन काली की वानी । दीन वंधु अतिशय सुष मानी ॥
फन प्रति चरण सरोज छुवाये । ताके सब संतापन साये ॥
तब प्रभु नाथ भक्त हितकारी । यह अपने मन माहिं विचारी ॥
काली कौ ब्रज लोक दिखैये । कमल भार याये लै जैये ॥
है हैं ब्रज के लोग दुखारी ॥ करौं जाय अब तिनहिं सुखारी ॥
कमल कंस कौ देहु पठाई ॥ काल्ह चढैगो ब्रज पर आई ॥
लीनै अहि पर कमल लदाई । खेले ब्रज हित ब्रज जन सुखदाई ॥
लियो नाथ येग हि अहि उचकाई ॥ फन पर ठाढे कुवर कन्हाई ॥
उरग नारि सब जोरि कर प्रभु के सन्मुख आय ॥
करति विनय अति दीन ह्वै पति हित हरिहि सुनाय ॥
इत जसुमति उर माहि उठी लहरि अति प्रेम की ।
कान्ह आयो नाहिं कहति रोय यु बल राम सो ॥
कहत राम सुनु जसुमति मैया । अब हीं आवत कुंवर कन्हैया ॥
नेकु धीर धर मति अकुलाई । यह सुन के बालक चल आई ॥
सुनि यह कहत कान्ह नाहि न आ र । मूढा हि मोहि प्रवोध करत सवे ॥
भई विना सुत व्याकुल मैया ॥ कहति कहा मेरे बाल कन्हैया ॥
गिरी धरणि व्याकुल मुरझाई । रोये उठे सब लोग लुगाई ॥
ब्रजवासी सब भये बिहाला । कहत कहा मोहन नंदलाला ॥
तुम बिनु यह गति भई हमारी । आवत नहीं धाय बनवारी ॥
प्रातहि तें जल माँझ समाने । तुम हि विना युग जाम बिहाने ॥
अब को वसे जाय ब्रज माहीं । धिक ये जीवन तुम हि विना हीं ॥
अति व्याकुल रोवति नंद रानी । विकल मनहु फणि मणि गमाई ॥
जसुमति धाय चलाति जल माहीं ॥ परखति ब्रज युवती गहि बाहीं ॥

ल धर सब ब्रजन कौं समझावै॥ बिना स्याम कोउ धीर न पावै

कहति जसोदा नंद सों धृक धृक बारंहि बार
और किति कौ दिन जियहुगे भरत नहीं मोहिं मार
कर देखहु मन ज्ञान ऐसे दुष मैं मरन सुख॥
नंद भये बिन प्रान सुरछि परसुनि तियवचन

नवहि धाय बल पिता जगायो॥ बार बार कहि कहि समुझायो
श्याम रत काहे सब कोई॥ कान्ह र मारन हारन कोई
हलधर कहत सबै ब्रजवासी। वै अन्तरजामी अविनासी
सब गुण सागर आनंद रासी। रमासहित जलही के वासी
मेरौ कह्यौ सत्य करि मानौ॥ आवत स्याम धीर उर आनौ
यमुना के भीतर तेहि काला॥ उठ्यौ सलिल झकोरि बिशाला
बोल उठे आतुर बलरामा॥ वै देखहु आवत घनस्यामा
सुनत वचन लषि जब उठि धाये॥ यमुना नीर तीर तब आये
कोउ जल मैं कोउ बाहर बाढे॥ दरसातुर बिरहानल डाढे
प्रगट भये जल तें तेहि काला। ब्रजजनजीवन नंद के लाला
कमल भार काली पर लीने॥ नटवर वेष मनोहर कीने॥
भये सुखी सब ब्रज के बासी॥ लषि हरि बदन परम सुखरासी

छं॰ हरिवदन लषि रासि सुख की मुदित ब्रज वासी भये॥
मनहु बूड़ित नाव पाई परम उर आनंद छये॥
मातु पितु लषि जो भयो सुख जात सो का पै कह्यौ
पुलकित तन मन हरषि गदर प्रेम जल लोचन बह्यौ
चकित हरि तन लषत इक टक मिलत कौं आतुर हिये
स्याम निरतत अहि फनन प्रति खौर चंदन तन किये
श्रवण कुंडल लोल लोचन चारु मुकट सिर राजहीं
मनहु मरकत गिरि सिखर मणि भार ता पर राजहीं

पीतपट काटि काछनी उर माल मणि भूषण सजे
नित्य तांडव करत फण प्रति व्योम दुंदुभि वजे
भई जय ध्वनि गगन पर्वाह सुमन सुर आनंद भरे
गगन गंधर्व गुणनि गावत तान नालन अनुसरे
उरगनारी स्याम सन्मुख करत अस्तुति आपही
नाथ अव अपराध छमि करि कृपा मम पति पर करौ
राखे चरण निज सीस या के भांति वडाई इन लई
ऐसी वडाई और कौं प्रभु ताहि तुम सा गरुड़ दई॥
शेष इक ब्रम्हांड भार सिर राखि मन गर्वित कियो
कोटि ब्रम्हांड तुम तन अधिक इन पद भर लियो
सुर असुर नर नाग खग मृग कीट जन सब राव रे
छमिय अव अपराध याहि के सुभग सुन्दर सांवरे
सोर॰ सुनि अहि नारिन के वचन करुणामय दुराय
उतरि परे अहि सीस तें यमुना जल तट आय
सो॰ तट पर कमल धराय काली कौं आसु दियो
उरग दीप अव जाय करहु वास निर्भय सदा

तव काली कह सुनौ कृपाला॥ तुव वाहन डर हरत विशाला
धन ऋषि शाप दियौ है नाही तातें आय सकत यहां नाहीं
तव मैं भाजि वच्यौ इत आई नातर लेत मोहि सो खाई॥
चरण चिन्ह लखि तुव फण मेरे पर है गरुड़ पाय अव तेरे
वृन्दावन तृण पातो ह्वै गई अपने दोष करहु सुख मई
या ते वडो कोन सुख नाथा॥ अभय दान पद परस्यो माथ
जे पद कमल भजन पर ताप जन प्रहलाद मिटे संतापी॥
दे पद चिन्ह सीस पर धारी जन्म जन्म को भयो सुखारी
उरगिनि साहित नाय पद माथा गयौ उरग दीप हि पहिं नाथा

जैजै धुनि नभ सुरन वखानी ॥ धन्य धन्य नभके सुखदानी ॥
शरण राखि काली अहिसीनी ॥ जलतें काढि कृपा करि दीनी ॥
फन पर चरण चिन्ह प्रगटाई ॥ कठिन गरुड़ की त्रास मिटाई ॥

धन्य धन्य प्रभु धन्य कहि मुदित सुमन वरखाइ
गये देव निज निज सदन हृदय परम सुख पाइ
दीप पठायो व्याल सुरगण सुर लोगन पठै ॥
आये निकसि गुपाल व्रजवासी जन सुखकरन

धाय मिले सिगरे व्रजवासी ॥ विरह ताप तन की सुधि नासी ॥
माता दौरि कंठ लपटानी ॥ पुलकि रोम तन गद्गद वानी ॥
नैन नीर अति प्रेम अधीरा ॥ उर लगाय मेटति उर पीरा ॥
कहि कहि मेरो वालकन्हैया ॥ दुहु करन सो लेत वलैया ॥
धाय नंद उर सों ले लायो ॥ गये प्राण मानहुं फिर आयो ॥
गदगद वैन नैन जलढारी ॥ कहत जन्म फिर भयो तुम्हारी ॥
वार वार उर सों लपटावत ॥ दारुण उर की ताप नसावत ॥
प्रेमातुर देखी वल माता ॥ मिले रोहिणी सों सुखदाता ॥
निरखि वदन कहत सुमति मैया ॥ मैं वरजी नित तुम्है कन्हैया ॥
यमुना तीर लाल मत जाहु ॥ तुम वरजो मानत नहिं काहु ॥
मैं निसि सपने मांझ डरान्यो ॥ सोई कहु आज प्रगटान्यो ॥
कंस कमल के फूल मंगाये ॥ व्रजवासी सव अतिहि डराये ॥

मैं गेंद हि खेलत यहां आयो यमुना तीर
मोहि डारकाहू दियो काली दह के नीर ॥
देख्यो उरग विशाल जाय तहां मैं डस्यो अति
तव पूछी मोहि व्याल किन पठयो तोको इते

तव ऐसो मैं ताहि वतायो ॥ कमल काज मोहि कंस पठायो ॥
यह सुनतहि अहि उठो डराई ॥ मोको फणिपर लियो चढ़ाई ॥

लैलै हरी कौं उर सौं लावैं ॥ कोविन विरह की सूल मिटावैं
स्याम बिना बहु दुख पायौ ॥ सो हरि तिनकौ ताप नसायौ
लखे सखा सब आरत बाढ़ै ॥ प्रेमातुर मिलवे कौं ठाढ़ै ॥
गये दौर तिन पास कन्हाई ॥ मिले धाय सब कौं उर लगाई
कहत सखा धनि धन्य कन्हैया ॥ जो तुम कह्यौ कियौ सो भैया
तुम हौ सब ब्रज के सुखदानी ॥ कंस मारि हौ तुम हम जानी
कहा भयौ जो तुम हौ बारे ॥ हैं तुमरे गुण सब तें न्यारे ॥
भलौ यद्यपि सिंहनि कौ छोटौ ॥ कौन काज गज लावै मोटौ

तुम हम पर रिस करि गये सो अब देहु भुलाइ
यह सुनतहि हरि उठे नव मिले बहुरि हरषाइ
नव हलधर अरु स्याम मिले बिहँसि दोउ मनहिं
मग निरषत नर वाम भेद न कोऊ जानहीं ॥

सब कोउ कहत धन्य बलरामा ॥ तुम जो कही करी सोइ स्यामा
तब हरि कहेउ नंद सों जाई ॥ मेरे मन हिं बात यह आई ॥
आज बसें सब यमुना तीरा ॥ अति रमणीक सुगंध समीरा
इहां कीजिये भोग विलासा ॥ होत प्रात सब चलहिं अवासा
कमल पठाइ कंस कौं दीजै ॥ सुनहु तात अब बिलम न कीजै
गोप जाय आवै पहुंचाई ॥ काल चढ़ै न तौ ब्रज पर धाई
यह सुनि नंद बहुत सुख पायौ ॥ सब ब्रजवासिन के मन भायौ
तुरत ग्वाल बहु घरनि पठाये ॥ षटरस भोजन बहुत मँगाये
यमुना तीर गोप समुदाई ॥ भोजन कियौ बहुत सुख पाई
नंदराय सब सकट मँगाये ॥ कोटि कमल तिन पर लदवाये
बहुते भार दधि घृतन के कीन्हे ॥ ते अहिरन कांधे पर लीन्हे ॥
अपना सरजे गोप सुहाये ॥ तिन हिं संग करि नृपहिं पठाये
बहुत बिनय करि कंस कौं दीनौ पत्र लिखाइ

कहियो मेरी ओर तें नृप सों ऐसी जाइ ॥
गयौ कमल के काज काली दह मेरो सुवन ॥
तुव प्रताप तें राज आय गयो पहुंचाय सो

कोटि कमल नृप मांगि पठाये ॥ तीनकोटि दह ते ले आये
सो राखे जल मांझ समाई ॥ आयसु होइ तौ देउं पठाई
तव गोपन सों कुंवर कन्हाई । ऐसे बोल उठे मुसकाई ॥
नृप सों लीजौ नाम हमारो ॥ यह कारज हम कियौ तुम्हारो
कमल सकट दधि वन के भारा । चले गोप लै नृप के द्वारा ॥
राजद्वार सकटन पहुंचाई । जाइ पौरियन खबर जनाई
तुरत पौरिया भीतर धाये ॥ समाचार सब नृपहि सुनाये
सुनत बात यह मन हिडरानौ । आय निकसि आयो अतुरानौ
देखी सकट भीर अति भारी । भयौ चकित सुधि बुद्धि बिसारी
कमल देखि भय भयो विशाला ॥ लगे ताहि मन ब्याल कराला
नंद विनय तब गोपन भाषी ॥ दीनो पत्र भेंट सब राखी ॥
गोपन बहुरि कही उन्ह राई । नंदसुवन यह कह्यौ कन्हाई

हम काली दह पाइ यह कियो राज को काम
नृप हमको जानत नहीं कहियो मेरो नाम ॥
सुनत स्याम संदेस देखि कमल भे अति विकल
भीतर गयो नरेस मन बाढ़ी चिंता विपुल ॥

मनही मन यह करत विचारा । यासौं मेरो नाहीं उबारा ॥
दैत्य गये ते सबहि नसाये ॥ काली ने ऐसे बचि आये
नाहीं पर कमलन लै आये ॥ सहस सकट भारि माहि पठाये
कबहूं कहु गोपन को मारो ॥ इनको ब्रज ते तुरत निकारो
के कछु मन मैं भय पावै ॥ करत विचार न कछु बनि आवै
पुनि संभार धीरज उर कीनो । [illegible]

हृदय दुखित ऊपर सुख माली॥ पहिराये छोले मन मानी॥
सो पाव नंद कौ दीनौ॥ कह्यौ काज केसे तुम कीनौ॥
तेरे सुत बल राम कन्हाई॥ एक दिवस देखिहौं बुलाई॥
यह सुनि धाति पुरुषारथ कीनो॥ काली दह के फूलन लीनो॥
सहकोह विदा किये सब ग्वाला॥ भयो कंस उर सोच विशाला॥
मनहीं मन सोचत है लिये गुन॥ रह्यो काठ ज्यों भीतर ही घुन॥

तब दावानल बोलिके कहेउ मरम सब ताहि॥
देखहु मैं तेरे बलहि तू अब ब्रज को जाहि॥
जोर कौ मिये छाय ब्रज सब ब्रजवासन सहित॥
बचहि न नंद कुमार ऐसो यत्न विचार उर॥

अथ दावानल लीला॥

दावानल सुनि नृप की बानी॥ चलेउ सिसाय गर्व उर आनी॥
करो भस्म इक पल मैं जाई॥ सहित गोप नंद सुवन कन्हाई॥
नृप को काज आज करि आऊं॥ जो कछु एक तोर सब पाऊं॥
यहां गोप कमल न पहुंचाई॥ आय यमुन तीर हरषाई॥
नंद तुरत सब निकट बुलाये॥ सुनत सकल ब्रजजन जुरि आये॥
गोपन कही नंद सो आई॥ लिये कमल नृप अति सुखपाई॥
दियो नृप तुमको पहिरायो॥ मुदित नंद ले सीस नवायो॥
अपने सब पहिराव दिखाये॥ लषि सब ब्रजवासिन सुख पाये॥
हरि को नाम सुन्यो जब राजा॥ हरषि कहेउ कीनो उन काजा॥
इक दिन बल मोहन दोउ भाई॥ देखहुगो मैं यहां बुलाई॥
यह सुनि मद वढन सुख पायो॥ हरषि भूप मो सुतन बुलायो॥
करो कृपा अति नृप हरि पाहीं॥ सब नर नारि हरष मन माहीं॥
कहत स्याम बलराम सों हंसि हंसि कै यह बात

नृप हम तुम देखन लिये कह्यो बुलावत ताते
ब्रज जन परम दुलास हूं के सुष हरि आदृते वच
मिल्यौ कंस को त्रास दुतिय कमल पव येन्प हि

अथ दावानल वर्णन लीला ॥

इहि विधि ब्रजजन अतिसुष पायौ ॥ खानपान करि दिवस विता
सोए सब निस यमुना तीर ॥ राखि हृदय सुंदर बलवीर
तहां असुर दावानल आयौ ॥ चाहत है सब ब्रज हि जरायौ
देखे सब ब्रजजन इक ठाहीं ॥ कियौ हर्ष अपने मन माहीं
प्रगटो दावानल चहुं ओर ॥ अति हि प्रचंड पवन झकोर
दसहूं दिसते घेरत आवे ॥ तृण तरु खग मृग जीव जरावे
जाग परे सब ब्रज नर नारी ॥ कहैं चहूं दिस लागी दवारी
भये चकित सब अति मन माहीं ॥ काहू दिसि मग दीसत नाहीं
कहत चलन भजि नहीं निकासू ॥ लेत सबै भरि सोच उसासू
आइ गई दौं अति हि निकट ही ॥ चले कहत सब यमुना तटहीं
आवन देखियत कहूं उवारा ॥ बढ़ी अनल पहुंची नभ मारे
ब्रज के लोग अति हि अकुलाने ॥ जरैं सकल मन मां डराने

छं॰ अति विकल सब डरे ब्रजजन देखि अनल भयावनो
भई घरन भ ज्वाल पूरण धुंधधूम डरावनो
१ लपट झपटत जरत तरु पर गिरत महि भहरायके
फटत फूल फूलत फटक दल जरत बरत लतावनो
कांस बरुकच बांस पटक अंगार उवटन नभवनो
२ उठत शब्द अघात चहुं दिसि वृक्ष तरु सहरायके
हरिय मोह वराह वन पसु विकल पंथ न पावहीं
डरत जहं तहं जीव खग मृग विपुल नित रंधावहीं

दो॰ दावानलअतिक्रोधकरितियोदसहूदिसघेर
उठीअतुलज्वालाप्रबलमानहुअचलसुमेर
धूमधुंधविकरालभयोअधेरोगंगनसव
विचरवमकतज्वालतड़ितमालजलोसघनघन
भयेदुखितव्रजलोगदुखारे॥ तवसवहरिकोशरणपुकारे
कहतस्यामतुमकरहुसहाई॥ जरतसकलव्रजलेहुवचाई
दुरगसकटवकअघतुममारे॥ कंसत्रासतेंतुमहिंउवारे॥
जहंतहंपरीगाढहमलाई॥ तहांतहांतुमकरीसहाई॥
अवेहरियतनकछुसोकीजे॥ हमहिंवचाइअग्नितेंलीजे
व्याकुलगोपनंदमनमांही॥ करतविचारवनतकछुनाहीं
जसुमतिसवहिनकहतिपुकारे॥ दईपरोहैख्यालहमारे
नानारूपअसुरवहुआये॥ कोउखगकोउपसुतनपवनाये
कोउपवनरूपव्हैआयो॥ भयोतहांकोउपुन्यसहायो॥
राजउरगसोंपर्योकन्हाई॥ मरुकरमनत्रपत्रासनसाई
अवयहवाढीअग्निअपार॥ होतसकलव्रजकोसंहार॥
किमिवाचियहवालकदोउ॥ मोहिनलषिपरतउपायनकोउ
सुनिजननीकेवचनप्रभुलगेसवव्रजकेसाल
कहेउसवनधीरजधरोमतिडरपोलषिज्वाल
कौतुकनिधिगोपालकोजानेतिनकेगुरान
दुखसुखमिनकोख्यालजनकेहितकारजसव
नवहारकह्यो डरोमतिकोई॥ विनवहुदेववडरसवसोई
जिनसहायकीनीअवताई॥ सोइकरेसहायसदाई॥
हरिहंसिसवसोंआंखमुदाई॥ करिगेअग्निपानसुखदाई
उड़गईवडदिसशीतलताई॥ रहेउनअग्निलेसकहुयहुं
खोलिदेहुद्रगसवहरिवोले॥ सुनतहितुरतसवनद्रगखोले

देखि चकित सब ब्रज नर नारी कहत धन्य धन तुम बनवारी
धरणि अकाश बराबर ज्वाला ॥ लपट झपट अति ही बिकराला
नहि बरस्यौ नहि सोंच्यो काहू ॥ गयो बिलाय कहां धौं दाहू ॥
कैसे यह सब आगि बुझानी ॥ हम यह कछू न काहू जानी
तब हंसि बोले कुंवर कन्हाई ॥ वुह करनी यह करत सुहाई ॥
तृण की आग प्रथम चढ़ि जागे ॥ फिरतहि बुझत विलम्ब न लागे
सुनत स्याम की कोमल बानी ॥ भये सुखी सब ग्वालन स्यानी

जीव जंतु खग मृग जिते भये सुखी तत्काल
द्रुम बेली तृण हरित सब प्रफुल्लित बन सुखमाल
स्याम सहायक जाहि ताहि कहौ डर कौन कौ
यह न बड़ाई याहि पांच तत्व उनके किये ॥

कहति परस्पर ब्रज की नारी ॥ हैं सखि बड़े बीर बनवारी
देखत कोमल स्याम सलोना । यह सखि जानत हू कछु टोना ।
नाथ्यौ नाग पताल हि जाई ॥ लायो ताप र कमल धराई ॥
मांगे कमल कंस नृप राई ॥ कोटि कमल तेहि दिये पठाई
दावानल नभ धरणि बराबर ॥ घेर लिये ब्रज के नारी नर ॥
नैन मुदाय कहा धौं कीन्हौ रह्यौ नहीं कछु ताको चीन्हौ
थेउत पात मिटेउ नहीं पै ॥ औरन होय सकै किन हीं पै
यह कोउ सब बड़ौ अवतारा है यह ई करता संसारा ॥
लखि हरि तुरत जसोमति मैया ॥ चकित निरखि मुख लेत बलैया
लखि सुत चरित मुदित नंद राई ॥ करत गोप गन सकल बड़ाई
कहत देव मुनि अति अनुरागी ॥ है ब्रज बासिन के बड़ भागी
जिनके स्याम संग सुख शीला ॥ करत रहत नित नव रस लीला

एक दिवस निस निस यमुन तट ग्वाल सब गोपीं सहित
होत प्रात निज निज सदन आये सहित गुपाल

हरिजन के सुखकारी चरित विविध विलास मन
मेतन प्राण सधार ब्रजवासीजन जाहि कर॥

हरि ब्रज जन के सुख विसरावन॥ कहत चरित सुमुनि मनभावन
तुरत सकल ब्रज लोग भुलाये। कौन कंस कब कमल मंगाये॥
कबहरि यमुना जलहि समाये। काली नाग नाथ कब ल्याये
कब दावानल जारन आयो। एक दिवस निस कहा वितायो
महि जानत कछु नंदन सोद॥ करन स्याम सो द्वाल विनोद
माखन मांगत कुंवर कन्हाई। वारवार जननी सो जाई॥
आतुर दधिहि मथत नंदरानी। सद माखन हरिकी रुचि जानी
कहत ठनक तुम रहत कलारे। तुमहि देउ नव नीत पियारे
मै बलि भूख लेगी तुम भारी। वाल्ब नावत सुतहि दुलारी
वूझत वात काहू की कान्हहि॥ कहत स्याम सो सुतन कानहि
झूठेहि देतु हुकारी जननी। भूल गई सब हरि की करनी
तब लौं माथि दधि माखन कीनो। तुरतहि लै सुत के कर दीनों
लै लै अधरन परस करि माखन रोदी खात
कहत असस मधुर कहि सुनत अफ खिन मात
जो प्रभु ग्वाल कृपपारि दुर्लभ सिव सनकादिहू
धन्य नंद की नारि ताको सुत करि मानई॥

अथ प्रलंबासुर वधलीला

नित नव लीला करत कन्हाई। तात मात ब्रजजन सुखदाई
मुदित सकल ब्रज के नरनारी। निस दिन सुख हरि बदन निहारी
इक दिन स्याम राम दोउ भाई। खेलत सखन संग वन जाई
नाना विधि सब करत किलोलै। भांति भांति की वानी बोलै
कबहू मोर हंसा की नाई॥ बोलत हंसत स्याम सुखदाई

कबहूं मधुरे सुर सब गावैं । मध्य स्याम घन वेणु बजावैं ॥
कबहूं चढत तरुणपर धाई । कूदि परत गहि डार नवाई ॥
नाना विधिके खेलन खेलैं । बाल विनोद मोद रस केलैं ॥
तहां प्रलंब असुर इक आयो । कंसताहि दै पान पठायो ॥
सो छल रूप गोप वपु धारी । मिल्यो आय अस सखन मझारी ॥
ताको ग्वालन काहु न जान्यो । यह तो असुर स्याम पहिचान्यो ॥
बलदाऊ कौं दियो जनाई । नाहि हतन कौं रच्यो उपाई ॥

सखा बुलाई निकट सब तिन्है कहेउ नंदलाल ।
फल बुझाइ अब खेलिये भये मुदित सब ग्वाल ॥
द्वै बालक करि राय सखा लिये नव बांटि सब ।
आधे इक दिश आय आधे एक दिसा भये ॥

निज निज जोट सखन जुरि लीनो । हलधर जोट दनुज सँग कीनो ॥
आपस मैं यह होड़ लगाई । जो हारे सो पीठ चढाई ॥
भांडीर वन लौं लै जाहीं ॥ फेरि इहां पहुंचावैं ताहीं ॥
फल कौ नाम बुझावन लागे । बूझि दियो बल सब तें आगे ॥
चले सखा चढि २ निज जोरी । चढे दनुज बल पीठ मरोरी ॥
भांडिर वन जब पहुंचे जाई । फिरे सखा सब ठांव छुवाई ॥
असुर चल्यो लै बल को आगे । प्रगटेउ दनुज सरीर अभागे ॥
तब बलदेव कोप करि भारी ॥ मुष्टि एक ताके सिर मारी ॥
विकस गयो सिर गिरा अधीरा । उतर परे तब श्री बल वीरा ॥
भयो पलक मैं सो बिन प्राना । देखन सुर मुनि चढे विमाना ॥
भई गजब तें जय जय बानी । फूलन की बरखा दरसानी ॥
बहु विधि अस्तुति बलकी गाई । मुदित सकल सुर मुनि समुदाई ॥

ग्वाल बाल चातुर सबै दौरि गये बल पास ।
मतक असुर तन देखिकै तब मन कियो हुलास ॥

धन्य धन्य बलराम धन्य तुम्हारे मातु पितु ॥
बड़ो कियो यह काम कपट रूप मार्यो असुर

यह सठ गोप भेष ह्वै आयो | हम काहू इहि जान न पायो
जो यह सठ नहिं जात निपातो | तौ काहू मारि कोहू लै जातो
होत तुम बड़े बीर दोउ भाई | जहँ तहँ हम को होत सहाई
बन के दुष्ट सकल तुम मारे ॥ | होत तुम हम सब के रखवारे
मोहि कहीं काको डर भैया | जासु मात बल सम कन्हैया
देत ग्वाल सब बहुत बड़ाई | आय मिले तब हँसे कन्हाई
दुष्ट मारि चल्ले मोहन लाला | आये सदन साथ सब ग्वाला
ग्वालन कही आय सब बाता | सुनत यशोमति ब्रजजन [illegible]
कहत सकल बलराम कन्हाई | जननी मुदित लिये उर लाई
बल मोहन दोउ बीर निहारी | दोऊ जननि [illegible] हारी
भूखे जान बनहिं ते आये ॥ | दोउ भैयन भोजन करवाये
जो सुख लहत नन्द की नारी ॥ | सो सारद नहिं सकहि बखानी

सुत सनेह जसुमति मगन निसदिन आनन जान
करत चरित संतन सुखद भक्त वस्य भगवान
नित नव परम हुलास ब्रजवासी हरि संग लहत
बिलसत बिबिधि बिलास घाट बाट गृह बन सघन

अथ पनघट लीला

पनघट यमुना के तट माहीं | ठाढ़े स्याम कदम की छाहीं
सखा बृंद चहुँ ओर बिराजे | कोटि काम छबि निरखत लाजे
सीस मुकट की लटक सुहाई | सुरंग खौर केसर छबि छाई
कुण्डल झलक अलक घुँघरारी | कंठ कनक कठुला दुतिकारी
पट कटि पीत लटक बनमाली | परसत चरण सरोज बिशाली

मुक्ति माल मणि माल सुहाई । उर विशाल पै अति छवि छाई
अरुण अधर दसन दुति नीकी । मुरि मुसकान मोहनी जाकी
चर कीलो पर पीत विराजै । कटितट छुद्र घंटिका राजै ॥
भुज विशाल भूषण युत सोहै । कर मुद्रिका जटित मन मोहै
तन घन स्याम रसीले नैना ॥ हँसि२ कहत सखन सों बैना ।
कनक लकुट सों पग लपटान्यौ । भूषण सहित न जात बखान्यौ ।
गहि द्रुम डारि तिरीछे ठाढे । अंग अंग अनुपम छवि बाढे ॥

कबहूं बजावत अधर धरि करि मुरली धुनि घोर
निकट बुलावत वन म्रगन कबहूं नचावत मोर
रहे गगन घन छाय सुखद छांह सीतल किये
बरषा ऋतु कौ पाइ निरखत सुत नंदराय कै

हरित भूमि चहुं ओर सुहाई ॥ मनहुं काम मस नंद बिछाई
बहत समीर धीर सुखदाई । सीतल अधिक सुगंध सुहाई
बहत यमुन बहु जल तें पूरी । परत भंवर जहं तहं छवि रूरी
उठत स्याम जल सुभग तरंगा ॥ छवि तरंग जिम हरि के अंगा
या छवि सों पनघट हरि ठाढे । संग गोप बालक हित बाढे
यमुना जल तिय भरन न आहीं । ग्वाल भीर देखत सकुचाहीं
हरि के गुण मन में सब जानें । रोकत टोकत कंस न मानें ॥
ताते पाइ सकत कोउ नाहीं ॥ दरस लालसा अति मन माहीं
सब के अंतरजामि कन्हाई । युवतिन के मन की गति पाई
तब इक युद्धि रची नंदलाला । रसिक सिरोमणि मदनगुपाला
सखन एक तरु तर बैठाई ॥ पनघट तें सब भीर हटाई
आप रहत र ओट छिपाई ॥ हेरति युवतिन अग चित लाई
इहि अंतर आवत लखी युवती इक घनस्याम
आप रहे द्रुम ओट दुर यमुना तट कौ वाम

नागरि जल लीन्ह्यौ सार भरि गागरि सिर धरि चली
पाछे ते चितचोर घट ले लियो लुटाय मोहि॥
गहौं चतुर ग्वालनि भुज हरि की॥ पाइ कनक लकुटिया कर की
सब सों तुम करि रहे ढिठाई॥ ते सोहि मो सों लगत कन्हाई
देन लगे तब हरि ह्वै गागरि। लेत नहीं ग्वालनि पति नागरि
कहति कि रीतौ घट नाहि लैहौं। जल भरि देहु लकुट तब देहौं
कह्यो जो तुम न देहु धन कान्हाई। हम हू बड़े महर की जाई॥
एक गांव संहनी सद मारी। मैं नाहि सोहि हौं कस्यो तुम्हारी
एक कहो तो दस मैं कोइ हौं॥ मैं कछु तुम सौं डराप न जैहौं
यह सुनि हरि लीदी नौनंदलाला॥ लियो चोर चित मदन गुपाला
कहत लकुटिया दै री मेरी॥ मैं भरि देहौं गागरि तेरी॥
देखत रूप सुमत मृदु बानी। ग्वालनि तन की दशा भुलानी
लागी हृदय मदन की साटी। मन परि गयो प्रेम की घाटी॥
कर तैं लकुट गिरत नाहि जान्यो॥ विवस भई चित चेत हिरान्यो॥
तब घट भरि हरि भावते दीनो सीस उठाइ॥
नैकहू सुधि ता तन नहीं चली ब्रजहि समुहाइ
कियो दृगन मैं धाम सुन्दर नट नागर सुखद
जित देखै तित स्याम पंथ ताहि दीसै नहीं
उलटै अपर स्यालि तिन रूप आई। कहति कहां तू रही भुलाई
सूधे पंथ चलति है नाहीं॥ कहा सोच तेरे मन माहीं
पकरी हंसति भरन जल आई। कहा चली इत आइ गँवाई
ताको देखि कहति सुनु आली। सो पर स्याम मोहनी घाली
मैं जल भरन अकेली आई। मेरी गागरि कुस लुटाई॥
तासु मैं कनक लकुट गहि लीनी। उन मोतिन लाख के हासि दीनी
भले हसनि माहि परी ठगौरी। तब हो ते मैं होइ गइ बौरी

कहा कहौं तोसों अब आली॥ मेरे चित वह चितवन साली॥
वस्यो कान्ह मेरे दृग माहीं॥ और कछू मोहि दीसत नाहीं॥
सुनत बात वह ग्वाल सयानी॥ आप विलोकन कों अतुरानी॥
ताहि वांहि गहि घर पहुंचाई॥ आप गई जल कों अतुराई॥
देख्यो जाइ स्याम तहं नाहीं॥ इत उत लखि सोचत मन माहीं॥

हरि देखत तरु ओट ह्वै ग्वालन मन दुख पाइ
चली नीर भरि गागरी बार बार पछिताइ॥
मन के जानन हार दै यों ग्वालिनि विकलाति
प्रगटे नंद कुमार गाय अचानक निकट ही

गहि लीनी अंग में भरि ग्वारी॥ ताके तन की तपनि निवारी॥
ता तन चितै कह्यो तू कोरी॥ तोहि कबहूं देख्यो नहिं गोरी॥
मन हरि लीनो रूप दिखाई॥ बहुरि भये तरु ओट कन्हाई॥
मिलि हरि सों सुख पायो ग्वारी॥ छकी प्रेम रस लखि वनवारी॥
नहिं जानत को मैं कित आई॥ भई मगन मन तन विसराई॥
घर कौ पंथ भूलि गई नागरि॥ इत उत फिरत सीस लियें गागरि॥
और सखी इक उत तें आई॥ दौरि इहा [illegible] बुलाई॥
कहा फिरति भूली मग माहीं॥ बूझति सखी सुनत कछु नाहीं॥
चौंकि परी सपने ज्यों जागी॥ तासौं बचन कहन तब लागी॥
स्याम वदन इक मिल्यो ढुटौना॥ तिन मो कों कछु कीनो टौना॥
मैं भरि गागरि सीस उठाई॥ उन आय कै मोहि अंक मैं लाई॥
मो सन कह्यो कौन तू गोरी॥ देखी नाहिं कबहुं ब्रज खोरी॥

ऐसें कहि चितयौ विहसि मैं लखि रही भुलाइ
तबहिं भयो अंतर कहूं मेरो चित्त चुराइ॥ ॥
कही सखी सों बात ग्वालिनि लाज विसारि कै
निरखि नंद कौ लाल भई जलद की बूंद जिम

सोसखि साथ थान कुरि ताकौं । चली जायें आतुर यमुना ॥
देखी स्याम युवति जिग आई । रहे तरु की ओट कन्हाई ॥
तासु अंग छबि रहे निहारी, । गोरे बदन चूनरी सारी ॥
कुटिल अलक बदन छवि छाई ॥ मकर जलज झलि अवलि सुहाई ॥
हाथ चूनरी चारु विराजे ॥ कंकन मूंदि रतन छवि छाजे ॥
सहज सिंगार उरोज उतंग है ॥ अंग अंग सुठि सुन्दर सोहै ॥
ग्वालनि हरि कौ देख्यौ नाहीं । जाने कहूं गये वन माहीं ॥
जल भरि चली मनहि पछिताहीं ॥ गागरि नागरि सीस उठाई ॥
औचक स्याम गही लट आई ॥ यह कहि कहां चली सतुराई ॥
चिबुक परस उर सोल पराई । ग्वालनि मन हि हर्ष अति पाई ॥
ऊपर कहति येग करि मोहन । छाडि देहु मेरी लट सोहन ॥
उर परसत कछु सकुचन मानत । औ रंग्वाल सी मोको जानत ॥

छाडि देउ लट देखि कै ब्रज युवती कोउ आइ ।
इहां मैं पायन परति तुम कों नंद दुहाय ॥
इतनेही कों मोहि सौंह दिवावत बावरी ॥
पहिचान्यो नहिं तोहि नातें मुख देखत तनक ॥

पीकोंह स्याम छांडि लट दीनी ॥ मुसिकानि नागरि वस कीनी ॥
चली भवन तन मन हरि लीनी । जिय महं कहति कहा हौं कीनी ॥
फाटि दई चलि विवि कि रहि जोरई ॥ भूलि गइ मारग जित हि सरई ॥
प्रेम मगन तन सुधि बिसराई ॥ रहे दृगन में स्याम सदाई ॥
गेह सुरजन की सुधि जब आई । नव कछु जिय मैं गई लजाई ॥
ज्यौं त्यौं करि पहुंची गृह माहीं । उर तें स्याम टरत छिन नाहीं ॥
सखी सग की बूझति आई ॥ कहा यमुना तट देर लगाई ॥
सोरे सदा भई कछु नेरी ॥ कहति नहीं हम सौं सखि मेरी ॥
कहा कहौं तुम सौं री आली ॥ मोहि मोहि स्याम बनमाली ॥

रहांई रहौ तौ वदहि कन्हाई ॥ जाऊ कहूं तौ नंद दुहाई ॥
कान्हैं सौंह दिवाइ कै उरहन लै सव वाम
ऊपर रिस अंतर सुखी चली नंद के धाम ॥
मथति महरि निज धाम दधि हरि के माखन लिये
तिहि अंतर व्रज वाम आवत देखी भीर अति
मैं जानति हरि इन हिं खिजाई ॥ तातें सव उरहन लै आई ॥
कहति जुवति सव रिस भरि आई ॥ ऐसो ढीठ कियौ सुत माई ॥
भर न देत नहिं यमुना पानी ॥ रोकत घाट करत कलकानी ॥
काहू कौ गागरि हरि कावै ॥ इंडुरी लै जल माहिं वहावै ॥
काहू कौ घट डारत फोरी ॥ गारी देत सहैं नित कोरी ॥
महरि कहत तुम सों सकुचाही ॥ हरि के गुन तुम जानत नाहीं ॥
अव नाहीं व्रज वास हमारे ॥ करत अचगरी सुवन तुम्हारे ॥
नेक नहीं सकुचत मन माहीं ॥ महरि सुनहि तुम व जानति नाहीं
जसुमति सव हि न कहत नहारी ॥ कहा करौं सौ तुम हि कहौ री ॥
जो हरि कों मैं यहां गहि पाऊं ॥ तौ तुम सव कों अवहि दिखाऊं ॥
तुमहू जानि मि है गुण हरि के ॥ ऊखल सों वांधे मैं धरि कै ॥
मारन लगी साटि लै जवही ॥ व रजो मोहि तुमहि सव तवही ॥
अव घर आवहि जवहिं घर तव हि करौं सोइ हाल
लरिकाई तें अचगरौ मैं जानति गोपाल ॥
अव जा पकरन पाउं ताहि गहन पाऊं कहां ॥
सुन तहि मेरो नाउं को जाने भजि जाय कित
यह अपराध छमों सव हम कों ॥ यहै कहति हौं मैं अव तुम कों ॥
इहि विधि युवतिन वोध कराई ॥ महरि सवन को घरन पठाई ॥
इततें घरन चली सव वारी ॥ उततें घर आवत वनवारी ॥
क्रगई भेंट वाच मग आई ॥ तुरत नयन हरि गये लजाई ॥

मोहुसुख पावति जौ कन्हाई। बढ़त बड़ाई करि हम आई
निरोष वदन हँसि कहेउ कन्हैया॥ मैं समुझाय लेउ गो मैया
सकुचत हौं आये घर मोहन॥ द्वारेहि ते लागे हरि गोहन
देखि जननि यह कौ रजलाखी॥ गोपिन के उर हरि रस पागी
भीतर धरि हरि सौं पाक बनावै॥ काह्हि कीं हाँ तन मौं बात सुनावै
हरखि हरखि तव हरि जाई॥ सुनत न आहू पाछे चित लाई
यह कहति जसुमति रिस जाई॥ गयो कहाँ धौं भाजि कन्हाई
पर घर रौं करत धूम मचावत॥ यमुना जल कौ उ भरन न पावत
गोरि देत वेटी वहुन वे आवत यों धाय॥
हा हा मैं सब कौं करति क्यों हू छूट छुराय
इंडुरी देत वहाय सवकौ गागर फोरि कै
कित धौं गयो पराय यौं कौ है धिरवत है सुताहि
औ तिय पाति सौं कहत लगाई॥ मारेहु मानत नाहिं कन्हाई
तव पाछे ते हरि उठि बोले॥ मधुर वचन कोमल अति भोले
तू मोहीं कौं मारन जाने॥ उनके गुननाहिं न पहिचाने
कहति जु वे मानत तू सोई॥ तिनकी चारि न न जानत कोई
कदँव तीर ते मोहि बुलावें॥ वातें गाढ़ि गाढ़ि मोहि बनावें
भटकत गिरे सीस ने गगरी॥ नाम लगावति मेरौ सिगरी
फिरि चितई देखे हरि पाछे॥ सुन्दर स्याम पीत पट काछे
कहत कहाँ रहे मो पाहीं॥ मैं कहत्रौ को जानत नाहीं
हरि सुख देखत ही नंदनारी॥ तुरतहि भूलि गई रिस भारी
कहति कि उरहन लै सब आवै॥ झूठहि सोर कान्ह कौं लावै
मैं जानति गुन उन सबहि के॥ वातन और विनावति जी के
वे सब योवन के मद माती॥ फिरत सदा हरि सौं अनखाती
कहा स्याम मेरो तनक ये सब योवन जोर ॥२१॥

रहे रोम हरि दाउ लगाई ॥ भरौं नीर प्यारी मुसकाई ॥
चली घर हि यमुना जल भरिकै ॥ सखिन मध्य नागरि सिर धरिकै ॥
मंद मंद गति चली सुहाई ॥ मोहन मनहि मोहनी लाई ॥
चले स्याम संगहि उठ लागे ॥ विवस भये प्यारी रस पागे ॥
सखियन बीच नागरी सोहै ॥ गागरी सिर पर हरि मन मोहै ॥
डुलत पीवल टकनि कव सरै ॥ बदन बिदु आड दिये केसरै ॥

लोचन लोल विशाल अति सुरि मुरि चितवत ताय
भृकुटी धनुष कटाक्ष सर हरि दृग मृगन लगाय
अंग अंग छवि समुदाय मानहु सेना काम की
अंचल ध्वज फहराय ठठक चलत हरि मन हरत

रीझे स्याम निरखि छवि न्यारी ॥ संगहि चले नागि बनवारी ॥
कबहुंक आगे जात कन्हाई ॥ कबहु रहत पाछे चित लाई ॥
नाना भांतिन भाव बतावें ॥ प्यारी हिं निज अभिलाष जनावें ॥
कनक लकुट लेकर के माहीं ॥ आगे पथ सवारत जाहीं ॥
देखत जहां भया परछाहीं ॥ तहां मिलावत निज तन छाहीं ॥
छवि निरखत तन वारि जनावें ॥ पीतांबर ले सीस फिरावें ॥
कबहु स्याम पाछे रहि जाहीं ॥ निरखत कच री कटि लचकाहीं ॥
नागरि ताकि कांकरी मारैं ॥ उचटि उचटि तिय अंगन पारैं ॥
ओट पीत पट सीस नवाई ॥ इहि मिस निरखत दृग न्है आई ॥
प्यारी अपने चित अनुमाने ॥ मेरो हित हरि भाव न जाने ॥
सखियन मध्य नागरी जाई ॥ नहिं पावत लगलगत कन्हाई ॥
किये चरित नव रसिक विहारी ॥ सखिन सहित मोहीं सुकुमारी ॥

मिसकरि निकसे निकट ह्वै निरखि बदन मुसकाइ
मन हरि लीनो सबन को दियो काम उपजाइ
भई विवस सुकुमार अंग उमग आगे दरक

मोह्यौ नंदकुमार सुधिबुधिविसरी देह की

सखिन संग पहुंची घर आई । अटकि रहे उ मनहारे संग जाई

पुनि २ उर यह करत विचारी । कैसें मिहि स्याम सुकुमारी ॥

गागरि निज २ ठह पहुंचाई । बहुरि सखी प्यारी ढिग आई

बारबार सब कहति निहारी । चौ लिये यमुना जलहिवहारी

तिन कौं उत्तर देत न प्यारी ॥ चित उर मैं चितवन वनवारी

ठगी सी रही मनहि मन सोचे । प्रेम विवस दृगवारि विमोचे

देखि सदा कूं रत सब ग्वारी । कहा भयो तोकौं री प्यारी ॥

सोचति कहा कहै किन कोरी । काहू लियो चोर कछु चोरी ॥

उतरहु मैं देति क्यों नाहीं ॥ कहा ठगी सी है मन माहीं ॥

गहि गहि भुजा कहति सब गोरी ॥ चलहि न यमुन अव ह्यौं रवोरी

तब सखियनु वृषभानु दुलारी ॥ लीनी सवन निकट वैठारी

जलज नयन जल भरि अनुरागी ॥ हरि के चरित कहन सब लागी

कहौं सखी कैसें चले वा यमुना की ओर

गैलन छांडति सांवरौ रसिया नंद किशोर

धरै न कोऊ नांव इह संकनि डरपति हियौ

एक भांति कौ गांव वह चंचल मानै नहीं ॥

मोकौं देखत जहां कन्हाई ॥ मेरे संग लगत उठ धाई ॥

इत उत नैन चुराय निहारै ॥ मोकौं मग मैं आय जुहारै ॥

आगे चलत लकुट कर लाई । मेरौ कंथ संवारत जाई ॥

सो वह मोहि विहारी लाई ॥ फिरि चितवै मातन मुसकाई

जब मैं यमुना कौ जल भरि कै । चलति गागरी सिर पै धरि कै

तब घर मैं वह कांकर मारै ॥ रूच टिलगति तक अंग निहारै

मेरे उर अंचर फहराई ॥ सो वुह देषि देषि ललचाई ॥

कबहू पीतांवर सिर फोरै ॥ वारवार करि मो तन हेरै ॥

गदगद कंठ पुलक तन आये । लोचन जलज प्रेम तन छाये ॥
भई प्रेमवस सब गोपकुमारी । लोक सकुच कुल कान बिसारी ॥
वारहि वार कहत ब्रजनारी । धन्य धन्य वृषभानु दुलारी ॥
हम सब लोसों सत्य बषाने ॥ ते हरि भली भांति पहिचाने ॥
यह मोहन सब को मन मोहे । तिय लषि बिबस न होइ सु को है ॥
अंग अंग प्रति अति छबि छाजे ॥ सम ता कोटि काम दुति लाजे ॥
सुभग स्याम दोउ पाणि पकरिकै । करत वेणु धुनि अधरन धरिकै ॥
तब यह दसा सबन की होई ॥ जड़ चेतन मोहत सब कोई ॥
बन मृग निकट धाय सब आवै ॥ खग ह्वै मौन न अंग डुलावै ॥
तृण गहि दंत धेनु रहि जाहीं ॥ थन तें छीर पिवत बछ नाहीं ॥
यमुना वहिवे तें रहि जाई ॥ जलचर प्रगट तबाहर आई ॥

जड़ चेतन चेतन जड़ हि सुनत होत कल बैन ।
कै विष कै मद कै अमी किधौं भस्यो रस मैन ॥

रहत वन कछु न सुहाय सुनत श्रवण वह मधुर धुनि ।
गृह काज बिसराय चकित थकित रहियत सबै ॥

बाट घाट जहं मिलत कन्हाई । सोहत सुन्दर रूप दिखाई ॥
नई नई छबि छिन छिन माहीं । झलकावत सब अंगन माहीं ॥
ऐसो को जो देखि मन माहीं ॥ नंद सुवन सम सुन्दर को है ॥
वह सखि सबही के मन भावै । सब कोउ वाहि देखि सुष पावै ॥
लोक लाज कुल कौन काम हि ॥ जो पावै सुन्दर वर स्यामहि ॥
पय यह मोहि अगम अति लागै ॥ यह सुख मिलै नहीं बिन भागै ॥
इनको गर्ग कह्यो नंद पाहीं । बिना सुकृत ये प्रापति नाहीं ॥
तुमहू इन को तप करि पायो । ऐसे नंदहि गर्ग सुनायो ॥
कहु सखि इतनो भाग हमारो ॥ जो वर मांग हि नंद दुलारो ॥
तातें मो मन में यह आवै ॥ कीजे जो सब के मन भावै ॥

तपकीजैहरीकेहितलागी पूजिगौरिपतिसौंअनुरागी
नंदसुवनसुन्दरवरपावै औरसकलकामनानसावै

जपतपसंयमनेमतैंप्रभुप्रगटतपाखान
तातैंसबतपकीजियेऔरउपावनआनि
कीजेयहदृढनेमप्रातजाययमुनानदी
पूजहिंशिवकरिप्रेमतौपावैपतिकौहरिहि

तपकरियोगीजनहरिध्यावै।मनवांछितफलतपकरिपावै
सकलकामनाकेशिवदाता।कहतवेदविधिपंडितज्ञाता
हमकौंमनवांछितसखिएहा।नंदसुवनपदकमलसनेहा
सुनतसप्रेमसखीकीबानी।श्रीवृषभानसुताहरषानी
यहैमंत्रसबकेमनमान्यो।धन्य२कहिताहिबखान्यो
कहतसबैकीजैसखिसोई।जाविधिनंदनंदनहितहोई
रूपाजन्मजगजाननदीजै।जसुमतिसुतसौंहितकरिलीजै
यहमंत्रसबनदृढकीनौ।नंदनंदनसौंप्रीतिचितलीनौ
धन्यधन्यव्रजगोपकुमारी।जिनकेहितपातकअसुरारी
मनवचक्रमहरिसौंमतिमानी।लोकलाजतिनसकलभुलानी
इकरसश्यामनउरतैंटरहीं।नेमधर्मव्रतहरिहितकरहीं
जिनकौयशशारदश्रुतिगावैं।व्रजवासीजनकहावनावैं

जाग्यनसुभसुखप्रहैव्रजयुवतिनमनमाहिं
सदाएकतुरियारहतिऔरअवस्थानाहिं
ऐसोकौनप्रवीनचहैप्रेमव्रजतियनकौं।
हरिछविजलमनमीनबिछुरसकतनहिंएकछन

अथचीरहरणलीला

भवनरवनसबहिनबिसरायो।व्रजयुवतिनहरिसौंमनलायौ

यहै वासना सब उर जामी ॥ होइ गुपाल हमारो स्वामी ॥
कामवासना कर उर ध्यायो । हरि के हेत तपहि मन लायो
खट दस सहस गोपकी कन्या । करन लगी तप हरि हित धन्या
रहति कृपायुत तपको साधै ॥ छाड़ दई सब भोग उपाधै ॥
प्रातकाल यमुना जल न्हाई । प्रहर प्रयंत रहै जल माहीं
जपहि उमापति हर वृषकेतू । सुन्दर स्याम कृष्ण पति हेतू
शीत भीत मन मैं नहिं ल्यावै । नैन मूंदि कै ध्यान लगावै ॥
वारवार यह कहैं मनाई ॥ हमवर पावैं कुंवर कन्हाई
जल तें निकसि बहुरि सब आई । पूजै गोपेश्वर शिव जाई ॥
चंदन बिल्व पत्र जल धारा ॥ अक्षत सुमन सुगंध अपारा
प्रीति सहित सब शिवहि चढ़ावैं ॥ धूप दीप करि अस्तुति गावैं
छं० करहिं अस्तुति गान बहु विधि पानि पंकज जोरहीं

वारवार नवाय मस्तक प्रेम सहित निहोर रही॥
जय महेश कृपाल शिव आनंदनिधि गिरिजा यते
कैलासपति कल्यान अग अज गन्नाथ सर्वेश्वर सामिते
जटाजूट त्रिपुंड ससिकलि गंग जुत सोभित सिरे
कमल नेत्र विशाल सुन्दर चारु कुंडल स्रुति धरे॥
नीलकंठ भुजग भूषण भस्म अंग दिव वरं॥
अरधंग गौरि विशाल उर सिर माल धर करुनाकरं
करपूर गौर अनंत आनन पंचवक्त्र त्रिलोचनं॥
काम प्रद सुख धाम पूरन काम सोच विमोचनं॥
भगवान भव भौ भय हरन भूतादि पति शंभू हरे
प्रणत जन पूरण मनोरथ जगत पति मनमथ अरे
व्रषभवाहन त्रिपुरआरि मृगराज वर छाला वरे
सूलपानि त्रिशूल मूल न्रमूल के शिव संकरे॥
सुर असुर नर नाग तुव पद वंदि मनवांछित लहे
पूजित पद कमल प्रभु हम कृष्ण पति चाहत अहे

दो॰ तुम सर्वज्ञ सुजान शिव जानत जन न की पीर
परम दान दीजे हमैं सुन्दर वर वल वीर॥
यह वरदान न आन शिव तुमसौं जांचत अहै
कृष्ण कमल पद ध्यान रहे हमारे उर सदा॥

यहि विधि व्रजतिय नेम निवाहें॥ शिव को पूजें कृष्ण पति चाहें
नित प्रति प्रात जमुन जल खोरें॥ प्रीति रीति सो मन नहिं मोरें
शिव तोसौं बहु भांति निहोरें गोद पसारे युगुल कर जोरें
तेज रासि दिनमनि जगस्वामी जगत चक्षु सब घतरजामी
प्रणत मनोरथ पूरनकारी॥ हमपर होउ दयाल तुमारी
काम हमारे तन नहिं जरावे॥ नंदसुवन वर हम को भावे
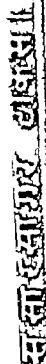
लोगन कहति सुनाय कान्ह करत लगयय अति
जसुमति के ढिग जाय कहति चलौ कोहये सबै
चली जसोमति पै सब ग्वारी॥ प्रेम विवस तन दसा बिसारी
पुलकि अंग अंगिया दरकानी॥ टूटे हार लिये निज पानी॥
थोरचीर नख घात बनाई॥ यहै मिस करि उरहन लै आई
देखहु महरि स्याम के ये गुन ऐसे हाल किये सब के उन॥
चोली चीर हार दिखराये॥ घेर करत इत को भजि आये॥
और बात इक सुनहु न माई ढीठ भयो अति कुंवर कन्हाई
बिना बसन हम न्हाति जहां सब॥ भीजत पीठि जाय पहुंचे तब
और कहति तुमसो सकुचावै॥ उरउघारि कहत तुम हि दिखावै
महरि बिचारति कहा कि हां सब॥ भयो स्याम इह लायक धौं कब
सुनि युवतिन के मुख यह बानी॥ बोली बिहंसि नंद की रानी॥
बात कहो सो जो निबहै री॥ बिना मीत नहि चित्त लहै री
तुम को कहति लाज नहि आवति॥ चोरी रही छिनारी लावति
तुम चाहति हौ गगन तैं गहन तरैया बाम॥
सो कैसे करि पाइ हौ तुम लायक नहि स्याम
मै बूझी सब बात तुमसो हौ कहि हौं कहा
वृथा फिरति इठलात मष्ट करौ सुनि है जगत
इहि अंतर हरि आय गये घरि॥ सीस मुकट लीने मुरली कर
अति कोमल तन भूषण सोहै॥ बाल भेद देखत मन मोहै॥
जननी बोलि बांह गहि लीनो कहति सबन सो रस रिस भीनी
देखहु री तुम सब इत आवो इनहीं को अपराध लगावो
देखहु समुझि लाज नहि आवत॥ इनही केन खउरन दिखावत
मेरो कान्ह अबहि सुत बारो॥ तुम को उओर रहि जाय निहारो॥
देखति तरुनि रहि सब ति भइ भोरी॥ कहति महरि कछु तुम हि न खोरी

देन उरहनौं तुमकौं आई ॥ नीको पहरावन तुम पाई ॥
आपस में सब कहति सुनाई देखहु री यह भाव कन्हाई
यमुना तीर मिले जब आई ॥ कहा गई तब की तरुणाई
इनके गुण ऐसे को जानै ॥ और करत और ही ठानै ॥
घर आवत ही भरो नन्हाई ॥ ऐसे तन के चोर कन्हाई ॥

देखि चरित नंद लाल के भई बाल मति भोर
सुधि बुधि मन कछु थिर नहीं कहति और को और
सकुचौ बहुरि संभारि विवस देखि अपनी दशा
चली घरनि ब्रजनारि हरि सुख वाम निहारि कै

गई घरनि ब्रज गोपकुमारी ॥ चित हरि लीनो मदनमुरारी
नेक न मन लागति घर माहीं ॥ धाम काम की कछु सुधि नाहीं
मात पिता कौं डर नहिं मानैं ॥ गारि देत कोउ सुनै न कानैं
प्रात होत ही गोप कुमारी ॥ गई यमुन तट सब सुकुमारी
देखे तहां जाय नंदनंदन ॥ मोर मुकट शोभित तन चंदन
मकराकृत कुंडल उर माला ॥ पीत वसन दृग कमल विशाला ॥
दरस देखि अंखियां तृपतानी ॥ भई सुखी उर तपत बुझानी ॥
कहति परस्पर मिलि सब वाला ॥ यमुना कै तट गये वनमाली
कौन भांति करि आज अन्हैवो ॥ वनत नाहिं अब यमुना ऐवो
कैसे [illegible] उतारैं ॥ कान्ह हमारी ओर निहारैं ॥
मीजत पीठ औंच कहि आई ॥ वसन अभूषण लै भजि जाई
कह्यो फेरि कैसे तब पावैं ॥ अब नहिं कान्ह घाट पै आवैं

कहत सकुच की वात सब ऊपर मन आनंद
अंतरगति की वस्तु कौं जानन सब नंद नंद ॥
जानी जानन राय लाज ओतर युवती करत
सो अब देउं मिटाय अंतर भलो न प्रेम मैं ॥

औरवात एक स्याम विचारी ॥ ये जलभीतर न्हात उघारी ॥
औ त्रियजल मे नगिन न्हाई ॥ ताको होत दोष अधिकाई ॥
ताको दोस नास न तब पावे ॥ नागीपर पति सन सुख आवे ॥
सोइनको यह दूषन टारो ॥ औरलाज अंतर निरुवारो ॥
करौं आजु इन सौं विधि सोई ॥ इनको हित मम कौतुक दोई ॥
जो कछु चूक दास ते होई ॥ आपुहु धाय लेत हरि सोई ॥
अंतर प्रभु को नेकु न भावै ॥ भजै निरंतर तव हरि पावै ॥
अंतर रहित भक्ति हरि प्यारी ॥ कहत वेद सब संत पुकारी ॥
तव हरि यह मन कियो विचार ॥ इनके वसन हरे इकवार ॥
प्रभु सव की तव दृष्टि वचाई ॥ कदम वृक्ष तव रहे दुकाई ॥
जव गोपिन हरि देखे नाहीं ॥ चकृत विलोक इत उत माहीं ॥
जानी सदन गये नंदलाल ॥ न्हान चली तव सब व्रजवाल ॥

धरे उतारि उतारि सव तट पर भूषण चीर ॥
नगिन होइ अस्नान हित पैठी यमुना नीर ॥
पीवा लों जल माहिं पैठि करत अस्नान सव
सुख छवि कहि य न जाय कनक कंज फूले मनहु

वारवार बूड़त जल माहीं ॥ प्रेम सहित मन मुदित न्हाहीं ॥
शिव सों विनती करति निहोरी ॥ कवहू रवि वंदे कर जोरी ॥
यहै कामना करि सव ध्यावैं ॥ नंदनंदन को पति करि पावें ॥
कामातुर सव गोप कुमारी ॥ धरे ध्यान उर कुंजविहारी ॥
दरसहि नैन दरस न चित लावें ॥ शब्द विचारि श्रवण सुख पावें ॥
भुज जोरत अंकम हित लागी ॥ मगन प्रेम रस तिय वड़भागी ॥
प्रभु अंतरजामी सव जाने ॥ देखत कदम चढ़े सुख माने ॥
कहत धन्य धनि ए व्रजवाला ॥ मेरे हित तप करतीं विशाला ॥
प्रीति रीति सव की पहिचानी ॥ छिन छिन की सेवा हरि मानी ॥

काहू भाव मोहि कोउ ध्यावै। मोहि विरद राखे वनि आवै
कियौ वहुत श्रम मम हित कारन॥ अव इनको दुख करौं निवारन
उपजी कृपा समुझि जन पीरा॥ उतरे तरु तें श्री वलवीरा॥

प्रेम मगन युवती सव रही ध्यान मन लाय
हरि सव भूषन वसन लै चढे कदम पर जाय
भूषन वसन अपार सोरह सहस वधून के
हरे सकल इक वार लै राखे तरु नीप पर॥ ॥

कह्यौ नीप तरु औरौ विस्तारा॥ फूले सुमन सुगंध अपारा॥
लै लै वसन डार अरु टकाये॥ जहाँ तहाँ भूषण लटकाये॥
नीलांवर पाटंवर सारी॥ सेत पीत चुनरी अरु न्यारी॥
जहाँ तहाँ साखन प्रति सोहे देखत छवि वसंत मन मोहे
ता तरु साखा पर सुखदाई वैठे छवि की रासि कन्हाई
युवति सुकृत तरु धनु धरि आनो॥ फल्यो सुव्रत पूरन फल जानो
देखत कदम चढे नंदलाला॥ वसन विना जल में सव वाला
ध्यान करत तें जव सव जागी॥ जव जल वाहर निकसन लागी
जल से निकसि आइ तट देखा॥ भूषन वसन तहाँ नहिं पेखा
इत उत चितै चकृत भई भारी सकुचि गई फिरि जल सुकुमारी
नाभि प्रजंत नीर में ठाढी॥ भुज लगाय उर चिंता वाढी
कंपत सीत तें तन अकुलाहीं वारवार कहि कहि पछिताहीं

ऐसो को भूषन वसन सवके एकहि वार॥
तट तें लये चुराइ के लगी न नेकहु वार॥
हम जानत यह वात अवर हरि हरि लै गये
और कौन की गात जो व्रज में ठोली करै॥

दीन होइ तव युवति पुकारी हे कहँ स्याम जाय वलिहारी
दरस दिखाय विनै सुनि लीजै अवर देहु कृपा अव कीजै॥

परसपरअंगकेपरमसुकुमारी देखिपावनहिं सके संभारी
बोलिउठे तबमदनगुपाला कहाकहतमोसेब्रजवाला
अब होंजलमैंमरतजडाई लेऊ बसनभूषन इत आई॥
तुमपटभूषणसुरतबिसारी तबमैंलेकीनीरखवारी॥
अबअपनेपटभूषणलीजे रखवारीकछुहमकोदीजे
जब ऐसे हरिबोलसुनायो तबसबकेमनधीरजआयो
सुनिहरिबचनसकलहरषानी लखेकदमऊपरसुखदानी
कहतिसुनौसखिहरिकीबातें बसनचुरायकरे ये घाते॥
हम सबजल के बीचउघारी मांगत हैं हमसों रखवारी
तबहँसिबोलीब्रजकीबाला सुनहुस्याम सुंदर नंदलाल

तनमनधनअर्प्योतुम्हे हैं सु तुम्हारे पास
अब अंबर दीजे हमें आनि आपनी दास
तबहँसिकहेउकन्हाय जातनमनमोकौदियो
लेहु बसनयह आय तो मानो मेरो कह्यो

सुनहु स्याम घन बातहमारी नय कौनविधि आवेंनारी
हम हैं नगरीन रूप कन्हाई बिनाबसनक्यों देहिंदिखाई
यहमतिआपकहाधौंपाई॥ आजसुनी यह बातनवाई
पुरुषजातियहकहतनआनउ हाहाऐसीमन जिन आनहु
कहतस्यामजोनयन ऐहौ॥ तौतुमपटभूषणनहि पैहौ
जोतनमनदीनोतुम मोही॥ तौ एतनकतलज्या द्रोही॥
यहमतरमोसो जिन राखौ मानलेहुतुम मेरी भाखौ॥
सीतसहतकतनवलकिशोरी लाजदेहुजलहीमे बोरी॥
जलसे निकस बेगइत आवो हांयजोरिमोहि बिनेसुनावो
ज्योंजलमे रबितेंकरजोरी त्योंइहाइसनमुखमोहिनिहोरी
यहसुनि हँसीसकलब्रजनारी ऐसीबात न कहौ मुरारी

हाहा लागहिं पाय तिहारे॥ पाप होत है जाड़न मारे
छांड़ देउ यह टेंक हरी वरभूषण तुम लेऊ॥
शीत मरत हम नीर मैं वसन हमारे देऊ॥
दूषण होत अपार जो तिय अंग देखहि पुरुष
ताते नंद कुमार नागी नारि न देखिये॥

तुम कौं छोह होत नहिं गई॥ बड़े निठुर हो कुमर कन्हाई
सोई करौ जो तुम कौं सोहै॥ आज तिहारी पटतर को है
आजहि तें हम दास तिहारी कैसे अंग दिखावहि नारी॥
अंग दिखाय भूषण पैहौ॥ नातर जल मैं बैठी रैहौ
मेरे कहे निकसि सब आवौ॥ प्यारे मैं मो भलौ मनावौ॥
कत अंतर राखति हो हमसों वार वार मैं भाखति तुम सों
लेउ आय अपने पट भूषण यह लागै हम को सब दूषण
मोहिन तुमकी नीलप भारी॥ आवत कल जा फिरत हमारी
मैं अंतरजामी सब जानी॥ करी हौ तुम रमन की मानी
अब पूरण तप भयो तुम्हारो॥ अंतर डूलो दूरि करि डारो
सुनि यह मोहन के मुख बानी॥ सब युवती मन में हरषानी
सब सखीन यह बात विचारी॥ अब तो टेंक परे बनवारी
कहत परस्पर मिलि सबै हरि हठ छांड़त नाहिं॥
वसन बिना कैसे बनै कौन भांति घर जाहिं॥
चलो लीजिये चीर इन हाथौं ढिग जाय के
मनमोहन बलवीर जो कछु कहै सो कीजिये
यह विचार जल बाहर आई॥ बैठि गई तट अति हि लजाई
वार वार हरि निकट बुलावैं॥ त्यों त्यों अधिक लाज को पावैं
कहति स्याम अब अंबर दीजे हा हा हम नीहठ नहिं कीजे॥
कहत समीर शीत अति भारी आवै को उपकार तुम्हारी

हम दासी तुम नाथ हमारे॥ हम सब की पत हाथ तुम्हारे॥
केहत स्याम यह तजौ स्यानी छांड़हु लाज करहु मम बानी
अपने वसन लेहु यह आई॥ देहौ तुमको नंद दुहाई॥
आवहु सकल लाज कौं त्यागी॥ करहु सिंगार आय मो आगे
तब सब हिन यह मन में जानी करि हैं स्याम आपनो बानी
कर कुच अंग दोकि भई ठाढ़ी बदन नवाइ लाज अति बाढ़ी
गई कदम तर हरि के पासा कहत देहु अब हम को बासा
हरि बोले यो बसन न पावो हाथ जोरि मोहि बिनै सुनावो
जो कहिहो करि हैं सबै हंसि बोली ब्रजबाम
लेहैं दाव हम हू कबहुं सुनो स्याम अभिराम
उभै कमल कर जोरि सजल सहास निहारि हरि
मांगत सकल निहोरि कहत देहु अब बसन प्रभु
लखि युवतिन की प्रीति कन्हाई रीझे भक्तन के सुख दाई॥
धन्य धन्य बोले गोपाला॥ निश्छल प्रीति करी तुम बाला॥
देखि निरन्तर गोपकुमारी॥ दीने वसन आभूषण भारी
अति आतुर सब पहिरन लागीं॥ प्रेम प्रीति के रस मति पागीं
तब हंसि बोले कुंज विहारी॥ मै पति तुम मेरी सब प्यारी
अतर सोच दूर कर डारो॥ मेरो कहो सत्य उर धारो॥
सरद रात तुव आस पुरैहो॥ अंकम भरि सब कौं उर लैहो
जप तप करि तुम मत तन गारो॥ मैं तुमने क्षण होत न न्यारो
करसौ परस सबन सुख दीनो बिरह ताप तन को हरि लीनो
दया करी हंसि नंद के लाला निज निज सदन गई ब्रजबाला
गोपिन उर अति हर्ष बढ़ायो॥ मन मन कहति कृष्ण वर पायो
ब्रजवासी जन के सुखदाई॥ आये अपने सदन कन्हाई
इहि विधि ब्रज सुंदरिन को हित करि सुन्दर स्याम

व्रजविलास विलसत विविधि सकल लोक अभिराम
सुन्दर घन सुखरासि सब विधि कारे सबके सुखद
नित नव करत विलास मुदित सकल व्रज लोग सुख

अथ वृंदावन वर्णन लीला ॥

हरि लखि मात पिता सुख पावै॥ बाल भाव बहु लाड़ लड़ावै
नवल किशोर सुभग तन स्यामा॥ निरखत मुदित सकल व्रज वामा॥
ग्वाल बाल सब सम करि जानै॥ सखा प्राण प्रीतम करि मानै॥
नित उठि गाय चरावन जाहीं क्रीडा करै विविधि व्रज माहीं
इक दिन सोवत सदन कृपाला॥ आये द्वार बुलावन ग्वाला॥
चलहु स्याम वन धेनु चरावन यह सुनि जननी लगी जगावन
उठहु तात मैया बलि जाई॥ टेरत ग्वाल बाल बल भाई॥
वदन दिखाइ सबन सुख देऊ दल वन करि कछुक रहु कलेऊ

भई वेर वन की नंदलाला॥ अव मति सोवहु मदनगुपा
सोवत मैं हरि जागत जाही॥ सुनत वात वाल समन माहि
कवहू वसन ढापि मुख सोवैं॥ कवहूं उघार जननी तन देखैं
खोलत नैन पलक ढांकि आवै॥ सो छवि निरखि मात सुख पावै

उठहु लाल जननी कहेउ तव चितये हंसि नंद
पट गहि पुनि पुनि फेरि मुख तव कहिउ व्रजचंद
कव के टेरत ग्वार वल दाऊ यह कहिउ वे॥
वन को भई अवार गई गाय आगे निकसि

यह सुनि चतुर रहि उठे कन्हाई॥ जसुमति जल झारी भरि लाई
दुहुं भैयन कौ रवि मुह सुखारी॥ पोंछे वदन जननि निज सारी
करहु कलेऊ अव कछु प्यारे॥ एक थार दोउ सुत वैठारे॥
दधि माखन रोटी अरु मेवा॥ करत आत दोउ मात कलेवा॥
परसत निकट वैठि मन मोदा॥ रूप सुख लहत महरि जसोदा॥
मात प्रेम तें अति तृपताई॥ अचवन करत उठे दोउ भाई॥
द्वारे टेरि उठौ इक ग्वाला॥ वन कौं चलहु वेग नंदलाला॥
वल मोहन आवहु दोउ भैया॥ आगे निकसि गई सव गैया॥
ग्वाल वचन सुनि अति आतुराई॥ कछु अचयो कछु नाहि दोउ भाई
मुरली मुकट लकुट पट लीनो॥ निकसे दौरि खिनाहिं मन दीनौ॥
कैतिक दूरि गई चलि गैया॥ ग्वाल हि वूझत जात कन्हैया॥
कछु वन पहुंची है है जाई॥ कछु मग मिलि हैं तुव सखाई

वन पहुंचत सुरभी लई वल मोहन दोउ धाय
कहत एक वन सों जात कहि हम हू पहुंचे आइ
तुम आये अतुराय जेंवत पाये न हम॥
तुम संग रहत भला है अव हम तुरत चराय है

यह सुनि सखा धाय सव आये॥ हरि को अंक भरि उर लाये

तुम हौ सब हिन के सुखदाई॥ हम कौं तजि मति जाउ कन्हाई॥
आज कुमुदवन चलहु चरावत॥ शीतल सुखद सघन अति पावत॥
सुनत कह्यो अति हर्ष कन्हाई॥ नीकी कही बात यह भाई॥
अपनी २ गाय बुलावें॥ एक ठौर करि सबन चलावें॥
यह सुनि ग्वाल सुरभि गण घेरत॥ लैलै नाम गाय सब टेरत॥
धूरी धूमरि राती कवरी॥ पियरी गोरी गैनी कबरी॥
खैरी फूलही रोंची चौरी॥ धूरी हसरी मुंडी भौरी॥
लीली कपिली सुवरन जेती॥ ग्वालनि कह्यो रतनी जेती॥
ऐसें सुरभी टेर बुलाई॥ सब मिलि चले कुमुदवन धाई॥
तब बल कह्यो दूर मत जाहू॥ नंद रिसे हैं अरु जसुदाहू॥
बलको कह्यो मानि सुखदाई॥ बोलि लिये सब सखा कन्हाई॥

कहत सबन समुझाय हरि कौन कुमुदवन जाइ॥
बुरो मानि हैं नंद सुनि और जसोदा माय॥
ल्यावहु गाय फिराय चलिये वृंदावन सुखद॥
सुरभी चरत अघाय वंसीवट यमुना निकट॥

यह कहि स्याम चले अगुवाई॥ योरी गाय ग्वाल सब धाई॥
वृंदावन नहिं चले मनमोहन॥ हर्षित सखा वृंद तब गोहन॥
करत कुलाहल आनंद भारी॥ पहुंचे वृंदावन बनवारी॥
सुरभी गण चहुं दिसि बगराई॥ कहत सखा सब हर्ष बढ़ाई॥
जा दिन अब वहत स्याम सिधाये॥ ता दिन नेआवत अब आये॥
देखत वन सब भये सुखारी॥ कहत मनोहर रवि विधि न्यारी॥
विटपन की शोभा चित दीन्हें॥ देखत स्याम सखन संग लीने॥
नव किशलय दल सुमन सुहाये॥ मनहुं वसंत समय रवि आये॥
मधुर मिष्ट सुन्दर सुखकारी॥ फल के भार रही नै डारी॥
जुन जड़ दारिव स्याम सुखपाई॥ देत भेटन सौंस नवाई॥

गुंजत भंवर पुंज छवि पावैं॥ अस्तुति मनहुं मधुर सुर
एक पांव ठाढ़े सब आगे॥ जहं तहं थकित मनहु अनुराग

बेलि विविधि लपटी ललित फूल रहे बहु रंग
शोभित सहत सिंगार जिमि नारि पतिन के संग
हलुवत सब पात मंद पवन लागत कबहु
आनंद उर न समात बारंबार पुलकित मनहु

कुंज पुंज मंजुल सुखदाई॥ शीतल सुमन सुगंध सुहाई
हरि विश्राम हेत बन जानी रचे विचित्र सदन बहु भांती
बोलत हैं कल खग बहु रंगा कीर कपोत कोकिला संगा
मनहु भरे आनंद सब गावैं॥ जहं तहं वर ही नृत्य दिखावैं
तरु दल खरक पवन गति साजैं॥ मधुर सुर न बाजन ज्यों बाजैं॥
क्रीडत मरकट सुभग विलीने करत कला ज्यों नट परवीने
मृग गन चित वृत आनंद बाढ़े॥ मनहुं तमासगीर सब ठाढ़े
पाय स्याम धन हित बन गाई करी मनहु आनंद बधाई॥
बन शोभा कछु बरनि न जाई ऋतु वसंत जहं रहत सदाई॥
जहां सुभाव काल गुण नाहीं बैर भाव नहिं खग मृग माहीं
सदा एकरस परम प्रकाशी॥ परम सुखद आनंद की राशी॥
चिंतामणि सब भूमि सुहावन॥ कोमल विमल सुभग अति पावन

शोभा वृंदा विपिन की बरण सकै अस कौन
शेष महेश गणेश विधि पार न पावत तौन
महिमा अमित अपार श्री वृंदा बन धाम की
जहां नित रहत विहार परमब्रह्म भगवान हरि

देखि स्याम बन भये सुखारी॥ बैठे तरु तर विपिन विहारी
वृंदावन की करन बडाई॥ बलदाऊ सों कहत कन्हाई॥५
मैं यह बन देखत सुख पावत वृंदावन मो को अति भावत

कामधेनु सुरतरु विसरावत रमासहित वैकुंठ भुलावत
यह यमुनातट वेनु वजावत ये सुरमौ अतिसुखदरसावत
यह सुख त्रिभुवन कितहुं न पावत॥ ताते मै तन धरइत आवत
दाऊजू तुम सत्य करि मानौ॥ यह वृंदावन जड़ मत जानौ
चित घन मे आनंद कौ रासा॥ प्रेमभक्ति कौ इहां निवासा
परमधाम मम परम सुहावन॥ पावन हूं ते पावत पावन
जे तरु वृंदावन के माही॥ कल्पवृक्ष तिनकी सरनाही
कल्पवृक्ष के तर जव जोई॥ तव मांगे वांछित फल पाई॥
वृंदावन तरु चिंतत जोई॥ प्रेमभक्ति मम पावत जोई॥

जाके वस मैं रहत हौं अपनी प्रभुता त्याग
प्रेमभक्ति सो लहत नर वृंदावन अनुराग॥
श्रीमुख वरन्यो स्याम श्री वृंदावन कौ महत
सुख पायो वलराम सुनत कान्ह के वचनवर

सखावृंद सुन श्रीमुख वानी॥ प्रेम मगन तन दशा भुलानी
चितवत हरिमुख पलक विसारी॥ जिमि चकोरगन शशिहि निहारी
कहत चकित सव अतिसुख पावत॥ निजलीला हरि अगट जनावत
पुनि रपुलक कहत सिरनाई॥ सुनहु स्याम घन कुंवर कन्हाई
वारवार तुमकौ कर जोरै॥ हम क्यु कान्ह तुमजानहु भोरे॥
तहां तहां तुम धन धरि आवौ॥ तहां तहां जिन चरण छुड़ावो
तव हंसि वोले कुंवर कन्हैया॥ व्रज ते तुम हिन टारे भैया॥
तुम मेरे मन कौ अतिभावन॥ तुम ते मैं वहु ते सुख पावन॥
यह व्रज सम त्रिभुवन कहु नाही॥ तुम्हरे ढिंग मै रहति सदाही
मैं तुम हेत देह यह धारी॥ तुम ते व्रजलीला विस्तारी
है यह व्रज मोकौ अतिप्यारो॥ हां ते कवहूं होत न न्यारो
ऐसे हरि ग्वालन के माही॥ गुप्त वात कोउ हरसमुझाही

कुंडलझलककपोलनमाहीं॥ मनहुंसुधासरमकरभ्रमाहीं
दसनदमकमोतिनलरग्रीवा॥ मनहुंसकलसोभाकीसीवा॥
तिलकविचित्रभालछविछाजे॥ मनहुंमहांछविसदनविराजे॥
छमकतिमोरचंद्रिकाचारू॥ मनहुंसकलसंगारसिंगारू॥
स्यामगातउरगजमणिमाला॥ संगसोभितवनमालविशाला॥
मरकतगिरिमनोंसुरसरिधारा॥ बैठीपंगतिकोरकिनारा॥
कटिपटपीततड़ितदुतिहारी॥ मृदुपंकजनूपुररुचिकारी॥
ग्रीवालटकनमुरलिकपरशोभितछविसमुदाय
प्रेममगननिरखतमुदितगोपबालसुखपाइ॥
सुन्दरस्यामसुजानदेतपरमसुखसखनकौं
वारतननमनप्रानधन्यधन्यकहिग्वालसब॥
रीझतग्वालरिझावतस्यामा॥ लेनसुरलिमैंसबकौनामा॥
हँसतग्वालसबदेकरताला॥ लेतहमारोनामगुपाला॥
कहतस्यामसबतुमहुंबजावौ॥ ऐसेहमकौंगायसुनावौ॥
हांसिमुरलीतिनकेहरदीनी॥ अधरसधरसम्भ्रतरसलीनी॥
लेलैनिजकरसकलबजावत॥ हरिकेसरकौरूपनपावत॥
आसपाससोहतसबबालक॥ अधिप्रभुप्रीतिरीतिकेपालक॥
हँसिहँसिसबकेचित्तचुरावैं॥ सबमिलिप्रेमानंदबढ़ावैं॥
जैसेश्रीमुरलीधरगायौ॥ काहूपैसोरूपनआयौ॥
हँसिहँसिकहतपरस्परभाई॥ हरिकेसमकोसकैबजाई॥
चतुराननपंचाननध्यावैं॥ सहसाननन्वनितगुणगावैं॥
सुरनरमुनिकोउपारनपावैं॥ सोग्वालनसंगवेणुबजावैं॥
ब्रजवासीजनकेप्रतिपाला॥ मनहुंरूपधरदीनदयाला॥
कारणकरणअनन्तगुण निगमनेतिजिहगाव
सोग्वालनसंगादहीदेलकभतिमनभाव॥

वृंदावनकी रेण ब्रम्हादिक वांछित सदा ॥
जहांस्याम सुखदैन ग्वालन संग चारत सुरभि

अथ द्विजपत्नीजाचन लीला ॥

विहरत वृंदावन वनवारी॥ विविधि वांति लीला विस्तारी॥
कवहूं सखन संग मिल गावैं॥ कवहूं मुरली मधुर वजावैं॥
कवहूं गैयन घेरन धाई॥॥ कवहूं यमुना के तट जाई॥
करत कुलाहल आनदभारी॥ देत दिवावत रसकी गारी॥
ऐसे लीला करत अपारा॥ भये क्षुधारत गोपकुमारा॥
कहत भये तव हरिसों जाई॥ हम कौं क्षुधा लागि मोकाई॥
यह सुनि प्रभु भक्तन हितकारी॥ अपने मन यह वात विचारी॥
सुनि सुनि मेरे सुण गण गाना॥ करत रहत द्विजतिय मन ध्याना॥
तिनकों दरसन आज दिखाऊं॥ तिनके मनकौ ताप नसाऊं॥
तव हरि ग्वालन कह्यौ वुझाई॥ यज्ञ करत ह्यां द्विज समुदाई॥
तिनके निकट जाउ तुम धाई॥ प्रथम प्रणाम कीजियो जाई॥
कहियो हमको कृष्ण पठाये॥ तुमपै भोजन मागन आये॥

यह सुनि ग्वाल गये तहं जह्यां विप्र समुदाइ
यज्ञ करत अहमित लिये विद्याकौं वलपाइ
ग्वालन करी प्रणाम कहेउ तिन्हैं कर जोरिकै
हमै पठाय स्याम मांग्यो है भोजन कछू ॥

वनमें राम कृष्ण दोउ भैया॥ आये इतहि चरावन गैया॥
वे कछु आज भये हैं भूषे॥ यह सुनि विप्र होगये रूखे॥
कह्यौ यज्ञ हित करी रसोई॥ होइ न पहिले देयन कोई॥
यह सुनि वाल सकल फिरि आये॥ हरिसों तिनके वचन सुनाये॥
सुनि हलधर तन चितै कन्हाई॥ वोले वचन मंद मुसकाई॥

ये द्विजकर्म धर्म लपटाने ॥ बिना भक्ति मोकौं नहिं जाने ॥
तब ग्वालन सों कहेउ मुरारी ॥ जाउ जहाँ इनकी सब नारी ॥
उनकौं है दृढ भक्ति हमारी ॥ वे मानैं गी बात तुम्हारी ॥
उन सों भोजन मांगहु जाई ॥ कहियो भूखे भये कन्हाई ॥
तब द्विज नारिन ढिग ते आये ॥ हाथ जोरि तिनकौं सिर नाये ॥
कहेउ राम अरु कृष्ण कन्हैया ॥ बन में भूखे हैं दोउ भैया ॥
माग्यो है कछु भोजन तुम सों ॥ आज्ञा होइ सो कहिये उन सों ॥

ग्वालन के सुन वचन सब हरषि उठी द्विजबाम
कहति हमारो भाग्य धनि भोजन मांग्यो स्याम
करति रहीं नित ध्यान सुनि रजिनके गुण श्रवण
सुफल जन्म निज जान तिन कौं भोजन ले चलीं

षटरस के व्यंजन बिधि नाना ॥ कोमल भांति अमित पकवाना ॥
लीं [illegible] धन्यारी ॥ माखन लियो स्याम कौं प्यारी ॥
कहं लगि बरनन कहौं प्रकारा ॥ प्रेम सहित लीने भरि थारा ॥
बहुते ग्वालन के कर दीने ॥ कछुन आपने सिर धरि लीने ॥
नैनन दरस लालसा बाढी ॥ रुचि जो चाह हृदय अति गाढी ॥
चली पतिन की कान निवारी ॥ देखन कौं प्रभु गोपकुमारी ॥
ग्वालन सों पूछत यह बाता ॥ कित हैं हरिजन के सुखदाता ॥
जिनके पुरुष हुते घर माहीं ॥ तिनकौं जान देत सो नाहीं ॥
कहत जात तुम कित अतुराई ॥ लोक लाज तन दसा भुलाई ॥
तिनसों कहति भई ते नारी ॥ हमकों श्री गोपाल हकारी ॥
भोजन मांग्यो है हम पाहीं ॥ तिनहिं देन ग्वालन संग जाहीं ॥
तिनकौं दरस देखि सुख पैहैं ॥ बहुरि तिहारे घर रहसै हैं ॥

यह सुनि पतिन अति नीच करि तिनहिं दिखायो त्रास
कहत भई तुम बावरी वैठत तिनहिं अवास ॥

जिनके उर नंदलाल वसे लकुट मुरली लिये ॥
तिनहि न भय यमकाल कौन भांति रोके रुकहि ॥
हरि पै हमहि जान प्रिय देहु ॥ कहा रोकि अपयश सिर लेहु ॥
देखन देहु नंद के लालहि ॥ त्रिभुवनपति प्रभु मदनगोपालहि ॥
इतनी बात मान पिय लीजे ॥ हाहा हमैं दान यह दीजे ॥
वे है यज्ञपुरुष भगवाना ॥ अंतरजामी कृपानिधाना ॥
करत यज्ञ विधि तिन्है विसारी ॥ कहा सरैगी बात तिहारी ॥
कहलगि कहों बात समुझाई ॥ जानदरसकी अवधि विहाई ॥
जो तुम स्वामी मानत नाही ॥ तो हम सत्य कहैं तुम पाही ॥
मन तो मिल्यो जाय नंदलालहि ॥ करिहौ कहा रोकि के खालहि ॥
लेहु संभारि देह यह सारो ॥ जासों पिय तुम कहत हमारो ॥
को राखै इतने जजालहि ॥ मिलिहैं भाग जसोदालालहि ॥
जो निहचै नहि स्याम सनेहू ॥ तो यह कौन काज की देहू ॥
सव सखियन तें आगे जाई ॥ देखहुगी नव कुंवर कन्हाई ॥

ऐसे देह अरु गेह तज पतिकी कानि निवारि
पहुंची सवतें प्रथम जे तेरोका द्विजनारि ॥
कठिन प्रेम को पंथ नहां नेमकी गम नहीं ॥
कहत सकल सद्ग्रंथ जहां न मन है प्रेम नहि ॥

ऐसे भोभोजन लै द्विजवाला ॥ पहुंची वन जहं मोहनलाला ॥
नटवर वेष चित्र तन कीने ॥ ठाढे सखा संग भुज दीने ॥
मोरमुकट वैजंती माला ॥ कर मुरली द्दग नैन विशाला ॥
कुंडल झलक तिलक रुचकारी ॥ कोटि काम छवि पट तन वारी ॥
सखमंद हसनि लसन पटपीरो ॥ निरखत नैन ताप भयो सीरो ॥
भोजन लै हरि आगे राखे ॥ अपने भाग्य धन्य करि राखे ॥
तिन्है देखि हरि मन सुख मान्यो ॥ वचन निकारि तिनकी सनमान्यो ॥

तिन सों वह रौं कहेउ कन्हाई ॥ गृह पति ताजि तुम्हतहँ तगआई
कहियति विप्रवेदअधिकारी ॥ होतिन को तुम पतिव्रत नारी
वे सब यज्ञ करत बन माहीं ॥ तुम विन यज्ञ होइ है नाहीं
कह तुम कछु भलो नहिं कीनो ॥ पतिको कहेउ मानि नहिं लीनो
अति आय सुतिय पाले माईं ॥ चारपदारथ पावे सोई ॥
पति देवता सो तिय कहै वेद वचन परमान ॥
जाहु वेगि तुम पतिन पहँ ताते यह जियजान
सुनि हरि वचन प्रमान कर्म धर्म सो नौ सुखद
द्विज तिय परम सुजान बोली सब करजोरि के
सुनहु स्याम घन अंतरजामी ॥ तुम हो सकल जगत के स्वामी
यज्ञ पुरुष तुम हो बलधामा ॥ तुमही सब के पूरण कामा
विविध यज्ञ करि तुमको ध्यावै ॥ तुमते चार पदारथ पावै
सकल धर्म ते शरण तुम्हारी ॥ है सब जीवन को सुखकारी
यह हम सुनी पतिन मुख वानी ॥ कहत वेद इत हास बखानी
ताते शरण तुम्हारी आई ॥ यह दूषण नाहैं कछुमें गुसाई
तुम माया वस सकल भुलाने ॥ ताते पतिन न तुम पहिचाने
तिनको दोष क्षमा प्रभु कीजे ॥ हमको शरण आपनी दीजे
चार पदारथ हू ते भारो ॥ ॥ है प्रभु दरसन शरण तुम्हारो
ताते नहीं निरादर कीजे ॥ अपने चरण शरण रखलीजे
सुनि प्रभु द्विज पत्नी की वानी ॥ भये प्रसन्न भक्त सुखदानी
धन्य धन्य प्रभु तिनको भाख्यो ॥ हितकरि तिनको भोजन राख्यो
देख अपनी दृढ भक्ति हरि तिन्हें कहेउ घर जाऊ
है है तुम्हरे दरस ने सदा तुम्हार नाउ ॥
हरि आयसु धरि माथ पाय भक्ति वरदान वर
राखि हृदय ब्रजनाथ चली हर्ष द्विज तियसदन

जिनके उर नंदलाल वसे लकुट मुरली लिये ॥
तिन्हहिं न भय यम काल कौन भांति रोके रुकहिं

हरि पै हमहिं जान प्रिय देहू ॥ कह्यो रोकि अपयश सिर लेहू
देखन देहु नंद के लालहिं ॥ त्रिभुवन पति प्रभु मदन गोपालहिं
इतनी बात मान पिय लीजे ॥ हाहा हमै दान यह दीजे ॥
वेहैं यज्ञ पुरुष भगवाना ॥ अंतरजामी कृपा निधाना
करत यज्ञ विधि तिन्है विसारी ॥ कहा सरैगी वात तिहारी
कहलगि कहौं वात समुझाई ॥ जात द्रस की अवधि बिहाई
जो तुम स्वामी मानत नाहीं ॥ तौ हम सत्य कहैं तुम पाहीं
मन तौ मिल्यौ जाय नंदलालहिं ॥ करिहौ कहा रोकि के खालहिं
लेहु संभारि देह यह सारी ॥ जासों पिय तुम कहत हमारी
को राखै इतने जंजालहिं ॥ मिलिहैं प्राण जसोदा लालहिं
जो निश्चै नाहिं स्याम सनेहा ॥ तौ यह कौन काज की देहा
सब सखियन तें आगे जाई ॥ देखहुगी नवकुंवर कन्हाई

ऐसे देह अरु गेह तज पति को कानि निवारि
पहुंची सब तें प्रथम जो तेरोका द्विज नारि ॥
कठिन प्रेम को पंथ तहां नेम की गम नहीं ॥
कहत सकल सद ग्रंथ जहां नेम तहं प्रेम नहिं

ऐसे भो भोजन लै द्विज वाला ॥ पहुंची वन जहं मोहन लाला
नटवर वेष चित्र तन कीने ॥ ठाढे सखा संग भुज दीने ॥
मोर मुकट वैजंती माला ॥ कर मुरली दृग नैन विशाला ॥
कुंडल झलक तिलक झलकाहीं ॥ कोटि काम छवि पटतर नाहीं
सुख मृदु हँसनि लसन पट पीरी ॥ निरखत नैन ताप भय सीरी
भोजन लै हरि आगे राखे ॥ अपने भाग्य धन्य करि राखे
तिन्है देखि हरि मन सुख मान्यो ॥ वचन निकारि तिनकौं सनमान्यो

तिन सौं वह रौं वा हेउ कन्हाई॥ गृह पति तजि तुमके तइं तुम आई
कहिय पति विप्र वेद अधिकारी॥ होतिन की तुम पतिव्रत नारी
वे सब यज्ञ करत बन माहीं॥ तुम विन यज्ञ होइ है नाहीं
कहतु मकछु भलौं नहिं कीनो॥ पति को कहउ मानि नहिं लीनो
अति आय सुतिय पाल माई॥ चार पदारथ पावे सोई॥

पति देवता सो तिय कहै वेद वचन परमान॥
जाऊ वेगि तुम पतिन पहं ताते यह जिय जान
सुनि हरि वचन प्रमान कर्म धर्म सो नो सुखद
द्विज तिय परम सुजान बोली सब कर जोरि कै

सुनहु स्याम घन अंतरजामी॥ तुम हो सकल जगत के स्वामी
यज्ञ पुरुष तुम हो सुख धामा॥ तुम ही सब के पूरण कामा
विविध यज्ञ करि तुमको ध्यावैं॥ तुमते चार पदारथ पावै
सकल धर्म तै शरण तुम्हारी॥ है सब जीवन को सुख कारी
यह हम सुनी पतिन मुख बानी॥ कहत वेद इतिहास बखानी
ताते शरण तुम्हारी आई॥ यह दूषण नहिं हमें गुसाई
तुम माया वस सकल भुलाने॥ ताते पतिन न तुम पहिचाने
तिन को दोष क्षमा प्रभु कीजे॥ हमको शरण आपनी दीजे
चार पदारथ हू तें मारी॥ हैं प्रभु दरसन शरण तुम्हारी
ताते नहीं निरादर कीजे॥ अपने चरण शरण रख लीजे
सुनि प्रभु द्विज पत्नी की बानी॥ भये प्रसन्न भक्त सुखदानी
धन्य धन्य प्रभु तिन को भाख्यो॥ हित करि तिन को भोजन राख्यो

देइ अपनी दृढ़ भक्ति हरि तिन्है कह्यो घर जाऊ
कै है तुम्हरे दरस ने सुख तुम्हारे नाउ॥
हरि आयसु धरि माथ पाय भक्ति वरदान वर
राखि हृदय ब्रजनाथ चली हर्षि द्विज तिय सदन

नंद नंदन की करति बड़ाई॥ द्विजपत्नी सब घरकौं आई॥
देखत तिन्हैं विप्र समुदाई॥ भये पुनीत विमल मति पाई॥
धन्य २ कहि तियन बखानी॥ आप कहत हम धनि अज्ञानी॥
जिनके हेतु यज्ञ हम कीनौ॥ तिन मांग्यौ भोजन नहिं दीनौ॥
हम विद्या अभिमान भुलाने॥ आविगतिकी गति कैसे जाने॥
पारब्रह्म प्रभु जन सुखदाई॥ भक्तन हित प्रगटे प्रभु आई॥
तिनको हम पहिचान्यौ नाहीं॥ वारवार पछिताहिं पाछाहीं॥
है यह तिय अतिशय बड़भागी॥ कृष्ण चरण पंकज अनुरागी॥
ब्रह्मादिक खोजत हैं जिनको॥ देख्यौ जाय प्रगट तिनको॥
ऐसे वेद विधि नियन सराही॥ आदर करलीनी घरमाहीं॥
प्रेम प्रीति करि जो हरि ध्यावे॥ सो नर नारि अभै पद पावे॥
नर नारी कछु नाहिं विचारा॥ प्रभु को केवल प्रेम पियारा॥
भाव तियन को धारि उर तहां हरि कृपा निकेत
सखन सहित भोजन करत रुचि सों प्रीति समेत
ब्रह्मलोक लौं सोर भ्यो ग्वालन के संग खात हरि
छीन छीन के कौर करत परस्पर हास रसे
अति हित भोजन तहं हरि कीनौ॥ सखा वृंद को अति सुख दीनौ॥
वनमें फिरत चरावत गैया॥ बैठे आय कदम्ब की छैया॥
भये सखा सिगरे इक ठाहीं॥ गैया चरत रहीं वनमाहीं॥
दुपहर घाम जान मन माहीं॥ लागे कहन सघन वन छांहीं॥
बैठे ग्वाल वाल चहुं ओरियां॥ आगे धरी दूधकी करियां॥
मध्य स्याम सुन्दर नंदनंदा॥ उडुगण में जिमि पूरण चंद॥
मोर मुकुट कटि कछनी काछे॥ कोटि काम की छवि को बांछे॥
ऐनहुं मुरली मधुर बजावें॥ कवहुं सखन मिलि सारंग गावें॥
लोउ सिखा नृत्य को करहीं॥ कोउ ततकारी उच्चरहीं॥

कोऊ ताल बजावत नीके॥ उपजावत कोउ आनंद जी के॥
करत केल ऐसे बन माही॥ देखि देखि सुरवृंद सिहाही॥
कहत धन्य ये ब्रज के वाला॥ बिहरत जिन संग कृष्ण कृपाला॥

धन्य बिरप धनि भूमि यह धनि वृंदावन चंद॥
धनि ब्रज कहि बरषहिं सुमन रीझ रीझ सुरवृंद॥
मन मन देव सिहाहिं बन बिहार हरि को निरषि
श्री वृंदावन माहिं हम न भये द्रुम लता तृण

॥ श्रीदामा तब कहेउ बुझाई॥ खेलहि मैं सब रहे भुलाई॥
॥ गैया कित हूं चरति को जाने॥ यह सुनि के सब खेल भुलाने॥
जित तित हेरन को उठि धाये॥ गैया जाय हेर ले आये॥
जे सुरभी आई नहिं जानी॥ चरत सघन बन मांझ समानी॥
तिन को तरु चढ़ि कान्ह बुलाई॥ मुरली टेर सुनत उठि धाई॥
ऐसी गैया स्याम सधाई॥ मुरली सुनि सब दौरी आई॥
जब जब गैयन स्याम बुलावैं॥ हूं हूं कर सब ता पै आवैं॥
तिन पर कर फेरत मनमोहन॥ पीतांबर सों झारत को हन॥
करत प्यार तिन पर बनमाली॥ हस्तकमल को सब प्रतिपाली॥
हरि कौं निरषि गाय सुष पावैं॥ तिन के भाग्य कहत नहिं आवैं॥
जब हरि गैयन कर सों परसैं॥ लखि लखि कामधेनु मन तरसैं॥
कहत कहा जो कामद कीने॥ हम कौं बिधि ब्रज जन्म न दीने॥

धनि धनि ब्रज की धेनु ये चारत त्रिभुवन नाथ॥
झारत पोंछत दुहत निज हित करि अपने हाथ॥
मन ही मन पछिताहिं कामधेनु ब्रजधेनु लखि
हम न भई ब्रज मांहि हरि कर पंकज परसती॥

ऐसी लीला करत अनेका॥ बन मैं ललित एक तें एका॥
वृंदावन सब दिवस बिताये॥ संध्या समै निकट ब्रज आये॥

तबहरिकह्यौ चलौ अब गेहू॥ गैयां सकल आगे करि लेहू॥
पहुंची सांझ आइ नियराई॥ बनमें करहु अबेर न भाई॥
यह सुनि गाइ सकल अगुवाई॥ भली बात यह कही कन्हाई॥
बन तें निकस चले सब ग्वाला॥ ब्रज आवत नटवर गोपाला॥
सुरभी वृंद गोप बालक संग॥ अति आनंद गावत नाना रंग॥
अधर अनूप मुरलि सुर कौरी॥ ऊंचे सुरन बजावत गौरी॥
सुनत श्रवण ब्रज सुंदरि धाई॥ ग्रह काज तज तज सब आई॥
कहत परस्पर मोहन आवत॥ देखि देखि छबि अति सुख पावत॥
पूरण कला उदित शशि जैसें॥ कुमुदिनि सर फूली तिय तैसें॥
नैन चकोर रहे टक लाई॥ दिवस विरह की ताप नसाई॥

प्रेम मगन आनंद अति कहति सकल ब्रजबाम
देखहु सखि जसुमति सुवन शोभित अति अभिराम
स्यामल तन पट पीत जलज माल उर ही मुकट
लई मनौ इन जीत घन दामिनि विग धनु छवि

भ्रकुटि विकट दृग चंचलताई॥ अति छवि देति बरणि नहिं जाई॥
धनुष देखि बिबि खंजन जानो॥ उड़न करत ड रैंडत मानो॥
प्रफुलित नैन सरद अंबुज जैसे॥ मनों कुंडल रविकर के परसे॥
गोपद रज पराग छवि छाई॥ तामधि आवि बैठो जनु आई॥
एक कहति देखहु वह शोभा॥ अति सुख देति लेत मन लोभा॥
कमल वदन मुरली रस लेई॥ कुटिल अलक ऐसे छवि देई॥
मानो अलि गण साजी सैना॥ सहिन सकत वाहत निज ऐना॥
अधर सुधा लगि अति दुख पाई॥ मुरली सों मानौ करत लराई॥
शोभित नासा परम सुहाई॥ ताने सो विउपमा बहु पाई॥
मनहु अनंग सहायक आयो॥ तिलप्रसून मरनाहि छिपायो॥
सुनि यह सखि अति मन हरषाई॥ निरखत हरि सुख छवि सुखपाई॥

कृपा दृष्टि हरि उवन निहारी॥ आये ब्रजजन मन सुखकारी
कहति मुदित मन युवतिजन धनि २ सखि वे मोर
जिनके पाखन कौं मुकट कीनो नंदकिशोर॥
धनि धनि सखि वे बास जाकी मुरली अधर धरि
हरि पूजत निज सांस को पुनीत ताकीस हृश्य
निज निज सदन गये सब ग्वाल॥ आये घर हलधर गोपाल।
देखि दुहु मात न सुख पायो॥ हरषि दुहुन कौं कंठ लगायौ॥
काहे आज अवार लगाई॥ यह कहि वार वार वलि आई॥
रोहिणि सों कहि जसुमति मैया॥ भूखे ह्वै हैं दोउ भैया॥
मैं दोउअन को देत न्हवाई॥ तुम भोजन कों करहु चढाई॥
निकट लये मुरली कर लीन्ही॥ हरि करनें लकुटी धरि दीन्ही
नीलांवर पीतांवर लीनो॥ मुकट उतारि स्याम तव दीनो
भोग समान जसोमति जानी॥ धर्यो संभार सदन नंदरानी
छोरति अंग भूषण महतारी॥ मुक्ति माल वन माल उतारी
कटि किंकिणि अंगद भुज छोरे॥ निरख गात आनंदन थोरे॥
पट लै दोउन के अंग मोरे॥ उर लगाय लीने अति प्यारे॥
तुम दोउ भैरे गाय चरैया॥ और न कोउ टहल करैया॥
लीन्ह तुम हि विसाह मैं तव आति रहे नन्हाइ
सुनि हंसि हरि वल सों कहत कहत कूवही माय
यह तो सुमरि न जाय सांच कहौ वालक हुं
जसुमति लेत वलाय मैं चेरी हंसि २ कहति
सुमना सुत अंगन परसाई॥ तपत तरणि कौं जल लै आई॥
परम प्रीति दोउ सुत अन्हवाये॥ सरस वदन तन पोंछ सुहाये
षट रस भोजन जाय जिमाये॥ जसुमति के सुख जाय न गाये
सीतल जल कपर रस रच्यो॥ लै झारी दुहुं भैयन अन्चयो॥

चुरू भलौ सुख धोय उठे क्रू ॥ वीरे पान दये जननी तव ॥
वीरा खात सुदिन दोउ भाई ॥ व्रजदासन कूं दन सव पाई ॥
जसुमति के सुख कौन गनावै ॥ सारद हू कोउ पार न पावै ॥
धन्य नंद धनि जसुमति माता ॥ महिमा अमित न कहि सकि धाता
ब्रम्ह सनातन है प्रभु सोई ॥ जिनके पुत्र कहावत सोई ॥
जो प्रभु सकल विश्व के स्वामी ॥ तीन लोक पति अंतरजामी ॥
विश्वंभर निज नाम कहावै ॥ ताहि जसोमति माय खवावै
रात सुवावै प्रात जगावै ॥ बालक ज्यौं फुसलाय खवावै ॥

रहत मगन गुन स्याम के निसदिन आठौ जाम
महर महरि के प्राण धन मोहन सुन्दर स्याम
हरि सरूप विसरत नाहिं व्रज के नर नारी जिते
मगन प्रेमरस माहिं निसदिन जात न जानहीं ॥

अथ गोवर्द्धन लीला

कृष्ण प्रेम व्रज लोक समाने ॥ देव पितर सव कात भुलाने
कातिक सुदि परवा जव होई ॥ इंद्रहि पूजत व्रज सव कोई
ताकी सुध बुधि सवन भुलानी ॥ सवके मन में ध्यान कन्हाई
सो तिथि अति समीप जव आई ॥ तव जसुमति के उर सुध पाई
कहति नंद सों नंद की रानी ॥ सुरपति पूजा तुम हि भुलानी
जाकी कृपा वसत व्रज माहीं ॥ एकहु वस्तु कमी कछु नाहीं
जाकी कृपा दूध दधि गाई ॥ सहस मथानी मथत सदाई
जाकी कृपा पुत्र हम पाये ॥ जासु कृपा सव विघ्न नसाये ॥
भई सफल व्रज माँझ वडाई ॥ कुशल रही वलराम कन्हाई
सुरपति है कुलदेव हमारे ॥ गोप गाय व्रज के रखवारे
तिन की तुम सव सुरति भुलाई ॥ रहे दिवस पाँच कअव आई

कह्यौ सकल गोपन ह्वै कराई ॥ इन्द्र यज्ञ कौ कागै चढाई ॥
भली दिवाइ मोहि सुधि कहन महरि सों नंद
भूलि गये हम देव कौ काज मोह वस मंद
हांथ जोरि नंद राय विनय करत सुरराय सों
तुम कौं गयो भुलाय क्षमा कीजियो मोहि प्रभु
तबहिं नंद उपनंद बुलाये ॥ श्री वृषभान सहित सब आये
सबकौं देखि नंद सुष पायौ ॥ महर महरि मिलि सीस नवायौ
अति आदर सबहिन कौं कीनौ ॥ सादर सबकौं बैठक दीनौ ॥
मनहीं मन सब सोध कराहीं ॥ कंस कछु मांग्यौ तौ नाहीं ॥
राज अंस उनको जो होई ॥ बिन मांगे हम दीनौ सोई ॥
बूझत नंदहि सब सकुचायो ॥ कौन काज हम सबन बुलायो
तबहि नंद सबको समुझायो ॥ मैं तुमकौं इहि काज बुलायो
सुरपति पूजा के दिन आये ॥ सो तुम सबहिन मिल बिसराये
मोह राज काज लपटानौ ॥ निसदिन लोभहि मांझ भुलानौ
इंद्र यज्ञ की सुरत भुलाई ॥ अति समीप दिन पहुंचौ आई
यह सुनि मन हरषे सबै देव काज जिय जानि ॥
हम सब भूले सुरपतिहिं मन लागे पछिताानि
भली करी नंदराय हम सब कौं दीनी सुरति ॥
सुरपति कौं सिर नाइ क्षमा करावत पाप सब ॥
बिदा होय सब गोप सिधाये ॥ घर घर बाजन लगे बधाये ॥
पूजा की विधि करत सबै मिल ॥ जिहिं जिहिं भांति सदा आई चलि
अमित भांति पकवान निमि .... ॥ कहति घरनि घर घरनि निजाई
नंद महर घर बजत बधाई ॥ गावत मंगल अति हरषाई

नेवज करत जसोदा आतुर ॥ आछू सिद्धि धरहि समीपर
मैदा के अनेक पकवाना ॥ वेसन के वहु करत विधाना ॥
घृत मिष्टान करत परपूरण ॥ मिस्री करत पाक को चूरण ॥
विविधि भांति पकवान मिठाई ॥ कहँ लगि नाम कहौं सकुचाई
और नारि ब्रज की संग लागी ॥ घृत पकु करत सबै अनुरागी
जहाँ तहाँ वहु चढ़ी कड़ाही ॥ जसुमति सबन सराहत जाई
जो सामा मांगति हैं जोई ॥ रोहिणि ताहि देति है सोई
महरि करति रसोइ और निहार ॥ धरत जोरि विधि न्यारे न्यारे
सैंति सैंति अति नेम सों धरति अछूते जात
स्याम कहूँ परसै नहीं यह मन माहिं डरात
संक करत मन माहिं सूर पत पूजा जानि जिय
जसुमति जानति नाहिं सब देवन कौं देव हरि
खेलत ते सखन सुखदाई ॥ भीतर आये कुंवर कन्हाई ॥
जननी कहति इहाँ जनि आवै ॥ लरिकनि कौं यह देव डरावै ॥
रहे ठठकि आंगहि हराई ॥ मनहीं मन हँसि कहत कन्हाई
मैयारी मोहिं देव दिखै है ॥ इतनौ भोजन वहु सब पैहै
यह सुनि खीजि कहति है मैया ॥ ऐसी बात न कही कन्हैया
जोरि जोर करि देव मनावै ॥ वालक कौ अपराध छमावै ॥
वाहिर चले स्याम अनखाई ॥ युवति कहति हरि गये रिसाई
जान देहु हरि अवहिं अयाने ॥ देवकाज वालक कह जाने ॥
छुहै कहू स्याम यह भोजन ॥ उनकी पूजा जाने को जन ॥
और नहीं हम कछू जाने ॥ ॥ कै सुरपति कै गोधन माने
यह कहि कहि इंद्रहि सिर नावै ॥ राम स्याम की कुसल न माने
और देव नहिं तुम हि सरीसा ॥ करहु कृपा करि सुर ईसा
ऐसे सुरपति अर्चहित जसुमति करति विधान

द्वारे बैठे नंद जहँ गये तहाँ कौं कान ॥
जुरे नंद ढिग आय व्रज के जे उपनंद सब
बैठे अति सुख पाइ करत बात विधि यज्ञकी
दीपमालिका रचि २ साजत॥ पुहुप माल मंडली विराजत
ढोल निसान वाजने वाजैं॥ मुदित ग्वालगण जितितित गाजैं
गैयन चित्र विचित्र वनावैं॥ अंगन आभूषण पहिरावैं
सातवरष के कुँवर कन्हाई॥ खेलत मन आनंद बढ़ाई॥
द्वारन युवती हरष बढ़ावैं॥ मंगल गान मुदित मन गावैं
सथिया पुनि रचि गावहिं गाथा॥ पूजा देखि हसे व्रजनाथा
मो आगे सुरपति की पूजा॥ मोतें और देव को दूजा ॥
व्रजवासी मोकौं नहिं जानें॥ मो अछत सुरपति कौं मानें
अव यह मेंटौ यज्ञ विहाने॥ लीनो भोग वहुत दिन याने
व्रजवासिन पै आप पुजाऊं॥ गिरि गोवर्द्धन नाम धराऊं
यह विचार मन में ठहराई॥ गये नंद ढिग कुंवर कन्हाई
हरषि नंद पनियां वैठाये॥ वदन चूमि उर सों लपटाने
तव हरि वोले नंद सों मधुर मंद मुसकाय॥
करत पुजाई कौनकी वावा मोहि वताय॥
कौन देव सो आहि काहे कौं पूजत तिन्हें॥
मैं नाहिं जानत ताहि कहौ मोहि समुझाय सव
नंद कहेउ तव सुनहु कन्हाई॥ इंद्र सवन देवन कौ राई ॥
तिनकौं पूजत गोप सदाई॥ कुल में यह रीति चलि आई
तातें तिन्हें पूजियें राजा॥ जातें कुशल रहै दोउ भ्राता
या पूजा तें सुरपति हरषै॥ होय प्रसन्न तव जल वे परषै
तृण अनाज उपजत है जातें॥ गाय गोप सुष पावत तातें
यातें सदा यज्ञ यह कीजे॥ जो गोधन धन वहुत न छीजे

कहा कहत नंदनंद समुझि परति नहिं सबन यह
सुनि यह बात सबन ब्रज पाई॥ देख्यो ऐसो सुपन कन्हाई॥
सुरपति पूजा देत मिटाई॥ गोवर्द्धन की करत बड़ाई॥
कोऊ कहत कान्ह कहै सांची॥ कोऊ कहत बात यह कांची॥
बालक जाने कहा सुजाई॥ कोउ कहत कहै को भाई॥
कोऊ इंद्रहि कहत सकाने॥ हम तो कछु यह बात न जाने॥
हलधर कहत सुनौ ब्रजवासी॥ को महिमा जानत अविनासी॥
इन कौं बालक करि मति जानौ॥ जो हरि कहै उ सत्य करि मानौ॥
नंद निकट जो गोप सयाने॥ ॥ हरि कौ बल मन गप सब जाने॥
कहत नंद सों सो सुख पाई॥ कीजे सोइ जो कहत कन्हाई॥
कहत नंद तब सबन सुहाई॥ मेरेहू मन से यह आई॥
हरि कौ सुपन झूठ नहिं होई॥ है प्रतीत मेरे मन सोई॥
काल्ही कौ सुपनो हरि देख्यौ॥ भयो प्रात ही तासु बिसेख्यौ॥

तातें सोई कीजिये कान्ह कहै जो बात॥
सब ब्रजवासी पूजिये गोवर्द्धन चलि प्रात॥
यही मंत्र ठहराय बूझत हरि सों हरष सब॥
कहौ कान्ह समझाय कौन भांति गिरि पूजिये॥

हरषि स्याम नव सबन बुलायो॥ इंद्र यज्ञ हित तुम जो ल्यायो॥
बहु व्यंजन पकवान मिठाई॥ सो सब सटकन लेहु भराई॥
नाचत गावत सकल हुलासा॥ चलहु सकल गोवर्द्धन पासा॥
तहां जाइ गिरि बरहि मनाई॥ पूजहु बहु बिधि भोग लगाई॥
मांगि मांगि तुम सों गिरि खैहैं॥ सुत मांगे तुम कौं फल दै हैं॥
मेरो कहो उ सत्य करि मानो॥ मेरो सपन झूठ जिन जानौ॥
यह परचौ तुम आंखिन देखौ॥ तबहि मोहि सांचो करि लेखौ॥
जो चाहौ ब्रज की ठकुराई॥ तो पूजौ गोवर्द्धन राई॥

कान्ह जो कछु आज्ञा दीनी ॥ सबहिन षात मानसो लीनी
केहोहि परस्पर सब सुख पाई ॥ चलहु गोवर्द्धन कूं तन सु
व्रज घर घर सब होत कुलाहल ॥ फिरत गोप आनंद उमाहल
मिलत परस्पर अंकम दे दे ॥ सकटन साजत भोजन ले ले ॥

बहु व्यंजन पकवान बहु बहुत मिठाई पाक ॥
रस गोरस मेवा विविधि अमित भांति के शाक
षटरस के सब भोग कछु सकटन कछु कांवरन
गृह गृह ते सब लोग लै गिरि पूजन चले ॥

नंदमहर के घर की सामा ॥ कहँलगि वर्णों बताऊं नाम ॥
सहस सकट पकवान मिठाई ॥ रस गोरस बहु भार भराई ॥
नंद सदन ते लै बहु ग्वाला ॥ चले अग्र उर हर्ष विशाला ॥
पट भूषण सब गोपन साजे ॥ भांति अनेक बाजने बाजे ॥

नंदमहरिअरुमहरिजितेका॥औरगोप बहुभीर अनेका
वलदाउअरुकुंवरकन्हैया॥सुभगसिंहारकिये दोउ भैया
सखावृंदसुन्दरसव लीन्हे॥कोटिकाम छविलज्जितकीन्हे
सोभितनंदमहर के साथा॥ चलेसकलपूजनगिरिनाथा
जसुमतिअरुरोहिणिमहतारी॥नंदगांवकीअरुजे नारी॥
भूषणवसन संवारिसंवारी॥चली हरषिउर आनंदभारी
पुरव्रषभान आदिजेग्रामा॥ चलीसकलगोजन कीवामा
श्रीराधाव्रषभान दुलारी॥ललितादिक सव गोपकुमारी

नौसतसाजसिंगार अति पट भूषण बहुरंग
यूथ यूथ जुरिकैंचलीं कीरति जू के संग॥
सवके मनयह कामदेवनकोंहरिरूप हग
परममुदितसववाम सवके मनमोहनवसे

चंदवदनसम सवमृग नैनी॥सकलसुधर समकोकिलवैनी
नव योवन सव होहिं प्रवीना॥ सवकोमन मोहन आधीना
चली सकलगोवर्द्धनपाहीं॥भईभीर अति मारग माहीं
सकटवृंद अरु गोप समूहा॥जातिचले युवतिन के यूहा
कौतुक करत गोपगणराजे॥ताल मृदंग अनेकनिवाजे॥
कोउ गावतकोउ नाचतजाहीं॥कोउ हांहूं मग पावतनाहीं
कोउ सकटन साज संवारे॥ कोउ एकन एक पुकारे॥
गावत मंगलगोपकुमारी॥निरषिस्यामछविहोतसुषारी
होतकुलाहल अतिमगमाहीं॥कोउवातसुनतकछुनाहीं
कौतुकस्यामदेखि हरषाहीं॥ अतिउत्साहसवन मनमाहीं
सवन संग खेलतहरिजाहीं॥ सवकीसुरतिस्यामकेमाहीं
व्रजवासिनकोभीरसुहाई॥उपमा मोपे वरणिनजाई
छं० उपमानमोपैजातवनीभीरअतिसुन्दरभई

बह्यौ आनंदसिंधु कौं सुख विविधि तनु धरसो हई
छबिउजागर सिंधु कौधौं सुकृत पुंज सुहावने ॥
तिन मध्य सब के स्याम नायक सबहिं लायक पावने
दो॰ नंद महरि उपनंद सब स्याम राम दोउ भाय
पहुंचे गोवर्द्धन निकट निरषि सिखर सुख पाय
उतरे साहित समाज चहूं ओर ब्रज लोक सब
मधि शोभित गिरि राज कोटि काम शोभा सरस
चहु दिस फेर कोस चौरासी॥ उतरे घेर सकल ब्रजवासी
ब्रजवासिन की भीर अपारा॥ लगे चहूं दिस चारु बजारा
वस्तु अनेक बरणि नहिं जाई॥ विन मोलहिं सब सौंज बिकाई
ठौर ठौर सब युवती आवैं॥ जहां तहां नट नाच दिखावैं
कहूं विदूषक हास हंसावैं॥ हर्षे मांझ अति हर्ष बढावैं
नर नारी सब परम हुलासा॥ अति आनंद उमग्यो चहुं पासा
कृत पूजन विधि नंद यई॥ अधिकारी तहं कुंवर कन्हाई
कहेउ कृष्ण सब विप्र बुलाई॥ प्रथम यज्ञ आनंद कराई॥
पूछ वेद विधि तिन सों लीजे॥ ताही विधि गिरि पूजा कीजे
तवहिं विप्र नंदराय बुलाये॥ आदर सहित गोप लै आये
हरि कौ कहेउ मानि तिन लीनो॥ प्रथम आरंभ यज्ञ कौ कीनो
परम रुचिर वेदिका बनाई॥ सामवेद धुनि द्विज वर गाई
देखन कौं धाये सबै ब्रज के नर अरु वाम ॥
भयौ देवता गिरि वहौ नाहिं पुजावै स्याम
कहै महर उपनंद नंद आदि ठाढे सबै॥
कहत जो कछु नंदनंद करत सकल सोई तहां
पंचामृत बहु कलश भराये॥ डारि शिषर तें गिरि अन्हवाये
बहुरि लै गंगा जल डारौ ॥ चंदन वदन तिलक संवारौ

भूषण वसन विचित्र चढ़ाये॥ सुमन सुगंध माल पहिराये
धूप दीप करि आरति मांजी॥ घंटा शंख झालरी वाजी॥
करत वेद धुनि विप्र सुहाई॥ चकृत नभ लषि सुर समुदाई
सुरपति पूजा कृष्ण मिटाई॥ थाप्यो गिरिव्रज तिलक चवाई
देखि इंद्र मन गर्व वढ़ायो॥ व्रजवासिन के मनकह भायो
पूजन गिरिहि सो हि विसराई॥ गिरि समेत व्रज देहु वहाई
अब देखहु मैं इनको करनी॥ उपजी है इनको वुद्धि मरनी
गिरि को पूजन प्रेम वढ़ाये॥ सपने को सुख लेत सनाये॥
कितिक वार पुनि इनकों मारत॥ ऐसे सुरपति मनहिं विचारत

कहेउ कृष्ण तब नंद सों भोजन लेहु मंगाय॥
गिरि आगे सब राखि के अरपहु विनय सुनाय
यह सुनि कै नंदराय त्यावहु ग्वालन कों कह्यो
लीनो तहां मंगाय सामग्री सब भोग की॥

नाना भांति जाति पकवाना॥ विविधि मिठाई अमित संधाना
खटरस व्यंजन वहु तरकारी॥ दह्यो दूध सिखरन रुचिकारी॥
मधु मेवा फल फूल अनेका॥ स्वच्छ स्वाद एक ते एका॥
खीर आदि वहु भांति रसोई॥ कहँ लगि वरनि सकै सब कोई
मूंग भात अरु वरा पकोरी॥ वहुतिक दधि वोरी अरु कोरी
कियो अन्न को कूट सुहावन॥ जैसो गिरि गोवर्द्धन पावन॥
परसि परसि गिरि आगे राषत॥ जैसी विधि सों मोहन भाषत
गिरि पूजत जिहिं भांति कन्हाई॥ वैसें सब व्रज लोग लुगाई॥
गिरि गोवर्द्धन के चहुं पासा॥ कीनी वहु विधि सहित हुलास
दौरहि दौर वेदका राजे॥ अन्नकूट चहुं ओर विराजे
तिन मधि गोवर्द्धन गिरि पावन॥ परम अनूप स्वरूप सुहावन
चंदन केसरि रोरी छाया॥ शोभित अनि चहुंदिसि गेरी माय

गिरि गोवर्द्धन राय को छवि नहिं परत वखान
ब्रजवासी जन के हिये ध्यान परम सुख दान॥
महिमा अमित अपार श्री गोवर्द्धन राय की
जिहिं पूजत करतार सारद विधि नहिं कहि सकै
प्रातहिं ते परसत भोजन सब। गयो दुपहर युग याम तरे जब
कहेउ स्याम सों वृत्त नंदराई। जेमहिं गिरि सों कहेउ कन्हाई
तब हरि कहेउ सबन समुझाई। भोग समर्पहु घंट बजाई।
मन में कछू खुटक जिन राखौ। दीन वचन मुख ते कहि भाखौ
नैन मूंदि कै ध्यान लगावौ। प्रेम सहित कर जोरि मनावौ।
हरि गोपन पूजा सिखरावैं। अपनो पूज आप करावैं॥
जिन पर कृपा करत नंदनन्दन। तिन सों आप करावत वंदन
सबन माहिं हरि कहयौ जो लीन्हें। बहुविधि गिरि आराधन कीन
तब प्रगटे गोवर्द्धन नाथा। यज्ञपुरुष प्रभु मुनि के माथा
सहस भुजा तन स्यामल भाला। मोर मुकुट वैजंती माला॥
नखसिख भूषण परम सुहाये। अंग अंग छवि रूप बनाये
भये देखि ब्रज लोग सनाथा। दियो दर्स गोवर्द्धन नाथा॥
जैजैजै कहि देव मुनि बरषत सुमन अकास॥
ब्रजवासी जैजै करत भरे अनंद हुलास॥
सहसो भुजा पसारि लागे भोजन करन गिरि
देखत ब्रज नर नारि अति अद्भुत हरि के चरित
कहत मुदित सब लोग लुगाई। कान्ह हि की सोभा गिरि गाई
जैसे कान्ह स्याम तन सोहै। तैसा ही गिरिवर मन मोहै॥
तैसेइ कुंडल तैसिय माला। तैसेइ चंचल नैन विशाला।
तैसोइ मुकुट पीत पट तैसो। नखसिख रूप कान्ह को जैसो।
द्वै भुज हरि के परम सुहाये। गिरि की भुजा सहस अधिकाये

देखि दरस गिरिवर के रूरे॥ नंद जसोदा आनंद पूरे
कहत कि बड़े देव हम पाये॥ देखहु परगट दरस दिखाये
ऐस्यो देव सुन्यौ नहि देख्यो॥ जीवन जन्म सुफल करि लेख्यो
ललिता राधहि कहति वुझाई॥ मैं यह बात समुझिहै पाई
यह लीला सब स्याम बनावैं॥ आपहि जेंवत आप जिवावैं
मैं जानी हरि की चतुराई॥ इंद्रहि मेट आप बलखाई
हैं इनके गुण अगम अगाधा॥ मेरी बात मान तू राधा
इतहित देखो कर गहे गोपन सों वतरात॥
उत आगहि धरि सहस भुज रुचि सों भोजन षात
श्री राधा सुख पाइ मुदित विलोकत स्याम छबि
भक्तन के सुखदाय नितनव करत विनोद तब॥
इत गोपन संग हरि वतराही॥ उत सब हिन को भोजन खाही
ग्वालनि एक बिलोवन हारी॥ रहि वृषभान दसन खवारी
तासु नाम वदरौ लागायो॥ तिन घर ही घर ही तें भोग लगाये
प्रेम सहित वडु विनय सुनाई॥ सबके अंतरजामि कन्हाई
ऐसे प्रीति क्षुधित बनवारी॥ लई तासु वल भुजा पसारी॥
भोजन करत परम रुचि मानी॥ गुण सागर लीला यह ठानी
कहत नंद सों कुंवर कन्हाई॥ मैं जो बात कही सो आई॥
अब तुम गिरि गोवर्द्धन जाने॥ मेरे वचन सत्य करि माने॥
तुम देखत भोजन सब खायो॥ परगट तुम को दरस दिखायो
तुमरे भक्ति भाव पहिचानी॥ गिरि तुमरी लीला सब मानी
अब तुम मांग्यो चाहो जोई॥ मांगि लेहु इन पै सब सोई॥
नंद कहत धनि धन्य कन्हाई॥ यह पूजा [illegible]
प्रीति रीति के भाव सों भोजन सब के खाय
भे प्रसंन्न अति नंद सों तब बोले गिरिराय॥

मोल्लै नंद घर वन अब जो हम तुम सौं चहौ
मैं लीनौ सुख मानि बहुत करी मम भक्ति मन

भली करी तुम मेरी पूजा ॥ सेवक तुमसे और न दूजा ॥
तेरे सुत बल मोहन भाई ॥ इनकौ कुशल मनंद सदाई ॥
मैं ही इनकौ सुपन दिखायौ ॥ मैं ही सुरपति यज्ञ मिटायौ ॥
अब तुम सुख प्रसाद लै लाहु ॥ अपने अपने घर सब जाहु ॥
ब्रज मैं बसौ निसंक सदाहीं ॥ और कछु मांगो हम पाहीं ॥
यह सुनि चकित सकल नर नारी ॥ भोजन कियो प्रभु गिरधारी ॥
तौ तुम अपने जिय मति हरियौ ॥ कान्ह कहैं सोई तुम करियौ ॥
अब जो तुम प्रसाद लै खाहू ॥ अपने अपने घर सब जाहू ॥
अब बोलत सुर वचन प्रमाना ॥ ऐसे परछत देखन आना ॥
नंद कहै बकहु मांगो स्वामी ॥ देखि दरस भयो पूरण कामी ॥
सकल सिद्धि सुख तुम्हरी दीन्हौ ॥ कृपा सिंधु मैं तुम्हरे कीन्हैं ॥
मोहि बिबस भ्रम तुमहिं बिसारे ॥ भूलि फिरेउ देवन के द्वारे ॥

छं॰ फिरौ भूल्यौ देव द्वारन नाथ तुमहिं बिसारिकै ॥
पूजा तुम्हारी कहा जानो हम अहीर गवार कै
आप ही हरि कृपा दीन्ही सुप्रस्याम हिं आय कै
दई बालक कौ बडाई नाथ यह अपनाय कै ॥
अब हमैं डर कौन को प्रभु शरण तुम्हरी पाय कै
इंद्र कहा करिहै हमारो नाथ ब्रज पर आय कै ॥
कोटि कोटि ब्रह्मंड तुम्हरे रोम प्रति जगदीश हौ
तुमहिं करता हौ सबन के तुमहिं सबके ईश हौ ॥
स्याम हलधर दास तेरे कुशल ये दोऊ रहैं ॥
करि कृपा यह देहु प्रभु हम और कछु नाहीं चहैं
सुतन लै दोउ डारि पांपे दआप नंद चरणन परे

विहसि गिरि लषि प्रीति पंकज पाणि कु माथन धरे॥
दो॰ नंद गोप उप नंद सब वृषभान समेत
वारवार गिरिराज के चरण परत अतिहेत
सो॰ करि सब कौ सनमान दे प्रशाद निज पाणि सों
सबन कह्यउ घर जान इंद्र प्रसन्न गिरिराज तब
चलहु घरनि तव कह्यउ कन्हाई॥ भयेउ प्रसन्न देव अब आई
भली भांति पूजा तुम कीनी॥ गिरिवर राज मानि सब लीनी
दोउ कर जोरि भये सब ठाढे॥ भक्ति भ[illegible] बाढे॥
करि सकार्क रमी सब गिरि कों॥ परसत चरण चलत ब्रज घर कों
देखि चकित गण गंधर्व सो मुनि॥ कहत धन्य ब्रजवासी गुण गुनि
धन्य नंद कौ सुकृत पुरातन॥ धन्य धन्य पर्वतु गोवर्द्धन॥
करत प्रसंसा सुर मुनि पुनि पुनि॥ वरषि सुमन कहि जै जै धुनि
निज निज लोकन देव सिधाये॥ ब्रजवासी सब ब्रज कौं आये
मुदित सकल [illegible] सुभाई॥ गोवर्द्धन की करत बडाई
कहति धन्य जसुमति कौ जायौ॥ वहो देव जाका न्ह पुजायौ
अब इन तें ब्रज में सुख पैहैं॥ गाय गोप सब सुख सें रहिहैं
वरष वरष निज इंद्र पुजायौ॥ कवहूं प्रगट दरस नहिं पायौ
प्रगट देत ह दरस गिरि सबके आगे खा[illegible]॥
परम हरष नर नाग सब सब के मुख यह बात
खेलत नित नव ख्याल भक्त पाल नंदलाल ब्रज
दुषन के उर साल सुर नर मुनि मोहत निरषि॥
इंद्र देषि गोवर्द्धन पूजा॥ कियो कोप मो सम को दूजा
ब्रजवासिन मो कों [illegible] सरायो॥ मेरो कुल ते [illegible]यो
नेक नहीं संका उर आनी॥ कछु कान मे [illegible]॥
तैंतिस कोटि सुरन के नायक॥ मेघ वर्न सब मेरे पावक

कियौ अहीरन मम अपमानों॥ क्रोधी इन अपने मन जानों।
जानि बूझि इन मोहि भुलायो॥ गिरिहि थापि सिर निज आयो
कान्ह उन्हें दियो बहकाई॥ मरण काल ऐसी बुधि पाई
तुरत इन्हें सब देहु सजाई॥ देखौं धौं को करत सहाई॥
पर्वत पहिले खोदि गिराऊं॥ ब्रजजन मारि पताल पठाऊं
फूलि फूलि भोजन जिन कीनों॥ नेकु न परखौ ताको चीन्हौं॥
सकल गोप यह नैननि देखैं॥ बड़े देवता कौ फल देखैं॥
तापाछैं ब्रज देउ बहाई॥ भुव पर खोज रहै नहिं राई॥
ऐसे सुरपति क्रोध करि मन में गर्व बढ़ाय॥
प्रलै काल के मेघ सब लीने तुरत बुलाय॥
तिन्हैं कह्यो सुरराय ब्रज पर बरषौ जाय तुम
पर्वत अयस मिटाय पुनि बोरहु ब्रज लोग सब
मोसौं अहिरन करी ढिठाई॥ मेरी बलि पर्वतहि खवाई॥
ता कारन मैं तुमहिं बुलाये॥ सेन समेत जाहु सब धाये॥
गिरि समेत ब्रज देहु बहाई॥ भूतल खोज रहै नहिं राई॥
सुरपति वचन सुनत घन तमके॥ का पर क्रोध करत प्रभु अबके
केतिक गिरि ब्रज हमरे आगे॥ तुम प्रभु क्रोध करत केहि लागे
छन ही में ब्रज खोद बहावें॥ डूंगर को धर नाम मिटावें
होत प्रलय प्रभु हमरे पानी॥ रहत अक्षय वटन की निसानी
आप समा कीजै सुरराई॥ हम करिहैं उनकी पहुनाई
यह सुन सुनासीर सुख पायो॥ हरषि पान दै तिनहिं पठायो
चले मेघ सब सीस नवाई॥ आये ब्रज के ऊपर धाई॥
सारी मैं रैनि गगन छिपाने॥ देखत ही देखत अधियाने
कीन्हो सब्द गरज घन भारी॥ अतिही घोर भयानक रूपी
छं० अतिही भयानक घटा कारी कज्जल रूप पटतर लही

घेरलीनौ ब्रज चहूं दिस प्रवल पवन झकोरहीं॥
गरजत गगन घन घोर तड़पति तड़त वारहिं वारहीं
होत शब्द अघन व्रज नरनारि चकित निहारहीं
गये वन जे गाय लेते धाय फिरि ब्रज आवहीं॥
अंधधुंध अपार खोजत धाम पंथ न पावहीं॥
सैनन जहां वहां वस्तु सब नरनारि मन सोचत महा
वैर सुरपति मो कियो अव होन धौं चाहत कहा
दो॰ उमड़ि घुमड़ि घहराय घन परन लगे जल जोर
ढेरत सुत कौं मातु पितु ब्रज गलवल चहुं ओर
सो॰ ब्रजजन सकल विहाल वित रानेजित तित फिरत
स्याम करत यह ख्याल देखि देखि मन में हंसत
अति व्याकुल जहं तहं नरनारी॥ कहत देत पुरुषन कौं गारी
आये पूजि गोवर्द्धन राई॥ ॥सुरपति निज कुलदेव मिटाई
दीनों गिरिवर यह फल भारी॥ लेहु सबै अब गोद पसारी
चढ़ो अघारि कोप सुरराई॥ देत पलक में ब्रजहि बिहाई
जो पै वड़े देव गिरिराज॥ तौ किन आय बचावत आज
नंदसुवन यह पूजा ठानी॥ तातें इंद्र चढ़ो रिस मानी
कहत न जजसो मति सो ब्रजवाला॥ कहा काम यह कियो गुपाला
सुरपति हैं कुलदेव हमारे॥ ब्रजतें मोहू किये ते न्यारे॥
चढ़ो आय ब्रज ऊपर सोई॥ अब सहाय काहे न गिरि होई
घन गरजत तरजत अति भारी॥ देखि देखि डरपति नरनारी
सकल विकल भे मन पछताहीं॥ लरकन दुखते गोदन माहीं
भये सोच वस सब ब्रजलोगा॥ कहत सबै भयो अब मरन संयोगा॥
देखि देखि ब्रज की दशा नंद महरि बिलछिनात
कियो निरादर इन्द्र कौ सन में बकत डरात

स्याम राम दोउ भाइ लिये निकट सो खेलत महर
सुरेगोप तहं आइ मनही मन सुसकात हरि

कहत कृष्ण सों सब ब्रजवासी ॥ सुनहु स्यामसुन्दर सुखरासी
तुम तो सुरपति यज्ञ मिटायो ॥ ब्रजवासिन पर्वत गिरि पुजायो
तुम्हरे कहे भयो ब्रज मंडल ॥ सुरपति मान कियो खंडन
ताहीते सुरराज रिसाई ॥ दिये प्रलय के मेघ पठाई ॥
बरसत ते मघवा के पायक ॥ विषम बूंद लागत जनो सायक
भीजत गोप गाय गोसुत सब ॥ घरिक माहिं बूड़त है ब्रज अब
राखि लेहु अब ब्रज के नायक ॥ तुमहीं यह दुख मेटन लायक
दावानलते राखे जैसे ॥ अघजल ते राखो हरि तैसे ॥
बकी विनासन सकट संघारन ॥ तृणावर्त वत्सासुर मारन ॥
अघमर्दन बकबदन बिदारन ॥ तुमही ब्रजजन के दुख टारन
दीजे अभै वेग नंदलाला ॥ बरषत मेघ महा बिकराला
राखि लेहु बूड़त ब्रज सेरे ॥ अब चितयत हरि सब मुख तेरे

जब जब गाढ़ परी हमें तब तुम कियो उबार
इहि अवसर अब राखिये मोहन नन्दकुमार
ब्रजजन के सुख दानि देखि विकल ब्रज लोग सब
हँसि बोले तब कान्ह धरहु धीर अब हढ़ मति

चलहु सकल मिलि गिरि के पाहीं ॥ उनको ध्यान धरहु मन माहीं
करिलै है गिरिराज सहाई ॥ रहि है सुरपति मन पछिताई
यह कहि हरि गोवर्द्धन आये ॥ अभय बांह दे सकल बुलाये
गाय वत्स ब्रजलोग लुगाई ॥ गये सकल हरि के संग धाई
सबही के देखत गहि करते ॥ उचकि लियो गिरिवर हरि करते
छिगुनी छोर स्याम कर राख्यो ॥ तब हरि ब्रजवासिन ते भाख्यो
करी सहाय देव गिरि राया ॥ आवहु तुम सब इनकी छाया

गाय गोप गो सुत नर नारी॥ भये सकल दरश माहिं सुखारी॥
चकित देखि सब लोग लुगाई॥ कहत धन्य तुम कुंवर कन्हाई॥
प्रेम पुलकि उर आनंद भारी के॥ परसत चरण धाय सब हरि के॥
कान्ह कहत देखहु गिरिराई॥ कीन्ही किहि विधि सुरत सहाई॥
भक्तन हित हरि गिरिहि उठायो॥ तब ते गिरिधर नाम कहायो॥

छं॰ पर्यो तब ते नाम गिरिधर बालक रि गिरिवर धर्यो॥
देखि व्याकुल सकल ब्रज जन सोच इक छन में हर्यो॥
करत जै जै गोप गोपी सकल मन आनंद भरे॥
स्याम सब के मध्य ठाढ़े कर जनख गिरिवर धरे॥
घन अखंडित धार मूसल सलिल की बरखा करे॥
अंध धुंध अकाश चहुं दिस पवन झकझोरत खरे॥
वज्र तीर गंभीर पुनि पुनि गरज परवत पर गिरे॥
करत अति उत्पात ब्रज पर मेघ पर ले के फिरे॥

दो॰ बारबार चपला चमकि चकचौंधति चहुं ओर॥
झर झर आकाश ते जल डारत घन घोर॥
हरि जन के सुखदाय गिरि कीनो विस्तार अति॥
सब ब्रज नियो बचाय बूंद न आवति भूमि पर॥

कहत गोप सब मनहिं डराई॥ गिरिवर नीचे धरहु कन्हाई॥
महाप्रलय पर्वत यह भारी॥ अति कोमल भुजनन तुम्हारी॥
नखने गिरि धीर को धारे॥ हे सैबल बिन कौन सभारे॥
देखि नंद व्याकुल मन माहीं॥ महाभार गिरि को मन वाही॥
देखत भुजा जसोदा मैया॥ बार बार मुख लेत बलैया॥
देखि भार अति मन दुख पावें॥ पुनि २ गोवर्द्धनहिं मनावें॥
नाथ आपनो भार संभारी॥ करियो कान्ह को रखवारी॥
पै पकवान मिठाई मेवा॥ करि हैं पूजि हैं तुम को देवा॥

मातपितहिं हरिदेखिदुखारी॥तबहूँ बुद्धि करी गिरिधारी
कह्यौ नंदसौं निकट बुलाई॥तुमहूँ सब मिलि करहु सहाई
लैलै लकुट सखि गिरि लेहू॥ मानि रह्यौ उर मैं संदेहू॥
गोवर्द्धन गिरि भयौ सहाई॥आपक ह्यौ मुहि लेहु उठाई
यहसुनिजहँतहँगोपसब रहे लकुटि गिरि लाय
कहत स्याम तब नंदसौं भलौ कियौ उपकाय
गात्रे द्विग बलराम देखि देखि लीला हँसत
कौतुकनिधि तुम स्याम करत धरत धन न सुख
सातदिवस बीते इहि भांती॥ बरषत जल जलधर दिनराती
कोपि कोपि डारत जल धारा॥ मिटी न ब्रज कीनै कुलगारा
जलत जलद जल बीचहि अंबर॥ वैसोइ गिरि बैसइ ब्रजपुर
धरु जल पवन अनल नभ जाकौ॥ सुरपति कहा सकै करि ताकौ
भये जलद अनल ले सब रीते॥ रहे उ एक गुण द्वै गुण बीते
कहत बात आपस मैं बादर॥ पठयौ इंद्र हमैं दै आदर॥
कह्यौ देउ ब्रज जाय बहाई॥ कहा है कहाँ जाइ जब भाई
महा प्रलय जल बरषे आनी॥ ब्रज मैं बूंद न पर्यौ पानी
भये मेघ मन मे सब कादर॥ अब कहि है सुरराज निरादर
अति भय तन की दशा भुलानी॥ गये इंद्र पै सबै खिसानी
कहत मेघ सुरपति के पाहीं॥ सुनहुं देव हम कहत उराहीं
कै मारौ कै सरण उबारौ॥ ब्रज पै जात न चलत हमारौ
सातदिवसपरलैसलिलहमबर्षे ब्रजजाय
ब्रजबासिन भाये नहीं निदर्यौ हमैं बनाय
निघटगयौसबबारिएकबूंदपर्यौनहीं
यहअचरजअतिभारिकहतलगतलज्जाहमैं
यह सुनि चकित भयौ सुरराई॥ पुनि पुनि बूझत मेघ बुलाई

कहा भयौ परलै कौ पानी ॥ यह कछु ब्रज की वात न जानी ॥
सुरपति मन यह करत विचारा ॥ पर्वत में कोउ है अवतारा ॥
तब सुरेस दोउ देव बुलाये ॥ आज्ञा सुनत तुरत सब आये ॥
देवन आय सकल सिर नायौ ॥ कौन काज सुरराज बुलायौ ॥
तबही देवन सों सुरराई ॥ ब्रजवासिन की वात सुनाई ॥
बीते वर्ष देत हे पूजा ॥ सो अब देव कियौ उन दूजा ॥
मोहि मेटि पर्वत कौं थाप्यो ॥ ताते मैं अति रिस करि कोप्यो ॥
दिये प्रलय के मेघ पठाई ॥ आवहु ब्रज गिरि सहित वहाई ॥
तेव रखे परलै जरि जाई ॥ ब्रज मैं नीर न पहुंच्यो राई ॥
आये मेघ हार सब रोई ॥ कारन कहा कहौ सो मोई ॥
देवन कहेउ सुनो सुरईसा ॥ प्रगट्यो ब्रज महि ब्रह्म जगदीसा ॥

तुम जानत प्रभु भूमि जब दुखित पुकारी जाइ ।
कहेउ लेन अवतार तब सो विहरत ब्रज आइ ॥
कहै इन्द्र पछिताय मैं भूल्यो जान्यो नहीं ।
कीनी बहुत ढिठाय भय करि मन व्याकुल भयो ॥

मैं सुरपति जिनही कौं कीनो ॥ तिन आगे चाहूं वल लीनो ॥
रवि आगे खद्योत उजेरी ॥ तैसी बुद्धि भई है मेरी ॥
कीनी बहुतै मैं अधिकाई ॥ कहा करौं अब मन पछिताई ॥
सुरन कही सुनिये सुरराई ॥ ब्रजहि चलौ नाहिं आन उपाई ॥
हैं प्रभु दयाल करुणाकर ॥ क्षमा करैंगे श्री सुन्दर वर ॥
सुनि विचार कीनो सुरराजा ॥ यद्यपि वदन दिखावत लाजा ॥
तदपि वे स्वामी मैं दासा ॥ करिहैं कृपा अवश्य मो पासा ॥
अब नहि वनत रहै मुख गोई ॥ शरण गये अब होइ सो होई ॥
यह विचार मन मैं ठहराई ॥ चल्यो शरण सुर संग लिवाई ॥
कामधेनु को साथ सुहाई ॥ सोचत चल्यो ब्रजहि समुहाई ॥

यह दीनी मेरी ठकुराई॥ तुम मुहि जान न करी हिंवाई
कहा भयो जो मैं घ पठाये॥ मैं सब ब्रज के लोग पठाये
तुम कछु उर में सोच न आनौ॥ मैं तुमसौं कछु बुरौ न मानौ
भली करी ब्रज देखन आये॥ तुम मेरे मन में अति भाये॥
अपने मन को सोच मिटाई॥ देवन सहित करौ सुख जाई
सुनि हरि वचन देव मन हरषे॥ जै जै करि कुसुमांजलि वरषे
पुलकि अंग सुख गद् गद् बानी॥ कहत धन्य प्रभु जन सुखदानी
अगम अगोचर तुम्हारौ बानौ॥ यह लीला सब तुम ही जानौ
धन्य धन्य सब ब्रज के वासी॥ जिनके प्रेम बस अविनासी

प्रभु हि देखि अनकूल मम धीर कियो सुरराय
मेरौ त्रास उर तें तऊ बार बार पछिताय॥

कहत बार ही बार तुम मति आगनित है प्रभु
मैं भूल्यो संसार जान्यौ ब्रज अवतार नहिं

प्रभु आगे चाहौं मैं पूजा॥ मो ते मंद और को दूजा॥
अहो नाथ तुम प्रभु मैं दास॥ रवि आगे खद्योत प्रकाश
मेरौ गर्व किनक यह बात॥ कोटिन इन्द्र तुम्हारे गात
मैं अपराध कियो यह भारी॥ प्रभु राख्यो निज ओर निहारी
दीनबंधु तुम जन हितकारी॥ विरद [illegible] वेद पुकारी
कृपा करी प्रभु दरसन पायो॥ भयो सुखी तन पाप नसायो
ये दिन वृथा गये बिन काजा॥ तुम कौं नहिं जान्यो ब्रजराजा
धन्य धन्य प्रभु गिरवरधारी॥ भंजन विपत भक्त हितकारी
दैत्य दलन प्रभु भार उतारन॥ संत हेतु द्विज हित तन धारन
अब प्रभु [illegible] कृपा यह करिये॥ गिरि लै भार गिरि धरि [illegible]
[illegible] खारी॥ [illegible] रते गेउ तारे
सुरन सहित सुरराज अनंदे॥ कामधेनु लै प्रभु पद वंदे

छं० करत अस्तुति आइ करसुरधेनु आगे गसि कै॥
बंदि प्रभु पद सुख कि पुनि स्नान म गोविंद गसि कै
जै जै कृपाल मुकुन्द माधव कंज अगति स्याकरे
गोपपति प्रजीवनि चूनक रजन खेगि गिरिवर धरे
बासुदेव अज केश्य पुपातक सअरि सुर रंजने॥
हरण भव भय भार महि महि फणा विषमद गंजने
चकीति रणि वृन्द वत्सासुर बकासुर अघ कनरान॥
प्रति हितु अरिष्ट धेनुक असुर केशव विनाशने
चोर्यो माखन खात व्रज घर भंजित आनन्द प्रहरे
योगिजन जय तपन पावत धन्य व्रज जन सब करे
धन्य गोकुल धन्य यमुना धन्य व्रज वृंदावने॥
धन्य गोपी गोप यसुदा नंद गिरि गोवर्द्धने॥
फिरत चारत धेनु निज पद पद्म फणि अहिपति धरे
सकल सज्जन भक्त रंजन राम नित तन गुण भरे॥
जनक सुर सरि शिव सनक धरि ध्यान नहिं पाइ नित परी
परश्चित पद भयो पावन जौन जे जै हरी॥
दो० करि अस्तुति मन हरषि अंजलि पसौ रुक प्रभु पाय
है असर सुर धेनु सुत विदा कियो यदुराय॥
पुनि पुनि प्रभु पद वंदि सुरलोक हि सुरपति गमनौ
व्रजजन परमानंद थकित विलोकत स्याम तन
कहत गोप सब आपस माहीं॥ इन सम औरन जग मनोउ नाहीं
सात बरष को बालक जोई॥ ता हि इतो बल कैसे होई॥
है यह पारब्रह्म भगवाना॥ करत चरित्र देह धरि नाना
दैत्य कितेक कलक करि आये। ते सब इन कौतुक हि नसाये
इन्द्र मेटि गिरिवर हि मरायो। तामें निज स्वरूप प्रगटायो

इन्द्र प्रलय घन दिये पठाई ॥ सात दिवस ब्रज बरषे आई
अति विस्तार बडौ अति भारी ॥ लीनो गिरिवर नखपर धारी
एक बूंद ब्रज मैं नहिं आई ॥ लीने सब ब्रजलोग बचाई
हारमान सुरपति भय पाई ॥ आनि पर्यो चरणन सिरनाई
कामधेन देवन कौं ल्यायो ॥ ताहि अभय करि फेरि पठायो
अचरज बात जात नहिं बरनी ॥ मानुष सों यह होय न करनी
परे गोप हरि चरणन आई ॥ कहत धन्य तुम कुंवर कन्हाई

हम तुमको जाने नहीं हो तुम त्रिभुवन नाथ ॥
ब्रजबासिन सुख देन कौं ब्रज मे प्रगटे आय ॥
तुम करि लेत सहाय परत जहां संकट विकट
लीनो हमैं बचाय विष तें जल तें अनल तें ॥

करत विचार युवति सब ठाढी ॥ प्रेम उमंगि उर आनंद बाढी
कैसें गिरिवर लियो उठाई ॥ अति कोमल तन स्याम कन्हाई
लेत धरत जान्यौ नहिं काहू ॥ धन्य धन्य हरि कौ यह बाहू
सात दिवस परले जल ढार्यो ॥ इन्द्र पर्यो चरणन जब हार्यो
कहत सखा धनि धन्य गोपाल ॥ कैसें गिरि कर धर्यो विशाल
यह करतूति कहा तुम कैसे ॥ हम संग सदा रहत हो जैसें
गाय चरावत हौ मिलि हमसौं ॥ कितिक बल है बूझत तुमसौं
धाय चरण गहि जसुमति मैया ॥ मुख चूमति अरु लेत बलैया
अति अस्नेह नैन भरि पानी ॥ तन पुलकित सुख गद्गद बानी
कैसें कर जु धर्यो गिरि तात ॥ अति कोमल भुज तुमहिं लगात
विहसि मात सौं कहत कन्हैया ॥ तेरी सों सुनु जसुमति मैया
मैं न उठावत री श्रम पायौ ॥ नेक छियो उठि आप हि आयो

अब गिरि कौ पूजो बहुरि सब सों कहेउ कन्हाइ
बूडत तें राख्यो ब्रजहिं कीनो बहुत सहाइ ॥

निराहार निरजल दृढ़ नेमा ॥ नारायण पदपंकज नेमा ॥
और काज कछु मनहिं न लायो ॥ भजन करत सब दिवस बितायो ॥
निस जागरन करन विधि ठानी ॥ प्रभु मंदिर लीप्यो निज पानी ॥
पाट पर अति दिव्य दिवाये ॥ विविधि पुनीत सुगंध सिंचाये ॥
बांधी वंदन वार सुहाई ॥ सुमन सुगंध माल लटकाई ॥
चौक चारु बहु रंगन पूरो ॥ सिंहासन तहं राख्यो रूरो ॥
सालग्राम तहं नाम धराये ॥ भूषण बसन विचित्र बनाये ॥

धूप दीप नैवेद्य करि प्रभु पर पुहुप चढ़ाइ ॥
करी आरती प्रेम सों घंटा शंख बजाय ॥

प्रभु पद नायो माथ करि पर दक्षिण दंडवत
तुम त्रिभुवन के नाथ जोरि हाथ अस्तुति करी

आदर सहित करी नंद पूजा ॥ प्रेम भक्ति उर भाव न दूजा ॥
करत कीरतन भजन सप्रीती ॥ तीनि याम यामिन जब बीती ॥
तबहिं महरि नंदराय बुलाई ॥ कहेउ जसोमति सों समुझाई ॥
एक दंड द्वादसी सकारे ॥ पारन की विधि करो सवारे ॥
यह कहि नंद जसोमति पाहीं ॥ लै झारी धोती कर माहीं ॥
गये न्हान यमुना के तीरा ॥ संग नहीं कोउ तहां अहीरा ॥
झारी भरि यमुना जल लीनो ॥ बाहिर जाय देह कृत कीनो ॥
लै माटी कर चरण पखारी ॥ अति उत्तम सों करी मुरारी ॥
आचमन लै बैठे नंद पानी ॥ वरुण दूत जल बांजत जानी ॥
नंदहिं लै गये पकरि प[illegible]ला ॥ [illegible] च तत काला ॥
जान्यो वरुण [illegible] ॥ भयो हरष मन गुनय हवात
[illegible]नु घनस्यामा ॥ नंद लैन ऐहैं मम धामा ॥

भयो वरुण अति हर्ष मन पुनि पुनि पुलकित गात
नंद ल्याव न्हत्य मम भली भई यह बात ॥

यहसुनिहरषवढायवढ्यौगिरिपूजेसघन
आनिहर्षितनंदराय दियेदानविप्रनविपुल

अछतरोरीपानमिठाई॥पुहपहारदधिदूवसुहाई
जसुमतिरोहिणिअरुब्रजनारी॥साजिल्याईकंचनथारी
हरिकौतिलककियोदोउमात॥पुलकिप्रेमपरिपूरणगात
वहुवकद्रव्यनिछावरिकीनो॥भुजगहिल्यायकंठसोंलीनो
ब्रजतियहरिकौतिलकवनावें॥फूलमालगरमेंपहिरावें
इहिमिसअंगपरसकुसुखपावै॥निरषिवदनछविविविधधरिमन
होयहमारेपतिगिरधारी॥मनमोहनसुन्दरवनवारी
यहकामनासकलउरधारी॥हरिछविनिरषिरहींसुकुमारी
कहैनंदसोंसुतगिरिधारी॥सुनहुतातअवबातहमारी
गोवर्द्धनकोंकरोंप्रणामा॥चलियेअवसवनिजनिजधामा
यहसुनिसवनगिरिहिसिरनायो॥चलेब्रजहिमनहर्षवढायो
आयेसदनसकलब्रजवासी॥सहितस्यामसुन्दरसुषरासी

घरघरव्रजआनंदअतिगावतमंगलचार॥
आयेसुरपतिजीतहरिगिरिधरनंदकुमार॥
ब्रजमंगलब्रजमोदब्रजआभूषणगिरिधरन
निजनवकरतविनोदब्रजजनब्रजवासीदासहित

अथनंदएकादशीवर्णनलीला

इंद्रहिजीतस्यामघरआये॥व्रजघरघरआनंदवधाये
तादिननंदसमीभईसुहाई॥कातिकसुक्लएकादशिआई
भक्तिमुक्तिदायकअतिपावन॥पापश्रापसंतापनशावन
नंदएकादशिव्रजप्रतिपालैं॥वेदविदितसवधर्मसंभालैं
प्रथमहिदसमीसंजमकीनों॥वहुरिएकादशिकोव्रतलीनों

[illegible] मा॥ नारायणपदपंकज नेमा॥
और काज कछु मन नहिं लायो॥ भजन करत सब दिवस बितायो॥
निस जागरन करन विधि ठानी॥ प्रभु मंदिर लीप्यो निज पानी॥
पाटंबर अति दिव्य दिखाये॥ विविधि पुनीत सुगंध सिंचाये॥
बांधी वंदनवार सुहाई॥ सुमन सुगंध माल लटकाई॥
चौक चारु बहु रंगन पूरो॥ सिंहासन तहं राख्यो रूरो॥
सालग्राम तहं नाम धराये॥ भूषण वसन विचित्र बनाये॥

धूप दीप नैवेद्य करि प्रभु पर पुहुप चढ़ाइ॥
करि आरती प्रेम सों घंटा शंख बजाय॥
प्रभुपद नायो माथ करि परदक्षिण [illegible] ध्वन
तुम त्रिभुवन के ना[illegible] स्तुति [illegible]

आदर सहित करी नंद पूजा॥ प्रेमभक्ति उर भाव न दूजा॥
करत कीरतन भजन सप्रीती॥ तीनि याम यामिन जब बीती॥
तबहि महरि नंदराय बुलाई॥ कहेउ [illegible] समुझाई॥
एक दंड द्वादसी सकारे॥ पारन की विधि करो सवारे॥
यह कहि नंद जसोमति पाहीं॥ लै झारी धोती कर माहीं॥
गये न्हान यमुना के तीरा॥ संग नहीं कोउ तहां अहीरा॥
झारी भरि यमुना जल लीनो॥ बाहिर जाय देह कृत कीनो॥
लै माटी कर चरण पखारी॥ अति उत्तम सौं करी मुरारी॥
आचमन लै बैठे नंद पानी॥ वरुणदूत जल पांजत जानी॥
नंदहि लै गये पकरि प[illegible]ला॥ [illegible] वतकाला॥
जान्यो वरुण कृष्ण के ताता॥ भयो हरष मन गुनय हवाता॥
अंतरजामी प्र[illegible] घनस्यामा॥ नंद लैन ऐहैं मम धामा॥

भयो [illegible] नपुनि २ पुलकितगात
नंदहि ल्यावे नृत्य मम भली भई यह बात॥

जाहि धरत मुनि ध्यान विषम नेति जिहि गावहीं
सो प्रभु कृपा निधान ऐहैं धनि धनि भाग्य मम

हरष सहित नंदहि जदुराई ॥ भीतर महल न गये लिवाई
सादर विनय वचन बहु भाषे ॥ धीरज दैनी के नंद राखे ॥
रानी सवन नंद कौं देख्यौ ॥ जन्म सुफल अपनो करि लेख्यौ
कहतु कि धनि २ भाग हमारे ॥ नंद हमारे सदन पधारे
जिनके पति त्रैलोक गुसाईं ॥ सुर नर मुनि सबही के साईं
चितवत पंथ वरुण मन लाये ॥ करुणामय अब भावत भये
जसुमति सोच करति मन माहीं ॥ भई बेर आये नंद नाहीं ॥
खबर लेन तब ग्वाल पठाये ॥ यमुना तट नहिं नंदहि पाये
सारी धोती तट पर देखी ॥ भये सोच बस ग्वाल विशेषी
इत उत खोज ग्वाल फिरि आये ॥ कहत महरि सों नंद न पाये
सारी धोती तट पर पाई ॥ ॥ सुनत महरि सुख गयौ सुखाई
निसा अकेले प्रात सिधाये ॥ काहु जलचर धौं धरि खाये

अति व्याकुल जसुमति भई उठे रोइ अकुलाइ
सुनि धाये ब्रज लोग सब नंदहि खोजत जाइ ॥
यमुना तट वन गांव मह नंद टेरत सबै ॥
ढूंढि फिरे सब ठांव भये विकल ब्रज लोक सब

रोवत तबै हरि हलधर आये ॥ रोवत मात देखि दुख पाये
पूछत जननी सौं दोउ भैया ॥ कहति रोवति है जसुमति मैया
विलपि जसोमति वचन सुनाये ॥ यमुना तट कहूं नंद हिराये
यह सुनि हरि बोले सुन माता ॥ अबहीं आवत हैं नंद ताता ॥
मो सों कहि गये अब कहि आवन ॥ मत रोवे मैं जात बुलावन
प्रभु सरवज्ञ सकल के स्वामी ॥ अलप कल्प पक अंतरजामी
जाने नंद वरुण के धामा ॥ धरु पमानिठ विलोकि घनश्यामा

वरुणलोक हरि तुरत सिधाये॥ सुनत वरुण आतुर उठि धाये
देखत दरस परस सुख पायौ॥ चरण सरोज आय सिर नायौ
कहत आज धनि भाग हमारे॥ त्रिभुवनपति मम धाम पधारे
पांवड़ पांवड़े बिछाये॥ मङ्गल नवदन वार बंधाये
रत्नजड़ित सिंहासन धार्यौ॥ तापर सादर प्रभु बैठार्यौ
छं॰ बैठारि सादर प्रभुहि धोवत कमलपद निज कर गहे
जे पद सरोज मनोज अरि उर सदा परफुल्लित रहे॥
जे पद पद्म पद्मालया उर रहत नित भूषण किये
पाय ते पद जलजचलपति प्रेम परिपूरण हिये॥
दो॰ बिबिध भांति प्रभु पूजिकै वरुण कहे उगहि पाय
कृपासिंधु अति कृपा करि दरस दियो मोहि आय
मैं कीनो अपराध सो प्रभु उर नहिं आनिये॥
क्षमा समुद्र अगाध क्षमा करौ निज जाति जन॥
अनरक्षक जे दूत कृपाला॥ ले लै आय नंद यताला॥
यह कारज मैं उनकौं दीन्हौ॥ ते दूतन प्रभु नंदन चीन्हौ
यदपि कियो उन पातक भारी॥ हे वे सकल दंड अधिकारी॥
तदपि दूत वे मो मन भाये॥ जिन ते प्रभु के दरसन पाये
देखि नाथ प्रभु दरस तुम्हारा॥ मैं मान्यौ उनको उपकारा
अब प्रभु हम सब सरण तुम्हारी॥ राखि लेहु श्रीगिरिवरधारी
पायन परी आय सब रानी॥ वड़ भागनि आपनकौं जानी
सनिन सहित वरुण अनुरागे॥ अस्तुति करत जोरि कर आगे
धन्य नंद धनि धन्य जसोदा॥ धनि रे तुमहिं खिलावत गोदा
धनि ब्रज गोकुल के नरनारी॥ पूरण ब्रह्म जहां अवतारी
गुणातीत अव गति अविनाशी॥ ब्रजविहार विलसत सुखरासि
शेष सहस मुख वरनि न जाई॥ सहज रूप कौ करत बड़ाई

करिअस्तुतिगनिनसहितपुनिधरिपदसीस
लैप्रभुकौंनंदरायढिगतवहींगयोजलीस ॥
हरषिउठेनंदरायदेखिस्यामकौंचंद्रवदन ॥
लषिप्रभुकीप्रभुतायरहेसुदितचकृतचिते ॥
करतमनहिंमननंदविचारा ॥ यहकोउआहिवडौअवतारा
भयौनंदमनहर्षअपारा ॥ प्रभुकरतमोसदनविहारा
तवहिंकृपाकरिजनसुषदाई ॥ वरुणहिंजलदैरजधाई
जायनंदकौकरगहिलीनौ ॥ चलहुतातब्रजकौंहंसिदीनौ
करउप्रणामवरुणसुखपायौ ॥ नंदसहितब्रजहरिपुनिआये
नंदआयब्रजकौंतवदेख्यौ ॥ तवयहचरितसुप्रसौंलेख्यौ
देखिनंदकौंब्रजनरनारी ॥ गयौदुखसवभयेसुखारी ॥
बूझतनंदहिगोपसयाने ॥ कितहिंगयेतुमहमनहिंजाने
हारेखोजसकलब्रजवासी ॥ बढ्योबहुततुमबिनाउदासी
नंदमहरितवसवसौंभाख्यौ ॥ कालिहएकादशिव्रतमैंराख्यौ
आजद्वादशीथोरीजानी ॥ रैनिअछतगयौयमुनापानी
करिलैगयौयमुनजलमाहीं ॥ लैगयौवरुणदूतगहिपाहीं
वरुणलोकतेंजायकेंल्यायेमोहिंगोपाल ॥
येप्रगटेब्रजआयकोउउत्तमसुरूपविशाल ॥
महिमाकहीनजातकोटिभांतिकरनीवरुण
सांचकहतमैंवातइनकौंनरमतिजानियौ
भयौअधीनबहुतजलराई ॥ पर्यौचरणकमलनपरआई
पत्निनसहितधोयपदपूजे ॥ जानिजगतपतिभावनदूजे ॥
ब्रजनरनारिसुनतयहगाथा ॥ कहतभयेसवसकलसनाथा
जसुमतिसुनतसकलयहवानी ॥ कहतकहांयहअकथकहानी
प्रभुकीमायामेंअरुझानी ॥ कहतनंदसौंजसुमतिरानी

सोवर जन निसि न्हान सिधाये॥ कुशल परी पुन्यन तें आये
हरि कौ चूमि लियौ उर लाई ॥ ल्याये नंदहि खोज कन्हाई
विप्रन बोलि दियौ वहु दाना॥ घर घर वटी मिठाई थाना॥
गावत मंगल नारि सुहाई॥ बाजी नंद भवन सब धाई॥
नंद कहत है जसुमति बौरी॥ तुम्हव कतहि करत मन बौरी
जाको त्रिभुवन भीति सों ताता॥ ताहि सदा मंगल दिन राता
कह्यौ गर्ग मुनि वानी जोई॥ प्रगटत जात बात सब सोई

इनते समरथ और नहिं ये हैं सब के नाथ॥
ब्रजवासी आनंद सब सुनि सुनि हरि गुण गाथ
धनि धनि ब्रज नर नारि कहत हमारे भाग्य सब
हम संग करत विहार श्री वैकुंठ निवास हरि

अथ वैकुंठ दरसन लीला॥

कहत परस्पर सब ब्रजवासी॥ हरि हैं श्री वैकुंठ निवासी
सो वैकुंठ अहै धौं कैसा।+॥ जन्म मरण भय जहाँ न ऐसो
जाको वेद पुराण बखाने॥ हरि जहं बसत सदा सुख माने
जो हरि हमहि दिखावहि सोई। तौ वड भाग्य होय सब कोई
यह मनसा सबके मन आई॥ जानि लिये भक्तन सुखदाई
तबहिं कृपा करि सब ब्रज लोगा। पठ्ठचाये वैकुंठ विभोगा।
परम धाम जो वेदन गायो॥ दिव्य दृष्टि दै सबन दिखायो
देखत भूल रहे सब ग्वाला॥ पुर वैकुंठ अनूप विशाला॥
भूमि कनक मणि दुति छवि छाई॥ परम प्रकाश बरनि नजाई
बापी कूप तड़ाग अमीके ॥ विविध नगन बांधे तट नीके
रत्नन की सो पारा सुहाई॥ जहां देव मुनि रहत लुभाई
फूले कमल विपुल बहु रंगा॥ करत शब्द खग गुंजत भृंगा

कल्पवृक्ष के बाग घन सुमन सुगंध अपार
खग मृग सब तेजोमई दिव्य स्वरूप उदार
मंदिर वरनि न जाहिं चिंतामणि मैं खचित अव
जैसे ताहि लखाहिं जैसी जाकी भावना॥
सकल चतुर्भुज तहां के वासी॥ शुद्ध सतोगुण मय सुखराशी
रमा सहित तहँ प्रभु सुखसीला। शोभित नव जलदाम शरीरा
भूषण वसन दिव्य परकाशी॥ सुन्दर सकल रूप अविनासी
वदन प्रकाश हास सुखकारी॥ कोटि चंद्र कीजे बलिहारी
मणिन जटित सिर मुकुट बिराजे॥ भूषण वसन अनूपम राजे
दिव्य पारषद चवर डुलावैं॥ नारद तुंबरु गुणगण गावैं
चकित विलोकत सब ब्रजवाला॥ जान्यो प्रभु प्रभाव तिहिं काल
चार भुजा तहँ प्रभु हि निहारी॥ शंख चक्र गदा अंबुज धारी
दुभुज कान्ह को रूप न देख्यो॥ मुरली मुकुट पाणि नहिं पेख्यो
नाहिं मुकुट सिर मोरपखोवा॥ कटि काछनी न गुंजहारेवा
नहीं भेष नटवर गोपाला॥ भये विरह सब तब सकल बाल
ब्रजवासी सोई रूप उपासी॥ ता सुरूप बिन भये उदासी
दो॰ व्याकुल भे दृग सवन के देखन को तिहि काल
मोरपाख धर गुंज धर मुरलीधर गोपाल
ब्रजवासिन के ध्यान नटवर भेष गोपाल को
अमित रूप भगवान तदपि उपासन रूप यह
विरह विवस हरि निजजन जाने॥ तबही तुरत सकल अपनाने
कान्ह देखि सब भये सुखारी॥ रहे चकित शशिवदन निहारी
कहत सबै मन अचरज पाये॥ कहां गये हम कैसे पाये
देख्यो स्वप्न सबै इक बारा॥ किधौं साच यह करत विचारा
यह चरित्र सब मोहन करहीं॥ पुर वैकुंठ दिखायो हम कहँ

धन्य धन्य हम सब ब्रजवासी ॥ ब्रम्ह हमारे संग विलासी
हरि के चरण परे सब धाई ॥ करत भाव सब मुख न वड़ाई
हंसि २ सब सौं कहत कन्हाई ॥ रहे कहा तुम सकल भुलाई
आज कहा ऐसो तुम देख्यो ॥ सो किन मो सों कहत विशेख्यो
हम कह देखे नंद दुलारे ॥ तुम ही सकल दिखावन हारे
भूतल नाग पताल तुम्हारो ॥ सकल जगत तुम्हरो विस्तारो
यह सुनि स्याम मंद मुसकाई ॥ दिये सकल पुनि मोह भुलाई
करत चरित्र विचित्र प्रभु ब्रजवासिन के माहिं
लखि येश्वव ब्रम्हादि सुर मुनि जन मन हिं सिहाहिं
अति आनंद ब्रजलोग हरि के नित नव चरित लखि
सब कौं सब सुख योग ब्रजवासी प्रभु नंद सुत
सदा स्याम भक्तन सुखदाई ॥ भक्तन हित अवतार सदाई
संकट मैं जो नाम पुकारैं ॥ ॥ तहां प्रगटि तिनकौं निस्तारैं
सुख भीतर जिन सुमिरन कीनो ॥ तिनकौं तहां दरस हरि दीन्हौ
दुख सुख मैं जे हरि कौं ध्यावैं ॥ तिनकौं नेक न हरि बिसरावैं
देव दनुज खग मृग नर नारी ॥ भक्ति विवस सब तें गिरिधारी
चित दै भजे भाव जो जैसे ॥ ताकौं होत प्रगट हरि तैसें ॥
ब्रम्हा कीट आदि के स्वामी ॥ प्रभु हैं निरलोभी निहकामी
वेद पुराण साखि सब बोलैं ॥ भाव विवस सब के संग डोलैं
काम भाव ब्रज गोपिन ध्यायो ॥ मन वच क्रम हरि सों मन लायो
इक छिण हरि कौं नाहिं विसारैं ॥ भौन काज चित हरि सौं धारैं
गोरस लै निकसैं ब्रज माहीं ॥ जहां स्याम तिहिं मारग जाहीं
तिनके मन की प्रीति विचारी ॥ रीझि गोपीजन मन हारी ॥
नव सत साज सिंगार तन गोरस लै ब्रज नारि
बेचन इहि मग आवहीं मो सों प्रीति विचारि

अवइनसगविहारकरै दानदधिलाय कै
यह मनकियो विचार हरि ब्रजमोहनलाडले

अथ दान लील ॥

दधिको दानरच्यो इकलीला ॥ भक्तन की सुखदायक सील ॥
दधिदानी निजनाम धरायो ॥ ब्रजयुवतीगन सुख उपजायो ॥
स्यामसखन तब लियो बुलाई ॥ सबसों कहि यह बात सुनाई ॥
ब्रजयुवती नित गोरस ल्यावैं ॥ या मारग ह्वै वेचन आवैं ॥
तिन्हे रोकि जाय दान दधि लीजै ॥ गोरस खाय जान तब दीजै ॥
यह सुनि सखा उठे हरषाई ॥ भली बात तुम कान्ह सिखाई ॥
सबहिन मन भाति हर्ष बढ़ायो ॥ कहत स्याम दधि दान लगायो ॥
तबहि जाय घेरो वन पंथा ॥ आवति नित ग्वालनि जिहि पथ

कहेउ स्याम सब सों समुझाई॥ रहौ तरुन की ओट लुकाई॥
जबहीं ग्वालिनि दधि लै आवैं॥ घेर लेहु कोउ जान न पावैं॥
यह सुनि सखा घेर कै बाट॥ बैठे टाढ़ ब्रजन की ठाट॥
उतते बन बनि ग्वालिनि वेली॥ बेचन दधि हित चली अलवेली॥

हँसत परस्पर आपु मैं चली जाहिं जिय ओर॥
पाय घात मैं सखन सब घेर लई चहुँ ओर॥
देखि अचानक भीर चकित रही चहुँ दिस चितै
सहमी कछुक शरीर कितते आये ग्वाल सब

सकितन्ह ग्वालिन भई ठाढ़ी॥ मनहुं चित्र कैसी लिख काढ़ी॥
हाथ पाय अंग भये अडोले॥ कछु बदन तें वचन न बोले॥
तहँ हँसि ग्वालन दियो जनाई॥ मति डरपहु जिय कान्ह दुहाई॥
यह चोर ठग कोऊ नाहीं॥ अभै कान्ह कौ राज सदा हीं॥
आवत जात न भय कछु कीजै॥ दधि कौ दान लगै सो दीजै॥
नाम कान्ह कौ जब सुनि पायौ॥ तब युवतिन मन धीरज आयौ॥
बोलीं बिहँसि तबहिं ब्रजबाला॥ कहाँ तुम्हारे प्रभु नंदलाला॥
चोरी करि निहिं पेट भरायौ॥ अब बन में दधि दान लगायौ॥
तब अति बालक हते कन्हाई॥ कहौ जु कछु कौ न्हौ लरिकाई॥
होहु जो कछु वा धोखे माहीं॥ परि है समुझ अबहिं छिन माहीं॥
प्रगट भये तब कुंवर कन्हाई॥ देखि सबन बोले मुसकाई॥
रहिं युवती तुम पोच सदाई॥ करि आई हौ बहुत ढिठाई॥

तब तौ हम लरिका हुते सही बात अनजान
सो धोखौ अब मेटि कै छांड़ि देहु अभिमान
हम मांगत दधि दान तुम उलटी पलटी कहत
करत नंद की आन हिय भाइ हौ जान सब

तब बोलीं ग्वालिन मुसकाई॥ अब तुम डर हम तजी ढिठाई॥

नंदसौंकह यौंजान न देहौं॥ वृक्षरौं छोरि दहीसबलैहौं
काहेकौं गंठिलातकन्हाई॥ छांडि देहु मोहन लरिकाई
पहिलीपरपाटीचलौ नईचलौ कौंआज
जानिपायहौ कंसजौं तौपुनिह्वाइअकाज
हँसीघरी द्वे चारिवीतन लाग्यौयामयुग
वैनमै रोकौनारि वाढ़िजाय है वातपुनि
कहा कंसकोहमोहि सुनावौ॥ अवहीं वाकौ जायसुनावौ
लरिकाकहिर मोहिविखानत॥ मेरी लरिकाईनहिंजानवि
मारि पूतना स्वर्ग पठाई॥ तृणावर्तमाहिदियौ गिराई
वत्सावकाअघासुर मारयौ॥ गिरिगोवर्द्धन करपर धारयौ
ऐसीहैमेरी लरिकाई॥ ॥जानवूझतुम देत भुलाई
तुमहीं हँसी करति हौ ग्वारी॥ देखिदिखावत हौंहवियारी
वात जान कैं भाषत नाहीं॥ आपहि वैठी हौवन माहीं
चोरीसदा वेचदधि जाहू॥ विना दान क्यौं होतनिवाहू
अव तौ आज पकरि मैं पाई॥ सवदौसन कौलेडुचुकाई
सवै भलीतुम करी कन्हाई॥ वधे असुर सो सुनीवड़ाई
गिरिधारयौ वल खायहमारी॥ जानी हम सववाततुम्हारी
मांगि लेडु अवहु दधि खाहू॥ होत दानसुन्हिमकौ दाहू
हमैं कहत हौ चोरटी आप भये जो साहु
वडे [illegible] अव लूटत हौ राह
लेडु दहीवनि जाहु हमकौ होतअवारअव
लियेदानकौ नाउ एकवूंद नाहिं पायहौ
यह तुम मोकौं कहा सुनाई॥ दधिमाखनसव लेडुछिंड़ाई
जोवनरूप अंगजो तुमरौ॥ ताकौ दान लेउं गौसगरौ
[illegible]॥ [illegible]

सुनत ग्वालिनी के वचन बोली जसुमति मात
मैं जानी तुम सबन के उर अंतर की बात ॥
आप फिरत इतरात कहत स्याम ढीतर भयो
उरन लायन खवात उरहन कौ दौरी फिरत

दसहि बरष कौ कहा कन्हाई ॥ कहा तुम सब मातीं तरुनाई
दोष लगावति स्याम हि आनी ॥ कैसे धौं कहि आवति बानी
हरि पर फिरत सबै मडरानी ॥ योवन मद माती इतरानी
तुम कौ लाज लगति है नाहीं ॥ जाउ सबै बैठौ घर माहीं
अहो महरि ऐसी नहि कीजै ॥ बिन बूझे गारी नाहि दीजै ॥
सुत बैसी अग चलन न देहीं ॥ मांगत दान दध दधि लेहीं
तुम हू लीज करति सुख भारी ॥ ऐसे ब्रज मैं बसिहैं को री ॥
तजि हैं आज हि गांव तिहारौ ॥ बहुरि न सुनिहौ नाम हमारौ
ऐसे कह कहत डरपाई ॥ बसत नहीं किल अनत है जाई
मेरौ कहा कछु घट जै है ॥ झूठी बात नहीं कोउ सै है ॥
जोबन दिन द्वैस बहिन बौरी ॥ तुम बांधति आकास हि डोरी
मासौं कहति आप तुम जैसी ॥ को पतियाय चान खानि तैसी

बोलति नहीं सभार तुम सब मिलि भई गवार
ऐसी कैसे हरि करैं वृथा बढ़ावति रारि ॥
महरी सत्य ही रिस आय हम कूं बीभाखै नहीं
जो तुम नाहिं पतियाउ बूझन देखौ आन सौं ॥

तुम सुत के कर्मनि नहि जानौ ॥ हा हा करि टकुआयन जानौ
दस गायन की कहा बढ़ाई ॥ आहि रजात सब रुकहि आई
महा ढीठ हरि मानत नाहीं ॥ बन मैं ग्वार तमाह रनाहीं
सखा और संग लीन्हे डोले ॥ बन कुंजन मै करत कलोले
नेकु सकुच हू का नाहि आनै ॥ सोई करत जो कछु मन मानै

यहसुनिकहत नंदकीनारी॥कहतनेमनकीवातदुलारी

कहांवसततुमेकहांकन्हाई॥कवहेंरीवांहगहीवनजाई
कहतवातनहिनेकलजाहू॥सुनिहेंकहतिहारेनाहू
मेंएकान्हअवहिअतिवारो॥तुमनहिअपनीओरनिहारो
ऐसीवातकहतहौआई॥भूठीदोषसहेउनहिंजाई
नेकुनहींडरकरतदूसरकौ॥मनहूंभयोसुरीवरखवस कौ
धन्यधन्यतुमकहतिहौमोकौंआवतिलाज
माखनमांगतरोयहरिदोषदेतिविनकाज
सुनहुमहरितुमवातहमारीसीखेटोनाकछू
वनहितरुण हैजातवालकहैआवतघरहि
एकदिवसकिनदेखौजाई॥वनमेंतरुकीओटछिपाई
हैहरिदसकेवीसवरषकै॥देखहुअपनेनैननिरषिकै
जाहुथलीमेसवदेख्यो है॥एकएकदिनकरितरुवौ है
दसअरुवीसवातवनआई॥दौवलगावतिहैघरमाहीं
जरहिवरहियेआखतुम्हारी॥जोहरिकैनहिसकतिनिहारी
आपकरतढिगचाचरजाई॥मोकोसाखदिखावनआई
अहोमहरिकहियेकहतुमसो॥कहेविलगमानतिहोहमसों
सुतकीकानमानतुमलीनी॥गारीकोटिकहमकोदीनी
हमैंकहामोहनपियनाहीं॥जीवहुयुगरहौव्रजमाहीं
कहाकैजववहुतरिझावैं॥तवहमतुम्हैकहनदुषआवैं
भलोवाधहमकोतुमकीनो॥उलटिहिदोषहमारेदीनो
सुतकौहटकैतनेकनमाई॥हमहींसोरिसकरतसदाई
कहाकरौतुमआइसवकहतिपरपरीवात
मोकौयहभावैनहींतरुणतयहेसुतात

आवतहै हैं सवब्रज भामिन॥ घरघरतें दधि लै जगगामिन
हँसे सखासव तारि वजाई॥ मन मैं अति आनंद बढाई
कहत सवन सों हँसि नंदलाला॥ जायछुमन सब पकरो गुपाला
मुंह मूंदे सव रहौ छिपाने॥ जिहिं विधि युवतिन को अनजाने

व्रजही जानो युवति सव आई वनहि मैं नाइ
कृष्णसखौ तवहु मनते दय दय नंददुहाइ
पौरव शब्द पहराय कौ जे मुरली भृंग धुनि
उरन जाय अकुलाय जैसे युवती गण सवै

घेर सखन इहि विधि ठहराई॥ वहुरि तिन्है कहि रसमुसकाई
नितहि हमारे मारग आई॥ दधि माखन वेचत हैं जाई
हरि कौ दान भारि निज जावौ॥ आजु दिये विन जान न पावौ
ऐसें स्याम सखन समुझावत॥ अपने मन की प्रीति वढावत
व्रजवनितन लखि कै सुख पाउ॥ तुम ओंना हिन कछु दुराउ
इहिं मारग वेचन दधि आवैं॥ अंतरगति मो सों हित लावैं
आवति हैं हैं वन सव वाला॥ करत वात ऐसें नंदलाला
मातउठी सव गोप किशोरी॥ सवकी सुरति स्याम की ओरी
अंग अंग आभूषण साजे॥ केश संवारि वारह गभाजे
अंगिया अंग अनूप संवारी॥ चित्र विचित्र वसन तन धारी
वेंदी भाल मांग मोतिन की॥ अंग अंग छवि नग जोतिन की
दसन दमक अधरन अरुणाई॥ चिवुक नील कनकी छवि छाई

गोरे तन छवि सुभ्र सदन नव जोवन व्रजनारि
लै लै दधि निकसी सवै सुखमा वढी अपारि
जिन के पेंडे जाय भई ग्वालि इक ठौर सव
निज निज पूर्व वनाइ दधि मटुकी सिर पर धरे

वेचन दही चली व्रजनारी॥ सुंदर दस सहस गोपकुमारी

छत्र चवर सिर ऊपर राजै ॥ तजहु सुरति अवनी वति धाजै
हमहू यह लखिकै सुख लीजै ॥ संगहि संग काज कछु कीजै
मगरत कह्यौ दही के काजा ॥ [illegible] हौ लाज
ओछी वुद्धि तुम्हारी तीकी ॥ तुम्हरे चित रजधानी नीकी
मेरो दासन दास कहावै ॥ सपनेहू यह ताहि न भावै
कंस मारिकै छत्र धराऊं ॥ कहा तुसै यह साधु सुराऊं
ब्रज मैं मेरो राज सदाई ॥ और इहां काकी ठकुराई
तुम कछु राज वडो कै मानो ॥ मेरी प्रभुता कौं नहिं जानो
हमहू जानति हैं तुम्हैं नरिकाई तें कान्ह ॥
काहे कौं अप ने वदन की जत वहुत वखान
फिरत चरावत गाय कांधे कमरी कर लकुट
देखी यह ठकुराइ कतिवदि खातें करति
यह कमरी कमरी तुम जानौ ॥ जितनी वुद्धि तितनो अनुमानौ
या पर वारौं चीर पाटंवर ॥ तीनि लोक की यह आडंवर
ब्रम्हा भूल्यो जाय निहारी ॥ सो कमरी कत निंदत ग्वारी
कमरी के [illegible] री ॥ कमरी तें संतन उद्धारी ॥
या कमरी तें सव सुख भोगा ॥ जाति पांति यह [illegible] योगा ॥
सुनत हसी सव ब्रज की वाला ॥ यह तुम सांच कह्यौ गोपाला
धनि धनि यह कामरी तुम्हारी ॥ सव विधि तुम्हें निवाहनहारी
यहै ओढिकै गाय चरावौ ॥ यहै सेज कै भूमि विछावौ
याही तें वरषा जल [illegible] रौ ॥ शिशिर शीत याते निवारौ
याते ग्रीषम घाम वचावौ ॥ यहै उठकनी सीस वनावौ
यहै [illegible] ॥ यह सिखावति सव पै आई
यह जो कन [illegible] मसो ॥ कही सु तुम अपने मुख हमसे
करि राजा तुम अपन [illegible] रनी के हम सहाय

हाहा करि हम नहीं छुडाये॥ ग्वालन संग न वच्छ चराये
नहीं गाय तुम दुही हमारी॥ ये सव वृतियां रूठ तुमारी
भक्त न हित जन्मत जग माहीं॥ कर्म धर्म के मैं वस नाहीं
योग यज्ञ मन में नहिं ल्याऊं॥ दीन पुकार सुनत उठि धाऊं
भावाधीन रहौं सव पासा॥ और नहीं कछु मोकों त्रासा
ब्रम्हा कीट आदि के माहीं॥ व्यापक हौं समान सव ठाहीं

कहां कहां की वात कहि डरपावति हो नारि
स्वर्ग पताल हि एक करि वाधति वारहि वार
इही सुनावत काहि जो लायक तो आपु को
कौन प्रकृति यह आहि वन में रोकत हो तियन

केतिक दधि को दान कन्हाई॥ जेहि कारण युवती अरुझाई
दधि माखन सव ही तुम लेहू॥ रीती जान हमें घर देहू॥
जो तुम याही में सुख पावो॥ काहे को वह वात वनावो
दधि माखन कह करौ तिहारो॥ सकल वणिज को दान निवारो
जो जो वणिज नित हित तुम ल्यावो॥ लेखो करि सव मोहि चुकावो
अव ऐसे कैसे घर जैहो॥ ॥ जव लगि लेखो मुहि न वुझैहो
करति वणिज तुम नये वलाये॥ नित उठि जात जगात वचाये
सुनि वानी हरि नागर नट की॥ हैदेसेन युवति सव सटकी
मन ही मन अति हर्ष वढाई॥ वोली हरि सों सव मुसकाई
ऐसो कहौ वनज को अटके॥ अव लों श्याम कहां तुम भटके
हम न कहि मन मांझ लजाहीं॥ कह मांगत दधि दान कन्हाई
वणिज हेतु रोकी अव जानी॥ तव हीं क्यौं न कही यह वानी

दो॰ हंसि वोली ब्रज कुंवरि कहा वणिज हम पास
कहेउ श्याम सों नाम धरि देहि दान हम तास॥
भूले कहा कन्हाय ... वणिज युवती करत

दधिमाखन वौलेहौं छोरी ॥ उठिकर भुज गहि रुक्कोरी
तव पीतांवर रुटक्यौ प्यारी ॥ कहति भरातुम ढीठ मुरारी
हरिरिसकरि अंकहि गहिलीनी ॥ इहिमिसि भेंट प्रेमकी कीनी
टूटगई प्यारी उर माला ॥ तवघेरे युवतिन नंदलाला ॥
गहिरंक अंकम लेत सव रूगरत ौरसहि वढाइ
हंसत सखा सवतारदै पकरे गये कन्हाइ
हांक दई नंद लाल तवहि सखन रूलकार कै
धाय परे सव ग्वाल लीने स्याम छुडाय तव
रिस करि वोले ग्वाल सयाने ॥ भई ढीठ हरि कोनहिं जाने
हम भई ढीठ भलो तुम कीन्हो ॥ देहि ज्वाव दई कौ चीन्हो
वन भीतर रोंकी सव वाला ॥ देखो हमैं कियो जंजाला
वात कहन कौं तुम हूं आवत ॥ वडे सुधमी आप कहावत
ऐसी साख सभा की भरि सव ॥ आवहु गे न्हपजीत सवे तव
जानी वात तुम्हारी सव की ॥ तजहु ख्याल लरिकाई तवकी
जो युवतिन कौं हाथ लगे हौ ॥ कियो आपनो तो तुम पैहौ
जो यह वात घरन सुनि पैहैं ॥ मातपिता हमको कह कहि हैं
तोरयो मुक्ता हार कन्हाई ॥ घरहि कहा कहि हैं हम जाई
आपन भई सवै तुम भोरी ॥ हरिकौ दोष लगावति गोरी
जव तुम रूटकी पीत पिछौरी ॥ तवक्यन मोतिन की लर तोरी
मागत दान स्याम कव सेतो ॥ तुम आवि लान ज्वाव नहिं देती
लेहि छोरि सवते अवहि देखत ही रहि जाइ
रुकझोरा झोरी करति नंद नंदनहि डराइ ॥
को त्रिभुवन के माहि मोहन के सर दूसरो ॥
तुम सव जानति नाहिं नंद नवन व्रजराज सुत
कहा वडाई इनकौ सारिमें ॥ इनकौ जानति नीके झारे मैं

नृपति त्रास वसुदेव निकारे ॥ नंदजसोमति ने प्रतिपारे ॥
आये हैं सुभ घर के माहीं ॥ काहू वदत ना हि ते नाहीं ॥
पहिले जव उन भुजा रूकोरी ॥ तव हम रूटकी पीतपिछौरी
याते ढीठ कही तुम को हम ॥ स्यामहि सिरकन हार भये तुम
इतने पर मानत नहिं हारी ॥ तव ते हमें देत हौ गारी ॥
वहुत सही हम वात तुम्हारी ॥ वणिज करत अरू गारत भारी
ब्रज ऊपर मन मोहन दानी ॥ अवलौ तुम यह वात न जानी
वोलि उठे तव कुंवर कन्हाई ॥ अव नहि छोडहु नंद दुहाई
अव तो दान आपनो लै हौ ॥ तवही जान संवन को दैहौ
कौन वात यह कहत कन्हाई ॥ मागत कहा जान नहि जाई
फिर फिर करि करि नंद दुहाई ॥ डरपावति हो हमको जाई

डरपावहु तुम जाइ तिन्हे जो कोउ तुमहि डराहिं
याडरपावत कौन कों तुमतें घट हम नाहिं
लेहैं जसुमति पाहिं तोरयौ हार भली करी
यही वनत पै नाहिं इतनो धन कहां पाइहौ

एक हार मोहि कहा वतावौं ॥ सव अंग भूषण कहि दरसावौं
मोती माग जराऊ टीकौ ॥ करन फूल वेसर नग नीकौ
कंठ श्री दुलरी तिलरी गर ॥ तापर और हार जो चौसर ॥
सुभग हमेल किरीट बाजू ॥ कंकण पोंचिन मुंदरिन साजू
कटि किंकिणि नूपुर पग देखौ ॥ जेहौ किछि पाये सव लेखौ
शोभा साज पोर अंग माहीं ॥ सवको नाम लेत क्यों नाहीं
याहू मैं कछु वोट तुम्हारी ॥ अचरज आय सुनो री भारी
भूषण देखन सकत हमारे ॥ याही लिये भये घट वारे ॥
आपन हू कछु दई गढाई ॥ महरि जसोमति के नंदराई
आइ पहिरि जितो हम जाहीं ॥ यातें दूनो है घर माहीं ॥

देखि परत कछु बहुत भुलाने ॥ बनु धौं सूनौं लखि ललचाने
बाट कहा तौलौ सब मेरी ॥ जौलौ तुम नहिं दान निबेरी

आभूषण कौ कह कहत बहुत वस्तु तुम पास ॥
मानौं मैं जानत नहीं सो किन कहत प्रकास
लैहौ सब कौ दान समरु लेहिंगे बांटि पुनि
पैहौ तबही जान मैं तुम सौ सांची कहत

भये श्याम ऐसे रस नागर ॥ युवतिन में अब होत उजागर
कालहि गाय चरावत जाते ॥ छांकि मांगि ग्वालन संग खाते
कांधे कामरि लकुटी हाथा ॥ वन में फिरते वछरुन साथा
आज पीत पट कट कसियाये ॥ लै कर लकुटी वड़े कहाये ॥
भये कछू अब नवल सुजाना ॥ मांगत युवतिन सौं यह दाना
देहौ दान कि झगरति हो तुम ॥ बहुत तुम्हारी बात सुनी हम
प्रथम दान जंजाल निवारिये ॥ ता पाछे तुम हमहिं निवारिये
कहत कहा निदरे से हो तुम ॥ सहस हि वात कहति तुम सों हम
आदिहि ते तुम कौ पहिचाने ॥ दान कहा सो हम नहिं जाने
ग्वालनि चलीं सबै रिस कारि कारि ॥ दधि मटुकी माथे पर धरि धरि
तव हरि गहि अंवर झकझोरी ॥ जाति कहा हो गोरी वनजारी
इतनो बाणिज लिये मजाहू ॥ विना दान क्यों होत निवाहू ॥

नाम तुम्हारे बाणिज के सब मैं देउ बताय ॥
देउ दान तब मोहि तुम देखहु सब समुझाय ॥
सब क्यों छांड्यो जात एक होय तौ छोड़िये ॥
तुम विचार यह वात देखहु अपने चित्त मैं ॥

एती वस्तु लिये तुम जाऊ ॥ दान देति मेरी खिजराऊ
[illegible] तुम सौं ॥ कैसे दुरत दुराये हम सौं ॥
हंस मोर केहर मृग वारे ॥ ॥ कनक कलस मद रस सौं भारे

भ्रमर सुगंध कपोत कीर वर ॥ कोकिल विद्रुम [illegible] कुसुम सुर ॥
एगौ धन खग मृग तुम पाहीं ॥ कैसे निबहै दान जिन माहीं ॥
सुनि यह वचन कहत ब्रजबाला ॥ कहा बनावत बात सुनंदलाल ॥
तिनकौ नाम लेत बन माहीं ॥ जो हम सपने देख्यो नाहीं ॥
कहा तुम्हे हम जे हम पाये ॥ कब हम कंचन कलश भराये ॥
मान सरोवर हम रहहीं ॥ भ्रमर कुसुम सुक [illegible] कहहीं ॥
ये सब हम पै कहत अजानौ ॥ जहां होय वहां दान चुकावौ ॥
इतही सब तुम्हारे पाहीं ॥ करि विचार देखो मन माहीं ॥
अंग अंग सब अंग अंग निहारो ॥ तो इन रूप सो रहे हमारो ॥

कोरह्यौ निवेरो वेरा सब काहे करत अबेर ॥
कहौ तुम कछु हम कहै बहु कहु जाहु सबेर ॥
दीजे दान चुकाय अब जान्यो अपन्यो वणिज ॥
कहौ फेर समुझाय जो कछु भोरो होय चित ॥

भ्रमर चिकुर सु अलक सवारे ॥ सर कदास मृग दृग कजरारे ॥
कुच कपोत कोकिल बानी ॥ रद हीरा सुक नाक बखानी ॥
अधर सुधा विद्रुम भ्राजे ॥ है मयूर घूंघट मद माने ॥
कंचन कलश उरोज निहारो ॥ जोवन मद रस भरे विचारो ॥
कटि केहरी के रूप सुहाये ॥ हंस गयंद चाल दोय छाये ॥
सौरभ अंग सुगंध सुहायो ॥ जीवत रूप तज्यात बतायो ॥
इतनौ है सब वणिज तिहारौ ॥ होय अरस सो लेहु हमारौ ॥
कैहिके ये निबहोगी कैसे ॥ लैहौ दान देहुगी जैसे ॥
यह सुनि हंसि बोली ब्रजनारी ॥ अब समझी हम बात तुम्हारी ॥
मांगत ऐसो दान कन्हाई ॥ जान परी अब गति तरुणाई ॥
याही लालच फंद भरत हो ॥ सुनि पुनि मोहि अचरज गत है ॥
अपनी ओर देखतो लीजे ॥ ता पाछे बरियाई कीजे ॥

बाधेऊखलजबहिंजसोदा॥ हमहिंकुटाय लियेतबगोद॥
अबभयेबडेबढीचतुराई॥ तातेजोबनदान सुनाई॥
लरकाईकीबात बखाने॥ कैसीभईकहा हम जाने॥
कबधौं खायोमाखनचोरी॥ भैयाधौंबांधे कबडोरी॥
नेकहु ताकी सुधिनहिंजाने॥ मानअमानन नबहमआने॥
भूलेसुरेकोज्ञान न होई॥ आपनोपरकछु समरुनकोई॥
खेलत खातहरषहीमाहीं॥ बालपने के दिवस विहाहीं॥

दो॰ अमेनी सुरतकरतनहीं न्हातियमुनकेतीर
कदमचढाये सवनके जब मे भूषण चीर॥
जलमेंरही रूपाय बिना वसन नागी सबे
सुनिपुनिहाह करय दिये बसन मे सवनतब

विनावसन बाहरसबआई॥ हाथजोरि सबविनयसुनाई॥
कैसीभांतिभईतब सबकी॥ सो सुधिभूलिगईसबतबकी॥
मोकोंकहतिचोरिदधिखायौ॥ उखलसौं हमजायछुड़ायौ॥
भेदवचनजब कहे बिहारी॥ सुनिके हँसि सकुची ब्रजनारी॥
कहतभयेअति निलजकन्हाई॥ऐसी कहतनसकुचत राई॥
जाइ घुलेलोगन के आगे॥ झूठी बातबनावन लागे॥
करतहसीतुम सबनसुनाई॥ निजनिजगृहसबकोहिंआई॥
झूठीबातकहा हम जाने॥ हमतौसाची सदा बखाने॥
जैसी भांति भयेमोहिकोई॥ मानत मैं ताकौंतेसोई॥
जोझूंठी मोकौंतुम जानो॥ तौकिमरौहितबप ठानौ॥
जोतुमअपने मनमें ठानी॥ मैंअंतरजामी सबजानी॥
अबकौ इतौनिदुरमनकीनी॥ काहेदानजातनहिंदीनी॥
दानसुने रिसि होतिहै यहनाहिंहमहिंसुहाइ
भलीबुरीअबजोकहौसोसहिलेहिंकन्हाइ

छाँडि देऊ सब जाहि सुनिये मोहनलाल सुव
भई वैर वनमाहि मात पिता पिज हैं हमैं॥
काहे कौं तुम करति अवारी॥ दधि बेंचहु वन जाहि सवारी
मैं कहुकरों तुम्हें यह भावत॥ लेखो करि सब दाव चुकावत
सुद्ध सुभाव समुझ सब कोई॥ लेखो करि देहौं सुहि जोई
तव सोई तुम सौं मैं लेले हौं॥ तवही तुम्हें जान पुनि देहौं
काहे कौं हम सौं हरि लागत॥ जान न परत कहा तुम मागत
वात न कछू जनावत नाहीं॥ लेखो कहा करत हम पाहीं
निपटहि परे हमारे ख्याला॥ इन वातन कह पावत लाला
अब तुम निपट करी वहुताई॥ सुनि हँसि हैं ब्रज लोग लुगाई
मारग जिन रोकौ हम पाहीं॥ घरतें लीजो दान उगाही॥
अवलौं यह कियौ तुम लेखौ॥ हम तुमरौ विचार सब देखौ
मोकों ऐसी वात सिखावत॥ कर कंकण दरपन हि दिखावत
तुम्हरी बुद्धि दान हम लैहैं॥ काहे न जान तुम्हें हम दैहैं॥
आप भई हौ चतुर सब मोकों करति गँवारि॥
उगहत फिरि हैं दान हम ठाढे कई है द्वार॥
तुम्हैं देउ घर जान फेरि कहौं पाऊं कहा॥
नामें पैहों दान नृप पहि ज्वाव कहा देउ गो॥
भली भई नृप मान्यौ तुमहं॥ चलि हैं कंस हि पै हम तुमहं
तवतें लेन कहत हैं दानहि॥ नंद महरि की कानि न आनहि
हमहूं अवलौं ऐसी जानी॥ भये स्याम घर ही से दानी॥
अव जाने तुम कंस पठाये॥ नृप तें दान पहरि तुम आये
सुनि हरि ये गोपिन के वैना॥ हँसे कछुक तिरछे करि नैना
सो छवि निरखि कहति ब्रज नारी॥ कहा हँसे मुख मारि मुरारी
सोई कहौ मन दिहि जो आई॥ तुमको जसुमति नंद दुहाई

और सो हृतुम को गोधन की ॥ साची बात कहो तुम मन की
हँसे कह्यो हम सो कछु रीस ॥ कैधौं कछु मन ह्वै मन खीजे
यह सुनि अधिक हँसे गोपाला ॥ कहें श्री दामा सो नंदलाला
यह अचरज इनकी तुम हेरो ॥ कहति कह्यो तुम हो सुत केरो
ऐसी बातन सौं हूं दिवावत ॥ ताने अधिक हँसी मोहि आवत

तव हो श्रीदामा तियन सो वोल उठे उमुसकाय
हँसति स्याम तुम समझि के वृ मति सो हृ दिवाय
हम न दिवावें आन हँसहू तुम कहूं निज सगभांति
यह है आनसी वात थोरे में खिसियात तुम ॥

सहजसहत नाहिन सकुचैये ॥ नाहिन लोगन सो हृदिवैये
वे हैं दानी प्रभु सवही के ॥ देहु दान मांगत कवही के
हम जानत वे कुंवर कन्हाई ॥ प्रभु तुम्ह रे सुख अव सुनि पाई
होति नहीं प्रभुता यह भांती ॥ दहो मही के भये जगाती
वे ठकुर तुम्हरी शिव काई ॥ जाने प्रभु परु सव प्रभुताई
दधि खायो अरु भूषण तोरे ॥ छाडि दहु अव दई निहोरे
जो कछु वच्यो सो अव लीजे ॥ क्यौं हू जान हमें घर दीजे
तव हँसि वोले स्याम सुजान ॥ तुम घर जाहु देय के दान ॥
आयो हौं पठयो मैं जाकौं ॥ देउं कहां लै कै पुनि ताकौं
अव ही पठवै मोहि वुलाई ॥ तव ताके सन्मुख को जाई
तुम सुख करौ जाइ घर माहीं ॥ नृप की गारि मार को खाई
जव नृप वर मो को अटकावे ॥ तव पुनि तुम विन कौन छुड़ावे

लेत नाम सुख नृपति को आसुख निदर्यो जाइ
अपुन तौ नृप नृपनि के अव कहु ठसु रे ताहि
त्रिलोकस को नाम ऐसी तुम हि न वूझिये ॥
भल स्याम वलि जाव जो हिन दिये ते हि सदिये

जव हम कंस दुहाई दीन्ही॥ तवतो नृपपर ञनिरिसकीन्ह
ञवे कहा नृपको सुधि ञाई॥ जो तुम ऐसे डरे कन्हाई॥
कहा कहेउ कछु जानन पायौ॥ कव हम कंसहि सीस नवायौ॥
कव हम नाम कंसकौ लीनौ॥ कंसत्रास कवधौं हम कीनौ॥
निपट भई तूं ग्वारि गंवारी॥ वसत हमारे गांव मंझारी॥
कितक कंस जाकौं हम मानें॥ कहा त्रास ताकौ उर ञानें॥
तुम्हरे मनें वात यह ञावत॥ कंस नृपतिकें हम कहवावत॥
तौ तुम कहौ कौन नृप जाके॥ ञापुन कहवावत हौ ताके॥
ताकौ नाम हमहू सुनि पावें॥ हम हू पुनि ताके कहवावें॥
यह संसार लोक नृप माहीं॥ दूजो कंस नृपति तें नाहीं॥
सो नृप वसत कहां सो उ जानें॥ तौ हम सव ताही कौं मानें॥
यह सुनि हम ञवञति डर पायौ॥ केधौं कंठहि हमहि डरायौ॥

जा नृप के हम हैं ञरीञे [illegible] तताहि
जड़ चेतन नर नारि सव तिहूं भुवन वसजाहि
वसत सुमन पुर माहिं कहं लगि तिन्हें प्रसंसिये
सव मानत हैं ताहि तिन पठयो मोहि पानहै

सुनत गूढ़ मोहनकी वानी॥ वोली व्रजसुन्दरी सयानी॥
जोति तुम्हारे नृपकी पाई॥ ञवलौं रखी कहां छपाई॥
जैसे तुम तैसेऊ वे हैं॥ ॥ एक रूप गुण के दोऊ हैं॥
यह ञनुमान कियो मन मोहन॥ एकै दिन दोऊ जन्मे तुम॥
जैसी प्रजा तैसेई राजा॥ ॥ वन्यौ भल्यौ ञव संग समाज॥
चोरी ठगी निपुण गुण दोऊ॥ या पटतरको ञौर न कोऊ॥
वोलत नाहिन वात संभारी॥ ठगति फिरति गोपिनी तुम्हारी॥
भई ढीठ नाहिं नेक विचारौ॥ ञावत मुखसोई कहि डारौ॥
ञपने गुण ञौर नपर डारी॥ जाति जनावति है हैं गारी॥

हम भई ठगिनी अरु बटमारी॥ तुम भये कान्ह सुधर्मी भा
अपने नृप कौं येह सुनावौ॥ ऐसे यचु गहौ जाय सुनाव
राजा बड़े जान यह पाई॥ त्यावहु हम पर धौस चढ़ाई
तुम तौ ठग अरु छके वनेवन में रौ की नारि॥
हमैं कहौ काकौं ठग्यौ को हम डारौ मारि
तुमहीं जानत स्याम येंत्र मंत्र टोना ठगी
ठगत फिरत सब वाम आपन ढंग औसन कहत
मौन गहौ वातें सब पाई॥ यहे जानि हम पर चढ़ि आई
जो चाहौ सोई कहि डारौ॥ हम नाहिं माने किंयु तिहारे
तुम मोहीं कौं दोष लगावौ॥ मैं तौ नृप कौ पठयौ आवौ॥
जोवन रूप लिये तुम इतहीं॥ आवति हौ इहि मारग नितहीं
सो वन दूतन जाय सुनायौ॥ तब नृप रिस करि मोहि बुलायौ
सो सब महलन तें नृप राई॥ वैठौ सिंहासन तरु णाई॥
तुरत हि मोहि दान पहिरायौ॥ दैवी रा तुम पास पठायौ
तिनकौ नाम अनंग भुवाल॥ उनकौं दान देउ ब्रज बाल
तिनकौ आन कहत हौ कीने॥ पैहौं जान दान के दीने॥
सुनि यह मोहन के मुख वानी॥ प्रेम सिंधु युवती मगनानी
काम नृपति कौ फिरी दुहाई॥ झटके उ जोवन रूपहि भई
को हम कहां रहति कह आई॥ यह सुधि वुधि तन दशा भुलाई
त्रसत भई डर मदन के नैंन मूंदि धरि ध्यान
कहत कान्ह भव शरण हम जो जे सरवस दान
ऐसें कहि मनमाहिं देह दसा भूली सवै॥
लेहु स्याम वलि जाहिं यह धन तुम हित सचियौ
जोवन रूप नाहिं तुम लायक॥ सकुचति तुम्है देति ब्रजनायक
नवल किशोर रूप गुण आगर॥ हम स्याम सुन्दर घर वागर

यह जोवन धन तुम ढिग ऐसें॥ जलधि निकट जलकणिका जैसे
ध्यान मगन ह्वै हि विधि ब्रजनारी॥ मनही मन [illegible] हारी
अंतरजामी हरि सब जाने॥ मनही की करनी पहिचाने
मनही सबन मिले सुखदाई॥ तन की सुरति सबन तब आई
खुल गये नैन ध्यान ते तबही॥ देखे मोहन सन्मुख सबही
तब जान्यो हम बन में ठाढी॥ सकुच गई अति अचरज बाढी
कहति परस्पर आप समाही॥ कहा हती हम जान न जाहीं
स्याम बिना यह चरित करै [illegible]॥ ऐसी बिधि करि मनहि हरै को
रही चकित सी सब ब्रजनारी॥ बोल उठे तब कुंज विहारी॥
कहा ठगी सी हौ ब्रजबाला॥ पर्यो कहा उर सोच बिशाला

करौ दान लेख्यो कछू रही जहां तहं सोच॥
प्रगट सुनावो सो हमैं दूर करो सब सोच॥
बडरिन रोके कोय या मग मैं कोऊ तुम्हैं॥
निसि बासर भय खोय सुख सौं आवहु जाहु नित

हमैं और रोकै सो को है॥ रोकन हार सुवन नंद को है
टोना डारत सीस हमारे॥ आप रहत ठाढे ह्वै न्यारे॥
जाके काम नृपति को जोरा॥ ठगत फिरत युवतिन बरजोरा
सुनत स्याम बूझिय नहिं ऐसी॥ तुमको बान परी यह कैसी
कैसेहू अब कृपा करो हरि॥ जाहि सबै अपने अपने घरि
दान मान घर को सब जाहु॥ बडरिन मेरो कोगो काहू॥
मैं हू जानत हौं कछु लेखो॥ तुमहू आप समुझि मन देखो
पिछलो देहु निबेर आज सब॥ आगे पुनि दीजो जानो जब
अब मैं भली कहत हौं तुमको॥ जो मानो ग्वालिनि तुम हमको
को जाने हरि चरित तुम्हारे॥ [illegible] वर नंद दुलारे
हमरो सर्बस मन अपनायो॥ अजहू दान नहीं तुम पायो

लेखौ करि लीजो मन भायौ॥ खाऊ कछू दधि हम सुखपाए
भव माखन लायक तुम्हें सखन सहित मिलिखाऊ
सुख पावै हम देखिके लीजे दान उगाहि॥
अब दधि दानी नाउं तुम्हरौ प्रगट वखानहीं
खाऊ दही वलिजाउं ल्याई हम तुम्हरे लिये
तव हरि हंसि सव सखन वुलाई॥ वैठे रचि मंडली सुहाई
दोनो वहुत पलास के ल्याये॥ शोभित सवके करन सुहाए
सुन्दर हरि सुन्दर सव ग्वाला॥ सुन्दर दधि परसत व्रजवाला
भक्त भाव के हाथ विकाने॥ ग्वालन संग खात रुचि माने
निज मटुकिन ते लै सव ग्वारी॥ देति करति उर आनंद भारी
स्याम यतूखिन सौं सुख नावै॥ निरखि २ ग्वालिनि सुख पावै
धन्य २ आपुन कों जान्यौ॥ सुफल जन्म सवहून करि मान्यौ
कहति धन्य यह दधि अरु माखन॥ खात कान्ह जाकौं अभिलाषन
जो हम साध करत ही मन मे॥ सो सुख पायो हरि संग वन मे
अपति आनंद मगन सव ग्वारे॥ नंदनंदन पर तन मन वारे॥
प्यारी सो माखन हरि मागत॥ देखें तुम्हरो कैसौ लागत
औरन कीमटुकी को खायो॥ तुम्हरे दधि को स्वाद न पायो
श्रीवृषभानिकुंवारि लख दधि ल्याई मुसकाय
अपने कर अधरन परस दीनौ विहंसि खवाय
प्यारी कौ दधि खाय भल पुचिनै मोहन विहंसि
मधुरे कह्यौ सुनाय मीठो है यह सवन तें॥
गोपिन के हित माखन खाहीं॥ प्रेम विवस नाहिं नेक अघाहीं
वैसिय गोरस भरी कमोरी॥ परसत सवै होत नहि थोरी
ग्वालन सहित स्याम दधि खाहीं॥ परम हर्ष सवके मन माहीं
हसन परस्पर सखा सयानी॥ मीठो कहि २ स्वाद वखाने

हरिहँसि सबके चितहि चुरावै॥ परमानंद सबन उपजावै।
विलसत व्रजविलास सब बारी॥ दधिदानी प्रभु कुंज बिहारी॥
सुरगण तियन सहित नभ माहीं॥ निरषि २ मन माहिं सिहाहीं॥
धनि २ ब्रज की युवति सभागी॥ खात ब्रह्म जिनतें दधि मांगी॥
जा कारण शिव ध्यान लगावै॥ शेष सहस मुख जाकौं गावै॥
मन बुधि वचन अगोचर जोई॥ जाको पार न पावै कोई॥
नारदादि जाके गुण गावै॥ निगम नेति करि अंत न पावै॥
गुणातीत अविगति अविनासी॥ सो प्रभु ब्रज मैं प्रगट विलासी॥
छं॰ प्रगट सो प्रभु ब्रज विलासी जाहि मुनिजन ध्यावहीं॥
योग जप तप नेम संयम करि समाधि लगावहीं॥
रूप रेख न वरण जाके आदि अंत न पाइयै॥
भक्त बस सो ब्रम्ह पूरण गोप वल्लभ गाइयै॥
कोटि कोटि ब्रम्हांड जाके रोम प्रति श्रुति गावहीं॥
कीट ब्रम्ह प्रयंत जल थल आप सब उपजावहीं॥
आप करता आप हरता आप ही पालन करै॥
खात सो प्रभु दान दधि लै गोपिकन के मन हरै॥
धन्य ब्रज धनि गोप गोपी धन्य मन पावन महीं॥
धन्य मोहन दान मांगत दूध नित माखन मही॥
धन्य ब्रज इक पलक कौ सुष और यह त्रिभुवन नहीं॥
कहत सुर मुनि हरषि पुनि २ सुमन सुन्दर बरषहीं॥
कान्ह गोपी ग्वाल द्वै नहिं एक ही बहु तन धरै॥
भक्त जन हित विरद जाको अमित लीला विस्तरै॥
ब्रज विलास हुलास हरि कौ नित्य निगमागम कहै॥
दास ब्रजवासी सदा यह गाय आनंद पद लहै॥
दो॰ दान चरित गोपाल कौ ज्ञान विचित्र रसखान॥

वेद भेद पावै नहीं कवि किमि सकै बखान
गावत सुनत सुजान दधिदानी लीला रुचिर
प्रेमभक्ति को दान ब्रजवासी जन पावहीं ॥

ब्रजललना वै हरिहिं सुनावैं ॥ दूधदही माखन भरल्यावैं
मटकिन तें लैलै हम देहीं ॥ खाहु स्याम तुम हम सुख लेहीं
गोरस बहुत हमारे घरघर ॥ लीजै दान पाछिलो भरिभरि
बहुतै गोरस जो तुम खायौ ॥ सोयौ दान आजु को पायौ
लेहु सबै अपनो करि लेखौ ॥ फिरत पाइहौ मागे मेरो
स्याम कहौ अब भई हमारी ॥ मनहिं भई परतीति कुमारी
प्रीति भई हम सो तुम सो अब ॥ लै हैं मांगि चाहि हैं जब तब
निधरक अब वेचहु दधि जाई ॥ घाट बाट कछु डर नहिं पाई
ग्वालिनि भई स्याम बस माहीं ॥ घर कौं जात बनत है नाहीं
चकित रही सब ब्रज की नारी ॥ कहत एक सों एक विचारी
सुनौं सखी मोहन कहा कीनो ॥ दान लियौ कै मन हरि लीनो
यह तो हमनहिं बड़ो सयानो ॥ बूझौ धों इन सौं यह बानी
बूझनि कों उमगी सबै मोहन सों यह बात ॥
निकट जात रहि जात पुनि सकुच मगन हुइ जात
मनहीं मन सकुचात कहिये कैसे स्याम सों ॥
कहत बनत नहिं बात प्रेम विवस तरुणी सबै

सुनो बात मोहन इक हमसों ॥ ढीठौ बहुत कियौ हम तुमसों
छमा करौ सो चूक हमारी ॥ अहो स्याम हम दासि तिहारी
हंसि हंसि कही कहा इक हमबानी ॥ तुम हिं रिझावत हित मनमानी
कछु हम सौं डर सो नाहीं ॥ ॥ अति आनंद बुन सों मनमाहीं
दधि को दान और जो जान्यौ ॥ सबै तुम्हारो कर हम मान्यौ
करौ स्याम तुम यह कह कीनौ ॥ दान लियौ कै मन हरि लीनौ ॥

हम तुम तें कछु भेद न राख्यौ ॥ कीनौ सबै तुम्हारौ भाख्यौ ॥
यह करनी तुमही अब जानौ ॥ भली बुरी जौ करी कछु मानौ ॥
जो जासौं अंतर नहिं राखै ॥ सो तासों कछु अंतर भाखै ॥
नंदनंदन तुम अंतरजामी ॥ वेद उपनिषद सारि बखानी ॥
सुनहु बात युवती सब मेरी ॥ तुम हित कारि राखौ मोहि घेरी ॥
तुमसों दूर होत मैं नाहीं ॥ रहत तुम्हारे निकट सदाहीं ॥

तुम कारण वैकुंठ तजि प्रगटत हौ ब्रज आय ॥
वृंदावन तुम्हरो मिलन यह न बिसारयो जाय ॥
एक प्राण द्वै देह अंतर कहू न जानि हौं ॥
यह न कह्यो अब नेह करत भूतल ब्रजवास करि

अब घर जाउ हाल मैं पायौ ॥ जानत यह तेरयौ निरदायौ ॥
हँसि हँसि जो भाषत बनवारी ॥ कहन लगीं सब ब्रज की नारी
परत न मनहि बिना कौ जाई ॥ करत कहा मोहन चतुराई ॥
सब तन पर मन नहीं है राजा ॥ जो कछु करै होइ सो काजा ॥
सो तौ मन राख्यौ तुम गोई ॥ घर कौ जान कौन बिधि होई
इंद्री गण मन के आधीना ॥ चलत नहीं पग मनहि बिहीना
जो तुम प्रीति करी मन मोहन ॥ तौ दुविधा क्यौं लाई गोहन
यह तौ तुम जानौ ब्रजनाथा ॥ घर हम जाहिं देह मत साथा ॥
मन भीतर मैं सबै मनायौ ॥ तुमही लै मोहि तहाँ छिपायौ
कहत कहा वह दोष तुम्हारी ॥ अजहू तजहु हठ मैं न्यारी
यह अपनो मन तें घर जाहीं ॥ लोकलाज डर जा पछताहीं
तौ अब हमैं छोडि किन देहु ॥ हम कौ है अंतर निज गेहु

तातें घटती होय निज तजि दीजे सो बात ॥
दीनौ मन मैं वास तब अब मन को पछतात
जब मन दीनो मोहि तुमही लीनौ मोहि हरि

जो न स्नेह मन रखो हि तो मैं हू पै हौं अनत ॥
सुनहु स्याम ऐसी नहि कहिये ॥ सदा हमारे मन मे रहिये ॥
तुमहीं विना धिक मन सुख स्वपन ॥ तुम बिन धिक कुल [illegible]
धिक तुम प्रेम विना पितु माता ॥ तुमहिं विहीन धिक सुत पति भ्राता ॥
धिक जीवन तुम बिन संसार ॥ धिक सुख तुम बिन नंदकुमार ॥
धिक रसना तुम गुण नहिं गावै ॥ धिक स्रुति तुम्हरी कथा न भावै ॥
धिक लोचन जिन तुम न निहारे ॥ धिक विचार जो तुम न विचारे ॥
धिक दिन रात तुम्हें बिन जाई ॥ धिक स्वामी तुम बिना विहाई ॥
सो सब धिक जामे तुम नाहीं ॥ तन मन धन तुम बिना वृथाहीं ॥
ऐसे कहि तन दसा विसारी ॥ भई स्नेह मगन सब प्यारी ॥
कबहू धरत न जान विचारे ॥ कबहू हरि की ओर निहारे ॥
दधि भाजन लै सिर पर धारे ॥ कतहू धरणी फेर उतारे ॥
रीती मटुकिन में कछु नाहीं ॥ कबहूं विचारि रहति मन माहीं ॥

विहसि कहेउ तब सांवरे जाहु घरा नि ब्रज नारि
सकुचत पितु लोगन को मैं लैहौं निरवारि ॥
ऐसे वचन सुनाय सखन सहित हरि घर गये
लैगे चित्त चुराय युवतिन दान मनाय कै

अथ गोपिन के प्रेम की उन्मत्त अवस्था लीला

रीती मटुकी सिर पर धारी ॥ चली सबै उठि गोपकुमारी ॥
एक एक की सुधि कछु नाहीं ॥ जानति नहीं कहां हम जाहीं ॥
जड़ चेतन कछु नहि पहिचानें ॥ वन गृह कछू विचार न आनें ॥
लोक वेद में इंदा दोऊ ॥ ॥ आप सहित भूलो सब कोई ॥
बेचत दधि वन ही मैं डोलैं ॥ लेहु दही कबहू कहि बोलैं ॥
कहत तुम मन मोसन क्यौ नाहीं ॥ लेहे दधि कै हम [illegible]

तरुतरु सों पूछति इहि भांती ॥ बन अफिरत प्रेम रस मांती
मिलत परस्पर विवस निहारी ॥ क [illegible] नमें वारी
तिन्है कहति आपनी सुधि नाहीं ॥ सो कछु नहि समुझत मन माहीं
दधि भाजन रीते सिर धारें ॥ भरी प्रेम तन दसा विसारें ॥
कबहूं यमुना के तट जाहीं ॥ फिरत कबहूं कुंजन के माहीं
कबहूं बंसी वट तर आवें ॥ गई अहू नह हरिहि बुलावें

लीजै गोरस दान हरि कहूं धौ रहे छिपाइ ॥
डरनि तुम्हारे जात नहिं तुम दधि लेत छिपाइ
लेहु आपुनो दान पुनि रिस करि उठि धाइहैं
हमें न दैहै जान बन में हम साढ़ी सबै ॥ ॥

बैठि गई मटकी धरि तबहीं ॥ जानति घर में आई अवहीं
सखा संग लीने हरि ऐहैं ॥ दधि माखन को दान चुकैहैं
दधिहि दुरावति अंतर तरिकै ॥ दीठ गई मटुकिन में परिकै
रीती मटुकी सबन निहारी ॥ गई हरी उर में सब नारी ॥
जहं तहं कहत उठी सब ग्वाली ॥ गोरस हरि कै गयौ कहं आली
कोउ रकहति कान्ह ढरकायौ ॥ कोउ कहै सखन संग हरि खायौ
भई सुरत कछु तब तन माहीं ॥ गई घरहि हम तब ते नाहीं
सकुच भई कछु गुरुजन डरतें ॥ आनहि ते आई हम घरतें ॥
रही कहां तब ते बन माहीं ॥ यह तौ सुरत हमें कछु नाहीं
जब हरि सखन संग [illegible] घिराई ॥ गये बहुरि बन कुंवर कन्हाई
तबलौ कितउ सुधि हम पाई ॥ भई कहा [illegible] न जानति नाई ॥
जा [illegible] को यह तौरी ॥ [illegible] र गये सिर स्याम ठगौरी ॥

स्याम बिना यह को करै लायौ दधि को दान
तन सुधि भूली तबहि ते बाकी मृदु मुसकानि
मन हरि लीनो स्याम ता बिन बिन है कौन विधि

ऐसे कहि सब धाम भर की ज्ञान विचार हो ।
मन हरि सों तन धरहि पठावै । ज्यों गज मस्त चलन न पावै ॥
स्याम रूप रस मद सो भास्यो । कुल मर्याद महज्व तहु रस्यो ॥
करि सनेह पंथन सो तोस्यो । सुरेन लाज कुल की मोस्यो ॥
गुरुजन अंकुश की सुधि सावै । तब तन घर को पांव चलावै ॥
ऐसे गई सदन ब्रजबाला । नहि भावत लगे तिन लाल ॥
घूरत गुरुजन जब कछु तिनसों । भोरे बान बनावति तिनसे ॥
गारी देत सुनत नहिं कोऊ । श्रवणपुट हरि पूरे दोऊ ॥
मात पिता बहु त्रास दिखावै । नेकन ही सो उर मे ल्यावै ॥
बारंबार जनी बिसरु रावति । काहे को तुम हम हि लजावति ॥
जहां तहां काहे तुम जावो । नहि अपनी कुल कानि चलावो ॥
दधि बेचो घर सुधे आवो । काहे इतनी विलम लगावो ॥
बूरू ज्याव देति तुम नाहीं । बसी कहा तुमरे मन माहीं ॥
ऐसे सिखवत मातुपितु सो न करति कछु कानि ।
लागत है तिन ले बचन उर में बान समान ॥
तिन्है कहत मन माहि धक धक अपनी सुद्धि को ।
जिन्है स्याम प्रिय नाहिं तिन्है वने त्यागे भले ॥
जिन को हरि की प्रीति न भावै । तिन को सुख जिनि विधि दिखरावै ॥
ऐसे विनय करति विधि माहीं । गुरुजन को निंदत मन माहीं ॥
नेक नहीं घर मों मन लागत । विसरत स्याम न सोवत जागत ॥
नैन स्याम दरसन रस अटके । श्रवन बचन रस ते नहि सटके ॥
रसना स्याम बिना नहिं बोले । मन चंचल संग हि संग डोले ॥
तासों अंग सुगंध लुभानो । सुरत स्याम के रूप समानी ॥
चरन चलत त्यारत दिसतेही । जिहि दिसि सुन्दर स्याम सनेही ॥
लोक लाज कुल कान वहाई । रंगी स्याम के रंग सुहाई ॥

प्रातचली दधि लै व्रज माहीं ॥ [illegible]ग तामन वुधि वस नाहीं
तन लै निकसी वेंचन गोरस ॥ रसना मैं अटक्यौ हरि कौ जस
दधि कौ नाम भूलि गई वाला ॥ कहति लेउ कोउ गोपाला ॥
भीज रहेउ मन मोहन के रस ॥ व्यापि गई उर माहिं दसा दस

फंसी सबै खग वृंद ज्यौं हरि छवि लटकन जाल
तरफराति तामैं परी निकसि सकति नहिं वाल
वोलति मुखनि संभारि पान किये जिमि वारुणी
विथुरी अलक लिलार पग डगमग जित तित परै

दधि वेंचति व्रज वीथिनि डोलैं ॥ अलवल वचन वदन तें वोलैं
गोरस लेन वुलावत कोई ॥ तिनकी वात सुनत नहिं कोई
क्षण कछु चेत करत मन माहीं ॥ गोरस लेत आज कोउ नाहीं
वोल उठति पुनि लेउ गुपालहि ॥ अटकि रह्यो मन वाही ख्याल
लेउ लेउ कोई वनमाली ॥ ग्वालिन यों वोलति वानी ॥
कोउ कहै स्याम कृष्ण वनवारी ॥ कोउ कहै लाल गोवर्धनधारी
कोउ कहै उटनि दान हरि लायौ ॥ कोउ कहै कितु महि चलायौ
देह गेह की सुरति विसारौं ॥ फिरति सीस मटकी दधि धारौं
जाहि देह की सुधि कछु होई ॥ दधि को नाम लेति सब सोई
इहि विधि वेंचत सब दधि डोलैं ॥ आप विकानी विन ही मोलै
स्याम विना कछु और न भावै ॥ कोउ कितनो कहि समुझावै
तेरे दरसन हित भई भोरी ॥ अंतर लगी [illegible]

प्रगटेउ पूरण नेह उर जित देखें तित स्याम
समुझाई समुझै नहीं सिख [illegible]
ज्यौं दीपक घर माहिं वाहिर नहिं देख्यो परै
[illegible] होत सो नाहिं [illegible]

इहि विधि मगन सकल व्रज नारी ॥ [illegible]

सकल प्रेम की मूरति पूरी ॥ कोऊ तिनमें नाहिं अधूरी ॥
एक सदा सब ही को मानो ॥ कहँ लगि तिनको प्रेम बखानो ॥
तिनमें श्रीवृषभानुदुलारी ॥ सकल सिरोमनि हरि की प्यारी ॥
नेक नहीं हरि तोसों न्यारी ॥ तिनकी कथा कहत विस्तारी ॥
दधि भाजन माथे पर धारैं ॥ लेहु स्याम कहि वचन उचारैं ॥
वूझति तिन्हें और व्रज नारी ॥ वेचत कहा फिरत तू प्यारी ॥
प्रातहि वेचीने दधि डोलै ॥ मुखतें नाम कान्ह को बोलै ॥
कहा करत यह हमें बतावो ॥ कछु हम को निज बात सुनावो ॥
उफनत चख आँसू वृत अंगमाहीं ॥ ताकी सुरति तोहि कछु नाहीं ॥
इतते इन उत ते उत जाई ॥ सुधि मर्यादा सबै मिटाई ॥
मैं जानी यह बात बनाई ॥ तेरो मन हरि लियो कन्हाई ॥

तिन्हें कहत मोहि नेंकुधर कहहु सुदेहु बताइ
जहां बसत वह सांवरो मोहन कुंवर कन्हाइ
है धौं याही गांव कै धौं कहूं अंतर बसत ॥
कान्ह रजा को नांव मैं खोजत वाको फिरैं

वह कहत उतसों हौं मैं आई ॥ मोहिं देउ नंद सदन बताई ॥
नंदहि के द्वारे पर ठाढ़ी ॥ वूझत आनि सबन ताबाढ़ी ॥
लोक लाज कुल की सुधि नासी ॥ मन बँध गयो प्रेम की फांसी ॥
तव इक सखी परम हितकारी ॥ हरि की प्यारी की अति प्यारी ॥
प्यारी कौं निज ढिग बैठाई ॥ सिखा वचन कहन समझाई ॥
सखी राधिका कुंवर सयानी ॥ क्यों ऐसी अब भई अयानी ॥
ऐसो प्रगट प्रेम नहिं कीजे ॥ देखि विचार धीर उर दीजे ॥
हँसिहैं लखि सब व्रज की नारी ॥ एक हि वार लाज तैं डारी ॥
ऐसे केस फिरत वित त्यागी ॥ मात पिता गुरुजन हूं भागी ॥
मो पै कृष्ण प्रेम धन पैये ॥ राखिय गुप्त न प्रगट जनैये ॥

ऐसी तोहि बूझियै नाहीं ॥ ... अपने मन माहीं
अजहूं चेत बात सुन मेरी ॥ कहत कुंवर तेरे हित केरी

कृष्ण प्रेम धन पाइ कै प्रगट न कीजे वाल
रखियै उर यौं गोय कै ज्यौं मणि राखत व्याल
तूं अनि नागरि नारि पायौ नागर नेह ज्यौं
नौक तदेति उघारि कहि है तोहि गंवार सव

मैं जो कहति सुनति कै नाहीं ॥ दै है ज्वाव कछु मो पाहीं
कहति वचन कि मौन ही रै है ॥ घर अपने जैहै कि न जैहै
लोगन मुख सुनि है पितु मात ॥ व्रज मैं प्रगटी है यह वात
मानेगी मम वचन की नाहीं ॥ कै फिरि है ऐसे हि व्रज माहीं
ज्यों ये प्रीति स्याम सों जोरी ॥ लाज किये हू है कहा थोरी
ध्यान स्याम को धरु उर माहीं ॥ लाज छांडि कत भ्रमत वृथा हीं
मुख तौ खोलि सुनौ तुम वानी ॥ कैसी कहति करै कछु जानी
कहा कहत मो सों तुम आली ॥ मन मेरो लीनौ वनमाली
तव तें मो कों कछु न सुहाई ॥ जिन देखौ तिन कुंवर कन्हाई
अव लौं नाहिं जानत मैं को हौं ॥ कहा कहत है अव तू मो हौं
कहा गेह को पितु अरु माता ॥ कहो दुरजव को गुरुजन भ्रात
कहा लाज कह कान वडाई ॥ तू कह कहत कहां तें आई

वारवार तू कहत कहा मैं नाहिं समझति वात
मेरे मन मैं धरि कियौ वात सुमति के तात ॥
रहत न मेरी आन अप... सी मैं कर थकी
तू तौ वडी सुजान कहा देत सखि मोहि अव

मेरे हाथ नहीं मन मेरो ॥ ॥ सुनै कौन सखि वसि खन तेरो
इंद्री गण मन की अनुगामी ॥ सव इंद्रिन कौ मन यह स्वामी
सो मन हरि लीनो व्रजनाथ ॥ इंद्री गई सवै मन साथ ॥

सकुज गहीवहिंयो तुमभेरी॥ मैं हँसि तनकवस्न तन हेरी
तादिन तें गृह मारग जित तित॥ करत चवाव सकल ब्रजजन नित
यही कहैं ब्रज मैं सब कोऊ॥ राधाकृष्ण एक है दोऊ॥
यह सुनि वर गुरुजन दुष पावे॥ कटुक वचन कहि मोहि सुनावे
निकसन द्वार जब हितुम आई॥ रहत सबै तब देषि लुगाई॥
निंदत तुमको मोहि सुनाई॥ सो मोपे हरि सह्यो न जाई
कहत मनहिं सबको तजदीजे॥ इन बिमुखन को संग न कीजे

धृक ए ते नर नारि हरि जिन्हे न तुम पद प्रेम
हितकरि तुम जाने नहीं कहा निवाहे नेम
मैं लीनी इग नेम सुन हु स्याम सुन्दर सुखद
तुम पद पंकज प्रेम यहै मतिब्रत पारिहौं

हरि तुम बिन कासो अब कहिये॥ ब्रजबसि काके बोलन सहिये
तातें बिनय करति तुम पाहीं॥ वा पैंडे तुम आवहु नाहीं
जो आवे तौ मोहि न जनावो॥ मुरली धुनि मोकों न सुनावो
मुरली धुनि सुनि क्षुन हु कन्हाई॥ बिन देखें मो हि रहे उ न जाई
प्रेमाकुल सुनि प्रियकी बानी बोले बिहँसि स्याम सुषदानी
सांच कहत ब्रज के नर नारी॥ तुम मोते नेकहु न हिं न्यारी॥
कहन देहु गुरुजन कहु आने॥ वे अपने सब सुरत भुलाने
प्रकृति पुरुष एकै हम दोऊ॥ तुम मोतें कछु भिन्न न कोऊ
उभय देह लीला हित बानी॥ घट है भेद नहीं कछु पानी
जल थल जहां तहां तन धारे॥ तुम तज कहूं रहत न हिं न्यारे
देह धरे को यहै बिचारा॥ मानिये कुल कुटुंब ब्यवहारा
लोक लाज गृह छाडि न दीजे॥ मात पिता गुरुजन डर कीजे

प्रीति पुरातन गोरि उर जाहु प्रिया अब धाम
प्रगट न कीजे बात यह कहत बिहँसि के स्याम

हंसति कहति के धौं सरित्यानी॥ तेरी सौं मैं कछु न जानी॥
कहा कहेउ मोहि वड़ी सुनावै॥ तोहि सौं हू मेरी जु दुरावै॥
कबहू कछु भाव यह पायौ॥ नैदेख्यौ कै किनहू सुनायौ॥
ऐसी कहत और जो कोऊ॥ सुनती मोपै उतर न सोऊ॥
वूझति मोहि लगावति ताही॥ सपनेहु मैं देखेहु नाहिं जाही॥
ऐसी मोहि कहौ जिनि कोई॥ वूझी वातनि पर दुष होई॥
उचटाये पै है कछु मोसों॥ वहुरि नहीं वोलौं गी तोसौं॥
तातें और काहि हितु पैहौं॥ जाते हित की वात जनै हौं॥
यह परतीति न तोकौं होई। मैं राखति तोसों कहु गोई॥
चतुर सखी मन मैं जब जानी॥ मो तोसों कछु नाहि छिपानी॥
त्रास भई याके मन माहीं॥ तातें वात कहत यह नाहीं॥
तव यह कह्यौ हंसत मैं तोसों॥ जिन मन मैं दुख माने मोसों॥
मानौ तेरी वात अब कहतु कहा वे स्याम॥
हम कहूं उन्हें जाने नहीं वसत कौन धौं गाम
हम आगे कोऊ नाहि भई सयानी लाडली॥
हंसति कह्यौ घर जाहि तेनहि हरि कबहू लये
सकुच सहित वृषभान दुलारी॥ गई सदन गुरुजन डर भारी॥
जननी कहति कहां हती प्यारी॥ डोलति फिरति अजहूं लौं गारी
घर तोहि तनक देखियत ना॥ [illegible] जात [illegible] कहूं नाहीं
स्याम संग वैठत है जाई॥ आज तोहि धिरवत है भाई॥
काहे कौं उपहास करावति॥ दोधहि वैष सवै किन आवति
वृथा करति भैया रिस मोसों॥ [illegible] री तोसों॥
ऐसी को वहि गई विधाता॥ स्याम संग सुनि हैं सुनि माता॥
कौनें वात कही यह तोसों॥ ताको नाम लेहि किन मोसों
वचा भ्रात धनि धनि तू भाई॥ ऐसी वात कहति मोहि लाई

तू पर घर खेलन कत जाई ॥ मैं वरजति नहिं नेकु डराई ॥
स्यामा स्याम सकल ब्रज माहीं ॥ फिरहे ता संग लगति सुहाई ॥
वड़े महरि की सुता कहावति ॥ काहे कौं पितु मात लजावति ॥

खेलन कों मैं जाउं नाहिं कहा कहति री मात ॥
मोपै जाति सही नहीं यह आंखों हीं घात ॥
घर घर खेलन जात गोपन की सब लाडिली
तू मोहीं सिखयात तिनके मात पिता नहीं

मनहीं मन समुझत महतारी ॥ अवहीं तो मेरी है वारी ॥
कहा भयो तन वाढ़ भई है ॥ लरिकाई अवहीं ने गई है ॥
झूठहि वात उड़ी यह सारी ॥ स्यामा स्याम कहत नर नारी ॥
खेलत देखि कहत सब कोऊ ॥ अवहीं तो वालक हैं दोऊ ॥
सुनत सुता मुख रिस की वानी ॥ मनहीं मन कीरति मुसकानी ॥
लै वगहि उर लाई पुचकारी ॥ परमोधति उर सो रिस टारी ॥
खेलहु संग लरिकिनिन माहीं ॥ खेलन कों मैं वरजति नाहीं ॥
स्याम संग सुनि होत हसारी ॥ झूठहि लोग लगावति गारी ॥
जातें कुल कों दूषण होई ॥ सुन प्यारी कीजै नहिं सोई ॥
अव राधा तूं भई सयानी ॥ मेरी सीख लेहि जिय जानी ॥
जननी के मुख की सुनि वानी ॥ श्रीवृषभान सुता मुसकानी ॥
मन मन विनय करति हरि पाहीं ॥ सुनहु स्याम तुम सब घट माहीं ॥

मात पिता जानत नहीं लोक लाज कुल कान
नहिं जानत तुम कों सुखद जगत ईश भगवान
लेत तुम्हारी नाउं सकुचत हौं इनके निकट
यह है समुझ पछितात तुम विमुखन मैं कौ परयो

तुम मोहि कहेउ कानि कुल एखो ॥ क्यों विष खाय सुधा नहिं चाखों ॥
जिन पायो तुम पद दृढ़ नेमा ॥ कैसे तिन सों निवहत प्रेमा ॥

अहो स्याम मैं मन क्रम वानी॥ नाथ तिहारे हाँथ बिकानी॥
ऐसे कृस्न हृदय मैं आनी॥ बोली जननी सों हँसि बानी॥
तू अब कहति कहा मोंकोंरी॥ अकथ वात है मा कछु तोरी॥
अब हरि संग न खेलों जाई॥ जा कारण तू मोहि सुनाई॥
आवत देवा वा घर माहीं॥ यह सब वात कहौं उन पाहीं॥
देति गारि मोहि स्याम लगा॥ ऐसे लायक भये कन्हाई॥
रोके मोकों काल्ह गली मैं॥ सखिन संग मैं जाति चली मैं॥
लागे कहन वँसुरिया मेरी॥ तूं लै गई चुराइ सो देरी॥ ॥
छवआठे मोसों है जिन सों॥ मोहि लगावति है तूं तिनसों॥
सुनि सुनि कै राधा की वानी॥ मुखनिरखत जननी मुसकानी॥
कहति मनहिं मन अबहिलौं नहीं गई लरिकाइ॥
वारेही के ढंग सबै अपनी टेक चलाय॥ ॥
अब जैहे मचिलाइ कापै जाय मनाय पुनि॥
हार मान रहि माय बालक बुधि जियजानि कै॥
बोलि उठी हँसि कै दुलराई॥ पुनि पुनि कहि मेरी सि हाई॥
कंठ लगाइ लई अति हित सों॥ रही चकित सोभा लखि चितसैं॥
चतुर सिरोमणि हरि की प्यारी॥ परम चतुर वृषभान दुलारी॥
वात नहीं माता वहराई॥ ॥ नीके राखि लई चतुराई॥
कृस्न प्रेम धन पाय छिपायो॥ संग सखी तिन हूं न जनायो॥
जैसे कृपण महा धन पावे॥ धरत दुराय न प्रगट जनावे॥
सखी मिली जो मारग माहीं॥ कहे उ जाय तिन सखियन पाहीं॥
सुनहु सखी राधा की वातें॥ कैसी आज करीं उन घातें॥
वृंदा वनतें अबहीं आई॥ हर्षि सहित मैं लखि सग पाई॥
औरै भाव अंग छवि छाई॥ सामुहि मिली भई मन माई॥
मोको देखत ही हँसि दीनो॥ मैं हू हर्ष मनहिं मन कीनो॥

जव मैं कही मिले हरि तोसो ॥ तवरसिक मिफेरयो सुख मोसों
मोसों तवलागीक हन कोहरि काकौ नाँव ॥
कैगोरे कै साँवरे वसत कौनसे गाँव ॥ ॥
मैं तौ जानति नाहिं लेति नाम तू कौन को ॥
लखेन सपनहूँ माहिं सौंय कहति कै हँसति मुरि ॥
ऐसे कहि टेढ़ी करि भौहैं ॥ चितई नेकु न मो तन सौहैं ॥
वह्नि नृपरक है सकुच गई री ॥ औरकहौं तौ करत खई री ॥
तव मैं यह कहि घर पवई री ॥ मैं कुंगी ते साँची भई री ॥
देखु एक भये घन जाई ॥ ॥ हमहू मों यह वात दुराई ॥
घर थौं जाय कहा खव केहै ॥ कैसी धौंतह वहि उपजे है
सुनि कै वात सखी मुसकानी ॥ प्यारि हि देखन का अतुरानी
कहति सवै जवही हम जैहै ॥ तवहीं जीय प्रगट करि देहैं ॥
कहा रहै यह वात छिपानी ॥ दूध दूध पानी सो पानी ॥
ग्वारिनि देखत ही लख जैहै ॥ कैसे हम सो वात छिपै है ॥
आपनों भेद नहीं वह कैहै ॥ सुनि हौ कैसे गाल वजै हैं ॥
तुमहू चरिक जाय तुम वाकी ॥ राधा कुँवरि नाम है जाकी ॥
मैं वूझौं करि वहु चतुराई ॥ नेकहु पाइ न वाकी पाई ॥
सखे गुरु की सुधि पही वह काहून पत्याय ॥
एकी वात न मानि है सौसौ सौंहे खाय ॥
यों ही सब पछिताय सुनत वचन था के वदन
भवजैहै रिस पाय वातन वैर वढ़ाय है ॥
कहा वैर हमसन वह करिहै ॥ वातन कैसे हमहि निदरिहै
औरन सौं जाकसि न दानी ॥ सो हमहू जानी तो सयानी
ताको जानि भले हम पाई ॥ हमहीं सों यह वात चुराई
परिहै जव मेरे फंद आई ॥ दूर करौं वाकी लँगराई ॥

जोनहिं हमसे भेद कहैगी ॥ तौपुनि कैसें कै निव हैगी ॥
हम सौं वैर किये कह पैहै ॥ वृद्धारी लिये मटुकी सिर वैहै
चलो सबै देखें घर ताकौ ॥ है निधरक कै धौं डर वाकौ ॥
बूझै वात कहा धौं कैहै ॥ हम सौं मिलि है कै दुरजैहैं
रिसकरि है कै धौं हसि वोलै ॥ वातछिपावै कै धौं खोलै ॥
सहजसुभाव किधौं गरवानी ॥ यह कहि चलीं अलीसवस्यानी
गई निकट राधे के जवहीं ॥ जानि गई नागरि मन तवहीं
ए सव मोपर रिस करि आई ॥ तव इक मन में वुद्धि उपाई

काहू कौं कीनों नहीं आदर करि चतुराइ ॥
मौन गही वोलत नहीं वैठि रही निठुराय ॥
लखि सब सखी सुजान वैठ गई ढिंग आपई
औरै वात वखान आपस में लागी करन ॥

राधा चतुर चतुर सब आली ॥ चतुर चतुर की भेट निराली
उनतो गही मौन निठुराई ॥ इन लखि लई तासु चतुराई
मुहीं चहीं आपुस में कीन्ही ॥ याकी वात सबै हम चीन्ही
कहा भेद हमसों यह भाषै ॥ उलटे हमहीं पर रिस राखै ॥
बूझ इन्हें हित खुनटकरि वोई ॥ कहा आज इन मौन लयोई ॥
हमसों कहा ओट इन लीनी ॥ सार सई हमहीं करि दीनी
एक सखी तब विहसि सुनायो ॥ कहौ मौनव्रत किन सिखरायो
धनि वह गुरु मंत्र जिन दीनो ॥ कानलगत ही ऐसो कीनो
कालिह और परभाते औरै ॥ अभै भई कछु और की औरै
सुनि यह वात सबै हम धाई ॥ चकित भई देखन तुहिं आई
कहा मौन कौ फल अब कहिये ॥ सुने कछु तौ हमहू गहिये
इक संग भई सबै तरुणाई ॥ मंत्र लियो तो हमन वलाई
अव तुमही कौ हम करैं गुरु देउ उपदेस ॥

हमहूं एखे मौनव्रज करैं तुम्हें आदेश ॥
हम कौं कियौ अजान चतुरभई तूलाडिली
कहां सिख्यौ यह ज्ञान ऐसी विधिलागीकरन
रहत एक संग हम तुम प्यारी ॥ अपजहि पटक भई तू न्यारी
कहा भयो किन तोहि सिखाई ॥ नई रीति यह कहा चलाई
हम तो तेरे हित की करिये ॥ औरकहे तासो सब लरिये ॥
सुनतिकुवरिसिखियनकीवानी ॥ ठोली करत सवे यह जानी
गुणआगर नागरी सयानी ॥ वोली सकल निठुरई वानी
तुम प्रीतम के वैरनि मेरी ॥ वूझति तुम्हें कहों सखि हेरी
वाको कहति जु गेल मिली री ॥ नहीं कही उन मोहि भली री
कहेउ मोहि तुम स्याम मिले री ॥ मैं चकि रही सो हूं मुहिं तेरी
मेरे संग कछु वि औरवताई ॥ तब मैं भई बहुत दुष हाई ॥
जिनकों मै सपने नहिं जानों ॥ फिर फिर तिन की वात वखानो
मेरी कुछ दुराव है तुमसो ॥ तुमहीं कहो सखी सब हमसो
कहा रहति मै कहो कन्हाई ॥ घर घर करत चवावु लुगाई
और कहे तो मोहि कछु नहि व्यापे मन माहिं
तुमहीं कही जो वात यह तो दुष हाइ किन गाहि
तुम पर रिस मोगात तनातें आदर नहि कियो
सुनु प्यारी की वात रही सवे सुख तन चिते
वोली एक सखी तिन माही ॥ हम तो तोहि कहे कछु नाही
ताही पर होती रिस हाई ॥ जिन यह तोसो वात चलाई
प्रथमहिं हमें प्रगट यह केरती ॥ हमहू ताही सो सकलरती
क्यों सखि प्यारिय दोषलगावे ॥ झूठी वात न वैर वढावे
तेरे स्याम कहों इन देखे ॥ काहे को सपने हूं पेखे
भेद हि भेद कहत सव वाते ॥ दै दै सैन करत सव घाते

प्यारी सब के मन की जानै ॥ सब सों रूखे वचन बखानै
कौन कौन को मुख सखि गहिये ॥ जाकों जो भावै सो कहिये
मनतें गढ़ि गढ़ि बात बनावौ ॥ झूठी कौं सांची वहरावौ ॥
बिना भीत ही चित्रत केरौ ॥ बातन गहि आकाश ही फेरौ
नेक होय तो सबही सहिये ॥ झूठी सबै सुनत उर दहिये
आवत बोलन सुनि २ बातैं ॥ रहियत मैं न सबन तें यातैं
वृथा ऐर मोसों करत कहि कहि झूठी बात
भलो नहीं उपहास यह मैं सकुचति दिन रात
मिले सखी जो स्याम और कहा यातें भली
सुनियत है अभिराम नंद महरि कौ सुवन अति
कैसे हैं ऐ कुंवर कन्हाई ॥ जिन को नाम लेति यह भाई
नैननि भरि मैं देखे नाहीं ॥ सुनियत सदा रहत ब्रजमाहीं
कहति लजाति बात इक तुमको ॥ इक दिन मोहिं दिखावो उनको
देखौं धों कैसे हैं तिन कौं ॥ तुम सब मिलि मोहति हो जिनको
सुनि वृषभान सुता की बानी ॥ हंसी सबै गोपिका सयानी
सुन प्यारी तैं सीख हमारी ॥ कहन देह कहि करै कहारी
तोको झूठ कहे कहा पैहें ॥ आपन कों वे पाप कमैहैं ॥
यह काहू पै जात छिपायौ ॥ नेह सुगंधन दुरत दुरायौ ॥
तो काहे को कान्हे देख्यौ ॥ खरक दुहावन हू नहिं पेख्यौ
सुन हो सखी राधा की बानी ॥ कहति कहा यह अकथ कहानी
रहति सदा ब्रज गांव मझारी ॥ इन नहिं देखे हैं गिरधारी
जो हम सुनी रही सो नाहीं ॥ ऐसेउ बायु बही ब्रजमाहीं
सुनि प्यारी अब तोहि हम दिखरैहैं नंदनंद
तब बदिहै यह साखि हो देखि उन्हैं छलछंद
जब ऐहैं इत स्याम तब हम तोहि बताइहैं

ताहि देखि है वाम है उनहूं अभिलष अति
तबतें चाहि लीन्हिये उनको ॥ कहति नहीं देखे मैं जिनको ॥
हैं कैसे कारे कै गोरे ॥ सुन्दर चतुर किधौं अतिभोरे
ताहि देखि वेऊ सुख पैहैं ॥ तेरे हित वासुरी वजैहैं
नानाभाव करेंगे जबहीं ॥ हमसब तोहि कहेंगे तबहीं
तुमहौ चतुर राधिका जैसे ॥ वेऊ स्याम चतुर हैं तैसे ॥
हँसति कहति सब गोपकिशोरी ॥ चिरजीवहु यह सुन्दर जोरी
के बहू नो फंद परिहरि आई ॥ तबहीं देहि चिन्हाइ कन्हाई
सुनत संग सखियन की बानी ॥ मनरविहँसत कुँवरि सयानी
चतुरई नीके गहि राखी ॥ सखियन सों हँसि ऐसे भाखी
मोमें औरै जिय मैं जानी ॥ मेरी बात प्रतीति न मानी ॥
जो अब मोहि स्याम संग पावौ ॥ तब कीजो अपनो मन भावौ
कान्ह पीत पट वेसरि मेरी ॥ लीजहु कोरि तबहि गहि एरी
यह सुनि कै सब हँसि उठी प्यारी वदन निहारि
आईही अति गर्व करि चली सखी घर हारि
कहत परस्पर हारि निडर भई अति राधिका
कबहूं तो हम घात परिहैं दोऊ आय कै ॥
तीसरु दिन जो चोर भुरै है ॥ साह एकहू दिन तो पैहै ॥
बोली एक सखी तब तिनसों ॥ मेदलियो चाहति तकउनसों
दूर धरो मन तें यह भाई ॥ बैठि रहौ अपने घर जाई ॥
भीतिबर बोलि कई कह कीन्हो ॥ केऊ नितरभई कछु चीन्हो
वहनाहि फंद तुम्हारे आवै ॥ छल वल दवा के को पावै ॥
वृसभान सुता मैं वड़ी सयानी ॥ मेरी बात लेहु तुम मानी ॥
बोली अपर सखी सुनु मोसों ॥ सौंह खैंचि भाषत मैं तोसों
के रफार देखो हम धरिहैं ॥ ऐसे कैसे हमहिं निदरिहैं

अवतौ भेद कियौ है प्यारी॥ हमहूं कौं यह रिस है भारी
तवलग मनमैं धीर नलै है॥ जवलगि चोरी पकरि न पैहैं
निसि वासर अव हम सव कोऊ॥ स्याम स्याम देखि हैं दोऊ॥
ताही दिन तिन सो हम लरिहैं॥ जादिन नीके पकरि निदरिहैं
सव व्रज गोपिन के वसी वात यहै मन आन॥
हरि राधा दोऊ मिलैं निसि वासर यह ध्यान
सवहिन मुख यह वात और कछु चरचा नहीं
नंद महरि कौं तात सुता महरि व्रषभान की
यह है चवाव करति सव गोपी॥ हमसौं वात राधिका लोपी
लरिकाई तें हम सव जानैं॥ कीनी प्रीति स्याम सौं याने॥
तव सत भावन हुती ठगाई॥ अव हरि संग सीखी चतुराई
आज मौन धरि कियेदुराऊ॥ सदा होति केहि भांति चवाऊ
दिन है चारि भोर अव टारौ॥ रहो स्वभाव ओर जिन पारौ
करन देहु इनकौं लंगराई॥ आपहि वात प्रगट ह्वै जाई
तव इक सखी कहीयौं वानी॥ कहा कहत तुम वात अयानी
तुम जो कहति वह जानति नाही॥ है हम सव वाके नख माहीं
सात वरस तें प्रीति लगाई॥ तुम तो आज जानि है पाई॥
वाकी चतुराई किन जानी॥ मौन कवहि धौं पीवतु पानी
हरि के ढंग सीखी सव वोरू॥ है वार ह्वानी वे दोऊ॥
देखहु कान्ह के ह्रपतियानी॥ फिरि आई सव मन रिसियानी
ऐसें सव व्रजसुन्दरी मिलि कै करति वचाइ
राधा ह्रमैं उर मैं वसे और न वात सुहाइ॥
यह रस जान अनूप व्रजवासी प्रभु प्रेम कौ
करिकै कृत सरूप होय रही व्रज कौ नसरि॥
श्री राधा प्रातहि तह आई॥ जहा पुरी सव सखिन अथाई

अवतिलीखि सव रहीं सुपाई॥ पेखत वदन गयो सकुचाई॥
करति हुती उनहीं की वातें॥ सकुच भई तरुणी सव तातें॥
अति आदर करि के वैठारी॥ कहो कहा तू आई प्यारी॥
कहा हमारी सुधि तें लीन्ही॥ वडी कृपा कछु हम पर कीन्ही॥
मैं केह आज अनी खे आई॥ तुम जु करति आदर अधिकाई॥
पहुनी करि करिये पहुनाई॥ मैं तो आवति जाति सदाई॥
कैसी कहति वात तूं प्यारी॥ वैठन कों नहि कहे कहारी॥
तू आई करि कृपा हमारे॥ हम है कहा कौन व्रत धारे॥
तव हंसि वाली कुंवरि सयानी॥ करी तर्क मोसो तुम जानी॥
तादिन कौ वदलो यह कीनो॥ मोसौ दाव आपनो लीनो॥
यह सुनि हंसी सकल व्रजनारी॥ कहन लगी सव गोपकुमारी॥

दाव घात जानत्ति तुमहिं हम तो वुद्धि सुभाव
तो हि मान पाई सदा तैसे मानति भाव॥
तुम रखी मन लाय तादिन वात भई शु वह
हम डारी विसराय मान लई तेरी कही॥

चोर सवै चोरी करि जाने॥ ज्ञानी सव मन ज्ञान हिं माने॥
सुनि यह कुंवरि मनहिं मुसुकानी॥ कहेउ सखी यह सांच वषानी॥
जैसी जाके मन मैं होई॥ ॥ वात कहत मुख तैसी सोई॥
मै तो सांच कही तुम पाहीं॥ कैसे धौं तुम जानति नाहीं॥
हरषि सकिन तव उर सो लाई॥ कहति कहा तू रिस भरि आई॥
हंसति कहति तोसो हम प्यारी॥ तू मत मानति विलग कहारी॥
तुमहीं उलटी पुलटी भाखौ॥ तुमहीं रिस करि उर मै राखौ॥
तुमहीं हरि कौं नाम वखानो॥ तव मै सुने कछु तुम मानो॥
जव हरि संग मोहि कहेउ लहियो॥ तव मन आवे सो कछु कहियो॥
अव कैसे है न्हान चलोगी॥ कै मासौ कछु फेर लरोगी॥

कहै वात गठ वंधन कीनी ॥ नहिं भूली हौ जान मैं लीनी ॥
गहि गहि सव की भुजा उगाई ॥ चलहु न्हान कवकी मैं आई ॥
इहि विधि हास हुलास करि सखिन संग सुकुमार ॥
चली न्हान यमुना नदी श्री वृषभान कुमारि ॥
सकल रूप की रास नव नागरि मृगलोचनी ॥
धरी अनंद हुलास कृष्ण प्रेम में एक मति ॥

अथ स्नान लीला ॥

चली यमुन सव नवल किशोरी ॥ कनक वरन तन कोमल गोरी ॥
करति परस्पर सव सुकुमारी ॥ हास विलास कुतूहल भारी ॥
गई यमुन तट गोप कुमारी ॥ संग सोहति वृषभान दुलारी ॥
देखि स्याम जल लहरि सुहाई ॥ पैठी सलिल न्हान अतुराई ॥
स्यामा सहित न्हाति सव नारी ॥ विहरत जल विहार सुखकारी ॥
कंठ प्रमाण नीर में ठाढ़ी ॥ छिरकत जल अति शोभा वाढ़ी ॥
करत विविधि विधि हास विलासा ॥ एक एक गहि करति हुलासा ॥
लै लै करसों नीर उछारैं ॥ निरखि परस्पर मुख पर डारैं ॥
मानो ससि सेना पति आये ॥ लरत जलस जल शस्त्र वनाये ॥
सुनि तहँ स्याम युवति मन रंजन ॥ आये कोटि काम द्युति भंजन ॥
निरखत तट ठाढ़े छवि भारी ॥ यमुना जल विहरत ब्रजनारी ॥
कवहु मधुर कल वेनु वजावैं ॥ न्हाने सुरन माहिं कछु गावैं ॥
काछे नटवर भेष वर चित्रत चंदन अंग ॥
ठाढ़े ढिंग कदंव तें कीने अंग त्रिभंग ॥
नव घन सुन्दर स्याम ब्रज तिय मन चातक सुखद ॥
नख सिख अति अभिराम ध्यान काम पूरण सु ॥
पद नख इंदु प्रभा द्युति हारी ॥ चरण कमल शीतल सुखकारी ॥

जानु जंघ अति सुभग सुहाई। करभ रम्भ लखि रहत सदाई॥
कटि पट पीत काछनी काछै। केसर कमलन पट तर आछै॥
छुद्रावली कनक छवि छाई। नाभि गंभीर बरनि नहिं जाई॥
मनहु मराल बाल की श्रेनी। सुरसमीप सोहति सुख देनी॥
बड़े बड़े मोतिन की माला। बीच रत्नावलि रुचिर विशाला॥
मनहुं गंग बिच यमुना आई। चली धार मिलती न सुहाई॥
बाहु दंड दोउ तट कमनीया। चंदन अगर तर रमनीया॥
वनमाला तरु तो रह सुहाई। तीन भुवन शोभा जनु छाई॥
चिबुक सुचारु गाड़ मन मोहै। मुख छवि सिंधु भ्रम जनु सोहै॥
अधर दशन दुति बरनि न जाई। तड़ित विच कहुं वह छवि छाई॥

सुक नासा खंजन नयन भृकुटी काम कोदंड।
मणि कुंडल रवि हरत सोहत सीस सिखंड॥
उपमा गई लजाइ निरखि स्याम को रूप वर।
जहं तहं रही छिपाय पटतर कों पहुंची नहीं॥

उपमा हरि तन देखि लजानी। दुरी भूमि कोउ वन कोउ पानी॥
कोटि मदन अपनो बल हारे। मुकुट लटक भ्रमर कनि हारे॥
कुंडल निरखि भ्रमत रवि रहहीं। लपत हृदय छण धीरन गहहीं॥
अलक नासिका करपद नैनन। अति सुक कमल मीन अरु खंजन॥
लखि सकुचाय रहत वन माहीं। कहत हमें कवि कहन कपाहीं॥
सदन दमक दामिनी लजानी। छणप्रगटत छण रहत छिपानी॥
ससुरत सधर अधर अरुणाई। विद्रुम बंधू बिंब लजाई॥
गगन रह्यो शशि वदन निहारी। घटत घटत नित शोचत भारी॥
चारु कंठ लखि अति सकुचानो। रहत शंख जल मांझ छिपानो॥
बाट देखि पहि विवर समाने। केहरि कटि लखि वनहिं पराने॥
गज गति गुलफ निरखि सरमाई। रुची पांखन सकत उड़ाई॥

निजइच्छा छवि हरिवपुधारी ॥ दीन्हीपटतरमेंटिपरानी

अनुपम छवि कवि क्यों कहै विनउपमा आधार
ब्रजतिय मोहन मन हरण सुन्दर नंद कुमार ॥
अधर मानो हरवैन मंद मंद बाजत मधुर ॥
उपजावत मन मैन ब्रजसुन्दर नव नागरिन ॥

जल विहार करि गोप किशोरी ॥ निकरि चली तट कौं सव गोरी
जानु जंघ जल लौं सव आई ॥ चुवत नीर अंचल छवि छाई
परे हुते मोहन तट माहीं ॥ ठाढ़े कदम विटप की छाहीं ॥
प्यारी निरषति रूप लुभानी ॥ पंगु भई मति गति वहरानी
छूलहि लाज सखियन की आई ॥ दरसन हानि कहत सकुचाई
मनहिं ज्ञान करि यह अनुमानी ॥ लैहैं आज सखी सव जानी
जान गई यह अली सयानी ॥ जानवूझ सव भई अयानी
वहुरौं न्हान लगी सव पानी ॥ रही हुते कोरि आन ना कानी
प्यारी कवहुं स्याम तन हेरै ॥ कवहुं दृष्ट सखिन ते फेरै ॥
जानी सवै न्हान जल माहीं ॥ मेरी दृष्टि चितवत कोउ नाहीं
तव मन में यह वात विचारी ॥ देखि लेहु अव छवि गिरधारी
यह दरसन कव धौं फिर होई ॥ ललकि लगी अंखियां हरि दोई

निरषति स्याम स्याम छवि वारनि भेषन मोर ॥
नैन वदन शोभित मनो है शशि चार चकोर ॥
करत मुदित दोउ पान रूप माधुरी अमिय रस
तृप्त न क्योंहू मान विवस भये मन दुहुन के ॥

यद्यपि सकुच सखिन की गाढ़ी ॥ तद्यपि रुकी न छिन वन वाढ़ी
उमगि गई सरिता की नाई ॥ सन्मुख स्याम सिंधु के माहीं
भरी सलिल अनुराग अथाहा ॥ अवर मनोरथ रहे रुज काहा
कुल मर्याद करार ढहाये ॥ लोक सकुच तरु सकल वहाये

धीरज अवधि गही नहिं जाई ॥ रहे थकित पल पथिक उराई ॥
इक टक घोर अखंडित धारा ॥ मिली स्याम छबि सिंधु अपारा ॥
कहत सखी सब आपुसमाहीं ॥ नैन सैन दे दे मुसकाहीं ॥
देखहुरी प्यारी उत अटकी ॥ ना जानिये कौन अंग लटकी ॥
कालिह हमसे कैसे निदरी है ॥ मेरे चित अब खटपकरी है ॥
बात कहत मैं लसुख तुलसी ॥ देखहु अब देखति किम लसी ॥
सुन्दरि पिय के रूप लुभानी ॥ वे बालहिं अब सबहि भुलानी ॥
इक टक रही नेकनहिं मटकी ॥ कोजाने काहू के घटकी ॥
भई भाव भोरे कछू देखत ही सुखदाइ ॥
चित्र पूतरी सी रहे देह दशा विसराइ ॥
उत वे रहे लुभाइ नागर नवल किशोर सब ।
प्यारी मुख द्रग लाय नैन नहीं भटकन कहे ॥
औरैं भाव भई सब प्यारी ॥ बढेउ प्रेम अंकुरत भारी ॥
गई तासु जर सप्त पताला ॥ पहुंचेउ अंतर शिखर विशाला ॥
वचन पत्र अवलोकनि शाखा ॥ सघन अग कहे छइ अभिलाषा ॥
गुण विधि सुमन सुगंध निकाई ॥ लगी जई आनंद सुहाई ॥
पूरण आसन वनि भरवारा ॥ फल लाग्यो वर नंदकुमारा ॥
रहे रीझ तन मन धन वारें ॥ परसपरस दोउ रूप निहारें ॥
तव इक सखी कहे उ मुसकाई ॥ प्यारी देखे कुंवर कन्हाई ॥
एई हैं सुन्दर सुखदाई ॥ ॥ जिनकी ब्रज मे होत बडाई ॥
इन्हहि कहति ही मोहि दिखावहु ॥ देखि लेहु अब मन सुख पावहु ॥
कहत लालसी है मन तेरे ॥ ॥ ताही ते आये हरि नेरे ॥
पूरी साध दरस अब पाये ॥ इनहीं इनकूं बोल पठाये ॥
एवौ पीन्ह इन्हें सवनी के ॥ ये मन भावन हैं सबही के
भले भकुं म आई यही भलौ तुम्हारौ काज

अवकछुहमकों देऊगी मिलेतुम्हैंब्रजराज ॥
भयोनामतेरिहिसोचसुनि सुमिसखियनकेवचन
कहतिकरी मैं पोच इव जानीअववातसव
मैं हरि तनलखिरूपलुभानी ॥ सो ये देखि सवै मुसकानी
काल्हि कही इनसों मैंवेसे ॥ देखीआज मोहि इन ऐसें ॥
इन आगे मोंवात नसानी ॥ अव वे करत मोहिविनपानी ॥
मोही पर मेरी चतुराई ॥ परीउलटिउर अतिसकुचाई
कहत सखिन सोंज्वावनआयो ॥ तवमन मैं हरि पियकोंध्यायो
अहो स्यामसुन्दर सुखदानी ॥ मैं प्रभुतुम्हरे हाथ विकानी
अव सहायसुन्दरतुमकीजे ॥ मेरी वातनाथ रख लीजे ॥
ऐसो उत्तर देऊ जनाई ॥ ॥जातेंमेरी पत रहजाई ॥
ऐसें हरि कौं सुमरिसयानी ॥ तव यहवातमनाहिमन आनी
उर मैं भयोबुद्धिपरकास ॥ तवकीनोमन माहिंउलास ॥
सखिनकहेउअवघरचलप्यारी ॥ भईयमुनतटवडनअवारी
कवकी न्हानइहां हमआई ॥ ऐसें कहि कीन्हतव चतुराई
कियोदरसतुमस्यामकोंघरचलिहौ के नाहि
कीन्हरहो मिलियोवहरि यहकहिसवमुस्काहि
तवसखियन के साथ चली सदन कौंनागरी ।
उर मैं धरि ब्रजनाथ प्रेममगन वोली नहीं ॥
हँसि बूझत इक गोपकुमारी ॥ कै हौ स्याम कैसे हैं प्यारी
भायेरी तेरे मन माहीं ॥ मैंसुन्दर कछु कैधौं नाहीं ॥
कै हम सौं फिर वातलुकैहो कै अवमनकी सांचजनैहो
हम वरनेकैसें तुमपाहीं ॥ कहुलैसे हरि हैं कै नाहीं ॥
कहति मनहिंवृषभानदुलारी ॥ मेरेख्याल परी सवन्वारी
वातनवातन करतिउचारो ॥ ये चाहतिअवमो—

मोहूं तें ये चतुर कहावैं ॥ मोकौ बातन मांझ भुलावैं
ऐसें इतसौं वचन वखानौ ॥ इनकी चातुरता गहि मानौ
मेरे सिर सामर्थ कन्हाई ॥ कहा करि है मोसो चतुराई ॥
प्यारी प्यके गर्व गहेली ॥ अंग अंग सुख पुंज भरेली ॥
नंद मंद गति हंस सुहाई ॥ पग द्वै चलत ठठकि रहि जाई
मगन स्याम रस सुख नहिं बोले ॥ धरणी चरणन रखन कहि डोले

चितवत संधे नेक नहिं काहू तन अनखाइ
रही गर्व पिय स्याम के गरवीली गरवाइ ॥
सखिन कहेउ मुसक्याय क्यौं प्यारी बोलत नहीं
कै हम सौं अनखाय लियो मौन व्रत आजसुनि

कैधौं कछु बात कही नहिं जाई ॥ कै तेसौं मन हस्यौ कन्हाई
कबहूं जान पहिचान न तेरी ॥ देखत ही हग तिन हिं डरेरी ॥
साचीबात कहौ अब प्यारी ॥ सोच पस्यौ मन तोहि कहा री
कहा रही हौ हरिहि निहारी ॥ इकटक नैनन मेष बिसारी
सुनि सुनि सब सखियन की बानी ॥ बोली हरि भावती सयानी
कहा कहति तुम बात अलेखे ॥ मोसो कहति स्याम तुम देखे
मैं देखे कै धौं नहिं देखे ॥ तुम तौ बार हजार कै पेखे ॥
तुमही हरि कौ रूप बतावौ ॥ मो आगे सब कहि समुझावौ
कैसे बरन भेष है कैसे ॥ अंग अंग बरनौ तुम तैसे
तब इक सखी कहेउ मुसकाई ॥ हमतौ ऐसे लखे कन्हाई
रूप बेद कछु हमें नहिं आवे ॥ साचौ बात सबन कौं भावे
देखे हम नंद नंदन जैसे ॥ बरनि बतावहिं तोकौ तैसे

स्याम सुभग तन पीत पट चटकीलो दुति कारि
शोभित घन पर दामिनी मनु चपलई बिसारि
मंद मंद सुखदाय गरजति मुरली मधुर धुनि

चितवत अरु मुसकात बरषत परमानंद जल

विविधि सुमन दल उर वनमाला॥ इंद्र धनुष मनौं उदित विशाला॥
मुक्तावली बीच मन मोहे॥ बाल मराल पांति जनौं सोहे॥
अंग अंग छबि रूप सुहाई॥ कदम तरे ठाढ़े सुखदाई॥
देखत मोहन वदन विभागा॥ उपजत है अंखियन अनुरागा॥
लोचन नलिन नये छबि छाजैं॥ तामधि पुतरी स्याम विराजैं॥
मनहु युगुल अलि भाग निवारें॥ पियत मुदित मकरंद सुखारें॥
ता मह चितवन सेन सुहाई॥ गूढ़ भाव सोचत सुखदाई॥
अधर बिंब रद दाड़िम दाना॥ सुखु नासिका देखि लचाना॥
भ्रकुटी धनुष तिलक सरधारी॥ मानहु मदन करत रखवारी॥
मोरचंद्र सिर सुमन सुहाये॥ काम सरन मनौं पसरनाये॥
गुरात आन युवतिन मन माहीं॥ निकसत बहुरि निकासे नाहीं॥
वारिज वदन मनोहर बानी॥ बालत मनहु सुधारस सानी॥

कुंडल झलक कपोल छवि भ्रम सो कर के दाग॥
मानहु मनसिज मकर मिलि क्रीड़त सुधा तड़ाग
भरे रूप रस राग ऐसे शोभा के उदधि॥ ॥
तिन अखियन की भाग अवलोकत हरि को बदन

अंग अंग सब छबि के जाला॥ हम देखे इहि भांति गुपाला॥
कछु छल छिद्र नहीं हम जानैं॥ जो देखे सो सांच बखानैं॥
साचहि झूठ करै जो कोई॥ सो वह झूठ आपही होई॥
हम इतननि मैं नहीं दुराऊ॥ कहति यथारथ सब सत भाऊ॥
या माहि जो कोउ झूठी मानै॥ ताकी बात विधाता जानै॥
हम तौ स्याम निहारे ऐसे॥ तो हि लगै प्यारी कहु कैसे॥
तुम देखे मैं सांच न मानौं॥ अपनी रीति सबही जानौं॥
जिनको वारपार कछु नाहीं॥ द्वै अंखियन दैदै किम जाहीं॥

जो तुम सव अंग अंग निहारे॥ धनि धनि तौ ये नैन निहारे॥
मैं तौ लखि इक अंग लुभानी॥ भरि आयो दोउ आंखिन पानी॥
कुंडल झलक कपोलन छाहीं॥ रही चकित उतने के माहीं॥
रूधे नैन नीर टक टाई॥ ॥ पहिचाने नहिं नेकु कन्हाई॥
मैं तव ते अपने मन हिं यहै रही पछिताय॥
देखन को छवि स्याम की चाहियत नैन निकाइ॥
अति छवि अखियों दोय उमगि चलत वा पर सलिल॥
कैसे दरसन होइ सखी स्याम के रूप कौ॥
है लोच्यन तुमरे द्वै मेरे॥ ॥ तुम देखे हरि मैं नहिं हेरे॥
तुम प्रति अंग विलोकन कीन्हे॥ मैं नीके एकौ नहिं चीन्हे॥
काहू को पर रस नहिं भावै॥ कोऊ भोजन कौ दुख पावै॥
अपने अपने भाग्य निकाई॥ जो वोवै सोई लुनै वनाई॥
जैसे रंक तनक धन पाये॥ होत निहाल आपने भाये॥
मोहि तुम्हें अंतर है भारी॥ धनि तुम सव हरि अंग निहारी॥
तुम हरि को सगिनि व्रजवाला॥ ताते दरस देत नंदलाला॥
सुनउ सखी राधा चतुराई॥ आपहि निदहिं हमहिं वडाई॥
आपुन भई रंक हरि धन कौ॥ हमहिं कहत धन वृत सवन कौ॥
हम हरि की सगति सव भारी॥ आपुहि निर्मल होत नियारी॥
धन्य धन्य लाडिली पियारी॥ धक २ धक २ वुद्धि हमारी॥
गूपुरुष हम निपट अधूरी॥ हमहिं असंत संतु तू पूरी॥
धनि धनि तेरे मात पितु धन्य भक्ति धनि हेतु॥
दे पहिचान्यौ स्याम को हम सव म्वारि अचेत॥
धनि योवन धनि रूप धनि धनि भाग सुहाग सव॥
तमो हनअनु रूप चिरजीवहु जोरी अचल॥
ऐसौ नैं हरि रूप वखान्यौ॥ है ते सोइ यह हम जान्यौ॥

देखन कौं हरि रूप उजेरी॥ आंख पेंच हिये जैसी हेरी॥
तैं जो कहति लोचन भरि आये॥ सो हरि तेरे नैन समाये॥
अति पुनीत अस्थल सुभ जानी॥ करी स्याम अपनी रजधानी॥
कियो वास हरि तो द्रग माहीं॥ और बात दूजी कछु नाहीं॥
ऐसे स्याम संग व्रजवाला॥ कहति परस्पर गुण गोपाला॥
तहां अचानक हरि पुनि आये॥ कटि कछनी नटभेष बनाये॥
मुरली अधर अरुण पर बाजे॥ कल धुनि नंद मनोहर बाजे॥
करति रही मनहीं में ध्याना॥ सोई अंतरजामी जाना॥
आप गये तिरछी मग माहीं॥ भावाधीन सकल रहि नाहीं॥
तरुत माल तरु तरुण कन्हाई॥ ठाढे भये आप सुखदाई॥
थकित भई सब व्रज की बाला॥ लगी बिलोकन नंद को लाला॥
रत्नजटित पग पांवरी नूपुर मंद रसाल॥॥
चरण कमल दल निकट मनो बैठे बाल मराल॥
उदित चरण नख चंद जनौं नारी ब्योम प्रकाश मरी
सुर नर शिव मुनि बंदा विरह ताप अज्ञानि यहरन॥
जानु काम सतछवि न संवारे॥ युवतिन की मन बुद्धि बिचारे
युगुल जंघ छवि परम पुनीता॥ रंभा खंभ मनहुं बिपरीता॥
ठाढे धरणी एक पद लाये॥ कंचन दण्ड एक लपटाये॥
तन त्रिभंग की लटक सुहाई॥ अटक रही युवतिन मन आई
व्रजयुवती हरि पद मन लाये॥ तिरपति मुनि दुर्लभ सुख पाये
कुलिशांकुश ध्वज चिन्ह निकाई॥ इकटक रही चितै चितलाई
अरुण तरुण पंकज दल चारू॥ मानहु सुख महके रति बिहारू
कटि केहरि की कटि हिलजावै॥ सूक्ष्म सुभग कहति नहिं आवै
तापर कनक मेरवल सोहै॥ मणिन जटित सुन्दर मन मोहै
मनहुं बालक न सहत मराला॥ बैठे संपति जोरि रसाला॥

किधौं मदन के सदन सुहाई ॥ बांधी वंदन वारि बनाई ॥
व्रज तिय निरषि २ सुख लेहीं ॥ नैननि पलक परा तिनहिं देहीं ॥
शोभित नाभि गंभीर रुअति मानहु मदन तडाग ॥
रोमावलि तट पर लसत रस सिंगार कौ बाग ॥
व्रज तिय रहीं निहारि शोभा नाभि गंभीर की ॥
मन नहिं सकति निवारि परे उ जाय गहरे षस के ॥
उदर उदारि बरनि नहिं जाई ॥ रोमावलि तापर छवि छाई ॥
रहीं भ्रटकि छवि तासु निहारी ॥ परषति विनतन निरषत नारी ॥
कोऊ कहति काम की सरनी ॥ कोऊ कहति योग नहिं वरनी ॥
कहति एक अलि बालक पाती ॥ जुरि वैठे सव एकहि भांती ॥
कोउ कहै नीरद नील सुहाई ॥ सूक्षम धूम धाम छवि छाई ॥
एक कहति यह रवि की जाई ॥ मरकत गिरि उरते प्रगटाई ॥
उदर भूमि शोभित सोई धारा ॥ जाति नाभि हृद अगम अपारा ॥
दुहु दिस फेरा ख्वा निसुत माला ॥ उपजत सुख मेलहरि विशाला ॥
शोभा लखि न सकति व्रजनारी ॥ रहीं विचारि विचारि विचारी ॥
उर सुमन की माल विराजे ॥ तामधि कौस्तुभ मणि छवि छाजे ॥
निरमल नभ मानहु उडराजी ॥ शशिहि घेरि वैठी छवि साजी ॥
भृगुपद रेख स्याम उर माहीं ॥ मनहु मेघ भीतर शशि छाहीं ॥
पीत हरित सित अरुण रंग घर कीली वनमाल ॥
मफुलित व्है छवि की रवि रही मानहु चंदीत माल ॥
छवि वरनी नहिं जाय कबु कदमणि कण्ठ की ॥
व्रज तिय रहीं लुभाय यह मेरु रव शोभा निरख ॥
भ्रषभ कंध भुज दंड सुहाई ॥ निदंति अहि गज सुंड निकाई ॥
कर पल्लव नव मुद्रिका सोहैं ॥ वाहु विभूषण लखि मन मोहैं ॥
अनुभृंगा रविव्य कीडारी ॥ फूल रही उपजात छवि भारी ॥

हरि मुख निरखत गोपकुमारी॥ पुनि पुनि प्राण करति बलिहारी
कहति परस्पर अति मन लोभा॥ देखहु सखी वदन की शोभा
चिबुक चारु अधर अरुणाई॥ पान रेख तापर छवि छाई
मंद हसन दुति दसन निकाई॥ उपमा कापै जात बताई॥
अनुपम छवि चित लेति चुराये॥ जग मोहनी हमारे भाये
गोल कपोल अमोल नवीने॥ मानहु मुकुर नील मणि कीने
बाजत मुरली कर की फेरन॥ चंचल नयन चपल मति हेरन
मणिन जटित कुंडल की डोलन॥ प्रतिबिंबत सब मुकुर कपोलन
सो छवि कापै जात बखानी॥ लखि ब्रजतिय विनमोल बिकानी

अ... नासिका चप लखग कुटिल भृकुटि की रेख
जनु युग खंजन बी... मुक उड़न सकत धनु रेख
घुंघुरारे कच स्याम बासि जमुख ढिग भ्रमर जनु
सीस मुकट अभिराम कोटि काम शोभा हरन

रूप सुधा निधि वदन विराजै॥ दुहुं कर अधर मुरलिया बाजै
मानहुं युगुल कमल पट माहीं॥ लेत भराय सुधा शशि पाहीं
हरि मुख निरखत नैन भुलाने॥ इकटक रहे निपति नहिं माने
घोषकुमारि लखत नंदनंदन॥ स्याम सुभग तन चर्चित चंदन
कनक बरन पट पीत बिराजै॥ देखि सखी उपमा यह राजै
निर्मल गगन सरद घन माला॥ तापर अस्थित दामिनि जाला
अंग अंग छवि पुंज सुहाये॥ निरखत युवती जन मन लाये
कोउ भाल तिलक छवि अटकी॥ मुकुट लटक छवि पर कोउ लटकी
कोउ अलक लसति चित लाई॥ कोउ लखि भृकुटि सुरति बिसराई
कोउ लोचन छवि लखि ललचानी॥ चितवनि में कोउ अरुझानी
कोउ कुंडल झलक लुभानी॥ कोउ कपोल दुति निरखि बिकानी
कोउ नासा कोउ अधर बिकाई॥ कोउ रद चमकन मांझ भुलाई

कोउ बोलनि कोउ मंद हसन को मुरली धुनि लीन
कोउ मुरली पर ग्रीव की लटकन पर आधीन ॥
चारु चिवुक दर ग्रीव को कोऊ रंग रंगी मैं रही,
हरि मुख शोभा सींव पक्की निरषित हंसो तही ।
कोउ सुन्दर वलबाहु विशाला ॥ निरषि थकी कोउ भूषण जाला ॥
कोउ कटि कोउ पट पीत निहारी ॥ जगगुलफ पर कोउ वलिहारी ॥
युगुल कमल पदनष की शोभा ॥ व्रजवासी जन मन की लोभा ॥
हरि प्रतिअंग निरषि व्रज नारी ॥ गेह देह की सुरति विसारी ॥
अति आनंद मगन मन भूली ॥ शशि मुख लषि जनु कुमुदिनि फूली ॥
किधौं चकोर रहे टकलाई ॥ पियत सुधा छवि शीतलताई ॥
कै रवि कुंडल छवि हि निहारी ॥ विकसित कमल वदन वरनारी ॥
कै चकई गण मन सुख मानी ॥ निरषि रही अति रति हरषानी ॥
कै धौं नव घन तन छवि देखी ॥ मोर चातकी मुदित विशेषी ॥
किधौं मृगी मुरली धुनि माही ॥ स्याम लषति युवती इत मांही ॥
हरि छवि रूप रून में परसानी ॥ सुरझन सकत युवति विलसानी ॥
रूप रास सुख रास कन्हाई ॥ प्रेम रूज जन के सुख दाई ॥
छवि सागर सुख को अवधि गुण गमंदिर रसखानि
मोहि लियो मन तियन कौ रसिक नरेस सुजान
मुरली मधुर वजाय प्यारी प्यारी नाम कहि,
अनुपम छवि दरसाइ गये सदन आनंद घन ॥
रही ठगी सी गोपकुमारी ॥ मन हरि लै गये नवल विहारी ॥
पुनि पुनि कहति भई सुषमानी ॥ धनि धनि राधा कुवरस्यानी ॥
वड़भागनि तो सी नहिं प्यारी ॥ तेरे ही वस री गिरिधारी ॥
धनि स्याम धन्य तू स्यामा ॥ धनि जोरी धनि प्रीति ललामा ॥
एक प्राण द्वै देह तुम्हारे ॥ तो विन रहित सदन हरि प्यारे ॥

तोकों देखि बहुत सुख पावैं ॥ मुरली मैं तेरे गुण गावैं ॥
तेरी प्रीति साच हरि जाने ॥ जाते तेरे हाथ विकाने ॥ ॥
मन वच क्रम निर्मल तू प्यारी ॥ दुरीचारनी हम सब नारी
जे मैं घट पूरण महि डोलें ॥ होय अवधलो सो ढग ढोलें
परम सुजान नारि तें धीर ॥ राख्यौ परषि हृदे हरि हीर
धनी न अपने धनहिं बतावें ॥ धरनि छिपाय न प्रगट जनावें
धन्य सुहाग भाग तू प्यारी ॥ कृष्न सदा पति तू वर नारी ॥

सुनि सुनि वानि सखीन की प्यारी जिय अनुराग
पुलकि रोम गद गद हियो समुझि आपनो भाग
वचन कहेउ नहिं जाय प्रीति प्रगट चाहत कियो
हरि उर रहे समाय बाहर दुरत प्रकाश नहि

सुनहु सखी तुम करति बडाई ॥ सुनि सुनि मेरो मन सकुचाई
मोहि कहति स्याम हित जान्यौ ॥ हरिकों भले परषि पहिचान्यौ
तवते यही सोच मन माही ॥ कैसें हरि पहिचाने जाहीं
नैन दोष छवि अमित अगाधा ॥ तापर पलक करति है वाधा
क्षणही में भरि आवत पानी ॥ स्याम स्वरूप परे किमि जानी
मरु करु अंग लखिये सोई ॥ पलक परत औरे छवि होई
क्षण क्षण में शोभा पलटावे ॥ कहो सखी उर केहि विधि आवे
देखन कों दृग अति अकुलावें ॥ प्रगट लखत पहिचान न आवे
यह सखिन ही परनि कछु जानी ॥ विरह संयोग लाभ के हानी
के दुख सुख के समर सहाई ॥ मुहि समुझाय कहो सखि साई
पलने होम अग्नि रुचि जैसें ॥ मिटति न ही नैन निगति नैसें
जल छवि वरवानि नई छवि वाने ॥ इतको भी दृग तो न माने

विन पहिचाने कौन विधि करौं स्याम सौं प्रीति
नहि चहु रूप न भाव दुह क्षण क्षण औरे रीति

पहजानी मैं वात है आनंदकीखानि हरि॥
पहिस्थाने नहिजात कहा कहौ द्वैलोचननि॥
वडोकरौविधिनायहभाली॥ ससुरूपरी देखत वनमाली
करपदउदरभ्रीवकटिकीनी॥सुखरदमुतिनासासुभदीनें
भालसिखरनखकेसवनाये॥ अधरजीवअरु वचनसुहाये
एचिपचिरुचिरअंगसवकीने॥ रोम रोमप्रतिनैनन दीने॥
जोव्रज दोनीजन्म हमारो॥ देखनकों मन मोहन प्यारो॥
तोकतनैन दिये सव होऊ॥ विधितें निठुर औरनाहिं कोऊ॥
जोविधिनाकौवसकरिपाऊ॥तोअवपद्धति और चलाऊ॥
रोमरोम प्रति नैन वनावे॥ इकटकरहेपलक नहिं लावें॥
तोकछु घनेकहेउसरिमेरो॥ होयमनोरथ पूरण मेरो॥
हरिस्वरूप सखिजानिनजाई॥वहकविद्वैलोचननसमाई
मैपचिहाररहीवहुतेरो॥॥ एकहुअंगन नीके हेरो॥
जोदेखौंतौ प्रीति करोरी॥॥ देखन ही कीसाध मरोरी॥
दुरलदुरायकौनविधिसखितुमसोंयहवात
देखेविननंदनंद के धीरज धरत न गात॥
उझ्योंफिरतदिनरात इननैननिकेसंगलगि
सखानहिंमेगठहरातयाकरुईजिवबातसब
सुनरी सखी दसा यह मेरी॥ जवते हरिमूरति मैं हेरी॥
सवगहिं फिरी दरसनाहिं पाऊ॥मनहीमनपुनिपुनिपछताऊं
जवमैं अपने जियय हआनो॥निकटजायहरिलखियाहिंपानें
तवमतिविवईमेंरोई आई॥ होततहीमोंकोदुखदाई॥
मेरे मन हरिमूरति भावे॥सन्मुख ह्वेथितहांयहआवे॥
मेरियदेह होतसुहिवैरी॥ फितेंडरावतिदेरतनहेरी
मैंअतरतजिलखतकन्हाई॥ यहअनिअंतर देत वढाई

सह्यौ दोष नहिं काहू केरौ ॥ करत स्याम यह सब झकझोरौ
रीझे दरसन कबहू देही ॥ नई नई छवि करि मन लेही ॥
चपलाहू ते चपल घनेरी ॥ दसन चमक चौंधत है हेरी
कबहू वाम मन सुक रवनावै ॥ कबहू कोटि अनंग लगावै ॥
कैसे सब छवि देखन पैये ॥ कौन भांति यह साध पुरैये ॥

मगन दरस रस लाडिली पुनि २ पुलकित गात
तृप्ति न मानति देखि छवि कहत न लखे नहिं जात
लीनो सखियन जान हरि रंग रती लाडिली॥
सुन्दर स्याम सुजान रोम रोम याके रमे ॥ ॥

कहहि धन्य प्यारी बड़भागी॥ नीके तू हरि संग अनुरागी
तू है नवल नवल हरि ओऊ ॥ रूप अगाध सिंधु तुम दोऊ
हम जानी यह वात अगाधा॥ तूं हरि कीअ धं गनि राधा
मिले तोहि करि कृपा कन्हाई॥ किये सकल दुख दूर मिटाई
कहु प्यारी हम सों अब सांची॥ कहे वने अब तात न कांची
छांड़ि देउ अब यह चतुराई॥ कहां मिले अब तोहि कन्हाई
खरक मिले के कुंजन माहीं ॥ कै दधि वेंचन जात जहांई
कै अब उड़गड सन ते वांची ॥ कहि कैसें तूं हरि रंग राची
सुनि सखियन की वात अयानी॥ वोली परम नागरी सयानी
कवरी स्याम मिले नहिं जानौ॥ सुनहु सखी मैं सांच वखानौ
गृह वन कुंज सु रति नहिं मोहीं॥ दधि वेंचत के खरक विमोही
आज कि काल्हि कहौं का आली॥ किया वास उर मैं वनमाली

नैननि तें सरण टरति नहिं नीके लखे न जात॥
कहा कहौं तुम सौं सखी यह अचरज की वात
मिले मोहि जब स्याम सुनौ सखी तुमसों कहों
करि कै उर मैं धाम तब तें मन मे सौ हस्यौ ॥

मै यमुनाजल भरन सिधाई। औचक हरि तहँ परे लखाई॥
मो तन चितै रहे मुसकाई॥ कहा कहौं सखि नैन निकाई॥
जीत आपने बल जनो कीनी। सरद सरोजन की छवि छीनी॥
जीते सकल रूपगुन जाती। नील कमल कंजन रसंत पाती॥
ये निस मुद्रित दिवस प्रकासे। सरग प्रीति होत मलिन दुति नासे॥
आनंद कंद नंद सुख मूले। रहति दिवस निसि छवि सों फूले॥
नरषि नयन मैं दसा भुलाई। उन मुसकान मोहनी लाई॥
सिथल अंग भे जैसे पानी। तबही ते उन हाथ बिकानी॥
सधो मारग गई भुलाई। ज्यों त्यों कर पद इच्छी घर आई॥
ता दिन तें अखियाये मेरी। सुख दुख भूलि भई हरि चेरी॥
बसी जाय वा चितवन माहीं। अब वह संग अविसरत नाहीं॥
कै इन नैननि आप समानी। यह चितवन कछु जात न जानी॥
नहि जानति हरि कह कियो मंद मधुर मुसकाय
मन समुझत रीझत नयन सुख कछु कहे उन जाय
तब ते कछु न सुहाय कासों कहिये बात यह॥
अमल पर्यो दृग आय अवलोकनि हरि बिधुवदन
निकसे सखी एक दिन आई। द्वार हमारे कुंवर कन्हाई॥
मैं वा दी ही अजिर अकेली। देखि रही छवि यह अलबेली॥
चपल नैन चितै चित चोरे। सुभग भ्रुकुटि बिव बक मरोरे॥
कोटि मदन तन दुति सम वाही। फेरत कमल कमल कर माही॥
मोहित लागि भये तहँ ठाढे। कियो भाव कछु आनंद बाढे॥
तै कर कमल भाव सों लायो। पीतांबर निज सीस फिरायो॥
मैं गुरुजन उर सका आनी। बोलन सकी कछु मुख बानी॥
प्रेम सहित तेरे हरि आये। वैसे हि उनकौं फेरि पठाये॥
तू तौ चतुर कूती अति नारी। सेवा कछू करी नहि प्यारी

गुप्त भाव तोसों हरि कीनो ॥ वात न उरै नहीं क्यों लीनो ॥
काहे कमल भाल सों छायो ॥ काहे पीतांवर हीं फिरायो ॥
मैं कछु ऊतर तिन्है जनायो ॥ घर आये काहे विसरायो ॥
कहा करौं गुरुजन सखी भये ओट दुख दाय ॥
सकुच रही तिनकी सकुच सुखक कछु वचन न आय
इतनो कियो सयान मैं तव वेंदी कर पराखि ॥
उर लाई हित मानि सन्मुख करि करि आरसी
अंतरजामी चतुर कन्हाई ॥ जानि लई मेरी चतुराई ॥
आपन हंसि उत पात संवारी ॥ रहे कमल हिरदे पर धारी
रहे चिते अति हित चित लाई ॥ मोते सखी न कछु वनि आई
कहा करों कछु दोष न मेरो ॥ नयो नेह उत गुरुजन घेरो
रही देखि मन आनंद धरिकै ॥ लियो कमल उर आसन करिकै
आंचर फेरि निछावर कीनों ॥ अरघ सलिल अंखियन सों दीनों
उमगि कलस कुच प्रगट भये री ॥ टूटि कंचुकी वंद गये री
अव मन होति लाज अति भारी ॥ सवी समुझि करनी वे हमारी
ऐसो मेरी मति अज्ञानी ॥ ॥ सो प्रभु मंगल में करि मानी
अति सुख मानि गये सुखदाई ॥ तव तें मोहन कछु न सुहाई
कहति सखी राधा सुनु भेरी ॥ सेवा मानि लई हरि तेरी ॥
अव काहे पछितात अनेरी ॥ तो हित स्याम जात करि फेरी
नीके कीन्हे भाव सव तू अति नागरि वाम ॥
उन लीन्हे सव जानि कै चतुर सिरोमणि स्याम
भावहि को सनमान गुरुजनके नाचिचाहिये
गये स्याम हित मानि अव प्यारी चाहति कहा
तेरे वस हरि भये दधिदानी ॥ हम यह वात भले करि जानी
तैं वेंदी उन पाग संवारी ॥ उनको तुम उन तुमहिं जुहारी ॥

सुनहु सखी मोहन सुखरासी ॥ मैं रिस्यो रहति दरस की प्यासी ॥
निकसत जब सुन्दर ह्वै तभाई ॥ कमल नैन कर वेणु सुहाई ॥
ना जानिये सखी तेहि काला ॥ चक्रन भंवर किलोचन भाल ॥
सुरत सब्द भनि ऐम नु माहीं ॥ नख सिख ज्यों चख देख्यो चाहें ॥
इतने पर समुझत नहिं वैना ॥ चितै रहत ज्यों चित्रत नैना ॥
सुनौ सखी यह सोच किस पनो ॥ कै दुख सुख कै सम भूम अपनो ॥
कहा करौं गुरुजन डर मानों ॥ मनमें रोउन हाय कि काकौं ॥
जब ते ह्वार दरस मोहि दीनो ॥ तब ते मन अपनो करि लीनो ॥

भाग दसा आये सदन मे रस्याम सुजान ॥
मैं सेवा नहिं करी सखी गुरुजन कौ डर मान
यहे यूक जिय जान मोहन मन हरि लै गये
सव लागी पछितान फेर कौन विधि पाइये

जब ते प्रीति स्याम सों कीनी ॥ तब तें नींद दृगन तजि दीनी ॥
फिरन सदा चित चक्र भ्रम्यौ से ॥ रहत हिये अति सोच सदा से ॥
मिलहिं कवन विधि तिन कहूं ॥ यहै विचार विचारत जाई ॥
यह दुख सखी कौन सों कहिये ॥ पसु वेदन ज्यों आप हि सहिये ॥
सुनु प्यारी तू हरि रंग राची ॥ बात कहै तोसौं हम साची ॥
तातें चतुर भौर नहिं कोऊ ॥ तुम अरु स्याम एक भये दोऊ ॥
वाको नहीं कछू अब बांची ॥ कहा वात मे रेखा खाची ॥
ऐसी भई आप तूं भोरी ॥ उनकौं मन तूं लायल सोरी ॥
मे उनकौं मन अथ मथुरयौ ॥ तबु उन नेरो मन अब पायो ॥
अब काहे कौ करत सयानी ॥ नंद नंदन वर तू पटरानी ॥
तोसी और कौन वड भागी ॥ तेरे संग स्याम अनुरागी ॥
किनसो स्याम संग सुख मानी ॥ अब कत रूप रहति वौरानी ॥

स्याम करी मोहि बावरी मन करि लियो अधीन

वंसोज्यौं वाकी अलक अटके मो दृग मीन ॥
अव मोहि कछु न सुहाय मन मेरौ सैरौ नहीं ॥
मिल्यौ स्याम अपनाय रूप ठगौरी डारि सिर
वार वार मैं तोहि सुनाई ॥ ॥ तवतें मन यह वात न आई
अपनी सी वुधि जानत तेरी ॥ ॥ मैं पाई इतनी कहा एरी
देखत ही हरि रूप लुभानी ॥ मो तें वुधि वुधि रखि हिरानी ॥
ऐसे काहि प्यारी अनुरागी ॥ गदगद वचन स्याम रंगराची
पुनि पुनि कहति यहै सुखवानी ॥ मन हरि लियो केलि दधि दानी
तव इक सखी सखी सों वोली ॥ तू कत होति जानि कै भोली ॥
यह पुनि रसन कौ निदरानो ॥ सुन वात तिन प्रगट वखानी
तुम जानति स्याम यह छोटी ॥ है यह ग्यान वुद्धि की खोटी
रहत सदा हरि के संग माहीं ॥ हम सौं भेद रहत है नाहीं
किधौं रहति हम सौं हठ ओटौ ॥ वार कहति सुख चोरी पोटी
भये स्याम याही के वस अव ॥ देखि कछु के वे होंचोटी छवि ॥
भलो वनी सुन्दर अव जोटी ॥ वे वा द्वै उवले यह खोटी ॥
कहति सखी तू यह कहा निपट गँवारी वात ॥
को प्यारी सर दूसरी जाके वल वल ख्यात ॥
रूप सील गुण धाम यह सव मैं व्रज आगरी
इह अलतीनौ स्याम धन्य न या सौं और कोउ
प्रीति सुहृद कौ है नीकी ॥ ॥ कहौ वात सखि अपने जी की
मैं रीझी या पर अति भारी ॥ क्यौं रीझी जो कृष्ण पियारी
जो हरि को देखत मन मोहै ॥ सो मोहन याको सुख जो है ॥
जैसे स्याम नारि यह तैसी ॥ ॥ खेलहि कैसो सखी अनैसी ॥
नागरि नवल नवल वे नागरि ॥ सुन्दर यह जोरी छवि सागर
सुनहु सखी ऐसें ए राजैं ॥ एक प्रान द्वै देह विराजैं ॥

एकहुं पलकवहू नहिं न्यारे ॥ सोवत जागत जान हमारे ॥ ॥
पूर्वनेह नयौ वह नाही ॥ ॥ देखहुं सखी समुझ मन माहीं
मेरो कह्यो मान यह लीजे ॥ इन सौ भाव प्रीति करि कीजे
इनकी प्रीति रीति के माहीं बिना प्रीति ये जाने न जाहीं
जब लग इन सों प्रीति न माने तब लगि इनकी रीति न जाने
इनकी प्रीति लख्यो जो चाहो तो करि इन सौ प्रीति निवाहो
सखी वचन सुनि सखिन के भयो हिये अति चैन
धन्य धन्य वाको सबै कहति सप्रेम सुचैन
धनि धनि तेरे ज्ञान तें इनको जान्यो भले ॥
हम सब निपट अजान बात कहति औरै कछू
हम इनको ऐसे नहिं जाने ॥ ये ब्रज आय गुप्त प्रगटाने
श्यामा श्याम एक हे एरी ॥ तौ इतने उपहास सहेरी ॥
ए दोऊ इक दूसरे तूरी ॥ ॥ तेरिहु प्रीति श्याम सौ पूरी
इनसो तेरी प्रीति पुरानी ॥ तब तें प्रीति पुरातन जानी
धन्य श्याम धनि धनि तू श्यामा हम सब वृथा भई बिन कामा
श्याम राधिका सहज सनेही सहज एक दोउ हे देही ॥
सहज रूप गुण पूरण कामी सुन्दर सहज सहज वन धामी
देखि दुहुन की प्रीति विशाला भई विवस सब ब्रज की बाला
श्याम श्यामा रंग रस पागी सोवत ते मानहु सब जागी
उपजी प्रीति दुहुन की साची दूर गई दुविधा मन काची
भई युगल रस वस सब गोपी लोज सकमर्याद लोपी ॥
सबके नयन रूप रस अटके श्री श्यामा वर नागर नटके
कं॰ नवलनागर श्याम श्यामा प्रेम तन सबके फसे ॥ ॥
नयन नासा श्रवण रसना अंग प्रति दोउ बसे ॥ ॥
उठत बैठत चलत सोवत जगत निसि वासर परी

नहीं विसरी ध्यान कबहूं सकल ब्रज की सुन्दरी ॥ ॥
दो॰ गई सकल निज निज सदन युगुल प्रेमरस लीन
विछुरति नहिं एकहु घरी जैसे जल अरु मीन
रहे श्याम उर छाय विन देखे दृग कल नहीं
गृह कारज न सुहाय गुरुजन त्रास न कछु नहीं

वे कछु कहें करें कछु और	सास ननद तब मारन दौरें
कहें यही पितु मात सिखायो	ऐसोई ढंग तुम्हें बतायो
कहा तुम्हारे मन यह आई	अपनी सुधि बुधि कहां गवाई
तुम कुलवधू लाज नहिं आवे	कहं लग कोउ तुम्हें समुझावे
कब की यमुना न्हान गई हो	ऐसी अब तुम निडर भई हो
तुम राधा को संग करति हो	हरि के पाछे वही फिरति हो
वड़े महर की सुता कहावे	यह सब बात उन्हें बनि आवे
उनको सब उपहास उठावत	ब्रजधरस्याति यही कहावति
ऐसे तुमहूं नाम धरे हो ॥	ब्रजलोगन पै हमें हसे हो
हम अहीर ब्रजपुर के वासी	ऐसे चलो होय नहिं हांसी
लोकलाज कुलकाने करिये	फूंकि फूंकि धरणी पग धरिये
ऐसे कहि गुरुजन समुझावे	लाज काज मर्याद सिखावें

सुनि युवती गुरुजन वचन विहसि रही धरि मौन
हरि राधा उपहास की महिमा जानै कौन ॥ ॥
कहति तासि ये बात जैसी मति जाके हिये
सुख उलूक ही रात रवि को तेज न मान ही

विष को कीट सो वही रुचि मानै	कहा सुधारस स्वादहि जानै ॥
ये अहीर इनको प्रिय गोधन	नंदनंदन सुरमुनि शिव को धन
तिन को महिमा कहा ये जानें	जिनके गुण मुनि गर्ग वखानें
धनि राधा कुंवरि सयानी	श्यामहि मिली कर्म मनमानी

स्यामकामके पूरण हारे ॥ पूरणकरितिन कोउर धारे॥
धन्यधन्यस्यामा वनवारी॥ यह रसलीला ब्रजविस्तारी॥
ऐसे गोपीगण करिध्याना॥ करतस्याम स्यामागुणगाना॥
स्याम रूपस्यामाअनुरागी॥ रोमरोम ताही रंग पागी ॥
गईसदन मन लागत नाहीं॥ मनमोहन विनक्षणयुगजाहीं
मनहीमनगुरुजनपरखीजै॥ इनविमुखनको संग नकीजै
कौनभांतिकरिइनसो छूटौं॥ क्यों वहदरसरसुखलूटौं
वारवार जियअतिअकुलाई॥ कैसेहूं हरिविन रहेउ नजाई
धकगुरुजनकुलकानधक धकलज्जा धकधाम
धकजीवन वहदिननकोविन सुन्दर घनस्याम
पलक कलपसमजायब्रजवासीप्रभुदरसविन
सदननकछुसुहाय मन हरिलीनो सांवरे ॥

अथ वारके मिलनकीलीला

श्रीवृषभानकुवरि वरगोरी॥ कृष्ण प्रेमउनमत्तकिशोरी
तनविह्वलमनहरिकेपासा॥ दुरतनहृदयप्रेम परकाशा॥
चलीयमुनजलआपअकेली॥ रूपराशिगुणरासिनवेली॥
दृगनस्यामदरसनकीआसा॥ मनहीमनयहकरतिहुलासा
चितकोचोरकबहुजोपाऊं॥ तौउनकोसताप नभाऊं॥
राखोंबांधिहृदय सोंलाई॥ भुजकीदृढकरिदामवनाई
जैसेलियोचोरिमनमेरौ॥ तैसेलेउंछोरिउन केरौ॥
छोड़ूंनाहिंकरैं शुकोरी॥ ऐसोजानिविचारतभोरी
इततेप्यारीयमुनाहिजाई॥ उततेआवतिधरहिकन्हाई
नीलजलजतनशोभितआछे॥ नटवरभेषकाछनीकाछे
दूरहिहिनेदेखतहीजान्यौ॥ जीवनप्राणतुरतपहिचान्यौ

नहिं सुहात तुम विन दिन राती । प्राण नाथ तुम हित सव भांती
तुम ते विमुख जनन के माहीं । रह्यो जात मोपै प्रभु नाहीं
मात पिता अति त्रास दिखावै । निंदत मोहि नेक नहि भावै
भवन मोहि भाठी सो लागै ॥ । इक छण सोच नहीं उर त्यागै
कहँ लगि अपनी विपत वताऊं । तुम विन सुख को अंत न पाऊं
सुन्दर स्याम कमल दल लोचन । करहु कुसंगति को दुख मोचन ॥
वय वह विनय स्याम सुनि लीजे । चरणन ते न्यारी नहिं कीजे ॥ ॥
कुल की कानि कहा लगि मानौ । यह मन मोहन तुमहि लुभानौ

छं॰ मन लुभानौ तुमहि मोहन और तेहि भावै नहीं
विन लखे गिरिधर न सुन्दर कहूं सुख पावै नहीं
लोक डर कुल लाज गुरुजन कानि कहँ लौ कीजिये
सिंह सरण कृपाल जंवुक त्रास क्यों सहि जीजिये ॥ ॥

दो॰ निरषि स्याम प्यारी वदन सुनि सुनि वचन सिहाय
प्रेमाधीन विलोकि अति हरषि लई उर लाय ॥ १
सीतल पंकज पान परस हरयो तन विरह दुख ॥
प्रेम विवस भगवान वोले प्यारी सो हरषि ॥ ॥

कत दुख पावति हौ तुम प्यारी । यह लीला तुम हित विस्तारी ॥
वसत सदा मै तुम मन माहीं । तुम मम उर तें वाहर नाहीं
दीजौ सयन मोहि कहुं आई । तव मै तुम पै ऐहौं धाई ॥ ॥
अव गृह जाहु आय है कोऊ । यो संकेत वढ्यो हित दोऊ
व्रज यमुना मग विच दोउ ठाढे । प्रेम सकोच अतिहि मन वाढे
विछुरत वनत न रहत तहांई । चितवत चकित चपल चहुं घाई
तबहि युवति व्रजते कछु आई । कछु यमुना ते व्रज को जाई ॥
दहुं दिस तरुणिन आवत जानी । मन ही मन राधिका लजानी ॥

बेसर एक लेन्हों को कौं ॥ पीतांबर दिखराबहु मोकों
पीतांबर अरु बेसर लीजै ॥ प्रगट जाय तब ब्रज में कीजै
ता पे एक बजत कर दोऊ ॥ इतनौ ज्ञान करौ सब कोऊ
सुनु राधा हम सों सो हारी ॥ धन्य धन्य तेरी महतारी
तेरे चरित कहा कोउ जानै ॥ बस कीने घनस्याम सुजानै
अबही दारिवता ये तिनकौ ॥ हम देखे तेरे ढिग उनकौ ॥
ता पे रनिदरत है तू हम सों ॥ कहत न बनत हमें कछु तुम सों
अंग अंग विरचि कपट चतुराई ॥ निजकरि बिधि ना तो हि बनाई
इतनी बुद्धि स्याम के नाहीं ॥ जितनी है प्यारी तो माहीं ॥

स्याम भले अरु तुम भली रजक रूप धरि जाय ॥
बेसरि छोरत है सखी बिन काजे उठि धाय
जान्यौ तुम रो ज्ञान दौरि परी मो पर सबै ॥
जो तुम हती सुजान गहती बाह दहन की

कहुं प्यारी साची अब हम सौं ॥ कछु तो स्याम कहत है तुम सौं
हा हा बात कहै सो प्यारी ॥ भेद कहे तो सौंह हमारी
तो ढिग ते मोहन हम हेरत ॥ गये उते ग्वालन को टेरत ॥
तू क्यों ठठकि रही मग माहीं ॥ कहा कह्यौ मोहन तो पाहीं
सहज होय हम सौं यह भाख्यौ ॥ डर में कछु रोस जिन राखौ
मैं यमुना तट जात रही री ॥ ब्रज ते आवत तुम हि लही री
परखन लगी तुम हि मग माहीं ॥ तिरछे आय गये हरि पाहीं
मैं तुम ही तन रही निहारी ॥ उन पूछ्यो सुधि ग्वाल कहां री
मैं सुन सन्मुख देत न खोली ॥ हो नाही कछु सखन हि बोली
ग्वालन टेरत गये कन्हाई ॥ तुम ने री बेसरि की धाई
सुनि यह बात सुबतिन कव्यानी ॥ कछु तो परतीत साच सी जानी
[illegible] कन्हाई ॥ यह तो हम श्रवन सुनि पाई

जेंवतही छोड़े सखा चले वनोंहि अतुराय ॥
२ ॥ १८२ ॥ कृत दोउ मात चौकि रहीं सगरे सखा
कहत कहां चले जात अति आतुर गोपालतुम

अवही ग्वाल गयो कहि माही ॥ वन में गाय वियानी लोही
मैं जेंवन वैठ्यो विसराई ॥ सो सुधि मो हि अवहिं के आई
तुम जेंवहु मैं देखहु जाई ॥ करी स्याम तिन सों चतुराई ॥
लोही मेरी गाय वियानी ॥ यह कहि चले हरखउर आनी ॥
हंसत सखा सव मन माही ॥ नहीं गाय वछरा वह नाही
है प्यारी रानी वह राधा ॥ हम जानी यह वात अगाधा
जननी नहीं कछु यह जानो ॥ वारवार कहि के पछतानो ॥
भूषे स्याम गये उठि धाई ॥ राज करौ यह गाय विथाई ॥
गई सैन दै वन श्री स्यामा ॥ पहुंचे तहां जाय घनस्यामा
देखत हरष भये मन दोऊ ॥ फूले अंग समात न कोऊ ॥
मिले धाय गहि अंक समाला ॥ [illegible] ललित तमाला
मिलि वैठे दोउ कुंज सुहाई ॥ कोटि काम रवि छवि वि लजाई

नवल कुंज नव नागरी नव नागर नंदनंद ॥
प्रेम सिंधु मर्याद तजि मिले उमगि आनंद ॥
विलसत मदन विलास को कोटि मदन मन मोहन
युगल रूप को रासि नित्य विलास विलास निधि

नागर स्याम नागरी स्यामा ॥ शोभित कुंज कुटी छवि धामा
चितवत दुर दुर नैन लजी हैं ॥ सो छवि वरन कहे कवि को है
ऐके स्याम नागरी छवि पर ॥ नागरी नर ॥ तस्याम सुभग वर
देह दसा के रति विसारें ॥ परस परस दोउ रूप निहारें ॥
शोभित वदन महा छवि छाये ॥ सिथल कच अंग अंग सुहाये
इन्दीवर ॥ जीवकमल ॥ ॥ फूलि रहे मकरंद भरे मनु ॥

बैठेकुंजद्वारसुखपाई॥कोमलकलिकसुमनयसेजसुहाई॥
लटकतिबेलिसघनकुंजनतरुली॥फूलिरहींनवडारिनवेली॥
हरितभूमितृणविवरनिमाई॥बहतसमीरसुमंदपुरवाई॥
आयेउलहिमेघसुखकारी॥परतिबूंदशीतलझमझारी॥
भींजतसुरंगचूनरीसारी॥मनसकुचतललितादिकसंगा॥
बूंदबरसतमोहनगातन॥ऐसेंहींरसकरतप्रेमकीबातन॥

भीजेरसरंगप्रेमसुखजलभीजेदोउगात॥
भीजेअंबरकुंजगृहस्यामास्यामसुहात॥
यहअवसरकोगायकोपानेकोकहिसके॥
गोपसुताकेसाथरमतब्रह्मद्रुमकुंजतर॥

इहिविधिकरिक्रीडासबवनमाहीं॥कह्योस्यामस्यामाकेपाहीं॥
अबघरहूजाउसोकनियराई॥मातपिताकीलिहैंदुचिताई॥
यहरसरीतिगुप्तकीनीकी॥तुमप्यारीअतिमेरेजीकी॥
कुलतेंकोउडारिमैंआयो॥तुमरोबोलसुनतउठिधायो॥
मेरोप्रानवसततुममाहीं॥इकक्षणतुमकोंबिसरतनाहीं॥
सुनिसुनिबातेंपियकीप्यारी॥करतसनेहमनआनंदभारी॥
अतिसनेहबोलीसकुचाई॥सुनहुप्रानप्रीतमसुखदाई॥
कहाकरोंफिरजावनघरकों॥मनअटक्योनहिंमानतडरकों॥
डगतुमकोंदेखतसुखपावैं॥पलहुगुरुजनमोहिंनेकनभावैं॥
वरजहुभयनाचितनकतुमहरि॥ऐसेंसमुझसबकोमनहरि॥
तुमरेंनेकुसकुचयहवानी॥सहियतहैंहमसबैंसहानी॥
वसीकरनतेंइनकेमाहीं॥विवसभयेंमनमानतनाहीं॥

ऐसेंविधिपरस्परकरतदंपतिनिजअनुराग॥
मैंसुरसआनंदरसबदतआपनेभाग॥॥
स्यामलईउरलायप्रियाबोधिपठईघरहि

दोहा ॥ चौपाई ॥ घनसुखकेसदन

करतिजननिकै [illegible] ग्वाल॥ पूछतसदनस्यामतेहिकाल॥
लीनेधायलाइउरमैया॥ कहांतेलालकोलेउंबलैया॥
करतेकौरडारिउठिभागे॥ सुनतगायबांहीअनुरागे॥
सोहीगायआपनीजानी॥ तातेंप्रीतिअधिकउरमानी॥
वहतौनाहिनमेरीमैया॥ वृथाभम्योमैंसुनरीमैया॥
गोवर्द्धनयमुनातटसारो॥ वृंदावनढूंढतसबहारो॥
कोउसखासंगतहंनाहीं॥ फिरौंअकेलोवनकेमाहीं॥
युवतीएकमिलीघौंकाहीं॥ सोपकरिलाइगईघरमाहीं॥
सुनिजसुदाप्रतिमनपछितानी॥ धोयोपदलैतातोपानी॥
तुरतस्यामकोभोजनदीनो॥ निरखिमुखारविंदसुखलीनो॥
लीलासागरकुंवरकन्हाई॥ सदासदाभक्तनसुखदाई॥
ब्रजवासीप्रभुसबगुणआगर॥ नंदनंदनसुंदरसुखसागर॥

तबश्रीकीरतिनंदनी॥ रूपरासिगुणखानि
चलीस्यामसुखदैभवन नागरिनवलसुजान
लईखोरिलैं हाथ आंचरतैं मोतीलरी॥
सखीमिलीइकसाथ बूझतकहांतेंलाडिली॥

तासोंयोंराधिकासुनायो॥ गईहुतीयहकाजबनायो॥
कह्योसखीतबसुनरीप्यारी॥ ऐसीनिधरकभईकहारी॥
कुंजकुंजवनफिरतअकेली॥ संगनहींकोईसखीसहेली॥
मोतीसखौलिनहिंलीनी॥ ऐसीनैककरनीयहकीनी॥
प्रातहिगईअबहिंतूआई॥ बीत्योदिवसनिसानियराई॥
पायोहारकिधौंपुनिनाहीं॥ देखोसोधिहुसाधमनमाहीं॥
चतुरसखीमनमेंयहजानी॥ मिलवतहैयहझूठीबानी॥
यहतौगईस्यामकेपास॥ आवतिहैकरभोगविलास॥

मनहींमनकीरीतिसकुचाई ॥ पौंचकरीमैं याहि रिसाई ।
अतिपुनीत राधिकाप्रवीनी ॥ कृष्णमिलन हित यह मतिकीनी
अगम अगोचर है प्रभु जोई ॥ व्रजवनितनवस कीन्हीसोई
जो प्रभु [illegible] ध्यावैं ॥ व्रजगोपिन संगसो सुख पावैं
हरकीकृपा अगोचर भारी ॥ निगमन हूंतें अगम्न नारी ॥
प्रीति विवस सतुते गिरिधारी ॥ राजा रंक पुरुष कहनारी ॥
देवकिउदर प्रीतिवस आये ॥ प्रीतिहि तेजसुमति पैप्याये
प्रीतिविवसवन धेनुचराई ॥ प्रीतिविवसनंदकुंवरकन्हाई
प्रीतिहिके वसदहीचुरायो ॥ प्रीतिविवस ऊषल वंधवायो
प्रीति विवस गोवर्धन धारी ॥ प्रीति विवसनरवर वनवारी
प्रीति विवसगोपिनसंगकामी ॥ प्रीति विवसवृंदावनधामी

स्यामसदा वसप्रीतिके तीनिभुवन विष्यात
विना प्रीतिनहिंपाइये नंदमहर को तात ॥
प्रीतिकरहुचितलाइ व्रजवासीप्रभुपदकमल
कहत संतश्रुतिगाय प्रभुहिरी[illegible] ॥ ७ ॥

अथ प्यारी के गृहको मिलनलीला

भये स्यामनागरि वस ऐसे ॥ फिरत छांहसंगहि संग जैसे ॥
वदनकमलके रूपलुभाने ॥ रहतमिलीमुखज्यौंमंडराने
वचन नादरसमृगज्यौंगीधे ॥ नैनकटाक्षवंकसर वीधे ॥
कवहुं स्याम यमुनातटजाहीं ॥ विनप्यारीदेखे अकुलाहीं
कवहुंकदमचढ़ि मग अवलोकैं ॥ कवहूजाइवनकुंजविलोकैं
गृहवनलगत कहूमननाहीं ॥ मिलनप्रकारचहत मनमाहीं
तववृषभानपुरै [illegible] आवैं ॥ मुरलीमधुर वजावें गावें ॥
प्यारीप्रघटस्यामगतिदेखी ॥ मनहींमनहींसहातविशेखी

अति अनुराग भरे दोउ नागर ॥ गुन सागर और रूप उजागर
अरस परस दोउ चाहत ऐसे ॥ शशि चकोर अंबुज अलि जैसे
चलीं यमुन वृषभानु दुलारी ॥ सोभित संग नवल व्रजनारी ॥
देखे नंदसुवन तेहि घोरी ॥ व्याकुल प्रेम विवस भइ भोरी ॥

सखिन सँभाल छिन नागरी मन डरपी सकुचाय ॥
स्याम परे फंद काम के कौन कहै समझाय ॥ ॥
सखियन के संग कोउ बोलि सकत नहिं वचन सुष
हृदय भयो अति सोच देखि विरह व्याकुल हरिहि

इतहि सखिन सों बात बनावै ॥ उतहि स्याम को भाव जनावै
मुख मुसकाय सकुचि पुनि लीन्हो ॥ सहज कमल को निरख [illegible]
एक सखी यमुना सों आवति ॥ ताहि टेरि यों वचन सुनावति
मेरे सदन आइयो आली ॥ यह सुनि हरष भयो वनमाली ॥
प्यारी गुप्त भाव जो कीन्हो ॥ स्याम सुजान जान सो लीन्हो
हरषि गये तब निज गृह मोहन ॥ प्यारी चली सखी के गोहन
चतुर सखी मन मेल खिलीन्हो ॥ भाव कछू हरि सों इन कीन्हे
हँसि वे आपुस में बतरानी ॥ हरि तन लखि कछु यह सुख मानी
पुनि मुसकाय कमल कर फेर्यो ॥ सदन बुलाय सखी को टेर्यो
गये स्याम उर हर्ष बढ़ाई ॥ ये अति चतुर करी चतुराई ॥
औ सभाव के सी गन कोऊ ॥ आजु रैन मिलिहैं ये दोऊ ॥
लै मञ्जना तें जल अन्हवाई ॥ सखिन संग प्यारी घर आई

भाव दियौ निस आय हैं मेरे मोहन आज ॥ ॥
अति हर्षित अंगन सजति भूषन वसन समाज
सहज रूप की खानि अंग सिंगार तिलाडिली
कोक [illegible] निज मुख नप ति हरिवल्लभा

अंग सिंगार कियो हरि प्यारी ॥ वेनी रचि निज पानि सवारी

हासविलासविविधिरसरैनी॥यहिसुखबीतीनिजामनभयबीतीं
भतिरसमत्तभूलभलसाने॥पुनिपौढेदोऊलपटाने॥

निसिनिघटीनमतामिटीउडगनजोतिमलीन
गयेकुसुमकुंभिलायकेभईदीपछबिछीन
खिलेसरसरसिजभयोपवनसीतलसुरभि
धरीउतारिमनोजधनुषआपनेपनचते॥

सरसवचनबोलतवपियारी॥जागहुप्राननाथबनवारी
भईप्रातकोसमयकन्हाई॥प्राचीदिसिपीरीपरिआई॥
चंद्रमलिनविरहीदुखदानी॥अलिछूटेकुमुदिनिसकुचानी
बोलतमधुरजहाँतहँबानी॥मिलेकोकि२सुखमानी॥
उठहुप्रानपतिसदनसिधारो॥हैब्रजघरघरघेरहमारो
लगीरहतपरघतब्रजनारी॥जामाहिंजिनसुजनभयभारी
सुनतउठेमोहनमुसकाई॥चलेसदनअपनेअतुराई॥
रहतेनिकसतसूरिसपनजानी॥दोयपदरसतनदसामलानी
मधपदरसदेगयेकन्हाई॥यहउनकोमनसाभयराई॥

सीसमुकटमो॥तनकीभ ला॥पीतवसनकरनैनविसाला
स्यामवदनत सुन्दरताई॥अंगअंगप्रतिवरनिनजाई
देखिरूपमनरह्योलुभाई॥निकसगयेगृहकुंवरकन्हाई

वारवारगृहलाडिलीयहसोचपछितात
गयेस्यामआलसभरेनेकनसोयेरात॥
देखेजनिसखिकोयस्यामगयेमोसदनते
मैंराख्योहैगोयअबलगियहरससखिनसों

देख्योआइपवरिहैप्यारी॥जहांतहांठाढीव्रजनारी॥
सकुचगईचिंताउपजाई॥वारवारमनमंनपछिताई॥
हरिसौंप्रीतिगुप्तहीमेरी॥सोइनआजप्रगटकरहेरी॥
निकसेस्यामहमारेघरसों॥इनजान्योहैहैंअटकरसों
नितहीनितवूझतिरआई॥मैंनिदस्योइनकौंसतराई॥
अवतौस्याममप्रगटइनदेखे॥कोरहैमोसोंवदनपरेखे॥
यहतौदांवभलइनपायो॥अवकैसेकरिजायछुपायो॥
अवहींवूझहैंगीसबआई॥कहाकरिहौंउनसौंचतुराई॥
प्रगटकरौंतौहोयनीती॥राखनगुप्तकहीहरिप्रीती॥
सोचपरोकछुवातनआवे॥वारवारमनप्रभुहिमनावे॥
प्राननाथहरिहोउसहाई॥जातेमेरीपतिरहिजाई॥
जैसेंवोधसखिनकौंहोई॥दीजेनाथवुद्धिअवसोई॥

ऐसेसोचततलाडिलीकवहप्रभुहिमनाय
कवहुंप्रभुकेसमुरूमनप्रेममगनहैजाय॥
भयोवोधउरआयसुमिरतहीमनभावनो
कहिहौंसखिनवनायमनुसनहरषीनागरी

परमकुसलराधेहरिप्यारी॥रच्योसखिनकौवोधविचारी
अतिआनंदपुलकितनआयो॥सोचमोहउरतेविसरायो॥

जोऐसोविसुन्दरकुंवरकन्हाई॥तातेप्रातसखीयनदसआई
उनसोंसोईरूपवखानौ॥यहविचारप्यारीउरआनौ
प्यारीपियकेगर्वगहेली॥अंगअंगछविपुंजभरेली॥
बैठीसदनविराजतखरी॥स्यामसनेहसदारसपूरी॥
करतपरस्परकरिपरिहास॥कहतिचलौराधाकेपास॥
होइहैनिधरकघरमैंवैसी॥देखहुचलजुवदनकौंकैसी
कैसेअंगअभूषनकैसे॥कछुबदलेकैधौंहैवैसे॥
आजरैनहरिसौंरतिमानी॥कहिहैंकहासुनैंचलिवानी
राधागृहगवनीव्रजनारी॥ताहूजहांवृषभानदुलारी
देखिनागरीमुखनहिंबोली॥आनोंआईकरनठठोली

सहजरहीबोलीनहिंकछुवदनमोवैन॥
निकटबुलायौसखिनकौंनैननहीकीसैन
इतलीन्होंइनजानिपरनचतुरअलीसबै
यहकछुरचतसयानदेखिहमैंबोलीनहीं

अपनोभेदनहींकछुदेहे॥कहाबाधराचकैधौंकेहैं॥
अपनोजाबवलचारचुरवे॥कैसेअमघटनकहुजनावै
निधरकभईस्यामसंगपाई॥भूलिहमतियाकोलरिकाई
निरखिअकुटीत्योरनिहारी॥कहैकहाधौंबातसवारी
राखहुगर्वतुमहूंसबकाऊ॥देखहुबोलनहींकिनकाऊ
कह्योविहसिमनकइब्रजनारी॥सुनोअहोवृषभानकुमारी
आजकहाउखमूंदरहीहै॥कापरिसकोंमौनगहीहै॥
हमसौंकहतनहींक्योंगोरी॥हमतौसंगसखीहैंतेरी॥
कैदेवनकौंध्यानधरोरी॥कैसबसावकछुपहेपरोरी॥
जबभावतीहमतेरेप्यारी॥तबतबयहेधरनतुमारी॥
तुमदरावकरीरातनिहमसौं॥हमहूकछुराषतिहैतुमसौं

हमदेषतकछुऔरसुभाऊ। यहदेखतहरिकौंसतभाऊ
तोकोअस्तुतिकहावखाने। दूनहीभलेस्यामकोजानें॥
तवहंसिकह्योसाखिनसुनुप्यारी॥ धोखोमनतेडारऊटारी
प्रातहिंतूजोआजनिहारे॥ गयेकान्हवेमेघनकारे॥
मोरसुकेरयसिरमोरसहोई। कटिपटपीतनदामिनसोई
मुक्तमालवनमालसुवेसू। नाहिंवगपांतनधनुषसुरेसू॥
पगनूपुरधनिगरजनिनाहीं॥ मतिराखोधोखोमनमाहीं॥
देखेतेप्रातहिंगिरिधारी॥ काहेकोसोचतिमनप्यारी॥

धनिधनिवृजकीनारितुमहरिछविलषतअनूप
मोहिहोतधोषोतवहितवदेखतवहरूप॥
तुमदेखतिहरिगातकैसेहगठहरयसव॥
मोपैलखेनजातकरिहारीकेतोजतन॥

तुमदरसनपावतरीकैसे॥ मोहूस्यामदेखावहुतैसें॥
वतोअतिछविचपलकन्हाई॥तुमकैसेदेखत ठहराई॥
कैसेंरूपहृदैमेराखो॥ मोसोसखीसांचसबभाखो॥
मैंदेखनपावतिनहिनीके। रहतिसदाअभिलाषजीके
धनिधनितूवृषभानदुलारी॥ धनितुवपिताधन्यमहतारी
धन्यसोदिवसरोनितिथिवारा॥जवतेलीन्होरीअवतारा॥
धनितेरेवसुकुजविहारी॥ धनितूंवसकोन्हेगिरिधारी॥
भावभक्तिमेंमातिधनिसोऊ॥ सफलभावधन्यतुमदोऊ
तोहिस्यामहमकहादेखावें॥ तूहरिकऊहरितोकोंभावें
एकजीवदुइदेहतुम्हारी॥वेतोमैंतुमउनमेंप्यारी॥
उनकोपटतरकोतूदीजे॥ तेरीपटतरउनकोलीजे॥
उभयसुधासुनस्योविलगाई॥ गूंगेकोगुरकहेउनजाई॥
तूउनकेउरमेंवसीवेतोरेउरमाहिं॥

आरस परस ज्यों देखिये दरपन दरपन छाहिं
कहे कौन पै जाहिं तुम दोउ निर्मल गात अति
वे तेरे उर माहिं तू उनके रंग में रंगी ॥ ॥
नीलांबर स्यामल छवि तेरे । तुव छवि पीत वसन उनके रे
घन भीतर दामिनी विराजे । दामिनि घन के चहुं दिस राजे
तुम अनूप दोउ सम जोरी । नंद नंदन वृषभान किशोरी
सुनि २ सखि बयन के मुख बानी । बोली राधा कुंवरि सयानी
सुनु ललिता सांची कहु मोसों । मैं पूछति सकुचति हौं तोसों
मोसों मानत नेह कन्हाई । मेरी सौं कहि मोहि सुनाई ॥
तुम तो रहति स्याम संग नितही । मिलत जाय उनसों जित तितही
उनके मन की तुम सब जानो । हा हा मोसों सांच बखानो ॥
सुन राधा इतरात कहा री । तो ते और कौन है प्यारी ॥
तेरे वस नंदनंदन ऐसे । रहत पोन पग वस जैसे ॥
ज्यों चकोर ससि के वस माहीं । है सरीर के वस परिछाहीं ॥
नाद विवस म्रग दीपक जैसे । मनमोहन तेरे वस तैसे ॥
मिली खरक तू स्याम को दई धेनु दुहि ताहि ॥
तेरे वस हरि लवाहि ते कहा भुरवति मोहि ॥
वरनो कहा सनेह ने कहत तुम न्यारु नहीं ॥
हो तुम एकहि देह वे दच्छिन तू वाम अंग

अथ गर्वव्याज विरहलीला ॥

सुनि प्यारी ललिता मुखवानी । ऐसी बात जिय में यह आनी
और नहीं कोउ मो सम की । हौं राधा आधे अंग हरि की
अपने ही वस पिय को करि हौं । अनत जात देखहु तो लरि हौं
ऐसे गर्व कियो जिय प्यारी । घर घर गई सकल व्रजनारी

रहि अंतर आये गिरि भारी ॥ गर्व विभंजन जन सुखकारी ॥
हरि अंतरजामी अविनासी ॥ जानी प्यारी गर्व उदासी ॥
उझकि रुकि प्यारी तन हेरो ॥ प्यारी देखत ही मुख फेरो ॥
कह्यौ कान्ह तुम मानत नाहीं ॥ उलटत फिरत बरन ब्रज माहीं
मिसही मिस जब तिन को हेरो ॥ नेकु नहीं छांडत घर घेरो ॥
कोउ जैसे तैसे अपने घर ॥ तुम आवत मानत नाहीं डर ॥
ऐसे प्रेम गरब कर प्यारी ॥ प्राननाथ तन नाहि निहारी
जाने हारे लंग कन्हाई ॥ बैठि रही अभिमान बनाई ॥

दो॰ हृदय स्याम सुखधाम में राख्यो गर्व बसाइ
बैठि तहां पायो नहीं रह्यो स्याम सकुचाइ
जहां रहत अभिमान तहां वास मेरो नहीं ॥
सोरठा उर जान आप लगे पछितान हरि

तुरतहि गवन तहां ते कीन्हो ॥ नहीं दरस प्यारी को दीन्हो
चकृत भई प्यारी मन माहीं ॥ यहां स्याम आये क्यों नाहीं
पुनि आय द्वार पर देख्यो ॥ तहां नहीं नंदलालहि पेख्यो
झांकत ही फिरि गये कन्हाई ॥ मनहीं मन राधा पछिताई
मोते चूक परी अति भारी ॥ ताते मोहन मोहि बिसारी ॥
इक तो बैठि रही गरबानी ॥ दूजे मैं हरि सों रहरानी ॥
गोरी बुद्धि जानि के हीनी ॥ मोसे स्याम निठुरता कीन्ही
वे ब्रजलायक कुंज बिहारी ॥ मोसी उनके कोटिक नारी ॥
कासों कहौं हरि को स्यावै ॥ को अब मोकों हरिहि मिलावै
भई विरह व्याकुल अकुलाई ॥ वदन सरोज गयो कुम्हलाई
तलफि आपुन को निदर कहावै ॥ सुमिरि सुमिरि उर भरि भरि आवै
नेकु नहीं धीरज उर धारै ॥ नैन सरोजनि ते जल ढारै ॥
दो॰ भई विकल अति नागरी विरह विथा की पीर

खानपान भावै नहीं सुधिबुधि तजी सरीर ॥
घरबाहर न सुहाय सुख सब दुखदायक भये
रहे उसाच उरछाय ब्रजवासी प्रभुमिलन कौं ॥
राधा मदनसखी पुनि आई ॥ देखि दसा मन प्रीति भइ पाई
अति ब्याकुल तन वदन मलीना ॥ नीरविहीन मीन जिमि दीना ॥
करगहि [illegible] ब्रजनारी ॥ कहा भयो तोकहँ री प्यारी ॥
ऐसे विवस भई तू जाहे ॥ हमहिं सुनाय कहत नहिं काहे
अति प्रसन्न देख्यो तोहि तवहीं ॥ को मुरझाय गई री अवहीं
बहुरि लषे धौं कतहुँ कन्हाई ॥ उनहीं तोहि ठगोरी लाई ॥
स्यामनाम सुनि स्रवनन जागी ॥ जान्यो हरि आये अनुरागी ॥
आतुर सषी कंठ लपटानी ॥ चूक परी मोते कहि बानी ॥
अब अपराध छमौरि सत्यागी ॥ करुना करि मोहि[illegible]
चूकत भई सब ब्रज की नारी ॥ रही सो चित्र लिखी सी [illegible] ॥
सीतल जल ले मुख परनायो ॥ पूंछि आचरन वदन सुनायो ॥
आज भई कैसी गति तेरी ॥ परमचतुर ब्रज में [illegible] ॥
भयो अलिन के वचन सुनि कछु चेत उर आय ॥
तव जानी ये तो सखी गई हृदय सकुचाय ॥
क्यौं तुव वदन मलीन का है तू ऐसी भई ॥ ॥
कहु प्यारी परवीन वार वार बूझत सखी ॥
बोली तव [illegible] ॥ तुम सो कहा दुराव कहा री
मैं तो हरी के हाथ बिकानी ॥ उन मोहि तजी कुटिल मति जानी
अपनी कथा स्याम की करनी ॥ प्रघट कहौं तुम सों सव वरनी
बैठी ही मैं सदन अकेली ॥ तांके आप द्वार हरि हेली ॥
मैं मन में कछु गर्व बढायो ॥ आदर करि नाहिं भवन बुलायो
उन मेरे मन की सब जानी ॥ अंतरजामी सारंगपानी ॥

कमलनैन वे सर्वप्रहारी ॥ जात रहे हँसि मोहि बिसारी ॥
तबतें मैं रहि बिकल अतिहीने ॥ कहूं काम कछु मन मोहि दीन्ह
चितन रहै कितने समुझाउं ॥ अब कैसे करि दरसन पाउं ॥
भयो भवन मो कहुँ बन आली ॥ नाहिं सुहात बिना बनमाली
सुनहु सखी लालन भेयाऊं ॥ अबहु हरि मिलहि सो करहु उपाऊ
बिन बनमोहन कुंवर कन्हाई ॥ भये सुखद सब अति दुखदाई

गिरिकन्यापति तिलक कौ दाहत अनल समान
शिवसुत वाहन भषन भख भयो कहूं लाहल समान
जलधिसुता सुत हार भयो इन्द्र आयुध सखी ॥
मलयज मनहु अंगार सो घाम्यो गौरीपुत्र वसन वर ॥

सखी सदा मेरो यह हेरी ॥ भयो काम मो कौ अब बैरी ॥ ॥
बारिजभवसुत भय की चाली ॥ अब नाहिं कोर है हरि सों आली
रितु बिचार जो मान हिं करिये ॥ सो इन जारि जाउ न मन में भरिये
अब सुभाव एहि है हरि साया ॥ मोहि मिलावहु सो कछु उपाय
सुन राधे करनी यह तेरी ॥ हमसौं भेद कियो तैं येरी ॥
उनके गुन जैसे नाहिं जाने ॥ अब हीं ते ऐसे ढग बाने ॥
एकहि बार मिली तू धाई ॥ नहि राखी मरजाद बडाई
तेहीं उनको मूड चढायो ॥ तब नहिं हम कौ भेद जनायो
भवन बिपिन सगडेलन लागी ॥ वे कहूं तरुनि रवन अनुरागी
निज कर अपनो महत गँवायो ॥ परबस परी कवन सुख पायौ
मेरो कह्यो अजहु मन माहीं ॥ हितु करि मान हिं गौ धौं नाहीं
धीरज धरि कत मरत वृथा हीं ॥ तूं हूं मान करति क्यों नाहीं ॥

बात आपनी आपने कर हू देख बिचार
भई कहा ऐसी बिबस परी एकहि बार ॥
परुष भँवर जिय जान भोगी बहुत प्रसून के

विनाकियेकछुमानकौनेपियानिजवसकियो
कहतसखीतुमतौयहबात॥कंपहोतसुनिमेरो गात॥
मैं तौमानस्याम सौं कीन्हौं॥तातेंइतनादुखमोहिदीन्हौं
अवतौभूलिमाननहिंकरिहौं॥स्याममिलहिंतौपायनपरिहौं
विनतीकरिउनहिंमनाऊं॥यहअपनोअपराधछमाऊं
चूकपरीमोतेमैंजानौं॥उनतेंयहअपराधनमानौं॥
वैआवतहैं मेरे नीके॥ मैंहीं गर्व धर्यौ सखिजीके
मेरे गर्व तेंकाहसर्यौरी॥मिट्योहृदयसुखदुखहिंभर्योरी
जाते हानि... होई॥ कहौसखीकीजे क्यों सोई॥
मानविनानहिं प्रीतिरहैरी॥प्रगटदेखिमोहिकहाकहैरी
धायमिलेकीगतितेरीसी॥भईअधीनफिरतचेरीसी॥
अपनोभेदउनहितेंदीन्हौं॥तवदुरावहमहींसोंकीन्हौं
भयविनप्रीतिहोतिनहिंप्यारी॥तजहिंमानसुनसीखहमारी
यहिपुनिसिखवततुमसखीमानकरनकोमोहि
मनतौमेरेहाथनाहिंमानकवनविधिहोहि॥
उमगिभरयेदिनरातिस्यामगुननिअभिलाषकरि
मनहिंमानतवातमानसजौकैसे सखी॥
मनमोसोंअववामभयोरी॥कहाकहौंहरिसंगगयोरी॥
अवअपनोहितउनहींजानौं॥मुदितभूलअपमानन मानौं
इन्द्रीसवस्वारथरसपागी॥वाहिसंगमनहीं के लागी॥
घरफूटेंकौ रह्यौपरैरी॥मनहिंविनाकोमान करैरी॥
अवकोउमेरेसंगनाहीं॥ रहीअकेलीमैंतनमाहीं॥
ताएरभयोकामअववैरी॥विरहअगिनितनजारतहैरी
इतनेपरतुममानकरावति॥कहौकवनसखियहकहनावति
मैंतौचूकआपनोमानौं॥मोहिमिलावहुस्यामहिआनौं

कमल नैन वे सर्व प्रहारी ॥ जात रहे हँसि मोहि बिसारी ॥
तबतें सिरह बिकल अति कीन्हे ॥ कहुं कार कहु परसो हि दीन्हे
चितन रहे कित नेसमुझाउं ॥ अब केसे कारि दरसन पाउं ॥
भयो भवन मो कानन आली ॥ नाहि सुहात बिना बनमाली
सुनहु सखी लालन भेयाऊं ॥ अब हरि मिलहि सो करहु उपाऊ
बिन घन मोहन कुंवर कन्हाई ॥ भये सुखद सब अति दुखदाई
गिरि कन्या पति तिलक का दाहत अनल समान
सिवसुत बाहन भषन भष भयो हु लाहल सान
जलदि सुता सुत हार भयो इंद्र आयुध सखी ॥
मलयज मनहु अंगार सा षास्गा रिपु बसन वर ॥
सखी सदा मेरो यह हैरी ॥ भयो काम मोको अब वैरी ॥ ॥
वारिज भव सुत अय की चाली ॥ अब नाहि कोउ हे हरि सों आली
रितु विचार जो मान हि करिये ॥ सो इन्हारि जाउ नमन मे भरिये
अब सु भाव रहि है हरि साथा ॥ मो हि मिलाव हु सखि ब्रजनाथा
सुन राधे करनी यह तेरी ॥ हमसौ भेद कियो तें येरी ॥
उनके गुन जेसे नाहि जाने ॥ अब ही ते ऐसे रंग वाने ॥
एकहि बार मिली तू धाई ॥ नहि राखी मरजाद बडाई
तेहीं उन को मूड चढायो ॥ तब नाहि हम को भेद जनायो
भवन विपिन सगडोलन लागी ॥ वे बहुतरस निरखन अनुरागी
निज कर अपनो महत गवायो ॥ परबस परी कबने सुख पायो
मेरो कह्यो अजहुं मन माहीं ॥ हितु कारे मान हिंगी धी नाहीं
धीरज धरि कत मरत वृथा ही ॥ मैं हूं मान करति कों नाहीं ॥
बात आपनी आपने कर हु देख विचार
भई कहा ऐसी विवस एरी एक हि बार ॥
पुरुष भंवर जिय जान भोगी बहुत प्रसून के

अबतौक्यौंहूंमाननकरिहौं॥ऐसीबातकहतेहिंलरिहौं
अबजोमिलहिस्यामकहुंभागी॥फिरतहुंहौसंगहिसंगलागी
आलीनंदनंदनमोहिभावे॥सोईहितजोआनिमिलावे॥
ऐसेकहिप्यारीअनुरागी॥दारुनबिरहबिथाउरजागी
देखिदसासाहिनासकीअलीउठीअकुलाय
हमराधाकीप्रियसखीरचियेबेगिउपाय॥
कहोस्यामसोंजायऐसीचूकपरीकहा॥
दीजेयाहिमिलायजरिजरिअतिपीरीभई
सखिनकह्योतबसुनरीप्यारी॥मतिहिहोयव्याकुलसुकुमारी
अबहिजायहमस्यामहिल्यावें॥नेकुधीरधरितोहिमिलावें
पटसोंपोंछिबदनबैठाई॥तरकबातबहुभाषिसुनाई॥
नेकुनहीधीरजउरधारै॥बारबारमुखकान्हउचारै॥
सावधानकरिसखीसयानी॥गईदौरहरिपैअतुरानी
लषिहरिसिखललितमुसुकानी॥हरिहंसिलखेदुहूनमनजानी
तबहरिललितासोंमुसुकाये॥कछुतचितवतनैनचुराये॥
अतिआतुरआईदिगधाई॥कान्हबदनगयोमुरझाई॥
बोलीललितातबमुसुकाई॥सुनहुचतुरनंदनंदकन्हाई
आजएकअचरजलषिपायो॥परसबिरंचिनजातदिनायो
अतिहीअद्भुतरचनाजाकी॥बरनतबनतभांतिनतिताकी
रीझिरहीमैंताहिनिहारी॥रीझहुगेलषिकुंजबिहारी॥
मैंआईतुमसोंकहनचलहुदिखाऊनैन
देखिपरमसुखपाइहौजोमानौमोबैन॥
एकअनूपमबागसुबरनबरननजायकहि
उपजतलषिअनुरागअतिविचित्रानत्वन्यो
सुफुलकमलनअलिगुंजतबिराजें॥तापरराजहंसछविछाजें॥

द्वै कदलीतरु तापर सोहैं ॥ बिनु दल फल उलटे मन मोहैं ।
तापर मृगपति करत बिहारू ॥ मृगपतिपर सरवर एक चारू
द्वै गिरिवर सरवर पर राजे ॥ तिनपर एक कपोत बिराजे ॥
निकट सनाल कमल युग फूले ॥ सोभित तें अध दिसि को झूले
ताको अलि कपोत पर नीको ॥ एक सरोज भावतो जीको ॥
तापर एक अमी फल लाग्यो ॥ कीर एक तापर अनुराग्यो
तहां एक कोयल द्वै खंजन ॥ तिनपर धनुष सुभग मन रंजन
धनुपर शशि द्वै नागिनि वारी ॥ मनिधर एक नागिनी भारी ॥
ऐसो अनुपम बाग सुहायो ॥ घट तन नेह जल कछु कुंभलायो
चलि घनस्याम सीचि सो दीजै ॥ सोभा देखि सुफल दृग कीजै
करि विचार देखहु गिरिधारी ॥ बनी ललित सब अंग पियारी

सुनहु स्याम सुन्दर नवल छैल छबीले लाल ॥
तुमहिं मिलन कों नवल वह अति ब्याकुल है बाल
कहा भयो जो मान कियो प्रेम के लाड़ ते ॥
अति सुन्दरी सुजान प्यारी जीवन जीव की ॥

बरनों श्री वृषभान दुलारी ॥ चित दै सुनहु लाल गिरधारी
कहों प्रथम बेनी की चिराई ॥ लसत पीत पट या छबि छाई
अहिनी अनु कुटिल गति त्यागी ॥ शशि मुख सुधा चुरावन लागी
रेखा मनु आसित सुहाई ॥ सोभित सीस न जात बताई
मानहुं निसि बिल लाखि की री ॥ तिमिर समूह बिदारि उजेरी
सोभित कुटिल लट अति नीकी ॥ मन हरि लेत भावती जी की
जनु अलि सिसु तिर निज बस चारी ॥ मनहु मदन धनु धरे उतारी
कैसरि आड़ लिलार सुहाई ॥ मनहु रूप को पारि बंधाई
चपल नैन बिच नाक सुहाई ॥ सोभित अधरन की अरुनाई
मनु सुरा खंजन बिच सुक सोभा ॥ देखि एक बिंबा फल लोभा

दसन कपोल चिबुक दर ग्रीवा॥ बरनि न जात महा छबि सींवा॥
सुभग अंग सब भूषन सोहै॥ कोटि काम रति या निरषत मोहै॥
अति कोमल सुकुमार तन सकल सुखन की सीर
तुम बिन मोहन लाल पिय व्याकुल अधिक अधीर
भरि रहे लोचन नीर स्याम स्याम सुख कहि उठति
चलहु हरहु यह पीर मैं आई लिषि धाय कै॥
प्यारिहि विकल सुनत सुखदाई॥ सहि न सके उठि अकुलाई॥
चले विहसि ललिता के साथा॥ प्रेम महि के बस श्री ब्रज नाथा॥
प्रेम विवस प्यारी पहँ आये॥ देषि सदा मन अति पछताये॥
परी विकल तन दसा विसारी॥ प्यारी मुख देखत गिरिधारी॥
नीलांबर निज कर तें टारी॥ कीनो सनमुख बदन सुधारी॥
जलद पटल मानहु बिलगाई॥ दियो चंद निकलंक दिखाई॥
भयो चेत परसत पिय पानी॥ सनमुख हर्ष परत सकुचानी॥
लई उसांग भरि अंक कन्हाई॥ विकल दोष आरस्यो भरि आई॥
युगुल परसपर लषि सुख पाये॥ इतनेहिं बिरह दसा सरसे॥
कंचन बेलि तमाल सुहाये॥ मनहु प्रेम रस सुधा सिंचाये॥
हरषि दुहुं दिस सुमन निफूले॥ परमानंद फलनि फरि फूले॥
मुरछानि विरह तुरत विसराई॥ लाषि यह मिलनि सघी हरषाई॥
वह चितवनि वह हंसि मिलनि वह सोभा सुखसार
भई विवस ललिता निरषि इकटक रही निहारि
रहे परस्पर देखि उत आतुर दोऊ छबि मांहि॥
परे न नंद तन मन मगन दृषित न क्यों हूँ मानहीं॥
ललिता कहति सषिन सों बानी॥ देषहु सषि राधा अतुरानी॥
कै से अनाग अंग छबि लेई॥ मिलहु स्याम मन धीरन देई॥
रूप बिना जिमि अवत नीरा॥ सो ऊ ताधारत प्रान धीरा॥

वहआतुरछविलैउरधारैं॥नेकुनहींद्रगइतउतटारैं
ज्यौंचकोर - दीहटकलावै॥याकीसरिसोऊनहिंपावै
होमआगघृतगतिहैजैसी॥याकीदसादेखियततैसी॥
जदपिस्याम संगस्यामपियारी॥छविनिरखतअतिआनंदभारी
हावभावकरिपियमनमोहै॥विविधिविलासवदनछविसोहै
विरहविकलमनतदपिभ्रमावै॥मिलहुप्रतीतिनउरमेंआवै
तृषावंतजिमिसलिलहिदेखी॥उपजतअधिकपियासविसेषी
चितवतचकितरहतचितमाहीं॥सपनकिसत्यईसयहआहीं
बुधिवितर्कबहुभांतिबनावै॥देखहुसपनदेखेठहरावै॥

कबहुंकहतिहौंकवनहौंकोहरिकरतिविचार
यहसुखभावतिकौनकौंचकृतरहतिनिहारि
निपटअटपटीबातसबरूपरतनहिप्रेमकी
उरझिसुरझिउरझातउरझनहींमैंसुरझती॥

उतहरिरूपइतैद्रगप्यारी॥लखिसाखिमनहुकरतिहैरारी
आतुरहकारभरेभटदोऊ॥नेकहुहारनमानतकोऊ॥
इतसुदृष्टकरिकामसहाई॥सैनसाजिसरद्रगनचलाई
उनउतभूषनजालअपारा॥अंगअंगरचिव्यूहसवारा
इतहिकटाक्षबानअतिचोखे॥बारहिंबारहनतरनरोषे
उतनहिंवदतनिथाअतिसूरे॥पुलकिअंगमानहुसरपूरे
इतअनुरागउतहिछविताई॥छिनअधिकअधिकाई
छवितरंगसरिताअधिकानी॥लोचनजलनिधितृपितनमा
उतउदारछविअंगस्यामके॥इतलोभीअतिनैनवामके
ललितासंगसखिकालीन्हे॥दंपतिसुखदेखतद्रुमलीन्हे॥
लखियहमिलनसखिअनुरागी॥कहतिकिधनिदोउबड़भागी
धन्यनवलनवलायहजोरी॥धनिधनिप्रीतिनहीं

धन्यमिलनधनियहलषनिधनिभनितवनितसुख्य
धनिसुखलूटतपरस्परधनिधनिभागसुहाग
धनिधनिपुनिपुनिभाषिहर्षिफूलीसियअली
युगलरूपउरराषिएकहियलएवंयुल॥

अथपरस्पररूपअभिलाषलीला॥

सोभितस्यामराधिकाजोरी॥अरसपरसनिरषतदृनतोरी
हरिऐंप्यारीछविदेखी॥भयेविवसउरहर्षविसेखी॥
कवहूंपीतपटडारतवारी॥कवहूंमुरलिवारतगिरिधारी
कवहूंमालमुक्तनकीवारैं॥कवहूंतनमनवारनिहारैं॥
कवहूंसिहातदेखमनमाहीं॥राधासमसोभाकहुंनाहीं
इनकोपलकओटनहिंकीजै॥रूपसुधानैननपुटपीजै॥
कवहूंनिरषिसुखहीरसकुचाहीं॥कोटिकामजिनदेखसमाहीं
सुफलनैनसीरचअनियारे॥भावभावनानागतिभारे॥
कोटिकुरंगकमलवलिहारी॥खंजनमीनहारियेवारी॥
लोचननाहिंठहरातकामके॥काहूअंगसुखरंगवासुके
भयेस्यामप्यारीवसऐसे॥फिरतगुडीडोरीवसजैसे॥
एकटकनैनअंगछविपोहैं॥भयेविवसलोभरूपविमोहे
उठेउठतहैंतुरतहीवैठेवैठतपास॥ ॥
चलेचलतसंगवामकेज्योंतनछांहविलास
रहीसुरतिकछुनाहिंदेहदसाभूलीसवे॥
अभिलाषामनमाहिंप्यारीहीकेरूपकी॥
मगनस्यामस्यामारसमाहीं॥निजस्वरूपकीसुधिकछुनाहीं
राधारूपदेखिसुखपावें॥पुनिपुनिअभिलाषवढ़ावें॥
माधवस्तनभूषणमियपाहीं॥रूपनेअंगसंभारतजाहीं॥

तबनागरिपियलषिसुखपायो॥मिट्यौविरहमनहर्षबढ़ायौ
कहतिभलौपियमानदिषायौ॥मेरोमनअभिलाषपुरायौ
त्रियकेरूपस्यामछविदेखी॥पुनिपुलकितमुदितविशेषी
दंपतिहरषमनहिंमनकीन्हो॥तबवनकुञ्जचलनचितदीन्हो
प्यारीमुकुरपानिलैदेख्यौ॥नटवररूपआपनोपेख्यौ॥
सहतहिहसतमेटिसबडार्यौ॥सहजरूपअपनोपुनिधार्यौ

चलेहरषिवनकुंजकोंयुगलनारिकेरूप॥
इकगोरीइकसांवरीसोभापरमअनूप॥
अंगअंगछविजालअतिविचित्रभूषणवसन
श्रीराधानंदलालसोभाअवधिविलासनिधि

जातचलेव्रजवीथनदोऊ॥लषिनहिंसकतनारिनरकोऊ
नंदनंदनत्रियछवितनकाछैं॥सोभितहैंराधासंगआछैं॥
वारवारपियरूपनिहारी॥मनहींमनरीझत है प्यारी॥
कहतिसखीदेखेजिनइनकौं॥बूझतेंकहियौकहतिनकौं
तिहूभुवनसोभासुखकीनिधि॥कौरैहोतिनकौंगोपकवनविधि
पगनूपुरविछियाछविछाजे॥गजगतिचलतपरस्परवा[illegible]
स्यामगोरसुन्दरसुखजोरी॥मर्कतमणिकंचनछवियोरी
भुजभुजकंठपरस्परराजैं॥यहछविकौउपमानहिंछाजैं
जातयुगुलवनकौंसुखदाई॥उततेंचंद्रावलिसखिआई॥
दूरिहितेंलषिरहीनिहारी॥ [illegible]॥
पुनिपुनिमनविचारकरिजोहै॥एकराधिकादूसरीकोहै॥
व्रजयुवतिनइकइककरिजानौ॥यहधौंकौनकहींपहिचानौ

औरगांवतेयहकहूंआईहैव्रजमाहिं॥
अतिहिसलौनीसांवरीअवलौदेखीनाहिं
राधेमनसकुचाहिंचंद्रावलिआवतिनिरखि

तुम हौ नवल नवल हैं येऊ ॥ दोऊ मिल स्यामहि सुख देऊ
ऐसो है यह नारि सुहाई ॥ और नारि मन लेति चुराई ॥
हमहू कौं अवइ नाहि मिलावो ॥ नीके इनको वदन दिखावो
हमहि देखि सकुचत कत प्यारी ॥ [illegible]

ऐसेही चंद्रावली गह्यौ स्याम कर जाय ॥
यह कहि अवलौ नहि सुनी तिय सौं तिय सकुचाय
आवहि वदन उघारि घूंघटपट इतौ कियो ॥
सुखछवि रही निहारि मानकरि लोचन सुफल

वारहि वार कहति मुसकाई ॥ चितवति क्यौं नहि वदन उघाई
मथुरा मे है वास तुम्हारो ॥ कहा नाम मुख वचन उचारो
कियो राधिका यह उपकारो ॥ दुर्लभ दरसन भयो तिहारो ॥
कैधुं इकमें पहिचानति तुमकौं ॥ काहे कौं सकुचात है हमकौं
कवहूं चिवुक गहि वदन उठावै ॥ कवहूं कपोल परस सुख पावै
कवहूं चूटकि कहति मुख फेरै ॥ नैन उठाय नेकु इत हेरौ ॥
नैन नैन सौं हारि नहि जोरै ॥ रहे लजाय भाव सो भोरै ॥
चंद्रावली देखि मुसकानी ॥ हसि वोली राधा सौं वानी ॥
ऐसी सखी मिली ये तुमकौं ॥ तौ काहे न विसारो हमकौ
अव सो इन सौं प्रीति लगाई ॥ बहुत भई तुमकौं चतुराई ॥
अवलौं इनकौं कहा दुरायो ॥ हमहू सो कवहू न जनायो
त्रिभुवन की उपमा सव गुणनिधि ॥ एकहि इन नहि वनाई है विधि

तुमहू कुसल यह कुसल क्यों न प्रीति दृढ होय
जानेही चलि जाहु वन आप स्वारथी दोय ॥
दंपति कियो विचार सुनि चंद्रावलि के वचन
या सो नाहि उवार हरषि मिले उरलाय तव

मिले कुंज रह हरषि विशाला ॥ उभय वाम विच मदन गुपाला ॥

तुम्हरी महिमा पियकौ जाने॥ इक सुन्दर रूप परम सयाने
हसत चले तब कुंवर कन्हाई॥ रसिक [illegible]
हरषित गये सदन नंदलाला॥ इत नागर उत हरष विशाला
जब प्रीति विवसुरति जिय आवे॥ समुझि सुदस सकुचत व पावे
तेहि अंतर संगसषिन लवाई॥ चंद्रावलि राधा ढिंग आई
राधे प्यारी आदर अति कीनो॥ तुरत सवन कौ वैठक दीनो
सादर सव मानी सवे दिये हरषि कर पान॥
पिय संग सुख चाहि सकल रहति सकुच पुनि मानि
गदगद सुर सव केन वार वार भाषति हरषि
पुलक प्रेम जल नैन पुलकि गात पूरे सवे॥
कहति सखी सुन राधा गोरी॥ आज कहा अति हर्षि किशोरी
हमसे री अति हो प्रीति आवे॥ इतनो आदर कवहु न पावे
पायो आज परयो कछु तेरी॥ कैधों मिले स्याम कहुं हेरी॥
उमगी प्रेम हरष उर माही॥ हमें सुनावति है क्यो नाही॥
सुन सखियन के वचन सयानी॥ वोली प्रिया हरषि के वानी
आये आज सखी हरि मेरे॥ कहे जात नहि गुण उन केरे॥
जैसी भांति मिले हरि हमसो॥ सो इतकहो सुनो साषि तुमसो
मैं अपने सव अंग सिंगारति॥ लिय मुकुर का वदन निहारति
पाछे आनि भये हरि ठाढे॥ चतुर सिरोमणि छवि सो वाढे
भाव एक भार मे साजा॥ ता हिल हंसि साषि लागति लाजा
लषि अपनो प्रतिविव भुलानी॥ जान औरतिय मन मे डरानी
पाछै ते यह जानि कन्हाई॥ मूंदे नैन अचक को आई॥
तवही चौकि चकृत भई मे समझी निज भोर
लगो देन उरहन तुम्हे भई फिरति हो चोर॥
सुने राधा सुख वात हिय हरषी सव गोपिका

पुलकि प्रफुल्लित गात कहत अन्यत सु लाडिली
स्याम संग सुख लूटति हेरी ॥ अब उनसों नाहिं छूटति हेरी ॥
स्याम भये तेरे अनुरागी ॥ भली भई तू हमरे रस पागी ॥
अब हरि तातें अति रति मानै ॥ तेरो अंतर हित पहिचानै ॥
आवत जात रहत घर तेरे ॥ सगरा नाहिं रहत को हितु नेरे
चतुर रूप गुण तुम सोउ नीके ॥ परम भावते हो सब ही के ॥
आज लाल मेरे गृह आये ॥ बड़े भाग्य मैं हित करि पाये
देख दरस नैनन सुख पायो ॥ करौं आज आनंद बधायो
यह उपकार तुम्हारो आली ॥ मोहि मनाय दिये वनमाली
तुरत लाय हरि मोहि मिलाये ॥ मैं अपने अपराध छमाये
नंदनंदन पिय नैन समाये ॥ भावत नहीं नेक विसराये ॥
सुनि यह राधा की रसबानी ॥ देत असीस सखी हरखानी
नंदनंदन वृषभान किसोरी ॥ चिरजीवहु सुन्दर यह जोरी

प्रेम भरे छबि सों भरे भरे आनंद हुलास ॥
युगल माधुरी रस भरे ब्रज में करत विलास ॥
करत अनेक विहार रूप रासि कल्याण निधि युगल
राधा नंदकुमार ब्रजवासी जन सुख करन ॥

अथ नैन अनुराग लीला ॥

हरि अनुराग भरी ब्रजनारी ॥ लोक सकुच कुल कानि विसारी
सास ननद गारी दे हारी ॥ सुनत नहीं कोउ कहत कहा री
सुत पति नेह जगत यह जैसो ॥ ब्रजजुवतिन तिनका सम तोरी
वेद लोक मर्यादा डारी ॥ ज्यों अहि के सुर फरन निहारी
ज्यों जलधार भरे तृण नाहीं ॥ जैसे नदी समुद्रहि जाहीं ॥
जैसे सुभट खेत चढ़ि धावे ॥ जैसे सती बहुरि नहिं आवै

जैसे जभी नंद नंदन कों ॥ नेकहु डरी नहीं गुरुजन कों
तैसेहि प्रेम विवस गिरिधारी ॥ जोगज पंक [illegible]
व्रजव [illegible] ॥ छण प्रीति तिन हिंदेषि सुषपावै
आये पुनि तेहि ओर विहारी ॥ सखिन सहित वैठी जहं प्यारी
और देखि सकुचे मन माहीं ॥ तातें निकट गये हरि नाहीं ॥
ताही मग निकसे सुखदाई ॥ सुन्दर नटवर रूप दिखाई

सीस मुकट कुंडल श्रवण उर चटकीली माल
पीत वसन कटि काछनी तन दुति स्याम तमाल
चलत लटकती चाल वंक विलोकन मृदु हसन
अंग अंग छवि जाल रसिक नवल नागर छयल

औचक देखि स्याम व्रज नारी ॥ भई चकित तन दसा विसारी
जात चले व्रज खोर अकेले ॥ कोटि कामकी छवि पर हेले
पग द्वै चलत वहुरि फिरि हेरैं ॥ कमल सनाल कमल कर फेरैं
मृग मद तिलक अलक घुंघुरारी ॥ तन वन धात चित्र रुचिकारी
मृदु मुसुकाय सरस रत भौंहैं ॥ नैन सैन दै दै मन मोहैं ॥
निरषत व्रज युवती थिथकानी ॥ दुख सुख व्याकुल मन अकुलानी
गये कलपन रु छोह कन्हाई ॥ रूप ठगौरी तियन लगाई ॥
लागी कहन परस्पर वानी ॥ लोचन मन अनुराग कहानी
सुनहु सखी यह नंद दुलारो ॥ हठकरि यह मन लेत हमारो
छण छण प्रति अवि और वनावै ॥ सोना कछू कहत नहिं आवै
मन तो इन नहीं हाथ विकानो ॥ हम सपि यह कछु भेद न जान्यो
नैन निसाठ करी नैनन सों ॥ कियो मोल सैनन वैनन सों ॥

वेच दियो मन आपही मृदु मुसकन घमपाय
परी रही हौं वीचही नैना वडी वलाय ॥
भयो स्याम को जाय अवरु चिमानी [illegible] तहं

भई सखी नैनन गति ऐसी ॥ भरे भवनन तसकर की जैसी ॥
देखि स्याम छवि धन अधिकाई ॥ अनि लालची रहे ललचाई ॥
लेत न बने जान नहि जाई ॥ चकित भयो निज सुधि बिसराई ॥
रहे बिचारि हिमांझ भुलाने ॥ नहिं कछु लियो न त्याग पराने ॥

नैन चोर हरि मुख सदन छबि धन भांति अनेक
तजत बनत नहि एकहू लेत बनत नहिं एक ॥
सखि ये नैना चोर हरि मुख छबि चोरन गये ॥
बांधे अलकनि डोरि हरि कों चितवन पाहरू ॥

भली भई हरि इन नहिं बांध्यो ॥ [illegible] लपायो
ये नहिं मानत कहेउ हमारो ॥ सखि इन ही सब काज बिगारो
कहि किशोर एक गोप कुमारो ॥ सखि ये नैनन के धौं बटपारो
कपट नेह हम सों करि भारी ॥ करो हमें गुरुजन तें न्यारी ॥
स्याम दरस लाइ कर दीनो ॥ हमैं आपने बस करि लीनो
प्रेम ठगोरी सिर पर साई ॥ फिरत संग ही संग लगाई ॥
बिरह फांस गर डारि हमारे ॥ करी बिकल नहिं अंग संवारे
कुल लज्या संपदा हमारी ॥ सो इन लूटि लई सब सारी
कहत परी मोह बन माहीं ॥ लगन गांठ दृग छूटत नाहीं
क्यौंहू नेह जीव नहिं जाई ॥ सुमिर नैन गुण मन पछिताई
कासों कहैं सखी यह बाता ॥ भये नैन हम कों दुख दाता ॥
हम कों बिरह दुसह दुख देही ॥ आप सदा [illegible] लेही

इहि बिधि निदरत द्रगन कों भरी प्रेम ब्रजनारि
होत मगन सुख बिरह रस नैनन स्याम निहारि
यही भजन यह ध्यान स्याम रूप रस गुण कथा
नहि जानत कछु आन निसि दिन ब्रज की सुंदरी

कोऊ कहति [illegible] ॥

कविकरणचारलापेललचाने॥फंदगयेचितवनलपटाने
हारेछविपटकपरेअजाई॥आनेहिंविलापभयेविविसरे
रहतदीनसनमुखटकलाये॥दुखसुखसमुझिसबैविसराये
कहतवातहैंवडेसयाने॥वहछविलेनगयेअतुराने॥
सातौकछूहाथनहिंआवौ॥आपनयौदूनआसवंधावौ
ऐसोकोत्रिभुवनजोजाई॥आवैसखीसमुद्रअथाई॥
हारजातयेनैननजानें॥मानअपमानकछुनाहिंमानें॥
परेरहतशोभाकेद्वारे॥नेकहुंलाजनहींउरधारे॥
जाकोबानपरीअसिजैसी॥धरींटेकउरमैंतिनतैसी॥
इनअसियनअहटेकपरीरी॥लुब्धतज्योंकमलनभ्रमरीरी
जोसुखनलिनीकेवसमाई॥जिमकापेछुटीछांडिनहिंजाई

लोभैवसजिमसीनमृगआपवधावतआय
रूपलालचीनैनतिमिभयेस्यामवसजाय
सकेनकाऊछिद्रुलोकलाजकुलकानगिर
स्यामसलौनेसिंधमिलेत्रिवेनीह्वैनयन॥

सखीनयनअवहरिसंगलागे॥मनवचक्रमउनसोंअनुरागे
सन्मुखरहतसदासुखपाये॥भूलगयेमगदूनेवाये॥
ज्योंमणिदीखउरगअसपावै॥ज्योंचकोरचंदहिटकलावै
मुदितरंकजैसेधनपाई॥तैसीइनकीगतिअवभाई॥
अवयेनैनाफिरतनहिंफेरे॥कियेसखीहमयत्नघनेरे॥
देखेसुभगस्यामइनजवतें॥निठुरभयेहमसोंयेतवतें
जवमैंघूंघटपटघेरेरी॥तबयेशिशुकीअरनअरेरी॥
हरिअंगसुगलागिउठिधाये॥मनहुंजनुहिंभांतिपलसाये
मदुअसकनिरसुपायमिठाई॥क्षणहीमैंमतिगतिविसराई
भांतिहठपरेननेकविचारे॥निमिषरूदनकुलधीरनधारे

देहदसा सब तुरत भुलानी॥ स्वेद चल्यौ वहि मानहुं पानी।
भई विवस मोतिन की भांति भूली॥ प्रेम मांहि डोरि मोपिका मूली।
कबहूं सुधि कबहू सुधि नाहीं॥ कबहूं मुरली नादसु नाहीं
कछुक संभारी धीरज धारी॥ कहति परस्पर गोपकुमारी
अखियन तें मुरली हरि प्यारी॥ वैवैरनि यह सौति हमारी।
ब्रज मैं चौकित तें यह आई॥ भई कठिन हम कौं दुखदाई
आवत हीं ऐसी ढिग जाके॥ भये स्याम तुरत हि वस ताके॥

जो रस कौ हम तप कियो षटऋतु सब ब्रजवाम
सो रस मुरली लेन अब सजा हि वस करि स्याम॥
गावत मीठी तान मुरली संग अधरन धरे॥
अब जाके बस स्याम औरन विवस करी वही॥

ऐसी त्रिभुवन कौन सयानी॥ जो न मोहि सुन याकी बानी
यह नौ भलो नहीं ब्रज आई॥ भई सौति हरि के मन भाई॥
अब याके बस गिरिवरधारी॥ नेक अधर तें करत न न्यारी
याही के अब रंग रंगे री॥ मधुर वचन सुनि रीझ गये री॥
कर पल्लव वन ताहि धैटाई॥ रहत ग्रीव ता पर लटकाई
बारह बार अधर रस प्यावें॥ तासो अति अनुराग जतावें
देखहु री याकी अधिकाई॥ पियत सुधा रस हमहि दिषाई
परी रहति वन मैं धौ कैसी॥ भई ढीठ आवत ही ऐसी॥
छिन हीं छिन अधिकत जात री॥ सखी नहीं यह भली बात री
आवत ही हमरौ धन लीनो॥ चाहत और कहा धौ कीनो
मैं जो कहति सुनो री गोरी॥ सजग रहौ सब नवल किसोरी॥
मुरली हरि कुराये वनि है॥ कछु दिनन मैं हमें न गानि है

फिरि है याके संग लागि लोक लाज गृह त्यागि
जब जब जह यह बाजि है मोहन के मुख लागि

करि है नाना रंग यह जानत दोना कछू
या मुरली के संग देखहु हरी कैसे भये॥
यह सुनि कहति एक ब्रजनारी॥ सखी बात यह कहा विचारी
अब यह दूरि होति है कैसे॥ जाके बस नंदनंदन ऐसे॥
एक पाय ठाढे ता आगे॥ रहत त्रिभंग अंग अनुरागे॥
अधर सेज पर सैन कराई॥ कर पल्लवन पलोटत पाई॥
कबहुंक मिलि गावत हैं तासों॥ होति विवस प्रहमी सब जासों
मुरली अति मोहन को भावै॥ ताके गुण सखि कहि को पावै
जानत राग रागिनी जेते॥ हरि संग मिलि गावत है तेते॥
नाना विधि को गति निबजावै॥ तान तरंग अमित उपजावै
जै से ही रीझत मन मोहन॥ तैसिय भांति रिझावति गोहन
रहति सदा मुरवही सों लागी॥ अधर पियूष स्वाद रस पागी
मधुर मधुर कल वचन सुनाये॥ पुनि हरि के मनहि चुराये॥
ऐसी को अब हरि के करतें॥ दूरि करै याको निज बरतें॥
अब मुरली छूटै नहीं यों के बस भये स्याम॥
प्रगट कियो सब जगत में मुरलीधर निज नाम
हरि कों करि बस माहि मुरली लूटै अधर रस॥
उरडर मानति नाहि हम सबतें बोलति निठर
निठुर वचन अब हमहि सुनावै॥ हरि को मन हमतें उचटावै
आरज पथ कुल कान छुडावै॥ हम सबहिन कों निलज करावै
ऐसे ढंग मुरली के आली॥ हमतें निदर किये बनमाली॥
यह तौ निठुर काठ की जाई॥ प्रगट किये अपने गुण आई
अपनोई स्वारथ यह जानै॥ कपट राग हरि के संग ठानै॥
मुरली निठुर किये बनवारी॥ मुरली तें हरि हमन बिसारी
बनकी व्याध कहां यह आई॥ ऐसे कहि रहि तिय पछिताई

कहाभयोमोहनमुखलागी॥अपनीप्रकृतनहींइनत्यागी
एकसखीवूझतभईऐसें॥मुरलीप्रगटभईयहकैसें॥
कहांरहतिकाकीहैजाई॥कौनजातिकैसेंहृतआई॥
मातपिताहैंयाकेकैसें॥जैसीयहतेऊधौऐसें॥ ॥
बोलीअरइकतियासयानी॥अवलौंतुमयहबातनजानी

सखितुमअबलौंनहिंसुन्योमुरलीकोकुलधर्म
सुनोसुनाऊंमैंतुम्हैंजाकोजातिअरुकर्म॥
तुमसोंकहौंवखानिमैंजानतियाकेगुणनि
सुनिसुखपैहौकानयामुरलीकीकुलकथा

वनमेंरहतवांसकुलजाई॥यहतोयाकीजातसुहाई॥
जलधरपिताधरणिहैमाता॥तिनकेगुणनकरौंविख्याता॥
वनहूतेतिनकोघरन्यारो॥निपजेहैंजहांउआइअपारो
गुणनएकतेंएकउजागरि॥मातापिताअरुमुरलीनागरि
परअकुजविस्वासनजाने॥येहैंइनकेकुलहिवखाने
नाजानियेकवनफलआली॥कृपाकरीयापरवनमाली॥
सुनहुसखीयाकेकुलधर्मा॥प्रथमकहौंमेघनकेकर्मा॥
वेवर्षतजलसवजगमाहीं॥गिरिवनसरसरितासववाहीं
चातकसदारहतकरिआसा॥एकवूंदकोंमरतपियासा॥
धरणीसवहीकोउपजावै॥आपनदसाकुमारिकहावै॥
उपजतप्रानीविलसतवाहीमें॥सोकछुछोहनहींताहीमें
ताकुलसुतामुरलिकाजानी॥अवआगेगुणप्रगटवखानौं

वनहीतेप्रगटेअनललयेसिपाकोसार॥
प्रगटभईजावंसमेंकरतिजारतिहिछार॥
ऐसेगुणकीआहियहमुरलीसखिवांसकी
आईनिजकुलदाहिऔरकौनयातेनिठुर॥

याकी जाति स्याम नहिं जानी ॥ किन जाने कौनी पटरानी ॥
कहि है ... जाई ॥ सुनत तजे गे कुंवर कन्हाई ॥
सखी कहत ... वात वखानी ॥ स्याम हि कहु भलो तुम जानी
निज कुल जाति ति विलमन लाई ॥ है हैं तासों कौन भलाई ॥
जाको हम षट ऋतु तप कीनो ॥ सो फल तुरत मुरलि यह दीनो
जे सन्मुख वै तौ व... यक हावै ॥ विमुख तुरत उत्तम फल पावै
घर के वन वन के घर कीन्हे ॥ कपटी परम स्याम को चीन्हे
एक अंस की प्रीति हमारी ॥ वे कपटी वहु तरुणि विहारी
ज्यों चकोर चंदा हित माने ॥ चंदा नहीं नेक उर आने ॥ ॥
जल के नीर मीन तन त्यागे ॥ जल कौं नेक दया नहिं लागे
ज्यों पतंग उड़ि जाति जरेरी ॥ ... करेरी ॥
जाति एक मे घन को जाने ॥ वह कछु ताही प्रीति न माने ॥

इन सव हिन ते हरि निठुर तेसिय मिली सहाय
अव मुरली अरु स्याम की जोरी वनी वनाव ॥
ये अहीर वह वेनु कान्हि न प्रीति वढावही
दुहूं पन को वन एन जैसे वे तैसी वहू ॥

मुरली ने हरि को पहिचान्यो ॥ हरि को मन मुरली सो मान्यो
निठुर निठुर मिलि वान वनावै ॥ वाही के वल धेनु चरावै ॥
वाही को लकुटी कर धारी ॥ वाही की वंसी अति प्यारी ॥
हम सो वैर सदा हरि कीनो ॥ दधि ले मारग जान न दीनो
पुनि भेद हि मन हरयो हमारो ॥ कीनो कुल कुटंव ते न्यारो
वहुरो वोलि सखियन को लीनो ॥ ताप रसो ति मुरलिया कीनी
सुनि जननी विन काज ररी ॥ कर्म करे सो कोउ न करेरी ॥
यह माहि ... करता सव फरई ॥ कौने विधि धौं कापर परई
... मन को ... घातहारी ॥ सो ध र कुल ते भई तियारी

कैसे ये सब फलन फलैंगे ॥ क्यों नहि हमसों स्याम मिलैंगे
तब यों कह्यो एक ब्रजनारी ॥ [illegible] रली स्याम अधर पर धारी
जो अवगुण होते या माहीं ॥ तो याको हरि छुवते नाहीं ॥
सुनौ सखी यह है इहि लायक ॥ अतिहि भली अवगुण सुखदायक
तुम हो कहति वृथा जो सोई ॥ जैसी य [illegible] कोई ॥
जो यह भली भरी गुण केरी ॥ तो याको हरि स्याम मेलेरी
काहे न प्रीति करे हरि ऐसी ॥ है यह तिहूं भुवन में तैसी
एक युवति अरु गुण भरी बोली तिमे [illegible] रे बैन
अवगुण सुधा प्यावत तहूं को हरि अधर भरैन
हरि विरजो मति कोय देऊ बजावन बांसुरी ॥
विरह विरस ते होय रस कोने रस होत है ॥
आप भले तो जग भलाई ॥ नतर सखी [illegible] होई
मुरली लगी स्याम के अधरो ॥ तोऊ है हमसों सत सुधरी ॥
सुनहु कान दै कहति कहा री ॥ अरी राधा सी राधा प्यारी ॥
तुम जानति हो हरि हिय भाव विचारी ॥ तुम ऐसी नाहिन के कनथारी
जब जब मुरली स्याम बजावै ॥ तब तब नाम तुमारो गावै
मुरली भई सौति जो माई ॥ तो हरि तेरिय टहल कराई
[illegible] यह है दासी ॥ [illegible] यह बात प्रकासी ॥
मुरली तुम्हो नाम बतावै ॥ वाके मस हरि तुमहिं बुलावै
तुम प्यारी हो हरि हो तुम प्यारे ॥ मुरली सों यह कहति पुकारे
सखी सकल सुनत यह बानी ॥ हम मुरली ऐसी नहिं जानी
[illegible] हरि मान्यो ॥ याको शील अबै हम जान्यो
मुरली सों रस में सुख पाई ॥ करत सकल ब्रजनारि बड़ाई
धनि धनि बंसीवास की धनि याके मृदुबोल

राखत हैं यह आस जन ब्रजवासी दास ह
करहु हिये में वास मुरली धर मुरली धरे ॥

अथ रासलीला

वंदो युगल चरण सुखदायक ॥ श्री रस रासि नायका नायक
नंदनंदन वृषभान नंदनी ॥ सुर नर मुनि ब्रह्मादि वंदनी ॥
रास रसिक रस रास विलासी ॥ नित्य धाम वृंदावन वासी
रूप रास आनंद निधामा ॥ मंगल पद श्री सुन्दर स्यामा
बहुरि रास पति पद सिर नाऊं ॥ रास चरित मंगल अवगाऊं
वेदव्यास जो रास बखानो ॥ सो गंधर्व व्याह विधि जानो
ब्रज गोपन हरि हित तप कीनों ॥ स्याम होय पति यह ब्रत लीनो
नंद नंदन तिनको वर दीनो ॥ चीर हरण लीला तब कीनो
करिहौं तुमरे मन की भाई ॥ सरद रैण सुख मलम धराई ॥

सोजवदरससुखदऋतुआई॥ एकरजनीपरमसुहाई॥
भक्तमनोरथपूरणकारी॥ गर्गसुतनिरदेखिदितसुतचार
गयेस्यामवृंदावनमाहीं॥ जहंसबऋतुरहतसद

श्रीवृंदावनधामकी शोभापरमपुनीत॥
वरनसकैकोविविधवनविधिमनबुधिवचनअतीत
सबचैतन्यस्वरूप भूमिलताद्रुमगुल्मतृण
धारेरहैजुरूप सुन्दरस्यामविहारहित

जाकीमहिमाशिवमुनिगावें। ब्रह्मादिकसुरजाननपावें
जाकीमहिमाश्रीमुखवानी॥ संकरषणप्रतिस्यामबखानी
चिंतामणिमैंभूमिसुहाई॥ कोमलविमलरम्यसुखदाई
सकलसुमंगलकीजननीसी। कमलचरणपंकसरमणीसी
फिरतस्यामजहंनांगेपायन। चरणचिन्हअंकितसबगाय
पावनहूकीपावनकारी॥ ब्रजवासीप्रभुकीअतिप्यारी
वरनवरनधरिविटपसुहाये॥ परमअनूपनजाहिंवताये
सदासुमनफलसंयुतसोहैं॥ शोभितसुगंधस्वादमनमोहैं
नवपल्लवदलपरमसुहाये॥ जगमगातनगजोतिलजाये॥
विपुलकांतिशोभितवहुरंगा॥ अतिविचित्रछविउठततरंगा
परमप्रकाशसदादशमाहीं॥ कोटिसूरशशिपटतरनाहीं॥
पत्रपत्रप्रतिछविस्यामकी॥ मोहतलखिमनकोटिकामकी

तीरतीरशोभितपरमतैसेईलतावितान॥
वृन्दाविपिनतरुवेलिसबनखशिखरूपछविकीखान
औरसकलसुखधामव्रैकुंजादिकस्यामके॥
यहांविहारविश्रामनातेअतिसुन्दरसुखद॥

विपुलकुंजमंजुलछविछाई॥ तिन्हैंसवारतकामसदाई
वहतिसमीरधीरसुखदाई॥ शीतलपरमसुगंधसुहाई

चित्र [illegible] चित्र विहंग मृगनाना॥ बोलत डोलत विविध विधाना॥
गुंजत भृंग लुब्ध मकरंदा॥ अति छवि [illegible] वृंदा॥
तैसिय यमुना परम सुहाई॥ [illegible]
दीति महा छवि झलकन रेती॥ मानहु परम कांति की खेती॥
फूले वनज विपुल बहु रंगा॥ गुंज करत मधु माते भृंगा॥
सो वृंदावन छवि समुदाई॥ सम्यक [illegible] पैजाई॥
जाको परतर कोउ नहिं आना॥ वन अनूप अद्भुत बखाना॥
ऐसो कछु परतहै हेरो॥ है अस्थूल वपुष प्रभु केरो॥
गोपीजन इंद्रीगण तामें॥ है चैतन्य आप हरि जामें॥
नित्य धाम ताही तें गायो॥ यह परतर मेरे मन भायो॥

सुखनिधि रसनिधि रूपनिधि वृंदाविपिन उदार
शारद नारद शेष शिव वरनत विधि श्रुतिचार

[illegible] बदन काऊ आन वृंदावन सम दूसरो॥
सकल वीर सुखदान सुख पावत मोहन जहां

तहां वितस्त इक अरव मुहायो॥ [illegible] सुभग श्रुतिन में गायो॥
ता [illegible] अद्भुत कमल विराजै॥ खोडश पत्र चक्र सम राजै॥
योजन पंच तासु परमाना॥ रासस्थान सुवद बखाना॥
मध्य कर्णिका अति रमनीया॥ बैठत तहां कान्ह कमनीया॥
[illegible] अमित नेति श्रुति बानी॥ ताते गिरा कहति सकुचानी॥
कोमल स्याम अंग सुहाये॥ निरखि कोटि सत काम लजाये॥
नटवर भेष साज सब साजे॥ अंग अंग भूषण छवि छाजै॥
शिर [illegible] डमनोहर माथे॥ बीच बीच मुक्ता मणि गाथे॥
जलज माल वनमाल सुहाई॥ कुंडल झलक अलक [illegible]॥
कटि पट पीत [illegible] की काछे॥ ललित सिंगार सुभग तन आछे॥
मोहन जटित नूपुर पग [illegible] चरण कमल भावत जन [illegible]॥

सरिके सकति नाहिं सति धुनि माहीं ॥ उकठे विटप फल [illegible] ।
तरु बेली सब [illegible] पावा ॥ नव अंकुर दल प्रफुलित गाता ।
सुनि सुधि से ष नाग अनुरागे ॥ नाग सकल सो [illegible] न ते जागे ।
जड़ चेतन गति भई विपरीता ॥ हरि मुख मुरली [illegible] ।
जे नर नारी तिहुं पुर माहीं ॥ भये नाद वस तन सुधि नाहीं ।
सुनि धुनि चकृत भई अति भारी ॥ जे व्रज सुन्दरि गोप कुमारी ।
जदपि मुरलि धुनि त्रिभुवन परसी ॥ तदपि जथा विधि तिनहीं दरसी ।
या रस को तेई अधिकारी ॥ नंद नंदन पिय को अति प्यारी ।

सुनतहिं बौरी सी भई बिसरी सबै सयान ॥
लगी ठगौरी सी मनहु मुरली की [illegible] निकान ।
रह्यो न उरमैं धीर बाजीबाजी कहि उठी ।
आकुल विकल सरीर सुनि मुरली व्रज की तरुनि ॥

सठ दस सहस गोपिका गोरी ॥ मुरली सुनत भई सब भोरी ।
कोउ धरनी कोउ गगन निहारें ॥ कोउ मन ही मन बुद्धि विचारें ।
घर [illegible] तरुनि सब वितताती ॥ आरज पथ ग्रह काज भुलानी ।
लेले तिन की नाम बुलावै ॥ मुरली मैं हरि सबन बुलावै ।
रहि न सकी धुनि सुनि अकुलाई ॥ जो जैसे सो तैसे धाई ॥
लोक लाज गुरुजन डर डारी ॥ चलीं सकल [illegible] ह काज बिसारी ।
काहू दूध उफनते हि छांडे ॥ काहू दधि हि जमावत भांडे ॥
काहू करत रसोई त्यागी ॥ कोउ पतिहि जिंवावत भागी ॥
[illegible] भारि न लीन्हे ॥ दूध पिवावत ही तजि दीन्हे ।
कोउ सिंगार करत उठि धाई ॥ उलटे भूषन बसन बनाई ।
बाजू बंद पगन सों बांधे ॥ लै मंजीर भुजन मैं सांधे ।
किंकिनि डारी गरे माहीं ॥ हार लपेटत कर सो जाहीं ।
सीस फूल [illegible] के स्रवन धरे करन फूल धरि भाल

वाके वचन प्रेमरस साने ॥ प्रेम प्रतीति कसौटी आने ॥
कह्यो अहो तिय व्रज कुसलाई ॥ निसि को [illegible]न कौं उठि धाई ॥
अर्धरात के कुडसल हिं कीनो ॥ ऐसो कहा काज मन दीनो ॥
यह कु[illegible] भली करी तुम नाहीं ॥ निज पति तजि धाई वन माहीं ॥
देत पंथ [illegible]नदस्यौ तु[illegible] भारी ॥ ज[illegible] जइ घर वेग सँवारी ॥
यह [illegible] जनु सुख पैहै ॥ [illegible] तुम कौं त्रास दिखैहै ॥
निज पति तजि [illegible] रपति भजै तिय [illegible] होय
मरे नरक जीवत जगत भलो कहै नहिं कोइ ॥
[illegible] ॥
करहु तिनहिं की सेव जो तुम चाहत सुख लह्यो
और कछू जिय में जिन राखौ ॥ कहिये वेद वचन जो भाखौ ॥
तजिकै कपट करहु पति सेवा ॥ तिय कौ पति तजि और न देवा ॥
क्रूर कपूत भाग विन रोगी ॥ वृद्ध कुरूप कुबुद्धि वियोगी ॥
ऐसेहू पति कौं तिय त्यागै ॥ वडौ दोष ताके सिर लागै ॥
तातें मानहु कह्यो हमारी ॥ जाहु सकल घर कौं व्रजनारी ॥
तातो तुम्हरे है धौं नाहीं ॥ ऐसे कहि हरि पाछे ताहीं ॥
कैसे उन तुम आवन दीनी ॥ कैसी धौं यह विधि तुम कीनी ॥
कै धौं कहि आई उन पाहीं ॥ कै धौं वे जानत है नाहीं ॥
नव यौवन तुम सब सुकुमारी ॥ निसि वासिवौ [illegible] अनुचित भारी ॥
जो यह [illegible] तसु नै [illegible] काऊ ॥ हमैं तुम्हैं दूषण दोस दोऊ ॥
अव ऐसो काज [illegible] है ॥ करौ विचार देखौ मन तुमहू ॥
वारवार युवतिन [illegible]ई ॥ ऐसे सव सौं क[illegible]
निठुर वचन सुनि स्याम के युवती उठी अकुलाइ
चकित भई मन गुन रही सव कर [illegible] वन न आइ
वदन गयौ मुरझाय जनु [illegible] वारकंजन परयौ ॥

जरतकमलविरहानलज्वाला॥ सींचहुअधरामृतनंदलाला
दीनकृपानिाथजमतुम्हारो॥ हमतेदीनन औरविचारो
मृदुमुसुकान्दान अवदीजे॥ दीठिदयाहगोपियकीजे
जोनहिमानतोकिनयहमारो॥ तोयहतनकरिहैवलिहारी
॥ विरहविकल्लगोपा॥ [illegible] धुभगवान
उमगउठेदृगभरिलयेदीनवचनसुनिकान॥
धनिधनिधनिब्रजवालकहतमनहिमनहर्षेहरि
सदयहृदयगोपालवोलेदुहुंकरजोरितव॥
वोलेभगताडारिगपाला॥ धन्यधन्यतुमब्रजकीवाला॥
तुमसन्मुखमैविमुखतुम्हारो॥ दूरिकरोयहदोषहमारो॥
मैनिरयेवहवचनवखाने॥ तुमअपनेजियएकनमाने॥
मोकारणगृहकदुमविसारो॥ धनिरधनियहनेमतुम्हारो॥
लोकलाजसंकासवत्यागी॥ मनवचकर्ममोसोअनुरागी
योंकहिविहंसिमिलेनंदलाला॥ अंकमभरिलीनीसववाला
यदपिप्रकामसदासुखरासी॥ तदपिभयेरसप्रेमप्रकासी
एकहिवारयुवतिसवभेटी॥ दुसहतायविरहाकीमेटी
कह्योविहसिसवसोंगिरधारी॥ करहुरासरसमिलसुषकारी
कृपाहष्टअवलोकतनैनन॥ हंसिरसींचतअमृतवैनन॥
चहुंदिसहरषभरीसववाली॥ मध्यस्यामसुन्दरवरनारी
विहरतवनविहारसुखदाई॥ नवलगोपिकानवलकन्हाई
हंसतकरतवहुरसचोरतयुवतिवृंदलियसंग
गयेयमुनतटस्यामतवक्रीडतकोटिअनंग
सोहतिअतिकमनीयकोमलउज्वलरेततहं
करीपरसनगरायययमुनाजीनिजपाणिरचि
वहतिसमीरत्रिविधिसुषदाई॥ कुसुमधूरिधुधरिछितिछाई

उडुगसुगंधलपटकरषोर॥गुंजतभंवरचकोरचितचोर॥
बैठेतहांस्यामसुखसागर॥कोटिकामममनमधनउजागर॥
करतविलासहासरसलीला॥कोटिअनंगरंगसुखशीला॥
परिरंभनचुंबनकुचपरसन॥हियकुलासआनंदरसबरसन॥
कामभावगोपिनहरभायौ॥कियौसवनकोमनकोभायौ॥
असअद्भुतरसप्रेमबढ़ायौ॥वृन्दावनरसरंगउपजायौ॥
सुनिगोपवधूवनसकलअनुरागी॥भूषणवसनसंवारनिलागी॥
लषिउलटेभूषनसकुचानी॥निरषिपरस्परपियमुसकानी॥
नवसतसाजभईसबठाढी॥परमप्रेमआनंदरसबाढी॥
वंसीवटछविधामअनूपा॥कोटिकल्पतरुसमसुषरूपा॥
तहांरच्यौरसरासकन्हाई॥भक्तकपूरमयभूमिसुहाई॥
छं॰ भईभूमिकपूरमयरजवरषिजलकुमकुमसिंची॥
परमकोमलसुभगशीतलयोतिमणिकंचनखिंची॥
हरषितहैघनस्यामसुन्दररासमंडलविधिरची॥
वेणुनिकपिजानसोछविनिरषिसागरगतिलची॥
एकएकहियुवतिकेविचमधुरमूरतिस्यामकी॥
तिनमध्यजोरीरासनायकराधिकाघनस्यामकी॥
एकरूपअनेकवपुधरिसबनकेविचराजहीं॥
करीयहलीलाजगतमेंउनेमरमकोउनजानहीं॥
भईमंडलजोरिगाढीजाततनहिंछविसुखभनी॥
सहसबत्तिसउदितशशिमनोमध्यघनदमनिकी॥
दो॰ तेहिअवसरललनासहितआयेसुरमुनिसर्व
देवनटीसुरवधूतुंबुरादिगंधर्व॥ ॥
सो॰ देषतचढेविमानहरषिहर्षिवर्षतसुमन॥
रूपरसमदतमनमानधन्यरमनधन्यकैहि

कहाभयो उधतवसी अरुअमरपदवीजोलही
करतिसुखजोस्यामसंगब्रजनारिसोत्रिभुवननहीं
वारवारमनाय विधिनाकहतियहवर दीजियै॥
होयदासीब्रजवधूनकोकृस्नपदरतिकीजियै॥
दो॰ धनि२कहिवरषहिसुमनमुदितसकल२नारि
धनिमोहनधनिराधिकाधनिब्रजगोपकुमारि
सो॰ धनि२रासविलासधनिसुन्दरताधन्यसुख॥
धनिवृंदावनवासरललनाविधकोकहति
रमतरासयहगोपकुमारी॥नंदनंदनाचकोसवप्यारी
करतिगानकोकिलालज...॥हावभावकरिपियहिरिझावै
रागरागिनीसमयसुहाये॥सहजवचनजिनकेमनभाये॥
गतिसुगंधनिर्तितसवगोरी॥सहजरूपनिधिनवलकिशोरी
पगसोंहपटकिभुजनलटकावै॥फंदाकरनअनूपवनावै॥
निरषिलेतउपजतछविभारी॥रीझिरहतलषिछविगिरधारी
वेनीछुटिलटैंवगराहीं॥अलकेंवेसरसोंउरझाहीं॥
श्रमजलविंदु...दनद्युतिकारी॥मनहुंसुधाकरगाचंदमरूरी
...तिवसहोत...मनमोह..॥फिरतसवनकेगोहनमोहन
नारिनारिप्रतिरूपप्रकासे॥एकहिएकसवनकोभासे॥
अद्भुतकौतुकप्रगटदिषायो॥कियोसवनकेमनकोभायो
निर्ततअंगथकितभैनागरि॥रूपप्रेमगुणपरमउजागरि॥
छं॰ भईनिर्ततथकिततरुणी रूप...नउजागरी॥
उमंगितवउरलायलीनीस्यामलषिनवनागरी
गिरतउरतेंहारटूटेनिरषिप्रेमजनावही॥
अतिप्रीतिप्रफु...रसमो...पवनढुलावहीं
उराऊवसारिसोरहेअंचलक...करस्मरोवहीं॥

देखिविरहकलंगमनभूषणीसोपिलअंगमधारही
कहिंधमनमदुनापुरस्पर निजपारिणममहिंमिवारहे
दो॰ ऐसोविधिब्रजसुन्दरीनदेतपरमसुखस्याम॥
लखिपतिगतिस्वाधीनअतिभईगर्वितावाम
सो॰ परमप्रेमकीखानरूपशीलगुणआगरी॥
क्योंनकरेअभिमानजिनकेवसत्रिभुवनधनी
कहतिभईनिजनमनमाहीं॥हमसमऔरयुवतिजगनाहीं
अवगिरधरहमवसकरिपाये॥करतहमारेमनकेभाये॥
अवहमतेनहिंव्हैहैन्यारे॥रहिहैंसदासमीपहमारे॥
जोइरहमकहिहैंसोइकरिहै॥सदाहमारेसंगविचरिहै
कोउपियसंसभुजनकोदीने॥कहतिवचनयोंगर्वहिलीने
सुनौस्याममैंअतिश्रमपायो॥अवतोमोपैजातनगायो
एककहतिममपायपिराहीं॥मोपैनृत्यहोतअवनाहीं
एककंठभुजमेलिसियानी॥रहीलरकवोलतिनाहिंवानी
ऐसेंभावगर्वकेकीन्हे॥हरिअंतरजामीसवचीन्हे॥
गर्भदेखिमोहनमुसकाने॥मैंभाविगतिमोकोनहिंजाने
करतसदाभक्तनकीभाई॥एकगर्वस्यामहिनसुहाई
सोयुवतिनकेमनकीजानी॥दूरकरतहितयहजियठानी
प्रेमअभूषणकनकसममैलनगर्वतेहोय॥
विरहअग्नितायेविनानिर्मलहोयनसोय
यहविचारजियआनलेवृषभानकुमारिसंग
व्हैगयेअंतरध्याननब्रजवासीप्रभुसंगते॥

अथअंतर्ध्यानलीला

प्रेमवरसवनहितसवदाई॥अंतरकरिवनदेखन्हाई

गोपिन जब देखे हरि नाहीं ॥ चकित भई तन सब मन माहीं ॥
कहत एक तू कुंवर कन्हाई ॥ उठी सकल जहं तहं अकुलाई ॥
भई विकल कछु मरम न पायो ॥ पाय महाधन मनहुं गवायो ॥
खोजति जहं तहं हाथ पसारे ॥ अति आतुर चहुं ओर निहारे ॥
तब सबहिन मिलके यह जानी ॥ लै गई हरि को कुंवर सयानी ॥
कछु हर्ष कछु रिस उर धारी ॥ देति भई हांसि रिस के गारी ॥
इन समान कपटी कोउ नाहीं ॥ करत सदा दुविधा मन माहीं ॥
चलहु खोज कुंजन मे ऐहैं ॥ [illegible] मत वन पैहैं ॥
ढूंढन चलीं सकल वन माहीं ॥ [illegible] खोजत सब जाहीं ॥
देखति जहं तहं फिरति अधीरा ॥ कोउ वन घन कोउ यमुना तीरा ॥
कोउ कुंजन कोउ पुंजन हेरैं ॥ स्याम स्याम करि कोऊ टेरैं ॥

दोहा॰ यहि विधि सब खोजत फिरैं विरहातुर ब्रजबाल ॥
भई विकल पावति नहीं कछु खोजति नंदलाल ॥
यदपि कियो हरि ख्याल नेक दुरवन कुंज मे ॥
तदपि भई बेहाल यवुति स्याम देखे विना ॥

पलकांतर विधि कौ दिन जिनको ॥ वन अंतर अति बड दुख तिनको ॥
भई विरह व्याकुल विच जबहीं ॥ हरि पद चिन्ह लषति भई तबहीं ॥
कुलिस कमल ध्वज अंकुश जामें ॥ जगमगात वन मन माहं तामें ॥
निकट चिन्ह [illegible] ॥ अरुण कमल दल के वरण के ॥
वंदन करन लगी रज सोई ॥ शिव विरंचि जांचत है सोई ॥
कछु इक धीर धरयो मन माहीं ॥ [illegible] जलै तत्ताही मग माहीं ॥
कुंवरि कान्ह पागि संगली [illegible] ॥ फिरत सकल कुंजन रस भीने ॥
कबहुं कुसुम भवन मालक नावे ॥ निरखि हरषि प्यारी हिय लावे ॥
कबहुं सुमन सवारत वेणी ॥ परम सुभग शोभा की श्रेणी ॥
कबहुं सरोज सुगंध सुघावे ॥ नागरि मन अभिलाष बढावे ॥

कंव कंठभुज दोउ जोरे ॥ घन दामिनि छूटन हि छोरे
अति प्यारी के रस बस मोहन ॥ भये रहि रति रत डोलत गोहन
अति हित लाल अनुकूल अति [illegible]
ताते उपजो गर्व जिय में अति प्यारी पीय ॥
एक प्राण द्वै देह तहां गर्व कहां पाइये ॥
यामें नाहिं संदेह देह धरे को भाव यह ॥
तब प्यारी के मन यह आई ॥ मेरे ही बस कुंवर कन्हाई
मेरे हित बांसुरी बजाई ॥ मेरे हित सब तिय न बुलाई
मेरे हित रस एस बनायो ॥ सब हित तज मोसों मन लायो
मोसम सुन्दरि चतुर उजागरि ॥ और नहीं युवती कोउ नागरि
ऐसे गुण तिन महिं मन माहीं ॥ उठि कर कह्यो गहि पिय की [illegible]
वेठि जात कछु श्रम मग माहीं ॥ कह्यो न के मर पाय पिराई
चलन सकत तितु सज जहां कन्हाई ॥ मोपे पग न चल्यो नहिं जाई
नृत्य करत में अति श्रम पायो ॥ ताते पग न हिं जात उठायो
सुनहु मन मोहन सुखदाई ॥ कंध लेहु पिय मोहि चढ़ाई
ऐसी तिय जब वचन बखाने ॥ गर्व जानि गिरिधर मुसकाने
जहां गर्व तहं रहत न कबहीं ॥ अंतर्ध्यान भये हरि तबहीं
तुरतहिं विकल भई अति प्यारी ॥ देखत दरत चहुं तित गिरधारी
चकित भई तब नागरी [illegible]
मन हो मन पछितात अति भूली तन सुधि वाम
मैं कीनो अभिमान नाहक दुख भोगो सदा ॥
वे पिय परम सुजान जान लई मो जीव की ॥
भई विकल सम्रुत मैं जक री ॥ मानहु दसा जाइ मृग बक री
विरह व्यथा वाढी अति तन में ॥ परम अकेली रोवत वन में
नैन सलिल भींजत तन सारी ॥ कासि कासि पिय कुंज विहारी

हाहानाथअनाथनकीजे ॥ वेगिस्याममोहिदरसनदीजे
मैं तुमकृपापायगरवानी ॥ तातेमखोसंभारि न वानी ॥
सोअपराधक्षमाप्रभुकीजो ॥ यहदूषणमनमाहिनलीजो
वेगिकृपाकरिमिलोदयाला ॥ अहोकमलदलनैनरसाला ॥
विरहविकलयोंवदतअकेली ॥ सेवतमुनिखगमृगद्रुमवेली
तहखोजातेआईसवनारी ॥ दूरहितेदखीतिन प्यारी ॥
मुखशशिजोतिरूपकीरासी ॥ जनुघननैविछुरीचपलासी
द्रुमसाखाअविलंवितठाढी ॥ रोदनकरतिविरहदुखवाढी
व्याकुलचकितचहूंदिसजोवै ॥ कमलवरणनखभूमिकरोवै
जितातितते धाई सवैव्रज सुन्दरि अकुलाइ ॥
व्याकुललखि अतिलाडिलीलीनीकंठलगाइ
कहांगयेगोपालवारवार वूझत सवै ॥ ॥
मुरछिपरीतनवालमुखतेवचन न आवई ॥
देखि दसासवतियअकुलानी ॥ वैठारिअंकमगाहपानी
कहिराधाक्योंवोलतिनाही ॥ काहेमुरछुपरीमहिमाही
यावनमकंस न आइ ॥ कहांगयेतजितोहिकन्हाई ॥
निरषिवदनसवाहिनदुखकीनो ॥ मनहुअमीनिधिअमृतवीनो
कोउलागसंवार- अलकै ॥ कोउअंचरतेपोछतिपलकें
नैननीरकछुसुधिनहिदेही ॥ अतिव्याकुलविनस्यामसनेही
वूझतियुवतिकहांवनवारी ॥ चलियेतहांतेगहिलेप्यारी
सुनतनामपियकोअनुरागी ॥ विरहमाहनिद्रातेजागी
जान्योआयेकुंवरकन्हाई ॥ नैनउघारिमिलनकोधाई
जोदेखतारसवव्रजवामा ॥ अतिहीविलपिउठीतवस्यामा
कहतिमोहित्यागिनंदनंदन ॥ महूनहोमिलेजगवंदन
मैंअपनेजियगर्वभुलानी ॥ नाहउनकीमहिमाकछुजान

बोलीप्रियसौं मंदमतिमे अभिमानवसाय
लीजैकंधचढायमुहिमोपैचल्यो नजाय॥
वेप्रभुपरमसुजानविहंसिकह्योप्योहिवढनको
हैगयअंतर्ध्यान अपनी चूक कहा कहौं॥
गयेस्यामधौंकितवनमाहीं॥मेरो हियेपरे कछु नाहीं।
देखिदशाव्याकुलसबनारी॥कहतिनिठुरहरिप्रतिबनचा
मुरछिपरीधरणीअकुलाई॥स्यामविरहदुखसह्योनजा
त्रियाअस्थसोमानजुकरहीं॥पुरुषनहीं ऐसो उर धरहीं
देखहुस्यामतजीहमकैसे॥नाहिंबूझियेउनको ऐसे
कहतिराधिकासोंब्रजनारी॥मिलिहै स्यामधीरधरुप्यारी
चलींआपखोजनबनबनमें॥विरधिकलककुमुदिनितनमें
टेरतजहंतहं घोषकुमारी॥अहोरासपतिकुंजबिहारी॥
कहादुरेप्रियहमतेंभजिकै॥जातप्रानतुमबिनतनतजिकै
छमाकरोअबचूकहमारी॥मिलहुरूपकोदेखनप्यारी
तुमबिनहमकोसुनहुकन्हाई॥सिरपकल्पसमानबिहाई
कतहिंफिरतबनबनउरघारे॥गाडहेकुशकंटकभ्रमनिपारे
जरतसकलतुमदरसबिनविरहअग्नितनकाम
मंदमधुरमुसकनसुधावरसिबुझावौ स्याम॥
सकलविस्वसुखधामगावततुमकोजगतसब
तिन्हैहोतकतवामजोदासीबिन मोल की॥
सदाहमारी रक्षा कीनी॥गरलअनलजलतेरखलीनी
अबकतनिठुरहोतहोप्यारे॥विरहजरावतगातहमारे
तुमपदवसतहमारेहियमें॥तेकरकसालतहैंजियमें
अहोनाथयहकहजियधारो॥सुखदेवोदुखदेनमुरारी
ऐसकहतसकलबनडाली॥अलवलवचनवदननवबाल

ऐसें कहति सकल बन डोलैं ॥ अलबल बचन ब्यग्र ते बोलैं
अति अकुलाइ गई मन माहीं ॥ जड़ चेतन कछु समुझत नाहीं
बूझति बन बिटपन सौं धाई ॥ तुम कहूं देखे कुंवर कन्हाई
अहो कदंब अहो अंबनमाल ॥ हमहिं बतावौ कित नंदलाल
अहो जुही मालती निवारी ॥ लखे कहूं इत जात बिहारी
हे पंचक हे श्रीफल कदली ॥ हे दाड़िम हे जामुन बद्दली
तुम देखे मन मोहन लाला ॥ स्याम कमल दल नैन बिसाला
हे पलास हम दास तुम्हारी ॥ अहो कहो सुखरास बिहारी

हे अशोक हरि शोक तुम सत्य करौ निज नाम
लेत नहीं यश हे पनस क्यों न कहत कित स्याम
हे मंदार उदार हे पीपर हरि पीर मम ॥
कहिं कित नंदकुमार सुंदर घन तन सांवरौ

हे चंदन तन जरत जुड़ावौ ॥ नंदनंदन पिय हमहिं बतावौ
हे अवनी चितचोर हमारे ॥ कित राखे नवनीत पियारे ॥
तुम तें दूर कहूं हरि नाहीं ॥ क्यों न मिलाय देत हम पाहीं
कहि धौं कुंद मकुंद कहां है ॥ हमकौ देहु बताय जहां है
हे बट नट नागहिं बतावौ ॥ कहूं निकुंज नंदसुवन दिखावौ
कहु धौं मृगी मया करि हमकौं ॥ पूछति हैं हा हा करि तुमकौं
हे पियत डहडहे नैन तुम्हारे ॥ तुम कहूं मोहनलाल निहारे
हे उरबद बन पवन सुखकारी ॥ कहियत गत सरबन तुम्हारी
जहां होय बलबीर बिहारी ॥ कहत जाय कित बिथा हमारी
हे तुलसी तुम तौ सब जानौ ॥ क्यों नहिं हरि सौं प्रगट बखानौ
तुम तौ सदा स्याम कौ प्यारी ॥ कहत नहीं यह दसा हमारी
बोलत नाहिं कोउ कहत न तनको ॥ लगे खेद इन हेकें मन कों

इहि बिधि बन बन ढूंढ सब ब्रजतिया बेरहूं उदास

इतउततैंफिरआवहींकुंवरिराधिकापग॥
मनहुंमीरबिनमीनज्योंतिम्यासुन्दरकीप्रग
स्यामविरहअतिदीनकलनकलैनसीनागरी

कुंडलमुकटकेसघुंघरारे॥ गोरजरंजितदृगअनियारे
पीतबसनवनमालविसाला॥ वेनवजावतमधुररसाला
सखनमध्यगोधनकेपाछे॥ चंदनचित्रसुभगतनआछे
सांझसमयआवतजवदेखे॥ तवहमजन्मसुफलकरिलेखे
ऐसेकथतसकलव्रजनारी॥ हरिगुणरूपकथाविस्तारी
समरतकहतस्यामगुणरूपा॥ उपजीउरअतिप्रीतिअनूपा

भूलिगईसुधिदेहकीभयौविरहदुखपौन
केवृलतनमेंयहजोगईतेहिजानतिहमकौन
भृंगीकीटसमानमगनध्यानरसनागरी॥
विसरीसकलअयानभईआपहीकृष्णतन॥

लागीकरनचरितसवहरिके॥ पूरणप्रेमभईगिरिधरके
येलीलाउनहींकोसोहे॥ नेकनहींजानतिहमकोहैं
एकभईदधिचोरकन्हाई॥ एकपकरिगहिभुजलेआई
एकजसोमातिकोवपुधारिकै॥ बांधतिहैऊखलसोंहरिकैं
इकभईगायगोपगोपाला॥ वोलतवैसेइवचनरसाला
कारीधौरीधूमरिकहिकै॥ हटकतफिरतलकुटकरगहिकै
कहतिएकअवगिरिधारी॥ गायगोपसवरहौसुखारी
कहतिएकमूंदौसवलोचन॥ मैंकरिहौंदावानलमोचन
एकअमलअर्जुनतरुभंजे॥ एकवकासुरवदनविभंजे
एकवस्त्रकौनागवनाई॥ तापरनिरतकरतहरषाई
एकदहीकौदानचुकावै॥ एकाजभगाद्धेवेनवजावै॥
मगनभईसवपरवसमाहीं॥ तनअभिमानरहौकछुनाहीं

अन्तरनेकुरह्योनहीभईस्यामव्रजवाम
तवअंतरकरिनहिसकेभयेनिरंतरस्याम
प्रगटभयेतनतकालतिनहींमिधिनंदलाडले

सुन्दरनैनबिसालगोपीजनवसभसुरुद
प्रेममगनअतिआतुरताई॥सोचसकलकुसरतुई
देषिप्रगटवृसनगोपाला॥मिलीधायसआतुरअकु
जोअनुरागसपरीकछुपावै॥लोभीजनवहुरतनजोपावै॥
लपटीसकलआयउरमाही॥एकमिलतअंखियांदेपाही॥
कोऊपरीचरणपरधाई॥कोऊभररहीअनूपटाई॥
कोऊगहिकरपंकजलावै॥तपततबिरहकोनासिरावै
कोउलटकीगहिभुजनवेली॥जनोसिंगारसिटपरवेलि
कोऊसखछविरहीनिहारी॥कोऊरहीचरणउरधारी॥
कोउहगभरिकहतिभलहीरी॥एकपीतपटछोररहीधरि
हरिसोंमिलीलसतियोंभामिन॥जनुघनघनपैलीवरदामिनि
कहूंअंजनकछुरुकुमरेखा॥कहुपीककीलीकसुवेसा॥
युवतिनमध्यलसहरिप्यारे॥कृपादृष्टिसवओरनिहारे

पुनिवैठेहरिहरषितहृदयजुवतिनसबहसपास
सबकेसनमुखराजहींसुंदरछविधनरास
वोलवहसिगोपालहसतकियोसकुल्यालत
कतहिभईबेहालतुमप्राणनतेंमोहिमय

सकुचीसुनप्यारीयहवानी॥मनजान्योनहिप्रगटवखानी
कोहूकोमलवचनकन्हाई॥सबकोदुसहदाहसोविसराई
अतिआनंदसवनकोदीनों॥सुफलमनोरथसवकोकीनों
जाकेसाधहतीजियजैसी॥पूरणकरीस्यामसवतैसी॥
भयेकान्हप्रीतमअनुकूल॥वढ्योआनंदसकलदुखभूले
तवहरिसोंसवनवलकिशोरी॥पूछनलगीबिहसिकरजोरी
प्रेमप्रीतिकीरीतिसुहाई॥हमैकहौसमुझाइकन्हाई
एकजोप्रीतिपरस्परकरिये॥एकएकेहींदसतैलहिये

एकदुहुनकौंमानतनाहीं॥ ... जगमाहीं
उत्तमप्रीतिकहावतिजोई॥ कहहुस्यामहमसोंतुमसोई॥
हमअबलाजानतकछुनाही॥ तातेपूछतिहैंतुमपाहीं॥
सुनिगोपिनकेवचनरसाला॥ भयप्रेमवसपरमकृपाला॥

यदपिजगतगुरुअजितप्रभुजानरायव्रजचंद।
प्रेमविवसभेहरितदपिअपनेमुखवनंदनंद॥
कहतभयेतवकानसुनहुप्राणवल्लभप्रिय॥
नहितुमसमकोउआनिपुनप्रेमकेपंथमें॥

तद्यपितुमपूछतिहौजैसे॥ प्रगटकरौंलक्षणसवतैसें॥
एकजोप्रीतिपरसपरहोई॥ स्वारथहेतपरतसवकोई॥
जैसेपशुपशुकोजानै॥ आपुसमेंअतिहितकरमानै॥
सोवहप्रीतिनिकृष्टकहावै॥ जासोंसवसंसारवंधावै॥
दूजीप्रीतिएकदिसजोई॥ करतिधर्मअधिकारीसोई॥
जैसेंमातपिताचितधारिकै॥ रक्षतहैंसुतकोहितकरिकै॥
सोवहमध्यमप्रीतिकहावत॥ उत्तमगतिनातेजनपावत॥
जोवहदोउअनकोनहिंजानै॥ गुणदूषणकछुउरनहिंआनै॥
तिन्हसुनोमैंकहतवखानी॥ केकृतघ्नकेपूर्णविज्ञानी॥
उत्तमप्रीतिजानियेसोई॥ अनाथासउपजतउरजोई॥
दुहुदिसहोटिकरिप्रीतिवढावे॥ नाहिंनिमित्ततामेंकछुपावे॥
अंतरनेकपरेनहिकोई॥ प्रीतिपुनीतजानियेसोई॥

छं० नहींअंतरनेकुतामेंधिप्रीतिउत्तमसोकही॥
करीमोसोंतुमसवनसोइमैंरिणीतुमरोसही॥
करहुजोउपकारतुमप्रतिकोटिकोटिजनमभरी॥
कवहुहोउंनउरिनतुमतेंहेप्रियाव्रजसुन्दरी॥
करैऐसीकोनसोतुमनजोकरनीकरी॥

लोकवेदमर्यादसमाही तजी रितराग रंगपरिहरी
करहुमनसेंदूर जव यह दुःख मैं तुमतें किया ॥
कियो संतर पैं रमसुख मैं पिरहदुख तुमको दियो

दो० ऐसे प्रेमाधीन ह्वै कहि कान्ह वचन रसाल ॥
दूर करी युवतीन के मनतें गर्व गुपाल ॥

सो० सौंप्यौ परमानंद ब्रजवासी प्रभु वचन सुनि
परम मुदित तत्व वृंद प्यारी प्रिय नंदनंद को ॥

अथ महामंगल रास लीला

सुनि प्रियके मुख की रसवानी ॥ गोपीजन सब मन हरषानी
हंसरूप ह्वै लाल दुलायो ॥ मनतें सब संदेह मिटायो ॥
दई दरसवन की प्रीति कराई । वह रीरास रसकी रुचि उपजाई
वंशी द्वै सुख सबको उपजायो ॥ वह भाव सबके मन भायो ॥
यह जान्यो सबहिन नवहीतें । करत रास सब प्रिय सबहीतें

अंतध्यानचरितसवभूली॥ वैसेइ आनंदके रस फूली
वैहीरसमंडत विधिजोरी॥ विच२स्यामवीचविचगोरी
वैसेइ माधिनायकहरिराधा॥ भइ परस्पर प्रीतिअगाधा
वैसेइ मुरलीस्यामवजा॥ ॥ वैसेइ थकितभयोउडराई
वैसेइ सुरविमाननभसाहे॥ वैसेइसुरमुनिगंधर्व मोहे॥
वैसोहिवं... सववनवेली॥ वैसोहियमुनापुलिनसुहेली
वैसयप... विमुखदाई॥ वहरासरसरूपनिकाई॥
छं० करै वैसोइ रासरसपुनि...
गोरअंगकिशोर वैससुदेसमुख शशि राजहीं॥
जोरिपंकजप... मंडलसाजहीं॥
मध्यसवकेस्यामस्यामारूपरास विराजहीं॥
मुकुटकुंडलवसनभूषणवरअंगनराजहीं
अंगअंगअनंगरति लखिकोटि२नलाजहीं
चरणनूपुरकिंकिणीकटिवेलनूपुर वाजहीं॥
वीनतालमृदंगचंग उपंगसुरसुख साजहीं
दो०॥ अरसपरसनिरखतछविभरप्रेमआनंद॥
नवलनागरीव्रजवधू नवनागर नंदनंद
सो०॥ रहेनिरखिसुरभूल मोहितसुंदरीमगनमुख
पुनि२वरखतफूलधन्य२व्रजकहिमखन
सोहतिहरिसुखमुरलीकैसे॥ कीरतिविजेनृपतिवरजैसे
वैरीपारीसिंहासनगाजे॥ अधरछत्रसिरऊपरराजे॥
चमरचहूंदिसचिकुरसुहाये॥ वेतपाणिकुंडलछविछाये
वोलवोलि२वरजतसवकाहू॥ कहत निकटकोउमतिजाहू
दरहितसवकरतजुहारै॥ सन्मुखअनादरसहितनिहारै
मधुकरपिकवंदीगुणगावे॥ मागधमन्मथसोसिसुनावे

ज्ञानध्यानपुराण ॥ तिमतिसार परमसुहावनो
यहमंत्र यंत्र अनंतव्रतफलध्यानदेयातिकोरहै
भावकोरनितभावमनविनुभावयहसुखहोलहै
भन्य श्रीसुकदेवमुनिभागोतयहरसगाइये॥
निगमनेतिअगाधश्रीगुरुकृपाविन नहिंपाइये॥
सुरुचिकहिजेसुनेसीखें ॥ तिकोरजेगावहीं॥
अरी सिद्धिसवकहगनाऊंभोक्ष॥ पमपावहीं
उरवसेरसनेमदृढपदप्रेमराधास्यामको ॥
सहहिअचलनिवासदंदाविपनवननिजधामको
यहेआसारसिकके उरसदाव्रजवासी कही॥ ॥
कृपा कीजेस्यामस्यामा शरणपद पंकजगही

दो॰ चरितललितगोपालके रासविलासअनेक
काएवरनेजातसव इतनो कह्यो विवेक॥

सो॰ इकसीतरेअघायज्यों पपीलकासिंधुते॥
कह्योयथामतिगाय। नमव्रजव ॥ दासहू॥

अथ मानचरि लाल

नित्यस्यामस्यामासुखकारी॥ करत नित्यनवचरितविहारी
निर्गुणनिरविकारअविनासी॥ भक्तमनोरथसदाविलासी
नितवृन्दावनधामसुहायो॥ नित्यरास रस वेदन गायो
भक्तनहेतविविधतनधारे॥ भक्तन हितलीला विस्तारे॥
सदाभक्तवस कृस्नकृपाला॥ दयासिंधुप्रभुदीन दयाला
सरदरैनरस रास उपायो॥ युवतिनप्रतिनिजरूपवनायो
सुफलमनोरथसवकेकीन्हे॥ पतिहितकोसवकोसुखदीन्हे

गोपिन गर्व रास मै कीनी ॥ सो मैं अंतर करि हरि लीनी ॥
जे ब्रजभक्त परम हित मेरी ॥ करैं साध पूरण इनकेरी ॥

करि विभेद रसरीति मे देहु मान उपजाइ ॥
इनके सुख मंडित वचन कह्यो सुन्दर ॥ ५८ ॥
सुकल गुणन के धाम परम विचक्षण सिस मनि ॥
नवरस सागर स्याम एक प्रेम रस वस सदा ॥
श्रीराधा मनमोहन प्यारी ॥ नवनागरि नवरूप उज्यारी
रासो नित्य रिझये गोपाला ॥ तासम भयनि फिरत नंदलाल
करत भवन सिंगार पियारी ॥ रुचिक तहां गये गिरिधारी
देखि प्रिया पियको हँसि दीनो ॥ हरषि स्याम अंक भरि लीनो
रहे थकित छवि अंग निहारी ॥ जोत कमल सुख स्वकर स्वकै
इहि अंतर पियके उरमाहीं ॥ देखी तिय निज तन परछांहीं
रूकी किउदी प्यारी मिहि न्यारी ॥ प्रीति सनेह भ्रम सुरतिविसारी
औरनारि पियके उरजानी ॥ आपुनी विपेप्रीति घट मानी
राखत सदा हिय मे याही ॥ न्याय मोहि देखावन ताही
कियो मान यह भ्रम उपजाई ॥ कहत वचन पिय सो अनखाई
अब जानी पिय बात तुम्हारी ॥ रूपरहै की प्रीति हमारी
हम सो सुहृदकी बात मिलावत ॥ यह प्यारी उरमाहिं धसावत
धनि यहि के भाग्य है वसत तुम्हारे हीय ॥
याही सो हित रारि भये अब मन मोहन पीय
भली करी सुखमा निमोहि दिखाई आनिके
यह प्यारी सुख सदा निउर तो जिन न्यारी करौ
ऐसे कहि मुसकाय किशोरी ॥ कछु रिस करि जिय भौंह मरोरी

अतिव्याकुलतनमनअकुलाही॥सहजाहिकह्योसियासखीनें
तुमहीतसखिहिसखीसुनायो॥तुमकोधनघनस्यामबुलायो
सुनतकह्योप्यारीअनखाई॥काहेकोमोहिस्यामबुलाई
तूआईयाहीकेलीन्हे॥ मैंअवस्यामभलेकरिचीन्हे
कहाकह्योतोकोंरीअली॥तुहूंभलीभईवेवनमाली
उनकीमहिमाकहतनआवै॥अवइकनईनारिमनभावै
ताकोंलैउरमाहिंवसाई॥ तोहिउहांतेटारिपठाई॥
आजकहाकछुकलहिभयोरी॥कहिधोंकछुतेंमानठयोरी
तवहिंअतिअनखानिसयानी॥यहतोमैंकछुवातनजानी
मोसोंनहिंकछुहरिकह्योसहजपठाईलैन
कहाधौंपरीपुकारह्यांतुमचालदेखउनैन
कहतसुनायसुनायलैलैतेरोनामसव॥
वेधौंलियोछिनाइकाकिकाकेकाकेगयेहै
काहेकोगयलियोपरायो॥अपनोनामकुनामधरायो॥
डारिदेहुजाकोजोलीन्हो॥तेरेवहुतदईकोदीन्हो
तवहीतेउनशोरलगायो॥ताकारनहरितोहिवुलायो
हरितेरीदिसितेंझगरेरी॥तूंकतउनसोंरोसकरेरी॥
यहकछुनीखीवातसुनाई॥मैंकाकोधनलियोछिपाई
काहेकोंहरिझगरतमाई॥इतनीमयामोपैकहांआई
जैसेहैंतैसेहरीजाने॥नाहिंउनकेगुणपरतवखाने॥
वैठिकिधोंतूंघरजाअपने॥मैंउनपैअवजाऊंनसपने
हौंकहांतोहिमनावनआई॥मानकरौतुमओरसवाई॥
परधनलेसवकोंठगवैठे॥कहाकरतवातैंयोंऐंठे॥
देतजवावसवनकितजाई॥ [illegible] इतराई
मनतेसवसोंलरतकन्हाई॥जवमैंतोहिवुलावनआई

आजुदसाकैसीलखतवेदकह्यांगवाइ॥
कौतनरहेभुलायअतिब्याकुलदेखतभये
रह्योवदनकुम्हलायऐसेसोचकरतपरे॥
बोलेस्यामसखीहितजानी॥विरहविकलतनमनन
कियेमातवृषभानकिशोरी॥मैंकछुनहिंअपराधकियोरी॥
लखिमेरेउरनिजपरछाई॥रिसकरहीकारिकोपघनाई॥
मैंकहिकैबहुभांतिमनाई॥नहिंप्रतीतिराधामनआई॥
बिनुसमझेहमसोहठकीनो॥निवतमाहिंमदनदुखदीनो॥
ऐसेकहिसोचतबलबीरा॥लेतनयनभरिसासअधीरा॥
परमचतुरदूतिकासयानी॥विरहविकलतापियकीजानी॥
कह्योधीरधरियेबनवारी॥चलियेवनकोकुंजविहारी॥
मैंप्यारीलेतुमहिंमिलाऊं॥आजुकहातोतुमसौंपाऊं॥
गईसदनतैलैवनधामाहिं॥तहांविठारिधीरधरिस्यामहि॥
मैंलेआवतिराधाप्यारी॥कितिकबातयहसुन्दरविहारी॥
मेरेआगेकीवहवारी॥कहामानकरिहैसुकुमारी॥
ऐसेकहिचातुरअलीआतुरलखिघनस्याम
श्रीवृषभानललीजहांचपलचलीव्रजधाम
मनरचतसयान नईबनाऊंबातइक॥
अबहिंछुडाऊंमान मोसोधोंकहिहैकहा
हरिसौंरूसिमानकरिबैसी॥अबहीकहाभईवहवैसी॥
करतविचारयहमनमाहीं॥गईसखीराधाकेपाहीं॥
कुंवरिकिशोरीपरमसयानी॥सुखदेखतताहिदूतिकाजानी॥

रवशशि एक कनकलता सम गोरी ॥ बाल हरन छबि नैन किशोरी
भूषण वसन अनूप सुहाई ॥ अंग अंग शोभित छबि छाई
अंग सुगंध मनोहरताई ॥ भ्रमर भौर चहूं ओर सुहाई
हँसि २ कहत सखी सौं बातें ॥ रूरत सुमन जनो रूपलता तें
ऐसे करत प्रकाश पियारी ॥ गई जहां पिय ... जविहारी
परस प्रेम दोऊ मिले श्रीराधानंद नंद ॥
गुण आगर नागर युगल छबि सागर सुखकंद
जो प्रभु परम अपार वेद भेद जानत नहीं ॥
सो व्रज करत विहार वरनि पार को पावहीं
कुंजन मंजु फूलन छबि छाई ॥ भंवर गुंज सुपुंज सुहाई
फूलन सेज रुचिर रचि कीनी ॥ चित्र विचित्र रंग रस भीनी
फूले खगगण करत किलोलें ॥ जहँ तहँ मधुर मनोहर बोलें
फूले द्रुम दल नत कर डारी ॥ तनमन फूले पिय अरु प्यारी
सहचरि सोहत मनोहर जोरी ॥ राजत युगल किशोर किशोरी
हावभाव रस कोई उपजावैं ॥ हास विलास करत सुख पावैं
सखी कहत ... अतनोके ॥ सकुचि हँसी प्यारी सब थोके
नैन कोर पिय को हि थन ... ॥ तवहि श्याम पीताम्बर ...
यह छबि निरखि तपी बलि जाई ॥ अचल रहौ जोरी सुखदाई
धनि राधा धनि कुंवर कन्हाई ॥ धन्य मान रस काल सुहाई
धन्य कुंज वन धनि महि पावन ॥ धन्य लता द्रुम सुमन सुहावन
धन्य सखी धनि सब व्रजवासी ॥ तिन संग विहरत प्रभु अविनाशी
गये स्याम स्यामा सदन सखी सहित पाय ॥
मानचरित रसकेलि करि व्रजवासी बलि जाय
मानचरित्र अनूप जे सुभाव गावहिं सुनहिं ॥
ते न परैं भवकूप राधाकृष्ण प्रताप ते ॥

मुखशोभा कीखान नहीं कुंवरी वृषभान की

जेहु भलतालटाकतनलागे॥ तेऊपरधरितनअनुरागे
प्रेम प्रीतिरसवसजगस्वामी॥ करतचरितमानंदअनुगामी
देखिस्यामकीआतुरताई॥ हेसतसखीमनहर्षबढ़ाई
जानिप्रेमवसहरिसुखपासा॥ गयेबहुरिप्यारीकेपासा
करिसृंगारनवलतनगोरी॥ राजतश्रीवृषभानकिशोरी
महारूपकी रासकुमारी॥ भईअधिकभूषणछविभारी
अंगअंगछविछविपुंजविराजे॥ निरखिमदनतियकोटिकलाजे
त्रिभुवनकी छविमनहुंबटोरी॥ विधिकीनी वृषभानकिशोरी

देखिरूपमनमगनसखिबोलीवचनसंभार
धन्यराधाकुंवरि तुव गुण रूप अपार
तासमाननहिंतीय तिहुंपुरसुंदरसांवरी
वसतसदापियजीय तूमोहनमतभावती

चलहुवेगपवसोहितहुलासा॥ लागरहीपियकीतुवआसा
तेराह्नामजपतमनलाई॥ गावततवगुणश्यामकन्हाई
तुवतनपरसिपवनजोजाही॥ उठिआतुरपरिरंभतताही
तेरो रूपअयि उरअन्तर॥ धरतध्यानदृगमूदिनिरन्तर
रमीस्यामतनमनजाते॥ राधारमणनामहै नाते॥
सुनिसहचरीकेमुखकीबानी॥ पुलकिअंगफूलितसुखमानी
तोनप्रेमप्रमोदसावनपाई॥ चलीमिलनगजगतिहर्षाई

भूषणवसन नवलतन साजे ॥ खंजन से दृग अंजन आंजे ॥
दो॰ कहतिस्याम आये नहीं होनलगी अधरात
गये आसदय मोहिपुनि कहाधरौजियनात
सो बहुनायकस्यामकिधौलुभाये अनतकहिं
मन मनसोचतवामकारण कहु आयेनहीं ॥
कैधौंकछुख्यालहि चितदीनो ॥ कैधौंमात पिताडर कीनो
कैधौंसोय रहे अलसाने ॥ कैमोघर आवतसकुचाने ॥
ऐसे सोचत रैनविहानी ॥ जहांतहां बोलेतुम खानी ॥
तब बैठी अपनो मन मारी ॥ कछुसोचकछुरिसउरधारी ॥
हरिनिसिवसे सखीसीलाके ॥ सुन्दरस्याम धाम लीला के
तहसुखसोवत रैन गमाई ॥ प्रात होतललितासुधिआई
चलसहजसीलासोंकाहिके ॥ जियसकोचललिताकोगहिके
आयेललितासदनविहारी ॥ चितेरहीमुखकीछविप्यारी
अंजनरेख अधरपर राजे ॥ पीकलीक नैनानिछवि छाजे ॥
सोहतललितकपोलननीको ॥ लाग्योवंदनकाहू नीको ॥
तुरतमुकुरलैउठीसयानी ॥ दिखरायोहरिसन्मुख आनी
कहतिदोषजबवदनसुधारौ ॥ लालकहूंतबप्रातसिधारौ ॥
पीकपलक अंजन अधर देखिस्यामसकुचाय
रहेनिचौहेनैनकरि वचनकह्योनहिंजाय ॥
ज्यौंज्यौं सकुचतस्याम त्यौंत्यौंहठिनागरिकहति
देखहुछविअभिराम हाहामुखकतफेरियत
सकुचतिकहावोल कसांचे ॥ आयेतौ मो गृह रंग राचे
रैननहींतौप्रातहि आये ॥ धनिरवहजिनखागवनाये ॥
तुमजिनमानहुकिलगकन्हाई ॥ मैंतोकरतिअनंदवधाई
क्यौंमोहनदरपननहिंदेखौ ॥ अधमोतनकाहेन पेखो ॥

ठाढ़े कत वैठत क्यौ नाहीं ॥ कहूं कछु चूक परी हम पाहें
रहे मूक ह्वै कहा ठगे से ॥ सोहत हौ अलसात जगे से ॥
ऊतर मोहि देत क्यौं नाहीं ॥ मैं तव ही ते वकत वृथा हीं
तव चितयं हग कोर कन्हाई ॥ भाव प्रीति हिय धनि अनुराई
ग्वालि प्रवीन आन स्यव लीनौ ॥ तुरत रोस उर ते तज दीनो ॥
हंसि करि मोहन कंठ लगाये ॥ भले स्याम ऐसे हू आये ॥ ॥
भ्रमित अंग जागे निस जाने ॥ प्रीति सनेह मन ही मन माने ॥
अंग सुगंधि मरदि अन्हवाये ॥ वसन अभूषण दै वैठाये ॥

रुचि भोजन दै सेज पर पौढ़ाये घनस्याम ॥
रसवस करि नव नागरी किये सुफल मन काम
सुर मुनि सकत न गाय प्रभु ब्रजवासीदास कौ
प्रेम प्रीत वस आय सो गोपी वल्लभ भयौ ॥

कहत सोंह करि रसिक विहारी ॥ तुम प्रिय मोहि प्रानहू ते
सदा वसत तुम मो मन माहीं ॥ तुम विन लहत अनत सुख ना
ऐसे कहि अति प्रीत जनावै ॥ चतुर वचन कहि चित हि चुराए
यह भाव युवतिन सौं भावै ॥ सवहिन के मन की रुचि पाए
कुल मर्याद लोक डर त्यागी ॥ सव गोपी हरि सौं अनुरागी
रूप देखे रस भाव वढ़ावै ॥ नैनन देखत ही सुख पावै ॥
प्रेम सनातन जग सुखकारी ॥ यह लीला ब्रज में विस्तारी
ललिता को सुख दै सुखसागर ॥ चले सदन अपने नटनागर
उत ते भग आवत चन्द्रावलि ॥ देखि रही सुन्दर [illegible]
वनै विशाल कमल दल लोचन ॥ चितवत चारु सार मद मोचन
हित मुसकाय स्याम निहारी ॥ सो रस भरी भई भट भेरी ॥
विहंसि कह्यौ चन्द्रावलि प्यारी ॥ कहां रहत हरि हम हि विसारी
तुम कैसे विसरत प्रिय पाहें सिवाले घनस्याम ॥

आजआयसुखलेहिंगे रैन तुम्हारे धाम ॥
सुनिहर्षी जियधाम चलीसदन सकाय कै
लषि सुखपायो स्याम उदितगये अपने भवन
चंद्रावलिमन अधिक उछाहू ॥ भूलीफिरतकहत नहिंकाहू
सुखकेकरतमनोरथनाना ॥ वासरक… समान बिहाना ॥
भेष अस्त रविनिसिनियरा… ॥ उडुगनयोतिदोषि हर्षानी ॥
हरिसुखमाकेभवनसिधाये ॥ चंद्रावलिभवन न आये ॥
सूनेघर देखी सोग्वाली ॥ आतुरगयेतहां वनमाली ॥
सुखमाललषिहरिकोसुखपायो ॥ आतिआदरकरिकैबैठायो ॥
कोककलाकोविदवरनारी ॥ हावभाव मोहे गिरधारी ॥
बसेतहांमोहनसुखपाई ॥ चंद्रावलिकीसुरतभुलाई ॥
इतचंद्रावलिसेजसंवारे ॥ वारवार हरिपंथ निहारै ॥
कवहूंभवनकवहूंअगनाई ॥ कवहूंरहतद्वार ठकलाई
कवहूंसोचकरतमनमाहीं ॥ आवैंगे मोहन के नाहीं ॥
कवहूंआलसकछुजियजानो ॥ धोवत है नैनन लै पानी ॥
कवहूंकहतहरिआयहैं उरमें हर्ष बढाय ॥
कवहूंविरह व्याकुलजरतअतिआकुलअकुलाय
कवहूंकहतसुखपायबहुरस्यागीरस्यागीपिय
वसे… तकहूंजाय मोसे कूठी सबघवाद ॥
ऐसे हिय में रैन बिहानी ॥ सुनी श्रवणवायसकीवानी
भईकामदुखवामउदासी ॥ जाने स्यामकपट की रासी ॥
कहतनमनकामिनके माहीं ॥ स्यामनामखोटेसब आहीं
कोयलस्यामस्यामअलिदेखो ॥ स्यामभुजंगनाहिस्यामविशेषो
तिनहीकोकरनीहरिलीनी ॥ मोसों प्रीतिकपट की कीनी ॥
ऐसेआपविरहवसवाला ॥ सुखमा सदन रहे नंदलाला ॥

प्रात भये उठि चले तहांते ॥ आलस भये नैन रंग राते ॥
चंद्रावली सदन चलि आये ॥ ठाढ़े अजिर रहे सकुचाये ॥
मंदिर तें रिस भरी गुवारी ॥ नखिनें सिखलों रही निहारी ॥
मन ऐके कहा निकुटी गिरधारी ॥ प्रात होत आये मेरे धारी ॥
कियो मान मन में अति भारी ॥ आंगन में ठाढ़े वनवारी ॥
और नारि के चिन्ह विलोकी ॥ रोकी तिरि सहि सकी न रोकी ॥

तव वोली करि मान तिय कहा काम मम धाम
ताही के पर जाइये वसे जहां निसि स्याम ॥
प्रात दिखावत मोहि आये रंग वनाय के ॥
मैं सुख पायो जोहि भले वने हौ लाल अव ॥

विन गुण शोभित है उर माला ॥ वीच रेख चख चंद रसाल ॥
अधर दीप सुत रेख सुहाई ॥ नाग वेल रंग पलक रंगाई ॥
लपटी पाग महावर लाये ॥ आलस नैन अरुण छवि छाये ॥
चंदन भाल मिल्यो कछु वंदन ॥ यह छवि अधिक वनी नँदनंदन ॥
वलय गाड़ उर पीठ धरे हो ॥ जान्यो नागरि रंग भरे हो ॥
इतने पर उलहन आहि आये ॥ सोंह करन को इत उठि धाये ॥
जाउ तहीं जासों मन मान्यो ॥ जैसे हौ तैसे मैं जान्यो ॥
विहसि कह्यो नवलाल विहारी ॥ तुम ते और कौन मोहि प्यारी ॥
तुम विन मोहि कहूं कल नाहीं ॥ वसत सदा मन तेरे माहीं ॥
यह चतुराई कहां पढ़ि आई ॥ चीन्ही गुण रास कन्हाई ॥
यह कहि गई भवन में भामिन ॥ रीझे स्याम देखि छवि कामिन ॥
मन में सकुचाइ भये प्रभु ठाढ़े ॥ द्वार कपाट दिये तिन गाढ़े ॥

पौढ़ि रही तिय सेज पर वदन मंद अनखाय
हो तन पुनि चितये नहीं उर में प्रेम वढ़ाय ॥
प्रेम गति लखी न जाय जो चाहें सोई करें ॥

पौढ़ि रहे संग जाय पौढ़ी त्रिय जहाँ मानकीरे
जो देखे तो संग कन्हाई ॥ चली बेगहीं तब तिय उठि धाई
खोलि किवार अजिर में आई ॥ देखे ठाढे जहाँ कन्हाई ॥
विनय करत नैनन की सैनन ॥ चकित भई देखति तिय नैनन
भीतर भवन गई पुनि प्यारी ॥ तहँ अंकम गहि लई मुरारी
तब नागरि सागरि इ भुलाई ॥ चेटक करि वस करी कन्हाई
मान छुड़ाय हुलास बढ़ायो ॥ तिय को सुख दीनो सुख पायो
तब निज धाम गये गिरधारी ॥ चंद्रावलि उर आनंद भारी
तहाँ सखी दस पांच कआई ॥ चंद्रावलि बैठी जेहि ठाई ॥
औरे वदन और अंग शोभा ॥ निरषि रहीं दृग दे मन लोभा
कहत प्रिया कह हरष बढ़ायो ॥ करन लूटका हू कछु पायो
क्यों अंग सिथल भरगजी सारी ॥ यह छवि कही न जात महारी
हमसों कहा दुरावति प्यारी ॥ हम जानी तोहि मिले मुरारी

चंद्रावलि कवि चतुर इ्यो अवसरि कन नाहि देह
रही मूंद सुख मंद हँसि भीजी स्याम सनेह ॥
रह्यो ध्यान उर छाय वह लीला विसरे नहीं
सुख सों कह्यो न जाय गूंगे को गुर सो भयो

तब बूझत वाली कह आली ॥ युवती मन मोहन बनमाली
है लीला अद्भुत सब जिनकी ॥ कहीं न जात बात सांष तिनकी
हा हा करति चंद्रावलि हमसों ॥ हम कहँ सुने स्याम गुण तुमसों
कै तोहि मिले यमुन के तीरा ॥ कै तोहि मिले भवन बलवीरा
तब चंद्रावलि गदगद बानी ॥ हरष सहित हरि कथा वषानी
सुनि हरि चरित ललित सुषकारी ॥ भई प्रेम वस सब ब्रजनारी
चंद्रावलि धनि धन्य कहीं तब ॥ कहन लगी हरि के गुणगण सब
नंदनंदन सब लायक हैं री ॥ सबहिन के सुष दायक हैं री ॥

वसेरैनुकाहूकेजाई ॥ काहूदेतमातसुख
काहूकोमनआपउरावै ॥ काहूसौंअपनोमनर
काहूकेजागतसिगरीनिस ॥ काहूकोंउपजावतहौंस
ब्रजवासीप्रभुकेमनभावै ॥ जैसेइतैसेचरितउपावै
यहलीलाआनंदमईसकलरसनकोसार ॥
भक्तनहितहरिकरतहैंयामतरतसंसार ॥
घरघरकरतविहारव्रजयुवतिनकेसंगहारि
गावतहैंश्रुतिचारव्रजवासीप्रभुकेयशहि
श्रीराधावृषभानदुलारी ॥ नंदनंदनपियकीअतिप्यारी
सहजरहैंअपनेमनमाहीं ॥ नंदसुवननिशिअंतनजाहीं
नंदभवनकेमेरेगेहा ॥ रहैसदाचितयहैसनेहा ॥
स्यामवसेकाहूनारीके ॥ आयेप्रातसदनप्यारीके
रतिरसचिन्हअंगपरवाने ॥ सोहतनैनअरुणअलसाने
प्यारीदेखिरहीसुखप्रियको ॥ जान्योअनुरागसबैउनहीको
तवमनविहसिकह्योश्रीराधा ॥ आजकन्योपियरूपअगाधा
परउपकारहेततनुधारो ॥ एहवनुसबकोसाधविचारो
कहापढीयहनीतिवतावो ॥ हमहूकोसोमंत्रसुनावो
कहींकहाकाकोसुखदीनो ॥ धनिरयहउपकारजोकीनो
धन्यवहवातआजमैंजानी ॥ क्योंनहुकहिरूपतमगमानी
धन्यमोहियहदरसदिखायो ॥ धनिरजासोनेहलगायो
भलीदिखाईआजयहअद्भुतछविअभिराम
सूरउदयलोचनकमलचंद्रउदयउरस्याम ॥
उरकुचकुंकुमदाग अधरदसनछविराजई
रंगीमहावरपाग यहशोभाअनुपमवनी
कैसोउठिभोरयहांकोआये ॥ काहेकोइतनेसरमाये ॥

तेरोहि रूप अधीन रहौ री ॥ तेरीहि नीति वें धाय गहौ री
तेरेहु रंग वसन तन धारे ॥ तेरे रंग को तिलक संवारे ॥
चंद्र वदन तेरो लखि गोरी ॥ मोर चंद्रका मुकुट कियो री
तेरोइ चरित सुने अरु गावे ॥ तू माने भावे जिन माने ॥
अति अनुराग स्याम को तेरो ॥ करो विचार नीके मे हेरो ॥
जो जाको नीके करि जाने ॥ सो तासों नेसो हित माने ॥
यह है प्रीति की रीति पियारी ॥ कहे तू चालि लेहु गिरिधारी
एकहु गई कहन कछु पाई ॥ मैं जानति हरि तोहि पठाई
मानत कौन कही अब तेरी ॥ जानत हौं हरि चरित घड़ेरी ॥
अवधो कौ तिन सो मिले जिन्हे परी यह बान ॥
उर मे राखत आन कछु कहत करत कछु आन
हे वे कपट निधान बहु नायक पूरे गुणन ॥
जिनको करत बखान जिन वामन ह्वे बलि छल्यो
...य अवनहिं बनेरी ॥ देख विचार हिये अपने री ॥
...गुण गण सुर मुनि माहे ॥ सो तेरे गुण गणि आण पाहे
...दिक जिहि ध्यान लगावे ॥ सो तेरे दर्शन सुख पावे ॥
...विधि जाके द्वार खरो री ॥ सो प्रभु तेरे द्वार परे री ॥
ज... पद कमला कर लीने ॥ सो तुव पद चितवत मन दीने
...न आरति नंदलाल हियेरी ॥ सो हरि करत हो सीस छियेरी
सुन प्यारी अति हठ नहिं कीजे ॥ सर्वस वारि स्याम पर दीजे
यह जोवन वर्षा को पानी ॥ गर्व न कीजे याहि सयानी
सब सुख हरि के संग कियेरी ॥ कृष्ण विमुख को काज जियेरी
पूर्व पुन्य सुकृति फल तेरो ॥ भामिनि मान कह्यो करु मेरो
हरि के रस रंग जो मन भीजे ॥ रूप सुधा जो नेनन पीजे ॥
सोइ चरण तेरे को कीजे ॥ सुफल दसइ दिस तो या जीजे

मानतिनाहींमनायोप्यारी॥कोजानेजियमेंकहाधारी
हाहाकरिमैंबहुसमुझाई॥सुनतनअधिकहोगतिरिसहाई
तुमआतुरदेखोगतिवाकी॥आयतिजानिबीचमेंथाकी
आपहिचलिलीजियेमनाई॥औरभांतिनाहिंबनतवनाई
यहहैवयारजैसीयेजवही॥पीठआडियेतैसीतवही॥
...सीजोपूछवोतुमकोरी॥नाहिंमानतवृषभानकिशोरी
हांतोकहात...हितको॥पाईहैकछुवाकेचितकी
चलेवनतहैलालअवओरयतननहिंकोइ
काछकाछियेजोनहासोनाचनाचियेसोइ
आपकाजमहाकाजवडेकहिगयेवातयह
तजहुस्यामउरलाजकरिरि...मिलहु
चलोचलेतुमरेहटजेहै॥देखतप्रेमउमंगउरऐहै॥
सखीसंगतवनवलविहारी॥गयेभवनवैठीजहप्यारी॥
आगेभयेसकुचकेठाढे॥अतिआधीनप्रेमरसवाढे॥
नेकनहींइतउतकहुडोले॥चित्रलिखेसेमुखनहिंबोले
यदपिलालगाहेअतिजीके॥सकलसयानपभूलेनीके
प्यारीदेखिपियाहिमसकानी॥जियहरषेमातेयहजानी
अतिआनंदभयोमनमाहीं॥चुपहीरह्योकह्योकछुनाहीं
मनमनकहतनअवउचटाऊं॥आदरकरिपियकोवैठाऊं
मासोंस्यामवहुतसकु...॥अवनहिंजेहैधामविरानै
सहचरीकह्योदेखरीप्यारी॥कवकेठाढेहैगिरिधारी
मानमनायोप्यारीपियको॥तूपियाजियपियजीवनजीको
प्राणहितूनाहिंकसखीकेसो॥यहकहभयोसु...
कोरिआदरवैठारीपियहीमिलेकंठलगाय
घरआयेनाहींकीजियऐसीकितसकवाय

मल यज्ञ उरज छाय उर धारे॥ द्वै शशि मनहुँ उदित उजियारे
नयन कछुक सकुचत से ऐसे॥ शशि के उदय सरोरुह जैसे॥
पुतली अलि उड़ि सकै न जानो॥ उर मुरझि अधिगात न मानो॥
श्याम गात से ऊँगा पग डोले॥ रस भीजे गत शिंगार अमोले॥
अंग अंग शोभा के सागर॥ धाने २ जहाँ बसे रति नागर॥
विहँसि कह्यो चले श्याम तब रुकि करी तुम बात
समझी सब बहुँ मम आय हैं आज तुम्हारे रात॥
सुनि हर्षी जिय नारि पुलकि गात आनँद उर
ऐहैं आज मुरारि सांझ परे मेरे सदन॥
प्रात हि ते मन हर्ष बढ़ायो॥ नौ सत साज सिंगार बनायो
बार बार दर्पन मुख देखे॥ भूषण बसन अंग अंग रेखे
कद्रु सुत छवि छाजत बेनी॥ मांग संवारत दीरघ सत श्रेनी
भवत जीय मुक्त रख संवारे॥ धनपति पुर को नाम सुधारे
हीरावलि उर पुर ले धारे॥ श्याम मिलन सुख मनहि विचारे
रचि २ सुमनन सेज बनावै॥ केसर चंदन अगर मिलावै॥
बहु नायक नंद सुवन कन्हाई॥ गये अनत याको विसराई
वासर ऐसे करत विहानो॥ एक जाम निस को नियरानो
पर्यो सोच विरही अकुलानो॥ श्याम न आये कहा धौं जानी
गये सांझ ही को कहि आवन॥ आज न आहि आय मनभावन
कै धौं आवत हैं अब धाये॥ किधौं परे कहुँ फंद पराये॥
बहु रमणी रमणी विहारी॥ कैधौं मेरी सुरति विसारी॥
कुमुदा के घर हरि रहे बढ़ी अधिक उर हेत
भीजि दोऊ प्रेम रस परसपरस सुख लेत॥
मुदित श्याम संग वामा छिनत सम बीतत यामिनी
याको युग सम जाम बीतत नभ तारे गनत॥

सुनत लषन षचन भइ हीसाल्ल स भोहि

हट छांडति नाहिं लाडिली हरि सोचत मनमाहिं
देखि स्याम कों दीन विरह विवस प्यारी निकट
सों [illegible] सब [illegible] लगीं
लखरी कमलनैन तो आगे ॥ कबके हाहा करत अनुरागे
तेरे भय तें कुंवर कन्हाई ॥ आये तिय को रूप बनाई ॥
मधुर २ बचनन बनवारी ॥ तोहि मनावत हैरी प्यारी ॥
हाहा करि अरु पायन लागे ॥ कियो कहा यांहति हे आगे
लखि हरि खरे मलिन मुरझाये ॥ आदर नहिं चुकि येघर आये
वे तो वन के भंवर मुरारी ॥ ॥ चोसी और बेलि को प्यारी
करि सन्मानि विहसि करिवैसो ॥ कोनो कहा निठुर मन ऐसो
पावत कहा मान के कीने ॥ कहा गंवावति आदर दीने ॥
होत कहा घूंघट पर खोले ॥ कहा नसात तनिक हंसि बोले
ऐसो कहू कीजियत हैरी ॥ प्रीतम छांडि राखियत वैरी
निज बस मदन गुपाल हि जानी ॥ ऐसी कहा अधिक इतरानी
सुख की कहत अनखसी आवे ॥ कहा तोहि कोऊ समुझावे
जो नहिं मानत स्याम सों मान हि राहि है हाय ॥
तव सूपने मन जान है जब दहि है रति नाथ ॥
सो ऐसे कहि कोन मान प्रिय हम कहति हैं ॥
त्रिभुवन ठाकुर जोन सो तेरे वस है परयो ॥
ऐसो समय बहुरि नहिं पैहे ॥ सुनरी फिर पाछे पछ तैहे ॥
यह जोवन धन है सुपने को ॥ मान मनायो पिय सपने को
अबे ये दिन रूसन को नाहीं ॥ प्रिया विचार देखि मनमाहीं
पावस ऋतु कियो री फेरो ॥ गरजत गगन भयो अंधेरो
बोलत दादुर चातृक मोरा ॥ चहुं दिस पवन करत झकझोरा
बरषत मेघ भूमि हितलागी ॥ नारि सकल प्रीतम अनुरागी

अवगुणामनविसराय मिलीप्रियाउठिस्यामसों
हरषिमिलेदोउप्रीतमप्यारी॥ भईसखीसवनिरखिसुखारी
तवदोउउवटिसखीअन्हवाये॥ रुचिरसिंगारसिंगारवनाये
मधुरमिष्टभोजनमनभाये॥ दोउजनएकहिथारजिमाये
दियेपानअचवनकरिवाये॥ सुमनसुगंधमालपहिराये
लैवीराअपनेकरप्यारी॥ दीनौविहसिवदनगिरधारी
तवहिसुफलहरिजीवनजान्यौ॥ परमहरषउरअंतरमान्यौ
मिलिवैठेदोउप्रीतमप्यारी॥ तवसखियनआरतीउतारी
अतिआनंदभरेदोउराजै॥ अरसपरसनिरखतछविछाजै
पायेवसकरिकुंजविहारी॥ विहसिकह्योतवपियसोंप्यारी
सुनहुस्यामवरषाऋतुआई॥ रचहुहिंडोरोप्रभुसुखदाई
हैमनमनपिययहसाधहमारे॥ सवमिलिझूलहिसंगतुम्हारे
सुनतियवचनस्यामसुखपायो॥ ऐसेंकहिहरिमानछुड़ायो

छं० तियमानहरिऐसेंछुड़ायोभक्तिहितलीलाकरी
निगमनेतिअपारगुणसुखसिंधुनंदकुमारहरी
यहमानचरितपवित्रहरिकोप्रेमसहितजोगावही
करिहैजोआदरमानतिनकोसन्तजनसुखपावही

दो० राधारसिकगुपालकोकौतूहलरसकेलि॥
व्रजवासीप्रभुजननकोसुखदकामतरुवेलि

सो० सुफलजन्महैतासुजेअनुदिनगावतसुनत॥
तिनकौसदाहुलासव्रजवासीप्रभुकीकृपा

॥ अथहिंडोरावनलीला ॥

भक्तिवस्यप्रभुकुंजविहारी॥ भक्तिनहितलीलाअवतारी
सदासदाभक्तनसुखदाई॥ करतसदाभक्तनमनभाई

प्रेम भक्ति दृढ व्रज की बाला ॥ भये वस्य तिन के नंदलाला ॥
यो २ सुख तिन के मन भावे ॥ सो ज्यो व्रज मे स्याम करावे ॥
ऐसे समै के सुखद विहारी ॥ करौ तियन संग नंदकुमारी ॥
ग्रीष्म गत पावस ऋतु आई ॥ परम सुहावन जन सुखदाई ॥
श्री राधा जन की रुचि जानी ॥ तब हिंडोर लीला मन आनी ॥
यमुना पुलिन गये मन भावन ॥ वृंदावन धन परम सुहावन ॥
सखियन सहित सोहत अति प्यारी ॥ कोटिक कस्तमन मे मनहारी ॥
अति आनंद उमंग चहुं ओरा ॥ उमड़ि घुमड़ि पावस घन घोरा ॥
जहां तहां वग पांति उडाहीं ॥ चपला चमक चपल घन मांहीं ॥
गरजत मधुर स्रवण सुखदाई ॥ त्रैविध वहत समीर सुहाई ॥
नाना रंग खग फूल लगि फल लगे गन के चारु
पुन सजत व के सुमका मालर रुचिर अपार ॥

प्रेम भक्ति दृढ ब्रज की बाला ॥ भये वस्य तिनके नंदलाला ॥
यों २ सुख तिनके मन भावें ॥ सो जो ब्रज में स्याम जनावें ॥
प्रेमें सर्मे के सुखद बिहारी ॥ करैं तियन संग नंदकुमारी ॥
ग्रीषम गत पावस ऋतु आई ॥ परम सुहावन जन सुखदाई ॥
श्री राधा जन की रुचि जानी ॥ तब हिंडोल लीला मन आनी ॥
यमुना पुलिन गये मनभावन ॥ रच्यो सुभग भवन परम सुहावन ॥
सखिन सहित सोहत पति प्यारी ॥ कोटिक कत्लमन मनहारी ॥
अति आनंद उमंगि चहुं ओरा ॥ घुमडि रहे पावस घन घोरा ॥
जहां तहां बग पांति उडाहीं ॥ चपला चमक चपत घन माहीं ॥
गरजत मधुर श्रवण सुखदाई ॥ तैसिय बहत समीर सुहाई ॥
नाना रंग खग फूल लगि फल लगल गन कचनार ॥
फग भ्रकुव के झूमका झालर रुचा अपार ॥

शोभित लता वितान अति उलंगत कुसुमन युत
रहे पान मिल पान विचित्र नगन समान जड़े ॥
कनक बरन मे भूमि सुहाई ॥ छवि विद्धोरन नहिं बरनी सराई
तापर रसिक छबीले दोऊ ॥ उपमा को त्रिभुवन नहिं कोऊ
नंदनंदन वृषभानकिशोरी ॥ गौर स्याम सुन्दर छवि जोरी
[illegible] दउर भारी ॥ निरखत छवि नभ सुरवर नारी
मोर मुकुट पीतांबर सोहै ॥ स्याम सुभग तन त्रिभुवन मोहै
प्यारी अंग वैगनी सारी ॥ शोभित चहुंदिस चारु किनारी
युगल अंग भूषण छवि छाये ॥ रचि रुचि सखि न सिंगार बनाये
उर रतन के हार विराजे ॥ सुमन हार अति से छवि छाजै ॥
उत कुंडल इत स्रवन छवि ॥ रह्यो लजाय निरषि छवि को रवि
सखिगण [illegible] ॥ वारत प्राण रीझ रिझवारे
भरि उछाह ऊंचे सुर गावैं ॥ पिय प्यारी को हरषि बुलावैं ॥
ताल म्रदंग बांसरी मीना ॥ बाजत सरस [illegible] सुर लीना ॥
यह सुख [illegible] रीझ परसकल नव बाल
वृंदावन कुलतरु [illegible] राधा अरु नंदलाल ॥
[illegible] नव सत सजि सिंगार तन
गई कार [illegible] मनमोहन के रस पगी ॥
[illegible] करि पहरि चुनरी सारी ॥ [illegible] चहुं की कोर किनारी
यूथ रमिल हरि पै आवैं ॥ तिनानि [illegible] कर बुलावें
[illegible] वचन सप्रेम सुनावें ॥ सबुके मन को मोद पुरावें ॥
एक ने लेत निकट बैठाई ॥ एके चहे पग पर धाई ॥
एक फुलावति अति सचुपाई ॥ गावत एक मलार सुहाई
राग रंग सुख बरन न जाई ॥ रह्यो छाय सुर तन धन जाई
युव तिवंद चहुं ओर सुहाई ॥ भूषण भीर बरनन नहिं जाई

सदासुमननवपल्लवडारी ॥ सदात्रिविधिमारुतसुखकारै
सदामधुपगणमाते डोलैं ॥ कोकिलकीरसदाकलबोलैं
सुनि२नारिहृदेसुखपावैं ॥ मनहींमनअभिलाख बढावैं
वारि २ कहिंपियसुखपावैं ॥ ऋतुवसंतआई समुझावैं
फागुचरितअतिसाधहमारे ॥ खेलैंमिलि सब संग तुम्हारे

जबबनिताहरिसोंहरषिकह्यो सुनहुब्रजराज
देखहुवन शोभानिरखिअतिहिंविराजतराज
खेलत हैं दोउ फाग मानहुमदनवसंतमिलि
लखिउपजतअनुराग यह रसअधिकसुहावनें

द्रुमनमध्य के सूतरफूले ॥ करतप्रकाशअशुमिसम तूले ॥
मानहुनिज २ सेतसुहाई ॥ हरषिभवनहोलिकालवाई
कूजकुंजकोकिलसुखदानी ॥ बोलतविमलमनोहरबानी ॥
निलजभई सबकुलकीनारी ॥ गावतिरहप्रीतचढेअटारी
नानारूपके कौतुक सारी ॥ जहँतहँकरतकुलाहलभारी ॥
मनहिंपरसपरनरअरुनारी ॥ देतदिखावत हैं सब गारी ॥
प्रफुलितललिताविलोकतिभारी ॥ अलिमधुमत्तजातबलिहारी
मानहुमारिगकादेखिसुहाई ॥ मतवारेलपटत हैं धाई ॥
पदुपपरागअबीरसुहाई ॥ लियेसमीर फिरत है धाई ॥
संयोगिनरसअनरसबिरहिन ॥ करकौतुकमनभायेसबहिन
नवपल्लवदलसुमनसुहाये ॥ घरनघरनविटपनछविछाये
अनुरंतराज संग छोबि छाये ॥ बहुरंगभरेलसतजनुगाढ़े

भवरपुंजनिरझरशबदबजतदुंदुभीघार ॥ ॥
रचीमंडलीमदनजनुजहँतहँविविधविहार
वृंदाविपिनसमाजकहालगिवरनवखानिये
कान्हतुम्हारे राज क्रीडत सब आनंद भरे ॥

ऐसें संग लिये सव ग्वाला ॥ करत फागु कौतुक नंदलाला ॥
भोज रहे केसर रंग चाये ॥ नवनी सिख गुलाव ते पाग ॥
आनंद भरे मुदित सव गावत ॥ गुनी जनन के थाल नचावत
वरसाने कौ चले कन्हाई ॥ यह सुधि कुवरि राधिका पाई
तुरत सखी सव वोल पठाई ॥ सुनत सकल आतुर उठि धाई
नवसत सकल मनोहर साजें ॥ वरन २ पर वसन विराजें ॥
वेंदी भाल विराजति रोरी ॥ मुख ते वालतन की छवि गोरी ॥
होरी खेल २ नृत सव चोपी ॥ आई प्रिया निकट सव गोपी
हसि २ सव सो कहति किशोरी ॥ चलहु स्याम संग खेले होरी
एक रिझाज मोहन कौ लीजे ॥ मन भाई तिनसों सव कीजे ॥

ललितादिक व्रज नागरी मिल सव सजो समाज
तिन में श्री कीरति कुवरि स- ह्निन की सिरताज
परम रूप की रासि गुन आगर नव नागरी ॥
राजति भरी हुलास मन मोहन मन भावती ॥

नख सिख लो सव सुंदरताई ॥ रही छाय छवि पुंज निकाई
भूषण जाल लाल नग केरे ॥ शोभित अंगन सुभग घनेरे ॥
मुख छवि वरनि शके सो को है ॥ जाहि देखि मोहन मन मोहे
लसति नवल तन सुंदर सारी ॥ केसरिया कीनी जर तारी ॥
गुलगच्चु की लहंगा चटकीलो ॥ घेरघनो अति छवि न छवीलो
कंकण किंकिणि नूपुर वाजे ॥ होरी साज सजे सव रजे ॥
रंग गुलाल संग सव लीनो ॥ सोहति युवति रूप रंग भीनो
मृग मद केसरि मेल मिलाई ॥ मांथि २ लीन्ह कलस भराई
हाथन में लीने लव लासी ॥ चली स्याम धन पै चपलासी
युवति यूथ ले संग किशोरी ॥ नहीं जाय आगे व्रज खोरी ॥
उतते आये मदन गुपाला ॥ सोहत संग भीर नव वाला ॥

करचूड़ामणिजटितअंगूठी ॥ लसतअंगुरियनभांतिअनूठी
बाजूबिजौटजटितरतनकौ ॥ चंदनचित्रतस्यामसतनकौ
झलकतमीनकुंडलाकेमाही ॥ सोहतविम्बअधरअरुनाई
कटिपरपटपीरोकसेकनककिनारेचारु ॥
तापरखोसेमुरलिकाउरमुकतनकेहार ॥
तापरललितविशालमालगुलाबप्रसूनकी
चितवनहंसनरसालबन्यौछैलनंदलालकौ
बन्यौयूथसबरंगरंगीलौ ॥ मधिनायकनंदनंदछबीलौ
खेलतस्यामचलेव्रजहोरी ॥ उड़तअबीरगुलालनझोरी
बाजततालमृदंगसुहाई ॥ डफमहुचंगबीनसहनाई
औरनशाखनकीकलजोरी ॥ बीचबीचमुरलीसुरथोरी
कोउनाचैकोउभावबतावै ॥ होरीगीतमिलैसुरगावै
व्रजबीथिनबीथिनसबडोलें ॥ होहोहोहोरीमुखसेबोलें ॥
मिलतगलिनमेंजोनरनारी ॥ बकतनहींदीन्हेंबिनगारी ॥
डारतगुलालतासुपरढारै ॥ भरिभरिपिचकारिनरंगमारै
बोलतहोरीबचनसुहाई ॥ करिछांड़तसबमनकोभाई
गोरसकेरसमातेडोलें ॥ घरनघरनकेफाटकखोलें
जोकोउभाजरहतघरबैठी ॥ बरिआईंआनतवेहिंपैठी
भेटनचलींदेखिव्रजनारी ॥ झमकतनूपुरहिंपिचकारी
गावतहोरीगीतरवदहंदिवावहियारि ॥
डारतअंबिगुलालकोभरीभरीभरिनारि
इनहरिकेसंगग्वालसोदितगुलालउड़ावहीं
पिचकारिनकेजालबरषतहरिकेमरलसिव
होतकुलाहलआनंदभारी ॥ रंगोअबीरनमहलअटारी
लैगइव्रजकीबीथिनबीचा ॥ मचिगुलालकुमकुमाकीच

ऐसें संग लिये सब ग्वाला॥ करत फागु कौतुक नंदलाला॥
भीज रहे केसर रंग वाये॥ नखतें सिख गुलाव तें पागे॥
आनंद भरे मुदित सब गावत॥ गुनी जनन के थाल नचावत॥
बरसाने कों चले कन्हाई॥ यह सुधि कुंवरि राधिका पाई॥
तुरत सखी सब वोल पठाई॥ सुनत सकल आतुर उठि धाई॥
नवसत सकल मनोहर साजें॥ वरन २ वर वसन विराजें॥
वेंदी भाल विराजति रोरी॥ सुखतें वोलत नन की छवि गोरी॥
होरी खेल २ नत सब चोपी॥ आई प्रिया निकट सब गोपी॥
हंसि २ सब सों कहति किशोरी॥ चलहु स्याम संग खेलें होरी॥
एक रि आज मोहन कों लीजे॥ मन भाई तिनसों सब कीजे॥

ललितादिक ब्रजनागरी मिल सब सजो समाज॥
तिनमैं श्रीकीरतिकुंवरि सः हिनकी सिरताज॥
परमरूप की रास गुन आगर नवनागरी॥
राजति भरी हुलास मन मोहन मन भावती॥

नखसिख लौं सब सुंदरताई॥ रही छाय छवि पुंज निकाई॥
भूषण जाल लाल नग केरे॥ शोभित अंगन सुभग घनेरे॥
सुख छवि वरनि सके सो को है॥ जाहि देखि मोहन मन मोहे॥
लसति नवल तन सुंदर सारी॥ केसरिया कीनो जर नारी॥
गुलगच्च कौ लहंगा चटकीलो॥ घेर घनो अति छवि नकुवीलो॥
कंकण किंकिणि नूपुर वाजे॥ होरी साज सजे सब राजे॥
रंग गुलाल संग सब लीनो॥ सोहति युवति यूथ रंग भीनो॥
मृग मद केसरि मेल मिलाई॥ मोथ २ लीन्ह कलस भराई॥
हाथन में लीने लवलासी॥ चली स्याम वन पै चपलासी॥
युवति यूथ लै संग किशोरी॥ नहीं जाय आगे ब्रज खोरी॥
उनतें आये मदन गुपाला॥ सोहत संग भीर नव बाला॥

आई धाय और सब नारी ॥ लीने पकरी स्याम अंकवारी ॥
हसि २ कहति सकल ब्रजवाल ॥ दीठ सबद्दत दई तुम लाल ॥
सो फल आज तुमहि सब देहैं ॥ दाव आपनो नीके लेहैं ॥
ठाढे हसत दूर सब ग्वाला ॥ कहत गये पकरे नंदलाला ॥
हसति कुंवरि राधा दूरि ठाढी ॥ पिय मुख निरखि सकुच उरवाढी ॥
किनहूं लियो पीत पट छोरी ॥ काजर दियो किनहूं बरजोरी ॥
काहू बेनी सीस संवारी ॥ मुखगुलाल लावति कोउ नारी ॥
काहू उर अरगजा लगायो ॥ काहू रंग सीस हर कायो ॥
गये छूटि मोहन तबै मोहन चले पराय ॥
आय मिले निज सखन में रही नारि पछिताय
कर मींजति पछितात कहति परस्पर बाल सब
भली बनी हीं घात दाव लेन पाई नहीं ॥
गये आज तुम भजि नंदलाला ॥ जैहो कहां काल्हि गोपाला ॥
करि राखी जैसी तुम हम सों ॥ सो हम दाव लेयगी तुम सों ॥
पीतांबर अपनो यह लीजे ॥ पठै ग्वाल काहू को दीजे ॥
के आय हो आय ले जाहू ॥ अब हम नहीं पकरि हैं काहू ॥
हसत सखा सब तारी दे के ॥ बेनी छोरत हैं कर लेके ॥
कहत जाहु फिर कुंवर कन्हाई ॥ पीतांबर ले आवहु जाई ॥
भाजत हार लिये तें टूटे ॥ पीतांबर गहने दै छूटे ॥ ॥
तब हि हंसत बोले नंदढुहाई ॥ अबहिं पीत पट लेत मगाई ॥
सखा एक हरि निकट बुलायो ॥ युवति भेष करि ताहि पठायो ॥
गयो सो मिलि युवतिन के माहीं ॥ हसन जाय ठाढो पट पाहीं ॥
कहत देउ पट भये दुराई ॥ अब नहि पावत कुंवर कन्हाई ॥
अब यह पट हम कौ तब देहैं ॥ दाव आपनो जब हम लेहैं
रासी कहि पट ले लियो आयो चमकि गुवाल

पुनि २ हरषि सुमन वर षावैं ॥ जै जै करि प्रभु कौं यश गावैं
ऐसें स्याम रंग रस राष्यौ ॥ ललिता आय वीच तब भाष्यौ
आज स्याम तुम औचक आये ॥ हम काहू जानन नहिं पाये
बहुत करी तुम आय ढिठाई ॥ भई सांझ अब कुंवर कन्हाई
काल्हि प्रात है वार हमारी ॥ देखेंगी मन साध तुम्हारी
ऐहैं नंद गांव लौं प्यारी ॥ रहियो सजग लाल गिरधारी
प्यारी करतें पान लै दीने सखी सुजान ॥
प्रात औध बद खेल कौ राख्यौ दुहू दिस मान
घर आये घनस्याम सखन संग गावत हंसत
गई प्रिया निज धाम सखिन सहित आनंद भरी
परमानंद सकल ब्रजनारी ॥ कृष्ण केलि सुख की अधिकारी
लोक लाज कौ भय नहिं माने ॥ कृष्ण विलास सदा उर आने
श्री राधिका कुंवरि सुखदाई ॥ प्रात सखी सब बोलि पठाई
कियो विचार सकल मिलि गोरी ॥ नंद गांव खेलें चलि होरी ॥
मिलि मोहन सों अति सुख कीजे ॥ फगुहा नंद महर सों लीजे
साजा सकल खेल की लीनी ॥ रंग गुलालन सों बहु कीनी
मथि २ विविधि सुगंधन लीने ॥ भांति अनेक अरगजा कीने ॥
भरि २ भाजन कनक सुहाये ॥ अमित सुगंध न जांहि गनाये
लेका वरन अनेक अपारा ॥ चले संग सजि सुभग सिंगारा
ग्वालिन योवन गर्व गहेली ॥ श्री राधा संग चली सहेली
कुंकुम उबटि कनक तन गोरी ॥ रूप रासि सब नवल किसोरी
एक वैश सुन्दर सब राजैं ॥ निरखत कोटि मदन रति लाजैं
नव सत साज सिंगार सब अंग २ सब न्यारि ॥
चंद्रावलि ललितादि सब अमित गोप सुकुमारि
को कवि वरने पार प्यारी सब नंदलाल की ॥

खानपान करी अमहिं निवारो ॥ वृद्धी खेलियो निकट संवारो ॥
ल्यावहु सबला डिलीलिवाई । कीरति जूकी सौंह दिवाई ॥

नवजसुमति पैराधिकहिं ललिता ल्लीलिवाय
सकुच जानिमन स्याम अति छूटे हाहा खाय ॥
हँसे ग्वाल मुख फेरि तन शोभा देखत खड़े ॥
बलकौं लीनो टेरि वन्यो आज अति सांवरो ॥

कहत सखा सब दे दे सौंहन ॥ ऐसेहि चलो नंद पै मोहन ॥
चले भुजा गहि तहां लिवाई ॥ [illegible] ॥ नेजाई
उन सब युवतिन के चित चोरे ॥ चले लाल इतही अतिभोरे ॥
अति छवि देखि हँसे नंदराई ॥ जननी सुनति दौरि तहँ आई ॥
निरखि हरषि लीन्ह उरलाई ॥ अति आनंद हृदै न समाई ॥
बारबार करलेत बलैया ॥ किनयह कीनो हाल कन्हैया ॥
एऐसी सबब्रज की बाल ॥ सकुचत हँसत मनहिं नंदलाल ॥
तुरत स्याम साइ भेष उतारो ॥ काछि पट पीत मुकट सिर धारो ॥
युवतिन सहित कुंवरि श्री स्यामा ॥ आई नंदमहर के धामा ॥
भूषण वसन नवीन बनाये ॥ जसुमति लै सब को पहिराये ॥
अति सनेह व भानदुलारी ॥ अपने हाथ सिंगार संवारी ॥
निरखि रूप प्रभु देत नंद [illegible] ॥ वारति राई नोन सिहानी ॥

विविधि भांति मेवा मधुर औरमिठाई पान
सादर सबकी गोद मे भरे हरषि नंदरानि ॥
रह्यो नंद गृह छाय होरीको आनंद अति ॥

कहति जसोमति माय फगुआ कह्यो सुदीजिये
लला कि कह्यो और कछु नाहीं ॥ लैहैं कान्ह र फगुआ माहीं
देखे विन ॥ [illegible] ॥ तो मांगे दैहै हम तुम को ॥
बाढ़ो बंदमहर नंदराई ॥ चिरजीवहु बल राम कन्हा

ऐसें कहति रूप अनुरागी ॥ मुरली छोरि बजावन लागी ॥
हरि के हाथ गहे चंद्रावलि ॥ कमल लै आई संजावलि
एक नीलियो पीत पट छोरी ॥ एक रंग गागरि लै दौरी ॥
ललिता लोचन अंजन लागी ॥ एक अधरन लगि कछु नाई
एक चिबुक गहि बदन उठावै ॥ एक गुलाल कपोलन लावै ॥
घेरि रही परि घा की नाई ॥ करति सबै निज रमन भाई ॥
काहू बेनी गुंथि सवारी ॥ काहू मोतिन मांग सुधारी ॥
पहिरावति लहँगा को उसारी ॥ काहू लै अंगिया उर धारी ॥
निरखि रप्यारी मुसकाई ॥ रासत आपन कुम वढाई
कछु वस्त्र भूषण लीन्हे ॥ नेकहु स्याम परत नहिं चीन्हे
वधूवेष कीन्हे सब हिन गायो ॥ प्यारी निकट आन बैठायो

निरखि बदन प्यारी हँसी स्याम हँसे सकुचाय
गहि प्यारी निज पाणि तब दीनो पान खवाय
सखियो करति कलोल गांठ जोरि अंचर दई
ब्रज में रहैं अडोल यह जोरी युग युग सदा ॥

लीन्हे मध्य स्याम सब न्वारी ॥ गगन भई अब वपुन सँभारी
पिय प्यारी मुख की छवि जोहैं ॥ अरस परस दोऊ मन मोहैं ॥
रगन भरे रंगीले दोऊ ॥ त्रिभुवन छवि पटतर घट सोऊ
एक नैन की सैन मिलावै ॥ एक युगल छवि लखि सुख पावै
गावति एक महरि की गारी ॥ बजे मजीरा डफ कर तारी ॥
भरि भरि मूठ गुलाल उडावै ॥ ग्वाल निकट कहू लगन पावै
रही गुलाल घटा छवि छाई ॥ फूली मानहु सांझ सुहाई
तब ललिता को जसुमति माई ॥ घर भीतर ते बोल पठाई
हँसि के महरि वचन सनमानी ॥ बिनती करी बहुरि सद बानी
आज भई भोजन की बारियां ॥ देखक रूप अब राधा की उरियां ॥

सखा संग सब कौं सुख दीनौ ॥ मन भायौ गोपिन कौं कीनौ ॥
महर नंद पितु मात कहाये ॥ तिनके हेत देह धर आये ॥
बालकेलि रस सुख करि भारी ॥ दियो परम आनंद मुरारी ॥
गिरि करि ब्रजजन सबही राखे ॥ इंद्रादिक सुर जे जे भाखे ॥
गाय वत्स वन माहिं चराये ॥ काली नाग नाथ लै आये ॥
करे [illegible] कृपाल ॥ भक्तन हित प्रभु दीन दयाल ॥

भक्तन के हित लेत हैं प्रभु युग युग अवतार ॥
असुर मारि थापत सुरन हरन भूमि भव भार ॥
गावत संत अपार यश पुनीत पावन करन ॥
पूरि रह्यो संसार करता हरता आप हरि ॥

इक दिन प्रभु भक्तन सुखदाई ॥ नंद हृदय यह मति उपजाई ॥
चालये अज सरस्वती तीरा ॥ पूजन शंकर सकल अहीरा ॥
लिये संग बल मोहन दोऊ ॥ गोपी ग्वाल चले सब कोऊ ॥
करत कुलाहल आनंद भारी ॥ पहुंचत तहां सकल नर नारी ॥
सरित पुनीत किये अस्नाना ॥ महि देवन दीनो सब दाना ॥
देखि देवस्थल अति सुख मानी ॥ सादर पूजे शंभु भवानी ॥
पूजा करत सांझ हुइ आई ॥ श्रमित भये सब लोग लुगाई ॥
खान पान करि सहित हुलासा ॥ कियो रैन तहँ वन में वासा ॥
सोये तहँ सुख सों सुखरासी ॥ तब सोये सब ब्रज के बासी ॥
आधी निसि अजगर इक आयो ॥ नंद महर को पग लपटायो ॥
उठे पुकारि चौंकि नंदराई ॥ आये ब्रजवासी सब धाई ॥
अजगर देखि डरे सब कोई ॥ लगे छुड़ावन छुटत न सोई ॥

हारे यत्न अनेक करि सर्प न छाड़े पाय ॥ ॥
कृष्ण कृष्ण करि नंद तब गुहरायो अकुलाय ॥ ॥

सो० अति व्याकुल गये ग्वाल नवही स्याम जगायके

[illegible] सोरज में पाई ॥ कहं लगि मुनि की करौं बड़ाई
[illegible] जगत हितकारी ॥ संत समान न कोउ उपकारी
ऐसें विद्याधर [illegible] बखानी ॥ नंदहि अपनी कथा बखानी
पुनि श्रीकृष्ण चरणन सिर नाई ॥ गयो लोक निज बहु हरषाई
दो० [illegible] देखि पुनीत
कहत परस्पर कृष्ण गुण भई तहां निस बीति
सो० आय सबै ब्रज धाम प्रात होत आनंद सों
संग स्याम बलराम प्रभु ब्रजवासी [illegible] के ॥

अथ शंखचूड़वध लीला ॥

इक दिन सुन्दर मदन गुपाला ॥ श्रीबलदेव और संग ग्वाला ॥
दिवस अंत निस समय सुहाई ॥ उदित उडुप उडुगण छवि छाई
प्रफुलित चारु मालती सोहै ॥ कुमुद सुगंध पवन मन मोहै
गुंजत भंवर मत्त रस लोभा ॥ चले तहां देखन वन शोभा ॥
ग्वालन मिल गावत दोउ भाई ॥ कबहुंक बजावत वेणु कन्हाई
ब्रज वनिता गण चहुं दिस घेरें ॥ चली सुनत वंसी की टेरें ॥
जिनके तन मन बसे कन्हाई ॥ मगन भई छवि लखि अधिकाई
पहुंची थी वृंदावन जाई ॥ गोपी ग्वाल संग समुदाई ॥
वेहरत वन विहरत दोउ भाई ॥ गोपी ग्वाल साथ सुखदाई
मद्दा मंद गति इत उत डोलें ॥ मृदु मुसकाय ललित मैन मोलें
रूपराशि निधि छवि दोउ वीरा ॥ बैठे जाय जमुन के तीरा ॥
पाछे सखावृंद सब सोहैं ॥ सन्मुख गोपीजन मन मोहैं ॥
दो० करत गान मिलि मुदित सब भरे प्रेम रस माहिं
भये मगन उठ मत्त जिम रही देह सुधि नाहिं ॥
सो० बाजत ताल मृदंग बीन चंग मुरली मधुर ॥

कह्योमहाएकव्यालपरयानीयमनंदको॥

सुनतउठेआतुरगोपाल॥निकटजायदेख्योसोव्याल
परस्योनाहिंकमलपदपावन॥पापभापसंतापनसावन
छुवतचरणफिरगयोभुजाई॥सुरसौदिव्यरूपनिकलनआई
लाग्योहाथजोरिसुरभावन॥जैजैजगतईशजगपावन
सपूरनक्रदेवमुरारी॥जैजैजैब्रजगोपविहारी॥
ऋषिकेश्रागरआपमोहिदीनो॥सोअनुग्रहप्रभुएहकीनो
जातेंप्रभुकौदरशनपायो॥जन्मजन्मकोपापनसायो
ऐसीविनतीप्रभुहिंसुनाई॥आयसुपायचल्योसिरनाई
बहुरिनंदकोत्रासनशायो॥दौरिमहरिअतिसबब्रजआय
पूछतनाहिंनंदतवभेवा॥तुमतोदिव्यरूपकोउदेवा
सर्पसरीरधरयोक्योंआई॥सोसबहमसोंकहोबुझाई
नंदवचनसुनिमनसुखपाई॥तबउनअपनीकथासुनाई

हौंमप्रथायकेसपा॥कोनामसुदरसनहोय॥
सुंदरविद्याधरनमेंमोतेऔरनकोय॥सो•
इकदिनऋषिकेधामगयोधरेअभिमानमन
कियोनतिन्हेंप्रणामरूपद्रव्यकेगर्वतें॥

ऋषिअंगिरावड़ेविज्ञानी॥आगेंमोहिजड़अभिमानी
दीनोंश्रापकोपकरिएह॥जायहोडसठअजगरदेह॥
गहेकह्योमोहिऋषिजबहीं॥अजगरभयोतुरतमैंतबहीं
दईसिखवतमोहिंपरमकृपाल॥भयेबहुरिसुनिआपदयाल
तबकोंकृपाकह्योयहमोही॥कृष्णदरशहैहैजबतोही
शीसचरणजबपावनसेहै॥बहुरिआपनोतनतबपैहै॥
तेपदअजपरससुखदाई॥भयोधनीनिजरूपनिजपाई॥
जोपदरजब्रह्मानहिंपावै॥शिवसनकादिसदाचितलावै

आवत जात असुर अव ह्वरो॥ ग्रीव मोड़ि भ्व धरणि पछारो
परयो असुर परवत आकारा॥ मुखते चलो रुधिर की धारा
असुर मारि उत्तम गति दीनी॥ जैजै ध्वनि देवन नभ कीनी
भये सुखी सब सुर समुदाई॥ बरषि सुमन अस्तुति सुरगाई

चकित भये लषि परस्पर कहत सकल ब्रजवाल
हम जान्यो कोरवृषभ है यह तो असुर कराल॥
दुष्ट दलन गोपाल मुदित कहत नर नारि सब॥
भक्तन को रछपाल ब्रजवासी नंदलाडिलो॥

अब अरिष्ट मारयो गिरधारी॥ भयो कंस सुनि बहुत दुखारी
आये ऋषि नारद तिहि काला॥ कह्यो कंस सो सुनि भूपाला
जिन मारे सब असुर तुम्हारे॥ ते नाहिं होहिं नंद के बारे॥
मैं जान्यो निश्चय यह भयऊ॥ है वसुदेव पुत्र वे दोऊ॥
कन्या लै जो तुमहिं दिखाई॥ सो वह हुती जसोमति जाई
भयो कछु यह छल सुनराजा॥ को जाने करता के काजा॥
पहलो पुत्र भयो है जबहूं॥ कही हुती तासों मैं तबहीं॥
अपनो सो वहु तुम कीनो॥ सो क्यों मिटै जो विधि लिषि दीनो
करहु यतन तुम अबहु सवारे॥ यह कहि नारद स्वर्ग सिधारे
उठ्यो कंस सुनि मुनि की बानी॥ भयो शोच बस मूढ़ अज्ञानी
प्रथम मंद [illegible] वसुदेऊ॥ छोड़ हुते वन्द ते दोऊ॥
वहुत बुरो मान्यो तिन पाहीं॥ राखे बहुरि बंद के माहीं॥

कैसे मारों कहकरों निसि दिन यह है विचार
सोच हृदय नृप कंस उर ह्वल धरे नंद कुमार॥
अब धौं पठऊं काहि मन ही मन सोचत खरो
काहू न मारो ताहि असुर गये ते सब मरे॥

अथ केशी वध लीला

कह्यौजायआतुरहरीपाहीं॥अम्वएकआयौव्रजमाहीं
अतिविकरालनजातवतायौ॥कैधौंघुड़रीअसुरकोउआयौ

व्रजआयौकेशीअसुरजानलियौनंदलाल॥
सन्मुखताकेहरषिकेचलेकंसकेकाल॥
सीसमुकटवनमालकटिकास्विांध्यौपीतपट
उरभुजनैनविशालअसुरविमोहनसुरसुखद

जवकेशीदेखेहरीआवत॥भयोक्रोधकरिसन्मुखधावत
अतिवलदोउचरणउठायौ॥प्रभुकेउरकौं[illegible]यौ
देखतडरेसकलव्रजवासी॥गहेवीचहरीअविनासी
छूटनअसुरवहुतवलकीनौ॥ठेलिस्यामपाछैतवदीनो
गिरयौधरणीपरमुर्छितभारी॥उठ्यौक्रोधकरिवहुरिसंवारी
दावघातकरिकैवहुधावै॥पुनिरचरणचपेटचलावै
अतिहिवेगहरिजानवचाई॥करतयुद्धकौतुकसुषदाई
देखतसुरमुनिचढ़ेअकासा॥कछुहर्षमनकछुइकत्रासा
तकतगोपगोपीमेंवाढ़े॥चकितेचित्रलिखेसेठाढ़े
वदनपसारअसुरतवधायौ॥चाहतहरिकोमुखमेंनायौ
तवहिस्यामयहवुद्धिउपाई॥दियोहाथताकेमुखनाई
दशनदावसक्योसोनाहीं॥वज्रसमानभयोमुखमाहीं

एकहाथमुखनायकेतुरतकेशगहिधाय
वलीसुवननंदलालकेपटक्योसीसफिराय
शब्दभयोआघातधरकोउरसुनकंसको
नंदमहरकेतातजान्योकेशीकोहत्यौ

देखतसुरगणभयेसुखारी॥वरषेसुमनसुमंगलकारी
गावतजैयशप्रभुहिंसुनाई॥असुरनिकंदनजनसुषदाई
सफलितभयेसकलव्रजवासी॥वढ्योहर्षउरमिटीउदासी

असुरनमाहैंवड़ौवलधारी॥केशीअसुरवीरअतिभारी
केसताहितवबोलिपठायौ॥अतिआदरकरितिगवैठायौ
कहतकंसकेसीसुनमोसौं॥जोकौघातकहतमैंतोसौं
मोसमानराजाकोउनाहीं॥मेरीआनसकलजगमाहीं
ऐसेसेवकमेरेनाहिंऐसे॥॥जैसमैंचाहतहौतैसे॥
जासौंकहौंघातमैंजोई॥करिआवैकारजयहसोई
तातैमोहियहीपछितायौ॥तवकेशीकहिवचनसुनायौ
ऐसौकहाकठिनप्रभुकाजा॥जाकौतुमसोचतहौराजा
तुमहौसवअसुरनकेनायक॥औरकौनदूजौतुमलायक
जाहिक्रोधकरिचितवौजवहीं॥ताकौनासहोयनृपतवहीं
आयसकहामोहिकिनदीजै॥सोकारजअवहीहमकीजै
यहसुनिकंसहरषजियआन्यौ॥केशीकौंवहुभांतिवखान्यौ

असुरवंससवहीइतेकाहिकहौंब्रजराज॥
नंदमहरकेढोहराकरिआवैविनप्रान॥॥
कियौनतिनकछुकाजआगेजेपठयेअसुर
यहसुनिकैअतिलाजमारेसवनंदवालकन

तातेकछुकहूंहैंमैंजानत॥वड़ौवीरताकौंमैंमानत॥
ताकारणअवजतोहिपठाऊं॥वहुतऔरकोहिकहासिराऊं
जेहितेतिविधिछलवलकरिकोऊ॥मारिआवनंदवालकदोऊ
कैलेआववांधदोउभैया॥कहौंजिनवलरामकन्हैया
यहसुनिगर्वअसुरमुदकीन्हौ॥चल्यौब्रजाहिनृपआयसुदीन्हौ
मनोंहिकहतदेखौंगोनाहीं॥कंसनृपतिडरपतिहैजाही
अश्वरूपह्वैब्रजमेंआयौ॥अतिवलगरजहिवदनदिखायौ
वेगवंतअतिवपुषविशाला॥मस्तकग्रीवपूंछविकराला॥
जिततितभाजचलेनरनारी॥भयेविकलसवअतिभयभारी

व्यो मासुर यह वुद्धि उपाई ॥ प्रथम बालकन लेहुं चुराई ॥
इकलौ कीजब हरि कौं पाऊं ॥ तब मारौं कै गहि लै जाऊं ॥
दो० दुरत जाय बाल ... तहां असुर सँग जाय
आवहिं एकै सकल लै परवत माहिं दुराय ॥
रहे गे थोरे ग्वाल जब यौं बहु बालक हरे ॥
तब जान्यौ नंदलाल व्योमासुर के कपट कौं
धस्यौ धाय तब कुंवर कन्हाई ॥ हरि सौं ना की कछू बिसाई
तुरत असुर लै भूपर पटक्यौ ॥ प्राण देह तजि सुर्ग हि सटक्यौ
असुर मार के दीन दयाला ॥ बालक साथ घर चले गुपाला
ऋषि नारद आये तेहि काला ॥ दो० बस्याम रूप लख्यौ विशाला
उपज्यौ प्रेम हरष उर पावन ॥ वीन बजाय लगे यश गावन
जैजै ब्रह्म सनातन स्वामी ॥ आदि पुरुष प्रभु अंतर जामी ॥
अलख अखनीह अनंत अपारा ॥ जो जाने प्रभु रूप तुम्हारा
सकल सृष्टि के सृजनहारे ॥ पालन लै सब ख्याल तुम्हारे
युग २ यह अवतार गुसाई ॥ भक्तन हित प्रभु लेत सदाई
धरणी भार पाइ बहु भारी ॥ सुरन संग लै जाय पुकारी ॥
त्राहि त्राहि श्री पति दैत्यारी ॥ राखि लेहु प्रभु सरण उबारी
रज अनीति सुरन तब भाषी ॥ शशि अरु सूर भये सब साषी
दो० क्षीर सिंधु अहि फेण प्रभु श्रवण न परी पुकार
तब जान्यौ सुर संत मांहि दुखित दनुज के भार
करौ भूमि अवतार सिंधु मध्य बानी प्रगट
श्री पति प्रभु अवतार जगत्राता हरता अभे
मथुरा जन्म गोकुलहि आये ॥ मात पिता सुख हू तो पाये
पय पीवत हीं वकी विनासी ॥ भयो असुर मुनि कंस उदासी
यहि अंतर बहु दनुज पठाये ॥ ते प्रभु सबै कौतुकहिं नसाये

धाय धाय हरि कौं अव भेटैं ॥ धन्य २ कहि कहि दुख मेटैं ॥
वड़ो दुष्ट मोहन तुम मास्यौ ॥ व्रजवासिन को प्रान उवास्यौ ॥
कान्ह है सदा सहाय हमारो ॥ धन्य धन्य मोहन गिरिधारी ॥
लियेलाय उरज सुमति मैया ॥ पुनि २ मुसकी लेति वलैया ॥
नंद देखि अनंद अति कीनौं ॥ वहुत दान विप्रन कौं दीनौं ॥
हरि कौं लै पुनि २ उर लावति ॥ मुख चूंवत नयनन पै [illegible]
केशी मारि स्याम घर आये ॥ भये सकल आनंद वधाये ॥
घर घर सव व्रज लोग लुगाई ॥ नंद नंदन कौं करत वड़ाई ॥
व्रजवासी प्रभु जन प्रतिपालक ॥ संतन सुखद असुर कुल घालक ॥

धनि धनि व्रज मैं अवतरे भक्तन के हितकारु ॥
सुखसागर शोभा अधिक वल विधि शिव कररू
वल मोहन दोउ भाय चिरजीवहु जोरी युगल
देत असीस मनाय व्रजवासी प्रभु कौं सवै ॥

अथ व्योमासुर वधलीला

दूजे दिन सुन्दर व्रजनाथा ॥ गये वनहिं गायन के साथा ॥
वल दाऊ अरु ग्वाल सुहाये ॥ शोभित संग सुभग मन भाये ॥
गई गाय वन मैं अगवाई ॥ जहं तहं चरन लगीं सुखपाई ॥
ग्वालन संग स्याम अनुरागे ॥ चोर मिचौनी खेलन लागे ॥
भये मगन तन सुधि कछु नाहीं ॥ दौरत दुरत फिरत वन माहीं ॥
तवहिं कंस केशी वध सुनिकै ॥ वार वार सोचत सिर धुनिकै ॥
व्योमासुर इक अति वलवाना ॥ माया चरित वहुत सो जाना ॥
पठयौ ताकौं तव व्रज माहीं ॥ मारन कह्यौ स्याम कौं ताहीं ॥
गोप भेष धरि सो व्रज आयौ ॥ ढूंढत हरि कौं वन मैं पायौ ॥
गयौ समाय सखन के माहीं ॥ ताकौं किनहूं जान्यौ नाहीं ॥

गायगोपहूलधरसोहितभयेपरमआनंद
सांझसमैवनसेचलेब्रजकोश्रीनंदनंद ॥
आयेनंदअवास प्रभु ब्रजवासी दास के
गयेकंसकेपास ऋषिनारदमथुरापुरी
नारदगयेकंसकेपासा॥मनमारे सुख करे उदासा॥
आदरकरिआसन वैठाये॥हरषिकंसमुनिनिकटवुलाये
कैसे सुख ऋषिमनकोमारे॥कहूचिंतामनवढीतुम्हारे
नारदकहीसुनोहोराऊ॥कहवैठेकछुकरहूउपाऊ
त्रिभुवन में नाहींकोउऐसो॥देखोनंदसुवनमें जैसो॥
करतकहारजधानीऐसी॥उपजीमनकीवातअनैसी
दिनदिनभयोप्रवलवढूभारी॥ [illegible]
तववोल्योनृपगर्वितवानी॥केहूनारदतुमकहावखानी
यदपिकहतहोतुमहितकेरी॥तदपिवरावरवहूनहिंमेरी
कोटिदनुजमोसममोपासा॥जिनकोदेखिसुरनमनत्रासा
कोटि [illegible] जिनकेसंगयोधा॥जीतसकैकोजिनकेक्रोधा
तिनकोवलकहूकहूधनाई॥देखतजिनकोकालडराई
रहूतद्वारसंतनखरीकोटिभवलकीभीर॥
[illegible] चडकोदंड धरिमहावलीरणधीर
महामत्तगजएकत्रिभुवनगामीकुवलिया
ऐसेसुभटअनेकनामीसुभटनकोगने ॥
कहाग्वालकेवालकदोऊ॥यदपिवलीउपजेहैंकोऊ
भलोलोगव्रजकेसवमेरे॥सेवाकरतसदारहे मेरे॥
तातेसकुचत होउनकाजा॥वालकसुनतहोतमोहिलाज
भलीकरीयहवातवुझाई॥मनकीडारीखुटकमिटाई
सुनहुऔरनारदमुनिहमसों॥कहतमतेकीवानीतुमसों

नंदजसोदावालककजान्यौ॥गोपिनकामरूपकरिमान्यौ॥
धन्यधन्य येब्रज के वासी॥ जिनवसकियेब्रह्मसुखरासी॥
मनवुधिवचनतकेतेंन्यारे॥निगमकहतअगमनपरविचारे॥
तेव्रजयुवतिनवनहिंविहारे॥कमलनैनप्रभुनंददुलारे॥
नीलजलजतनसुन्दरस्यामा॥मोरमुकटगरवेअभिरामा॥
मुरलीधरपीतांवरधारी॥वनमालाधरकुंजविहारी॥
वसहुरूपयहउरधरपाऊं॥वहुरिनाथप्रभुविनयसुनाऊं॥
यहअवतारजवहिंप्रभुलीनो॥आयसुसुरनवहुप्रभुकीनौ॥
दैत्यदहनसंतनसुखकारी॥अववमारहुप्रभुकंसप्रचारी॥

दो॰ जववहगाथागायकेनारदकहीसुनाय
वोलेप्रभुतवकरिकृपासुधावचनमुसकाय
जाहुवेगिमुनिरायकरहुसुरनकोकाजयह
पठवहुमोहिवुलायनृपआयसुतेंमधुपुरी

जवप्रभुहंसियहआयसुदीनौ॥तवप्रणामप्रभुकोऋषिकीनौ॥
हरषिचलेमुनिनृपकेपासा॥येहसुधिमनकरतप्रकासा॥
येहवातहलधरसमुझाई॥जोवानीऋषिगयेसुनाई॥
तुमप्रभुअषिललोककेकारन॥जन्मेहैभवभारउतारन॥
परमपुरुषअविगतअविकारा॥आधिकारीअद्वैतअपारा॥
सिंधुरूपजनहितसुखकारी॥त्रिभुवनपतिश्रीपतिअसुरारी॥
शेषधराजवऐसीभाष्यौ॥सुनि२स्यामहृदैसवराख्यौ॥
तवहंसिकहीभ्रातसौवानी॥जोतुमकहतवातमैंजानी॥
कंसनिकंदननामकहाऊं॥केसगहौंपुहुमिघसिटाऊं॥
ऐसैंप्रभुहलधरसमुझाये॥वालकवहुरिसाथसवलाये॥
व्योमासुरमार्यौनंदलाला॥भयेमुदितसवदेखिगुवाला॥
धन्य२सवप्रभुकौभाखै॥कहतआजतुमहमसवराखे॥

गायगोपहलधरसोहितभयेपरमआनंद
सांझसमैंवनसेचलेब्रजकौंश्रीनंदनंद ॥
आयेनंदअवास प्रभु ब्रजवासी दास के
गयेकंसकेपास ऋषिनारदमथुरापुरी

नारदगयेकंसकेपासा ॥ मनमारे मुख करे उदासा ॥
आदरकरिआसनबैठाये ॥ हरषिकंसमुनिनिकटबुलाये
कैसेमुख ऋषिमनक्यौंमारे ॥ कहुचिंतामनवहीतुम्हारे
नारदकहीसुनोहोराऊ ॥ कहहुँवेगकछुकरहुउपाऊ
त्रिभुवन में नाहींकोउऐसो ॥ देखोनंदसुवन में जैसो ॥
करतकहारजधानीऐसी ॥ उपजीतुमकोबातअनैसी
दिनदिनभयोप्रबलबहुभारी ॥ हमसबहितकीकहीतुम्हारी
तबबोल्यौनृपगर्वितबानी ॥ कहुनारदतुमकहावखानी
यदपिकहतहोतुमहितकेरी ॥ त[illegible]हुनारदमेरी
कोटिदनुजमोसममोपासा ॥ जिनकोदेखिसुरनमनत्रासा
कोटि२जिनकेसंगयोधा ॥ जीतसकेकोजिनकेक्रोधा
तिनकोबलकछुकहिनजाई ॥ देखतजिनकौंकालडराई

रहतद्वारसंतनखरौकोटिप्रबलकोभीर ॥
अतिप्रचंडकोदंडधरिमहाबलीरणधीर
महामत्तगजएकत्रिभुवनगामीकुवलिया
ऐसेसुभटअनेकनामीसुभटनकोगने ॥

कहाग्वालकेबालकदोऊ ॥ यदपिबलीउपजेहैंकोऊ
प्रजालोगब्रजकेसबमेरे ॥ सेवाकरतसदारहेमेरे ॥
ताते सकुचत होउनकाजा ॥ बालकसुनतहोतमोहिलाजा
भलीकरीयहबातबुझाई ॥ मनकोडारोखटकमिटाई
सुनहुऔरनारदमुनिहमसों ॥ कहतमतेकीबानीतुमसों

पुत्नौसेजआलसजियजानी॥ सेवाकरनलगीसवरानी
नृकपलककलागीरूपकाई। लखेसपनवलरामकन्हाई
कालसरसदोउदेखइरानी॥ रूकिउभ्योभस्योससकानी
देख्योजायतहांनहिंदोऊ। चकितभईरानीसवकोऊ
वूझनलगीसवैअकुलाई॥ कहरूकेसपनेनृपराई॥

महाराजरूकेकहासपनेआजसकाय॥
कोहियेकाकोशोचअतिजीमेंरह्योसमाय
तवमनमेंसकुचायमहाजहिंरानिनसोंकह्यो
भेदनभयोजनायमनसकाउरधुकधकी॥

सावधानमतिपालकरायो। कहेंतहेंयोधासकलजमाये
स्यामरामअभयपलकनलावैं। रैनतरथ्योचलमगउभनावै
जगयोआपसंगसबनारी॥ मर्दपुसानिसियुगसैंभारी
वैठतकवहूंउनतअकुलाई॥ ठाढोहूसतकवहूंपंगनाई
घरपालीसोपूछपठावै॥ वारवारनिसिखवरमंगावै॥
छोचतसवुमातहिंकहिकारहिं॥ कोधमसोनृपकअसिरपरिहैं
कहींघरीनिसिगएकनवाकी॥ इकरूसएकमपहर्याकी
कहतिव्रजाहिंपठाऊं। जासोंकहिंनदसुवनमंगाऊं
पठवौअक्रूरहिकोजाई। ल्यावैव्रजतेंदोउभाई॥
इतदेख्योसपनोनंदराई॥ वलमोहनकहुंगयेहिराई॥
मथानवालरोवतपछताहीं॥ कहतस्यामतोअवव्रजनाहिं
संगहिंखेलतरहेहमारे॥ निठुरहोयकहुंअनतसिधारे

दूतएककाउआयकेसंगलैगयोलिवाय॥
घाहीकेदोउदूइगयेव्रजवासिनविसराय
अतिव्याकुलनंदरायसुरछिपरेधरणीसुनत
विवसजसोदामायस्यामविरहव्याकुलखरी

व्याकुल नर नारी व्रजवासी ॥ पसु पंछी सब परम उदासी ॥
रोवत गिरत धरनि दुख पागे ॥ अति अकुलाय नंद जब जागे ॥
धकधकात उर स्रवत नैन जल ॥ सुत अंग परसन लागे शीतल
मुसकात सुनत अति हि अतुरानी ॥ कह भरमै पूछत नंद रानी ॥
वैन नहीं कछु भेद जनायो ॥ स्याम हि लषि धीरज उर आयो ॥
अति प्रभात रवि उगन न पायो ॥ सुफलक सुत उत कंस वुलायो
सुनत हि द्वार पाल उठि धायो ॥ सोवत तें अक्रूर जगायो ॥
कह्यौ वेगि चलिये नृप पासा ॥ समझि मंत्र निसि चल्यौ उदासा
ठाढ़ो नृपति द्वार ही पायो ॥ देखत दूर हि ते सिर नायो ॥
अति आदर करि निकट वुलायो ॥ सरो पाव नृप तुरत मंगायो
अक्रूर हि निज कर पहिरायो ॥ बहुत कृपा करि वचन सुनायो
ल्यावहु नंद महर सुत दोऊ ॥ तुम सम और चतुर नहिं कोऊ

सुख हरख्यो [illegible] सुनि हृदय [illegible]
असुर त्रास जिय में परो वचन कह्यौ नहिं जाय
दीनों रथ हि चढ़ाय जाहु वेग व्रज नृप कह्यौ
लै आवहु दोउ भाय अवहिं विलंब न कीजिये ॥

तब अक्रूर कह्यौ कर जोरी ॥ सुनहु देव विनती इक मोरी ॥
वलमोहन प्रात हि दोउ भैया ॥ वन को जात चरावन गैया ॥
जो उनको घर में नहिं पाऊं ॥ ताते प्रभु यह वात सुनाऊं ॥
आज नंद गृह वसिहौं जाई ॥ प्रात हि लै आवहुं दोउ भाई
ऐसे जब अक्रूर जनायो ॥ कंस वात यह मान पठायो ॥
सीस नाय तव रथ चढ़ि हांक्यो ॥ सुफलक सुत अति सुख ताक्यो
बहु प्रसंस सब मल्ल वुलाये ॥ चाणूरादि सकल चढ़ि आये ॥
तिन सों कह्यौ सुनो सब वीरा ॥ व्रज में रहत जु नंद अहीरा
कहियत वली तासु सुत दोऊ ॥ राम कृष्ण जिन कहै सब कोऊ

बहुत असुर मेरे उन मारे ॥ तातें है वे शत्रु हमारे ॥
उनकौं मधुपुर आसु बुलायौ ॥ सुफलक सुत कौं भेज पठायौ
उनकौं मति जानौ सुकुमारा ॥ है वे महा कठिन बल भारे ॥
रंगभूमि तातें रचौ चित्र विचित्र बनाय ॥
सावधान ह्वै फेरि तहाँ रहौ मल्ल सब जाय ॥
सो० ऊंचौ एक मचान तहँ अति सुन्दर रच्यौ ॥
जहाँ असुर परधान बैठे सब मेरे निकट ॥
योधा और अनेक बुलाये ॥ सावधान करि सब बैठाये ॥
तातें और पौर के बाहर ॥ रहै कुवलिया गज तेहि ठाहर
राखौ द्वार मौसे जाई ॥ गारुव कठिन आनि धनुष धराई
बहु भट तहाँ रहे रखवारी ॥ अस्त्र शस्त्र धारी बलधारी
ऐसे सजग रहो सब कोऊ ॥ अब आवै वे बालक दोऊ ॥
प्रथम धनुष उनसों चढ़वावौ ॥ उन्है कहो अब धनुष उठावौ
जब वे धनुष उठावैं नाहीं ॥ घेर लेहु उनकौं तेहि ठाहीं ॥
ताही ठौर मारि डारि दीजो ॥ भीतर लोग आवन नहिं दीजो
जो कदापि वहते चलि आवें ॥ तौ गज पै आवन नहिं पावैं
डारौ गज के चरण रुंदाई ॥ तुम सों राखत अब हों जनाई
जो छल बल करि कैंवा विआवे ॥ रंगभूमि आवन नाहिं पावै
तो सब मल्ल मारि उन लेहू ॥ मो समीप आवन मति देहू ॥
दो० ठौरहि ठौर सजाय कै अजगर हौ इहि भाँति
जो हितोहि विधि मारौ उन्है नहीं दूसरी घात ॥
मन मन मोज बढ़ाय ऐसे आज्ञा दै सबन ॥
गयौ महल नृप राय सुनि दुख भा अक्रूर कौ ॥
सुफलक सुत मन सोच अपारा ॥ है नृप कंस बड़ो हत्यारा
मंत्र कियो मल्लन में साथा ॥ पठयो मोहि लेन ब्रजनाथा ॥

कैसें आनि देऊ मैं जाई ॥ मो देखत मारे दोउ भाई ॥
नगर निकासि रथ कीनो ठाढौ ॥ परयो विचार हृदै अति गाढौ ॥
राज सुख कचाणूर सुमिरिके ॥ आयो नीर लोचनन दर के ॥
अति बालक बल राम कन्हाई ॥ कहा करौ कछु गहि विसाई ॥
मोहि मारि औरु वृंद कराबै ॥ यह विचार करि रथन चलावे ॥
पुनि रूप्रहृदे में स्थाबे ॥ चलत फिरत कछु आननहि आवे ॥
प्रभु कृपाल सब अंतरजामी ॥ सुफलक सुत मन पूरण कामी ॥
सुमिरत रूप हृदे यह आई ॥ वेश्रीपति प्रभु त्रिभुवन राई ॥
अखिल जगत के कारण करता ॥ उतपति पालन अरु संहरता ॥
भूमि भार टारन अवतारा ॥ को जाने गुण रूप अपारा ॥

धन्य कंस जिन मोहि ब्रजपठयो लेन गुपाल
जाय रूप वह देखिहों निगम नेति नंदलाल ॥
यह विचार उर आन रथ हांक्यो अक्रूर तव ॥
भयो शकुन सुभ वान मृगगण आये दाहिने ॥

दाहिने देखि मृगनकी माला ॥ सुफलक सुत उर हर्ष विशाला ॥
कहत आज इन शकुनन जाई ॥ भुज भरिमिलिहों प्रभु सुखदाई ॥
स्याम सुभग तन परसि सुहावन ॥ इंदु बदन त्रयताप नसावन ॥
अंग त्रिभंग किये गोपाला ॥ सारस हूते नैन विशाला ॥
मोर मुकुट कुंडल वनमाला ॥ कटि कछनी पट पीत विशाला ॥
तन चंदन की खौर बनाये ॥ नटवर भेष मनोज लजाये ॥
ह्वै हैं गैयन के संग ठाढ़े ॥ ग्वालन मध्य महा छवि बाढे ॥
सो दरसन लखि हौं यह नाथा ॥ धूरि हि जाय चरण पर माथा ॥
जे शुभ चरण पितामह धावै ॥ महिमा जिनकी वेद बतावै ॥
जिन चरणन कमला रति मानी ॥ शंभु धरयो सिर जिनको पानी ॥
सनकादिक नारद यश गावै ॥ जिन चरणन योगी चित लावै ॥

वलिजिनकीमर्यादनपाई॥हारमाननिजपीटिनवाई॥
शिलाश्रापमोचनकरनहरनभक्तउरपीर॥
आजदेखिहौंतेचरणसकलसुखनकीसीर
अरुणकंजकेरंगअंकितपंकुशकुलिशध्वज
गोपवालकनसंगगोचारतवनपावहीं॥
परिहौंजाइचरणपरजवहीं॥भुजनउठाइभेंटिहैंतवहीं
परमवडउरआनंदउपजैहैं॥अंगनपुलकितनोरुहसैहैं॥
देखतदरसपरसमुखलैहैं॥प्रेमसलिललोचनभरिजैहैं॥
कुशलपूछिहैमोहिसुखदानी॥कहिहौंनहिंसकिहौंगदवानी
वारंवारवचनमदुकैहैं॥सुनिश्रवणपरमसुखपैहैं॥
यौंअक्रूरध्यानमेंअटक्यो॥भूल्योपंथफिरतरथभटक्यो॥
हरिअनुरागवढ्योउरमाहीं॥रहीदेहकीसुधिकछुनाहीं॥
सांझभईगोकुलनहिंपायो॥नाहिंजानतकोहैंकहंआयो॥
किनपठयोकितजातनजानी॥रथवाहनकीसुरतिभुलानी॥
भयोहरषउरप्रेमविशाला॥दसहूंदिसपूरणगोपाला॥
हरिअंतरजामीसवजानी॥भक्तवत्सलहैजिनकीवानी॥
भक्तिभावकरिजोकोइआवे॥मिलततिन्हनासिंमिलमलपावें
ग्वालसंगवृंदाविपनचारतधेनुसुजान॥
चलेहरषहलधरसहितभक्तहेतजियजान
यमुनपारकरिगायहेरींयावतहरषहरि
गायनतहांसवगायलागेगोदोहनकरन॥
गायदुहनलागेसवग्वाला॥आपदुहतभयेनंदलाला॥
भक्तहेतयहसुखउपजायो॥तहांदरससुफलकसुतपायो॥
रहिनसक्योरथपरसुफल्कसुत॥उतरिपर्योभूपरअतिआकुल
भयोमनोरथमनकोभायो॥दौरिस्यामचरणनसिरनायो॥

पुलकि गात लोचन जल धारा ॥ हृदै प्रेम आनंद अपारा ॥
कृपासिंधु करि कृपा उठायो ॥ भक्त हेत मिल कंठ लगायो ॥
भयो जो सुख सो सोइ जाने ॥ ब्रजवासी केहि भांति बखाने ॥
जो अक्रूर चरित मन कीनो ॥ तैसिय भांति दरस हरि दीन्हो ॥
मधुर वचन श्रवणन सुखदाई ॥ पुनि पूछत कुंवर कन्हाई ॥
आनन चारु निरषि सुखकारी ॥ तब बोल्यो अक्रूर संभारी ॥
कृपाल नाथ अबै दरस निहारी ॥ दैत्य दलन भक्तन हितकारी ॥
भद्रहि भेद कंस की बानी ॥ सुफलकसुत सब प्रगट बखानी ॥

सुनत वचन अक्रूर के मुसकाने ब्रजचंद ॥
फरकि भुजा भूभार की टारन असुर निकंद ॥
मिले राम पुनि आइ परम प्रीति अक्रूर सों ॥
उर आनंद न समाय वासुदेव दोऊ निरषि ॥

कहि र उठत इहै नंदलाल ॥ हमहिं बुलायो कंस भुआल ॥
लेवे को अक्रूर पठायो ॥ कालहि करि अति कृपा मंगायो ॥
सुनतहि भये चकित सब बाल ॥ कहा कहत हैं मदन गुपाल ॥
भये प्रेम बस मति अकुलानी ॥ भरि आये नैनन में पानी ॥
निरषि सबन को मुख सुखदानी ॥ तब बोले करि स्याम सयानी ॥
चलहु काल्हि देखहि नृप कंसा ॥ मति आनो जिय में कछु संसा ॥
यह कहि चले हरषि ब्रजलालन ॥ कछु हरष संशय कछु बालन ॥
आतको मिल बलराम कन्हाई ॥ हँसि लीने अक्रूर उठाई ॥
सुमन क्रते हरुवे सुखदानियें ॥ दोउ लसत सुफलकसुत कीनियें ॥
ग्वाल सकल लीनो रथ डोरी ॥ पहुंचे आय सकल ब्रजखोरी ॥
लखि अहेत हूं ब्रज लोग चकाने ॥ कंस दूत सुनि नंद सकाने ॥
सपनो सम भिसोच उर छायो ॥ मन मन के हूत कहूं धौ आयो ॥
आतुर उठि आगे चले चले लेन उपनंद ॥

देखन धाये घरन तें सुनत नारि नर वृन्द ॥
स्याम राम उर लाय स्यंदन तजि सुफलक सुवन
आवत लखि नंदराय भये हरषि विसमय विवस

सादर तिनकौं सीस नवाये ॥ कुशल प्रश्न करि गृह लै आये
चरण धोय कै टक सुभ दीनी ॥ विविध भांति भोजन विधि कीनी
संकरषण अरु कुंवर कन्हैया ॥ मिलि आये अक्रूरहि दोउ भैया
सोण कहत नाहिं नेक नियारे ॥ मन अनुकूल [illegible] नहिं मति पारे
तव अक्रूर संग लय दोऊ ॥ भोजन कियो लखत सव कोऊ
हरि इत उत फेरत नहिं आवै ॥ सव व्रज लोग मनहि मन भावै
उठे अंचै वव पान खवाये ॥ आदर सों हित पलग वैठाये
पुनि कर जोरि नंद यौं भाख्यौ ॥ कहा कृपा करि पग इत राख्यौ
तव ऐसें अक्रूर सुनाये ॥ वल मोहन कौं नृपहि वुलायौ
तुमकौं कह्यौ संग लै आवैं ॥ सुनि रंगुण मेरे मन भावैं ॥
देखन कौं अभिलाष जनायौ ॥ तातें वेगहि मात वुलायौ
व्रज के लोग सुनत यह वानी ॥ भये चकित सुधि वुधि हिरानी

चकित नंद जसुमति चकित मनहि मन अकुलात
हरि हलधर कौं सैन दै सव वुलावत जात ॥
माया रहित मकुंद यानि वियोग जाको नहीं
सदा एक आनंद अविगत अविनासी सुरूप

प्रेमभक्ति कौ कछु उर लाजा ॥ कीन्हो चहै भूमि सुरकाजा
जातें अहि काहू नन हेरत ॥ वोलत नहीं नैन नहि फेरत
अनु पहिचान कवहू की नाहीं ॥ लषि रसैवडर पत मनमाहीं
हरि सुफलक सुत सौं मन लायौ ॥ यह है कहत नृपहि सौं हितु
इतौ मा यह मह मन माहीं ॥ कवहूं नृप तिन वाल्यो क्यों नाहीं
हंसि रे ऐसें कहति मुरारी ॥ यह सुनि विकल सकल नर नारी

ऐसेंहि सबकौ रात बिहानी ॥ भयो प्रात चिरियां चुहचानी
महरि कह्यौ सब गोपबुलाई ॥ दधि घृत भार सजौ बहुजाई
नृपति भेट हित करहु सजाई ॥ हरि के संग चलौ सब कोई
ग्वाल सखा यह सुनि अकुलाने ॥ चहत स्याम मधु [illegible]
पर्यौ शोश ब्रज घर जहताई ॥ हरिमुख देखन को सब धाई
सजत ग्वाल चलवे को साजा ॥ गैया फिरनि दुहन के काजा ॥
कह्यौ स्याम अक्रूर हि तवहीं ॥ जोत हु नात तुरत रथ अवहीं
सुफलक सुत आयसु जव पायो ॥ सहित सकोच रथहि फलनायो
सुफलक ढिग तें दोऊ भाई ॥ होत नहीं न्यारे कहुं जाई ॥
देखनहीं जसुमति अकुलानी ॥ परी धरणि किलपति बिलखानी
बिकल कहति मो हित ज्यौ दुलारे ॥ जात किये सूनो ब्रज प्यारे
यह अक्रूर ठगौरी लाई ॥ मोहे मेरे बाल कन्हाई ॥

दो॰ यह सुफलक सुत बूझिये तुम्हें हरे मो बाल ॥
बिरध समै की लकुटिया मेरे मदन गुपाल ॥
सो॰ देखहु मन हि बिचार लाभ कछू यामें नहीं ॥
दियो धरम डर डार क्रूर भयो इत आइ कै ॥

चलत जान चितवत ब्रजनारी ॥ बिरह बिकल तन सुरत बिसारी
जहंतहं चित्र लिखी सी ठाढी ॥ [illegible] वाढी ॥
लगत निमष कल दारु नाहीं ॥ भ्रमति नाव पुतरी ना माहीं
ऊरध स्वांस समीर रुकारते ॥ चित्र कपोल नीर तरुनारते
काजल कीच कुचील कृपेतर ॥ अधर कपोल उरज अंचल पर
रहे जहां तहं पंथ कज कैसे ॥ चरण हस्त [illegible] थके से
स्याम बिरह ब्याकुल ब्रजवाला ॥ नीर हीन जिम मीन बिहाला
सखन अधर नीर भरआने ॥ मनौ हिम परसकमलकुम्हिलाने
कहति [illegible] वचन अधीर ॥ गदगद वचन ढरत दृग नीर

ऐसेंहिसबकौं रात बिहानी ॥ भयो प्रातचिरियां बुहचानी
महरि कह्यौ सब गोपकुलाई ॥ दधि घृत भार सजौ बहु जाई
नृपति भेट हित करहु सजाई ॥ हरिके संग चलौ सब कोई
ग्वाल सखा यह सुनि अकुलाने ॥ चहत स्याम मधु [illegible] जाने
पर्यौ शोर ब्रज घर जहं ताई ॥ हरिमुख देखन को स[illegible] धाई
सजत ग्वाल चलवे को साजा ॥ गैया फिरति दुहन के काजा ॥
कह्यौ स्याम अक्रूर हितवहीं ॥ जो नहु नाल तुरत रथ अवहीं
सुफलक सुत आयसु जब पायो ॥ सहित सकोच रथहि फल्यायो
सुफलक ढिगतें दोऊ भाई ॥ होत नहीं न्यारे कहु जाई ॥
देखत नहीं जसुमति अकुलानी ॥ परी धरणि विलपति बिललानी
विकल कहति मो हितज्यौ दुलारे ॥ जात किये सूनौ ब्रज प्यारे
यह अक्रूर ठगौरी लाई ॥ मोहि मेरे बाल कन्हाई ॥

दो॰ यह सुफलक सुत बूझिये तुम्हें हरे गोपाल ॥
विरधसमें की लकुटिया मेरे मदन गुपाल ॥
सो॰ देखहु मनहिं विचार लाभ कछु यामें नहीं ॥
दियौ धरमहु डार क्रूर भयो हत आइ कै ॥

चलत जान चितवत ब्रजनारी ॥ विरह विकल तन सुरत बिसारी
जहंतहं चित्र लिखी सी ठाढी ॥ नैनन नीर नदी जिम बाढी ॥
लगत निमष पल दोउ नाहीं ॥ भ्रमति नाव पुतरी ता माहीं
ऊरध स्वांस समीर झकोरत ॥ चित्र कपोल तीर तरु तोरत
काजल कीच कुचील कियेतट ॥ अधर कपोल उरज अंचल पट
रहे जहां तहं पंथ कज कैसे ॥ चरणहु [illegible] से
स्याम विरह व्याकुल ब्रजबाला ॥ नीर हीन जिम मीन बिहाला
सखन अधर नीर झरझराने ॥ मनौ हिमपर सकमल कुम्हिलाने
कहति परस्पर वचन अधीर [illegible] गद वचन ढरत दृग नीर

हरुकंसवड़ गोधन सारो॥ कैकरि मोहि वंध में डारो॥
ऐसेहु दुख स्याम सभागे॥ खेलहिं गे मो नैन के आगे॥
यह कहि माहि लोटत अकुलानी॥ आनहीं दुखित नंद की रानी॥
गोपीजन विरह अनल डाढ़ी॥ रहि गई प्रेम वियोगनि ठाढ़ी॥
जिमि कुमुदिन गण नीर विहीना॥ रवि प्रकाश त्रासते दीना॥
स्याम विमुख क्षण कुम्हलानी॥ कबरौं मिलन कठिन जिय जानी॥
वलवुधि [illegible] थकित भवन जल लोचन॥ चलि नहिं सकी रही पछिसोचनु॥
मैं डेलो मव गई विहाला॥ व्रजतजि गवन कियो गोपाला॥
लैगे मधु अक्रूर निकारी॥ मारुयो ज्यों सब दीन विडारी॥
देखत रही थकी ठकलाई॥ जबलगि धूर दृष्टि में आई॥

दो० भये ओट जब हगन तें मुरछि परी विलखाय
कहति गयो रथ दूर अब धूर न परति लखाय॥
कहा करैं व्रज जाय मन हरि लै गयो सांवरो॥
परत न आगे पाय पाछे ही लोचन लखत॥

वदन विकल विरहा सभाली॥ भई न पवन संग उड़ि जाली॥
रहि नहीं विधाता वानी॥ जाति कमल चरण लपटानी॥
भई न रहि इकरथ को अंगा॥ जाती चली तहां लगि संगा॥
विछुरे आज स्याम सुखरासी॥ नोपरतीत हगन की नासी॥
उड़ि न [illegible] मसंग लागे॥ कुल मर्द नाहि भये अभागे॥
रसिक प्रेम के जगत वखाने॥ रूप लालची सद कोउ जाने॥
सो करनी कछु इनन हि कीनी॥ वृथा मीन को उ विरदीनी॥
धनि २ मीन प्रीति पथ साचे॥ [illegible] नैन हमारे काचे॥
अब ये सलस [illegible]॥ [illegible] भरि अजल मोचन॥
हरि विन [illegible] नो॥ सम य चूक सहि यो दुख दूनो॥
भई अजान सबै मन माहीं॥ काहू चलन गह्यो रथ नाहीं॥

रथ्यालागुकरिकाजबिगास्यौ॥मह्योदुसहसिरहसु रुमारु

दो॰ यौं ब्रजतिय पछिताय सब दैयजु सो दुखदीन
लै आई सब नंद गृह कृसतन बदन मलीन ॥
सो॰ ब्रजतिय परम उदास हरिबिन सुख सुपनेनयन
रहे प्राण गहि आस स्याम कह्यो मिलिहैं फेरि ॥

ग्वालमंडली बिकल जहां तहं बोलै ॥ गाय बच्छ रांभत सब डोलैं
तरुबेली पसु पंछी कुम्हिलाने ॥ ब्रज की दसा न परत बखानी
चले नंद गोपन संग लै के ॥ ब्रजबासिन कौ धीरज दै कै ॥
ग्वाल सखा हरि के सुखदाई ॥ दरसन लागि चले सब धाई
उत अक्रूर सोच मन माहीं ॥ कियो काज मैं नीको नाहीं ॥
बल मोहन भैया दोउ बारे ॥ अति कोमल नयनों तिन प्यारे
करिकै जननी जनन दुलारी ॥ व्याकुल सबै घोष की नारी
मैं लै जात कंस पै तिनको ॥ मो देखत मारैगो इनको ॥
धकधकधकधक हिय हमारी ॥ जाउं लिवाय इन्हें ब्रज मांहीं
कंस आज मारैगो मोहीं ॥ हरिको जाय देउं मो पाई
इहि अंतर यमुना नियराई ॥ ठाढ़ौ कियौ तहं रथ आई
अन्तरजामी हरि भगवाना ॥ भक्त हृदय संसय पहिचाना

दो॰ अब बलजीत बहुत कह्यो हम कलेऊ देहु ॥
करि यमुना अस्नान पुनीत तात तुम कछु कलेउ
सो॰ सुनत सुबचन मृदु कान सुफलक सुत सुनि तुरत ही
कछु मेवा पकवान भोजन हू मैयन दियौ

आप स्नान करन मन दीनो ॥ यमुना पैठि संकल्प कीनौ
जबहीं सीस नीर मैं डास्यौ ॥ तब अचरज हू कभाव निहास्यौ
रामकृष्ण रथ पर सुखदाई ॥ जल भीतर सोभित दोउ भाई
चकित भयो जलतें सिर काढ्यो ॥ देख्यो रथ वाहि रसो ठाढ़ौ

बड़रो बूडि सलिल में पेख्यो ॥ वैसोई फेरि तहां रथ देख्यो ॥
क्षण जल में क्षण आय नेहारे ॥ पुनि २ सभ्रम बुद्धि विचारे ॥
स्वप्न कि धौं जाग्रत यह होई ॥ के धौं मो मनमें भ्रम कोई ॥
केधौं जल में रथ की छाया ॥ के धौं यह हरि की कछु माया ॥
भयो विकल निश्चय कछु नाहीं ॥ देखन लग्यो बहुरि जल माहीं ॥
जब अक्रूर बहुत अकुलाये ॥ निज स्वरूप तहं स्याम दिखाये ॥
देखत भयो तहां जल माहीं ॥ सकल देव जाहि हरि पाहीं ॥
अस्तुति करत चरण चित दीने ॥ नमित कंधर संपुट दीने ॥

दो० शेष सहस्र फणि मणिन युत जगमग जोति अनूप ॥
स्वेत चरण पट पीत युत सजल हलधर रूप ॥ सो०
नव नीरद तन स्याम पीत वास लावण्य निधि ॥
भुज प्रलंब अभिराम शेष अंक हरि सोहहीं ॥

चारि अरुण पंकज दल नैना ॥ चितवनि चारु चारु मृदु बैना ॥
चारु चिलक बर भाल बिराजे ॥ चारु कुटिल कुंतल छवि छाजे ॥
चारु तिलक नासिका सुहाई ॥ चारु कपोल अधर अरुणाई ॥
[illegible] चिबुक दर ग्रीवा ॥ चारु दसन विहसन छवि सींवा ॥
उर बिशाल श्री चिन्ह बिराजे ॥ उदर उदार रोमावलि राजे ॥
नाभि गंभीर क्षीण कटि देसू ॥ भुज विशाल वर चारु सुवेसू ॥
जंघ गुलफ अति चारु सुहाई ॥ पद कमल नख शशि छवि छाई ॥
नखशिख अनुपम रूप बिराजे ॥ दिव्याभरण सकल अंग साजे ॥
कुंडल [illegible] रत्नजटित मणि माला ॥ मुक्त माल बनमाल रसाला ॥
यज्ञोपवीत पितांबर कांधे ॥ कौस्तुभ मणि अंगद कर बांधे ॥
कर पल्लव मुद्रिका राजे ॥ शंख चक्र गदा पद्म बिराजे ॥
क्षुद्र घंटिका अति दुतिकारी ॥ मणिन जटित नूपुर छवि भारी ॥
दो० नंद सुनंदादिक जिते दिव्य पारषद आहि

करजोरे ठाढ़े सबै परि चर्म जाके माहिं ॥
सो० ठाढ़े जोरे हाथ माया निज माया सहित
भक्त भक्त के साथ अंबरीष प्रह्लाद बलि ॥
शिव अज सहित शिवा अरु स्वामी ॥ सनकादिक नारद अरु ज्ञानी
भक्तन सहित सुरासुर जेते ॥ करजोरे ठाढ़े सब तेते ॥
इंद्र कुबेर वरुण दिकपाला ॥ मनु विसुकर्म धर्म यम काला
नेदन करत चरण धरि माथा ॥ गावत वेद सकल गुणगाथा
जल में लखि अक्रूर भुलान्यो ॥ कृष्ण प्रभाव प्रगट सब जान्यो
चिंता सकल चित्त की रवी ॥ जान्यो कृष्ण ब्रह्म अविनासी
मोहि स्वरूप करि दरसन दीनो ॥ तहँ प्रणाम सुफलकसुत कीनो
अति आनंद बढ्यो मन माहीं ॥ अस्तुति करन लग्यो है गाही
धन्य २ प्रभु अंतरजामी ॥ नारायण त्रिभुवन के स्वामी
सकल विश्व तुमहीं विस्तारो ॥ विश्वरूप है रूप तुम्हारो
निर्गुण निर्विकार अविनासी ॥ लीला सगुण सुगुण की
प्रभु तुम सब देवन के देवा ॥ जाने कौन तुम्हारो भेवा ॥
छं० को जानै तुम्हरो भेव हरि तुम सकल देव महं प्रभो
आदि कारण सबहि के तुम विश्व सब तुम्हरे विभो
नाग नर सुर असुर खग जग दास सब तुम्हरे हरे
रहत माया वस तुम्हारी जाहि तुम आहि विधि करो
योग यज्ञ अनेक कर्मन करि तुम्हें सब ध्यावहीं ॥
जैसो जाको भाव तैसो तुमहिं ते फल पावहीं ॥
अति अगाध अपार तुम गति पार काहू नहिं लह्यो
शारद सुरेश गणेश विधि ना नेति निगमन हू कह्यो
भक्त हित धरि विविध तन तुम चरित अद्भुत करे
मच्छ कच्छ वराह वपु है वेद गिरि तुम उद्धरे ॥

ह्वैयपरहरि भक्ति प्रगकारी सुरनहितवामनभये॥
भृगुवंशमणि अभिरामतनधरिमानमयछत्रीहये
रामरूप [illegible] विभीषणं कौंनृपकियो॥
कंसआरि ये वंशभूषण कृष्णवपुकृविनिधिलियो
बौधरूपदयालकलिकेंहिं दासकर्मनभावहीं॥
निहकलंकमलेच्छहादसरूपस्तुतितवगावहीं॥
दो॰ तवगुणरूपअनंतप्रभुहों अजानजगदीस
यो अस्तुतिअक्रूरकरिनायापदपरसीस॥सो॰
तवहिस्यामसुखदायअंतरहितजलतेंभये॥
निकस्यो अतिअकुलायतवजलतें अक्रूरमुनि
लखीकृष्णकीजवप्रभुताई॥बढ्यो हरषअतिउरनसमाई
भूलेतेमनकछुकहिजाई॥मगनध्यानवलरामकन्हाई
कहतमनहिमनये अविनासी॥पूरणब्रह्मसकलगुणरासी
हरणकरणसमरथभगवाना॥नाहिनइनसमानकोउआना
किनककंसभेदीउरसंसा॥येकरिहैं ताको निरवंसा॥
चल्यो हांकरथतवहरषाई॥नंदउपनंदमिलेतहांआई
हरिअक्रूरहिबूझतजोई॥करिसयानमनरमुसकाहीं
कहीतातातुमअवहर[illegible]ने॥प्रथहिकछुबहतमुरझाने
कह्योसाचहमसोंसोइवानी॥तवअस्तुतिअक्रूरवखानी
धन्यरप्रभुपतिस्त्रीकंता॥गुणनअगाधअनादिअनंता
निगमनेतिकरिजाहिवखाने॥सहसाननतिनतवगुणगाने
करीकेकृपाजानिनिजदासा॥दियोदरससंसयसवनासा
दो॰ सवमोहिप्र[illegible]बूझतकहाहमतोत्रिभुवनकेनाथ
करताहरताजगतकेसकलतुम्हारेहाथ॥
सो॰ कह्योवापुरोकंसकहामल्लकहाकुवलिया

अवकरिये निर्वैस वेगिनाथ ऐसें खलन ॥
सुनमोहन सुफलकसुतवानी ॥ भये अस्तक भक्त सुखदानी
जातचले रथपर दोउ भाई ॥ सन्मुख हूं पिमथुपुरी पाई
तरणि किरणि महलन छवि छाई ॥ जगमगात नभ सुन्दरताई
अक्रूर ऐसे कृत घनस्यामा ॥ कोहि सुत यह है मधुपुरी नामा
अवरों न सुनत रहत है जाही ॥ देख्यो आज हगन वे ताही
कंचन कोट कंगूरा सोहें ॥ वैठे मनहु मदन मन मोहें ॥
वन उपवन पुरके चहुं पाहीं ॥ अति भावत मेरे मन मांहीं
लखि रहे मिसु पुरी की शोभा ॥ पुनि फुलकत कूरि मनलो
तहं जन्म लिय मैं का जाने ॥ ताते अधिक हर्ष उर माने ॥
वाजत नौवति नृपति दुवारा ॥ होत शब्द घरियाल उचारा
सुनि श्रवन आनंद वढावें ॥ नगर शोर सुनि रुचि उपजावे
दो॰ ध्वज पताक तोरण कलस जहं तहं लखि विमान
मनु कालरू लगलों को कारे सकै वखान ॥ सो॰
निरखि निरखि हरषात मनमोहन अक्रूर कों ॥
वलहिं दिखावत जात कलित लोल कर पल्लव
कहै अक्रूर सुनो यदुनाथा ॥ भई आज मथुपुरी सनाथा
तुमहिं विलोकि विराजत ऐसी ॥ पतिआगम सोहै तिय जैसी
कसी कोट कंचन किरणि मानों ॥ उपवन वसन विविध विधि जानों
मंदिर चित्र विचित्र सुहाये ॥ जनु भूषण रचि रचि पहिराये
जहं तहं विविध वाजने वाजे ॥ मनहु चरण नूपुर धुनि साजे
धामन ध्वजा विराजत है इमि ॥ संभ्रम है गति अंचल चंचल
उच्च परनपर नरनु छविकाजै ॥ जनो उर आनंद उमगि निरजे
भूलि अति सुख संभ्रम नाते ॥ झगरे कलरव कुक जाते
मोर वायु रसीं थीं छुरा ॥ लागे विद्रुम कुलिस किवार ॥

॥ पेषेउ प्रेम आनंद उर भारी॥

शशिआनन मद्दु पेषि किशोरी॥ भये निरीषदोउ नैन चकोरी
पुलिकगातदृग आनंद पानी॥ कहूं लस प्रेम परस्पर घानी
ये ई सषि वलराम कन्हाई॥ सुनियत जिनकी बहुत बड़ाई
नंदगोपके ये दोऊ ढोटा॥ गोर स्याम सुंदर वर जोटा॥

दो॰ मणि कंचनके सिरस ये दोउ किधौं मानसर हंस
के प्रगटे व्रज देन सुख त्रिभुवन के अवतंस॥

सो॰ धनि २ गोकुल ग्राम धन्य स्याम वलराम धनि
धनि २ व्रज की वाम प्रगट प्रीति पाली जिन्हनि

सुनति इती पुरुषारथ जिनके॥ देखहु रूप नैन भरि तिनके
अतिहिं अनूप देषन द सोई॥ कहहु सो कोउ किदमिन मांही
पर व जन्म सुकृत कोउ कीनी॥ सो विधि यह नैनन फल दीनी
अतिअभिराम स्याम छवि धारी॥ इन ही प्रथम पूतना मारी
सकटा तृणा सुर इन हिं से घारे॥ वत्सअघा वकपनि इन मारे
इन्द्र कोप वरषण व्रज कीन्हो॥ इन ही गिरिकर धरि रक्षा कीन्हे
जलते काली इन्हें निकाल्यो॥ पुनि अरिष्ट केशी इन मार्यो
गोर शरीर साम वल सोई॥ धेनुक औ प्रलंब हा यो ई॥
अब अक्रूर पठै नृप राई॥ इहां वोलि पठये दोऊ भाई॥
रंगभूमि रव कियो अखारी॥ कहा काज यों हृदे विचारो
जननी धीर धरी यों कैसे॥ अति वालक पठये हैं ऐसे॥

देहिं असीस मांगि विधि पाहीं॥ इनदु बार ख सङ्ग मन नाहीं

दो॰ लेत बलैया बारि के आँचर यह कहि नारि
करिहैं इनते कपट नृप तौ ह्वै हैं तन छारि॥ सो॰
सुफल भये मन काम देखि दरस इनको सखी
कुशल जाहु निज धाम देत असीस सुनाय सब

कहति युवति इक सुनहु सयानी॥ मैं जो सुन्यौ सुकनि वरवानी
ये वसुदेव कुंवर सखि दोऊ। ऐसे लोक कहति सब कोऊ
कंस त्रास करि मात पठाये॥ नंद सखा गृह जाय दुराये॥
करि दुलार जसुमति पय प्याये॥ हित करि तिनके बाल कहाये
गोरे अंग नैन रतनारे॥ जो प्रलंब के मारन हारे॥
कुंडल एक वाम श्रुति धारी॥ रोहिणी सुवन सुखकारी
अति अभिराम महा बल धामा॥ तातें नाम धस्यौ बल धामा
स्याम सुभग तन उर वनमाला॥ सीस मुकुट दृग नैन विशाला
जिन्है हेत करि संग ब्रजबामा॥ मान्यौ नाह सकल सुख धामा
जिनके चरण छुवत बड़ पापी॥ पाई सुगति सुदर्सन आपी
अमित प्रभाव कहन सब कहहीं॥ जिनके नाम अधम गति लहहीं
कहत देवकी सुत सब तिन सों॥ कंसराज भय मानत जिनसों

दो॰ आये हैं अक्रूर संग तात मात सुख देन॥
रंगभूमि रिपु जीति के करिहैं यदुकुल चैन
सो॰ सुनि सुनि मुदित सुनारि अनि प्रिय बानी तासु की
मागत गोद पसारि विधि सों ऐसो होइ सब॥

देत सघन सुख यौं मन भावन॥ उतरे जाय बाग इक पावन
गोपन सों हित नंद तहं राख्यौ॥ तब सुफलक सुत सों हरि भाष्यौ
कहहु तात आगे तुम जाई॥ आये स्याम राम दोउ भाई
बड़रि नृपति जब हम बुले हैं॥ कारि विश्वास हम हूं तब ऐहैं

तब अक्रूर जोरयुग पानी ॥ बोल्यौ सुनत स्यामकी बानी ॥
सो हम स्याम सहित क्यौं करत गुसाई ॥ सख्यौ किंकर दासकी नाई ॥
केस दूत मोकौं जिन मानौ ॥ निज सेवक अपनौ करि मानौ ॥
अब मेरे मन में यह आसा ॥ चलि पावन कीजे मो वासा ॥
तब हँसिके बोले घनस्यामा ॥ ऐहैं एक दिना तुम धामा ॥
ऐसे कहि अक्रूर पठाये ॥ विदा होय नृप पास सिधाये ॥
रथ तें उतरि पैदे दोउ भाई ॥ ग्वाल बाल सब लिये बुलाई ॥
सखन साथ संग सहज हुलासा ॥ गये यमुन तट नगर निका

सो० बालवृंद सोभित सकल बालसखन के संग ॥
गौर स्याम शोभा निरखि लज्जित कोटि अनंग ॥
सो० भाँति विचित्र कोजान ब्रजवासी प्रभु के चरित ॥
अमित गुणगत को मान निज जन रंजन दुष्ट दलन ॥

अथ रजकवधलीला

नृपति रजक अंबर नृप धोवै ॥ आवन देखि स्याम तन जोवै ॥
हँसत सगर्व बात यौं घालै ॥ कंस राज के उर ये सालै ॥
लघु लघु वेस गोप के जाये ॥ बहुत अचगरी करि पठ
तृणावर्त प्रभु ह्यो हमारी ॥ इनहीं ताहि सिला पर मा
अति खोटे जो हैं कन्हाई ॥ प्रथमहिं ताहि डेरै मरवाई ॥
है बलभद्र तैसोई खोटो ॥ गोरे अंग महा बल मोटो ॥
ताहू को मारे यो राजा ॥ बोले हैं याही के काजा ॥
ऐसे कहत परस्पर बानी ॥ प्रभु अंतर जामी सब जा
ग्वालन सहित गये वहि पाहीं ॥ कहेउ कछु अंबर हम [illegible]
तिनकौं पहिर नृपति पहँ जैहैं ॥ देहु बहुरि तुम्हें जब [illegible]
जो पहिरावन नृप सों पैहैं ॥ तामें कछु तुमहू को देहैं ॥

के पाहि लेही लेहैं हमसों ॥ बूझत हैं तेसी हम तुम सों ॥
दो॰ हस्यौ वचन सुनि स्याम के कह्यौ गर्व करि वैन
वलके वकरा ह्वै रहे आये हैं पर लैन ॥ सो॰ ॥
राखै घरी बनाय ह्वै आवहु नृप द्वार लौ ॥ ॥
नव लीजो पट आय जो भावे सो दीजिये ॥ ॥
वन वन फिरत चरावत गैया ॥ अहिर जात कामरी उढैया
नट को वेष साजि के आये ॥ नृप अंवर पहिनन मन भाये
जुरि के चले नृपति के पासा ॥ पहिरावन लाये दौ आसा
नक आस जीवन की जोरू ॥ खोवन चहत अवहि धुनि सोरू
यह सुनि स्याम कह्यौ मुसकाई ॥ देहु वसन है तुमहि भलाई
हम मांगत हैं सहजहि तुमसों ॥ तुम कत करत इती रिस हमसे
सहज वात कौ रिस नहि कीजे ॥ मांगे देहु मान गुण लीजे ॥
भौंह ऐंठि तब रजक रिसान्यौ ॥ ए नृप वसन नहीं तुम जानौ
अवहीं क्षणक सुनत मे मारे ॥ नंद हि पकरि वंद मे डारे ॥
जाहु चले यह ते अव नीके ॥ कै ह्वै हो अवहीं विन जीके ॥
करत अचगरी मोसो आई ॥ तुहु न मारि हौं कंस दुहाई ॥
यह सुनि कियो स्याम सेख्याला ॥ भुजा पकरि पर कौं ततकाला
दो॰ तुरत गयौ तन तजि स्वर्ग कीनौ रजिक निहाल
जन्म मरण तें रहगयो ऐसो गुण गोपाल ॥ सो॰
लखि के गये पराय संगी ताके सब रजक ॥
लीने वसन लुटाय स्याम प्रथम ही नृपति के
रजक मारि सब वसन लुटाये ॥ आप पहरि ग्वालन पहराये
विविधि रंग वहु भांति नवीने ॥ निज रुचि ग्वालन सब लीने
चले नहां ते सब हरषाई ॥ मिल्यौ एक दरजी पुनि आई ॥
प्रभु को देखि वदन सुष पायो ॥ चरण कमल को माथ नवायो ॥

घाटवाट जेवसन सुहाये ॥ ते उनकी रिसमतुरित बनाये
ताके कतहि मानिप्रभु लीनौ ॥ अभैदान दै निजपद दीनौ
पुनिइकमाली हुतो सुदम्मा ॥ ताके द्वार गये घनस्यामा ॥
तुरत आय तिन पद सिरनायौ ॥ हरिहलधर लषि हर्षवढ़ायौ
आदर करि घर मे ले आनें ॥ चरणधोय निजभाग वखाने
नृपति हेतजे हार वनायें ॥ तेसप्रेम प्रभुकौ पहिराये ॥
होयजोरि वहुविनय सुनाई ॥ कीजे श्रीपत प्रभु पदराई ॥
मोकोंवहुरिअनुग्रह कीनौ ॥ दीनजानि अपनो करि लीनौ
दो॰ सुनि सप्रेम ताके वचन रीझे स्यामसुजान
मालीपूरणकामकरि दियो भक्ति वरदान ॥
सखनसहित दोउभाइ वहुरिहर्ष आगे चले
तहां पंथमें आय कुविजा लै वंदन मिल्यो ॥
निरषिस्याम छवितनसुधिभूली ॥ वोलीहर्षि प्रेमरसफूली
होप्रभुदीनवंधुसुखदाई ॥ तुम्है नाथ चंदन मैं लाई ॥
मोहि कल्पना यह जगवंदन ॥ चरचौ अंगतुम्हारे चंदन
दासीकुलकुविजामम नाऊ ॥ नृपके उर चंदन नित लाऊं
यहे जानके प्रभु तेहि ठाहीं ॥ आरि भरु मिऊवसतउर माहीं
आज दरस प्रभुप्रगट दिखायो ॥ मोजियको अनुपम मिदायौ
अव ये अंगयकृपा करि लीजै ॥ पूरणकामनाथ मम कीजे
अंतरजामी प्रभुसुखदानी ॥ भावभक्ति कुविजकी जानी
भावहिके वस त्रिभुवन राई ॥ हितकरि के कुविजा निकट आई
वंदन कीनि पूजदोउ भाई ॥ रही स्यामछवि निरषि भुलाई
तव हरिहलधर सौं यौं भास्यो ॥ हितवहुत इन सक्सो राख्यो
हम हूंकछु याकौ हितकीजे ॥ सुभग अंग नेक करि दीजै ॥
पगारारख्यौ पग पीड परधस्यौ सीस कर स्याम

नेक उदाई चिवुक गहि भई सुंदरी वाम ॥
सो०कोकरि सकै वखान जाहि वनाई आप हरि
भई रूप गुण खानि कुविजा मन आनंद अति
महाकुरूप कूवरी जैसी ॥ परसत भई तुरत रति तैसी ॥
तव कुविजा अपने मन मान्यौ ॥ मिले मोहि मोहन पति जान्यौ
पुनि २ कमल चरण सिर नाई ॥ हाथ जोरि वहु विनय सुनाई
जिमि कीनी मोहि कृपा कृपाला ॥ तिमि मम सदन चलहु नंदलाला
अपने चरण कमल तहं धरिये ॥ सुफल मनोरथ मेरो करिहै ॥
तासों विहंसि कह्यौ घनस्यामा ॥ कंस देखि हैं हौं तव धामा ॥
अपनी करि तिय सदन पठाई ॥ चले धनुष देखन दोउ भाई
ग्वाल सखा संग सुभग सुहाये ॥ काम सैन वर रूप वनाये ॥
पुरजन भीर चहूं दिस भारी ॥ चढी अटारिन देखहिं नारी
निरखि स्याम सुख वड़ उदारा ॥ जनु उपर उदधि तरंग अपारा
जहं तहं कहत सकल पुरवासी ॥ भई सुंदरी कुविजा दासी ॥
स्याम कछु चेटक सो कीन्हो ॥ अंग सुधारि रूप वर दीन्हो
दो०रजक मारि लूटे वसन करी कूवरी चारु ॥
वालभाव मोहत मनहिं है कोउ देव उदारु ॥
सो०सुनत रहे दिन रैन पुरुषारथ इनको अवन
तैसे देखे नैन व्रजवासी प्रभु नंद सुत ॥
गये धनुषसाला दोउ वीरा ॥ देखत चकित भये भट भीरा
अरु सभा उठे अकुला ॥ दोख थके सुंदर दोउ भाई ॥
धनुष समीप असुर सव ठाढे ॥ अति वलवंत धीर नर गाढे
सहजहि घेरि लियो दोउ भैया ॥ वोल उठे सव कुंवर कन्हैया
सुनियत अति वल भुजन तुम्हारी ॥ यह कोदंड चढावौ भारी ॥
तिन सों विहंसि कह्यौ सुखरासी ॥ कहा करत हम सों यह हांसी

कहा बाल हम बैस किसोरा ॥ कहा धनुष अति गरु कठोरा ॥
सूर बीर ठाढे सब लहिये ॥ तिनसों धनुष चढावन कहिये ॥
खेलन कहो खेल कछु हमको ॥ सो हम खेल दिखावैं तुमको ॥
ऐसे स्याम हँसत तिन माही ॥ अरु अक्रूर गये नृप पाही ॥
समाचार सब जाय सुनाये ॥ नंद सहित चले मोहन आये ॥
यह कहि घर अक्रूर सिधारे ॥ रजक जाय तेहि काल पुकारे ॥

दो॰ मारे बिन दूषण हमहिं नंद गोप के बाल ॥
लीन्हे बसन लुटाय के पहिरे ये सब ग्वाल ॥

सो॰ सुनतहिं उठो रिसाय बोल्यो कुबलया नृप
करी प्रथम ही आय देखो इन ठौरी वही ॥ ॥

अब मारिहौं अवसि दोउ भाई ॥ लेहु आज सब जाहि लुटाई ॥
देहु बद मैं नंदहि स्याई ॥ गये अहीर बहुत इतराई ॥
मैं आदर करि इहां बुलायो ॥ आगे दै इन रजक मरायो ॥
देखौ कोउ जान नहिं पावै ॥ असुर जाय सब को गहि लावैं ॥
ऐसे कंस कहत रिस आई ॥ तब ही दूतन खबर जनाई ॥
कुबिजा सों हरि चंदन लीन्हो ॥ ताको रूप अनूपम दीन्हो ॥
धनुष निकट पहुंचे दोउ भाई ॥ यह सुनतहि कछु आय असुर
बहुरि धीर धरि असुर पठाये ॥ ते यह कहन स्याम पहँ आये
पहिले तोरि धनुष गोपाला ॥ कहाँ खिलायौ निकट भुआला ॥
सुनि असुरन्ह के बचन कन्हाई ॥ बोले मन ही मन मुसकाई ॥
याही कों नृप हमहिं बुलायो ॥ [illegible] लौ बारे जान यह पायो ॥
गहन लगे ते बालक जानी ॥ तब हि स्याम कछु रिस उर आनी ॥

छं॰ उर आनि रिस गहि पानि तुरतहिं असुर लै मारे सबै
अति हि बेग उठाय धनुषहिं तोरि महि डारो तबै ॥
उठे तब करि क्रोध योधा मार मार पुकारही ॥ २ ॥

नंदसुत रणवीर हो धरधीर असुर संघारहीं ॥
एक झटकत एक पटकत नैन मटकत फिरतहीं
एक झपकत एक लटकत एक मटकत जहीं तहीं
ताल चटकत चमकि कूटकत देखि भटकत न भ्मले
एक पकरि पि [illegible] जात ते रूपपा हि भले ॥
दो० ख्याल हि मारे असुर सब तोरि धनुष नंदलाल
चले सामुहे पैवारे नीक जहां कुवलिया व्याल ॥
सो० देखत चढ़े विमान ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनि
डारत सुमन सुजान ब्रजवासी प्रभु हर हरषि ॥
रंगभूमि हरि हलधर आये ॥ संग सखा नव ग्वाल सुहाये ॥
आप आपनी छवि सब छाये ॥ रविशशि उरगगण मोदित छाये
देख्यो द्वार द्वार पर ठाढ़ो ॥ मनहुं गर्व कौ गिरिवर गाढ़ो ॥
कंधकेसरी गर्भ प्रहारी ॥ बलतन हंसे गयंद निहारी ॥
ता सम की छवि कही न जाई ॥ कसत पीत पटकटि लपटाई
स्याम सुभग लर चूघर वारी ॥ या पै पंच मिलि पाग संवारी
मधुपुर की युवती सब वाढ़ी ॥ कहत परस्पर सहल्लन ठाढ़ी
लखहु सखी अंग अंग लुनाई ॥ रूपराशि मन हरन कन्हाई
कोटि मदन छवि विधि लुन लीनो ॥ तब यह मूरति सांवरि कीन्ही
अति हि कृपाल येलखि सुषदाता ॥ हम अभागि के कूर विधाता
धन्य ब्रज तिय इनके संग लागी ॥ निसदिन रहति प्रेम रस पागी
वन वीथिन कुंजन वन डोलें ॥ रासहास रस करति किलोलें ॥
दो० हाय हमारे सुकृत कछु सुनहु सखी तो आज
जैसे ताको धनुष हरि यों जीते गजराज ॥ सो०
सुरन मनावति जाते अति कोमल नंदलाल नरवि
न चढ़ कुशल होउ भ्रात मात पिता के पुन्य ते ॥

भयौ क्रोध हाथी मन माही ॥ गंडस्थल मद अंबु चुचाही ॥
पवन वेग तें आतुर धायौ ॥ गरज घुमरि दोऊन पर धायौ ॥
महाकोप करि गहे कन्हाई ॥ पस्यो दसन दे धरणि धसाई ॥
डरपि उठे तिहिं काल सब सुर मुनि पुर नर नारि
दूहू दसन विच व्है कढे वल निधि प्रभु दै तारि
सो० उठे गजहि के माथ, वढ्यौ खेल इ हांक दै ॥
तुरतै भये सनाथ, देखि चरित सब स्याम के ॥
हांक सुनत अति कोप वढाये ॥ झटकि सूड़ वढ्यौ गज धाये ॥
रहे उदर तरे दवकि मुरारी ॥ गये जान गज रह्यौ निहारी ॥
पाछे प्रगटि वढ्यौ हरि टेरो ॥ वलदाऊ आगे तें घेरो ॥
लागे गजहि खिलावन दोऊ ॥ चकित भये देखत सब कोऊ ॥
चहुं घाँ फिरत चक्र की नाई ॥ सूंड पूंछ सगरे है जाई ॥
नेक नहीं अवसर गज पावे ॥ चारों दिस हरि कितहूं न पावे ॥
जतन करत मन ही मन माही ॥ गज रिस विकल हन्हें रिस नाही ॥
कवहूं पूंछ पकरि के झेले ॥ जो वालक वछरन संग खेले ॥
कवहूं इत उत ते दोउ वीरा ॥ भजत मारि के मुष्ट गंभीरा ॥
कवहूं उदर तरे कढि जाही ॥ नेक छुवन पावत गज नाहीं ॥
नील पीत पट कौन फहराही ॥ चपल नेन दीरघ वर वाही ॥
खेलत गज संग चंचल राजे ॥ निर्तत मदन मनहु गति साजे ॥
छं० जनु मदन निर्तत साजि गति इम स्याम सुंदर खेलही ॥
कवहूं खेलत पूंछ कर गहि कवहूं आगे पेलही ॥
द्विरदलखि पुर नारि नर सव विकल विधिहि मनावहीं ॥
वेग मारै स्याम गज कों हम निरखि सुख पावहीं ॥
दीन्हौ महावत वढ्यौ रिस अंकुश क्रोध करि हाथी चल्यो ॥
तवहीं हरि गहि पूंछ पटक्यौ नेक नहि भूप रह्यो ॥

लियेखैंचिमनालज्योंदसुमनभरदेवनकरी
दासब्रजवासीहरषसवअसुरकौसेनाडरी॥

दो॰ हंसतहसतमार्योअक्लाहुरदकुवलियास्याम
सयनसहितगाढ़ेमदितछविनिरषतपुरवाम॥

सो॰ मार्योगजअघभातजहांतहांसवकोदुकहृत
चिरजीवहुदोउभातप्रभुव्रजवासीदासके॥

अथमल्लयुद्धलीला

चलेजहांसवमल्लगुपाला॥द्विरिददंतधरिकंधविसाला
गोरस्यामसुन्दरदोउभाई॥श्रमसीकरमुखकमलसुहाई
छविअपारवलनिधिगंभीरा॥सगगोपग्वालकनकीभीरा॥
सुनतकंसजियअतिभयमान्यो॥मनवसगज्यौंपिंजरअकुलान्यो

भाजन कौं मन माहिं विचारो॥ भाजन सक्यो लाज को मारो॥
गये रंग महि मोहन तबही॥ यथा भाव दरसे तह सब ही॥
उठे मल्ल सब संकि अधीरा॥ बल समूह देखे दोउ बीरा॥
दुष्ट दैत्य इते तहं जेते॥ रूप भयानक दरसे तेते॥
कंस समीप भूप जे आये॥ तिन्हें राज बंसी दरसाये॥
साधु सिद्ध देखहिं शुभ धामा॥ इष्ट देव पूरण सब कामा॥
देखत सुरगण गगन सुखारी॥ सब देवन के देव मुरारी॥
ग्वाल बाल देखत सब ऐसे॥ सदा संग खेलत ब्रज जैसे॥

दो० मल्लन तें देखहिं प्रभुहिं सकल सुन्दरी बाम
कोटि काम शोभा हरन नव किशोर सुख धाम॥
सो० देखत अति विपरीति कंस नृपनि नंदलाल को
कंस परयो भे भीत प्रगट काल दरसन भयो॥

सर्व भाव पूरण भगवाना॥ अबलहिं अबल बलहिं बलवाना॥
ललितहिं ललित साध को साधू॥ छलन छली सब गुण न अगाधू॥
जो जन जैसे ध्यान लगावे॥ ताकों तेहि विधि दर्स दिखावे॥
कहति देखि सब सुन्दर जोटा॥ येई नंद महर के ढोटा॥
रजक मारि नृप बसन लुटाये॥ कीने कुबिजा अंग सुहाये॥
इनहीं असुर समूह संघारयो॥ धनुष तोरि हाथी इन मारयो॥
धरे कंध गज दंत बिराजे॥ बालक गोप सखा संग राजे॥
देखत असुर बीर चढ़ पासा॥ जिनके बस सब भूमि अकासा॥
लीने घेरि कंस भय मानी॥ तब चाणूर कही हंस बानी॥
अबहूं स्याम इतहि पग धारो॥ सुनत इते बड़ नाम तुम्हारो॥
सब कोउ तुम्हें खेलहि बखाने॥ हारि जीति का को कोउ जाने॥
कहा भयो जो गज तुम मारयो॥ लरहु आज तुम संग अखारो॥
दो० कहा नाम हम मरयो सुन्यो हंसि बोले घनस्याम

लिये तौं विमनाल ज्यों सुमन भर देवन करी
दासब्रजवासी हरष सब असुर की सेना डरी॥
दो० हँसत हँसत मारयौ सकल हरद कुवलिया स्याम
सखन सहित ठाढ़े मुदित छवि निरषत सुर वाम॥
सो० मारयौ गज पहलवान तहाँ वहाँ सब कोउ कहत
चिरजीवहु दोउ भ्रात प्रभु ब्रजवासी दास के॥

अथ मल्लयुद्धलीला

चले जहाँ सब मल्ल भुवाला॥ द्विरद दंत धरि कंध विशाला॥
गौर स्याम सुन्दर दोउ भाई॥ श्रमसीकर मुख कमल सुहाई॥
छवि अपार बलनिधि गंभीरा॥ संग गोप बालक की भीरा॥
सुनत कंस जिय अति भय मान्यो॥ नवसग ज्यौं पिंजर में कुलान्यो॥

आपुस मैं सब करत विचारा ॥ हारद्द मार उभे सुकुमारा,
मुनिर हरिहलधर मुसकाही ॥ बोले वद्द रि विहसि तारि पाही
सुनिये सकल मल्ल समुदाई ॥ यह तुम्हरे मन अवही आई ॥
नृप पहं हम जानन नहिं देही ॥ वडो सुयश हम सों लरि लेही
निपट खेल अव परे हमारे ॥ यहं न वसी उर भली तुम्हारे
हम न कहै तौ तुम चित जैसो ॥ कहत कहा कीजे अव तैसो
दो० जवहि स्याम ऐसे कह्यो विलषि उठी सव नारि
देखो री मारन चहत मल्ल उभे सुकुमारि ॥ सो०
अतिकोमल अतिवाल वाचै कैसे हू दहीं ॥
कहत नैन जल ढार क्यों जननी पठये यहां
अति हि निठुर उर जाति अहीरा ॥ लोभ लागि पठये दोउ वीरा
येतो वालक अतिहि अजाना ॥ कियो कहा उन यह अज्ञाना
हेरन चहत अवधौं यह कैसी ॥ कहत वात यह कंस अनैसी
कहत सवे हम को यह भावे ॥ करि सहाय विधि इनहिं वचावे
तासों धनुष हत्यो गज जैसे ॥ जीतहि स्याम इनहूं को तैसे
जोरि जोरि के विधि के आगे ॥ आतुर छोरि छोरि सव मागे
तव चाणूर कृष्ण पहं आयो ॥ सहज र ॥ करि पट लपटायो
भुज भुज जोरि भये भिड ठाढे ॥ ताकि र दांव चलावत गाढे ॥
ऐसे हि मुष्टिक अरु वलरामा ॥ भिडे वदाय वाद वल धामा
दोउ वीर लसत अति सोहे ॥ देखन सुर नर के मन मोहे
दीरघ नैन कमल तें आछे ॥ ललित लाल कछनी कोरि काछे
तन चंदन चित्रत छवि जाल ॥ वृषभ वांध उर वाहु विसाल
दो० सिर सं सिर भुज सों भुज दृष्टि दृष्टि सों जोर
चरण चरण गहि रूपटि के लपट रूपट झकझोरि
सो० आहनन पावत घात कू रूजात लपटात पुनि

हमबालकभोरेअबहिं हमैखेलसोंकाम ॥
सो० कहियेबातविचारहमैंतुमहिंसिखावोकहा ॥
अयुगतियहक्योंहारआयदेखिदेखकहहमैं
जानदेहुहमकोंनृपपाहीं॥ काहेकोरोकतमगमाहीं
नृपहमकोंकरिहेतबुलायो॥ तुमयहहमकोंकहासुनायो
तबचाणूरकह्योपुनिऐसे॥ तुमकोंबालककहियेकैसे॥
कियेकर्मभुजमेंतुमजैसे॥ देखेसुनेनहीकहुंकैसे॥
गिरगोवर्द्धनकरपैधार्यो॥ जलतेंकालीनागनिकार्यो
औरोंअसुरवीरबलभारे॥ सुनियतखेलतमेंतुममारे
सोबलआजदेखिहमलेहैं॥ आगेजानतुम्हेंतबदेहैं॥
ज्योंज्योंकंसलखतदोउभाई॥ त्योंत्योंभयव्याकुलअकुलाई
कहिकरिवारहिंवारपठावे॥ मल्लनकोंबहुत्रासुनावे
क्योंरेसकुचकरतमनमाहीं॥ मारतवेगयासुकोंनाहीं
जोदोउबालकआजनमारो॥ करौंसकुलतौनाशतुम्हारो
नृपसंदेससुनिमल्लडराने॥ कहतपरस्परमनसकुचाने
दो० लीनेनृपमानिकेनंदसुवनसोंआज
लरमारियेकेमारियेकरेकंसकोकाज ॥ सो०
लेहुसुयशनृपपासअबविलंबनहिंकीजिये
कछुक्रोधकछुत्रासबोलिउठेतबमल्लसब
हमसोंस्यामिलरतक्योंनाहीं॥ घाटनकछुहमतेंबलमाहीं
पसुपालकतुमकुंवरकन्हाई॥ जीतेवड़ोनकपसुनीसु
अबलौंनहींमल्लकोउभेटो॥ अबतोहमसंगपर्योअपटो
मल्लयुद्धतुमसोंहमलैहैं॥ अबनृपतिकोकाजकरैहैं
ऐसेकहिकहिअभहिसुनावे॥ भुजाऐंठिसबअंगचलावें
बांकेतालगाजज्योंगाजे॥ गहेगासहरिलननकितजे

जबहीं स्याममल्ल सब गारे ॥ भजे असुर सब लखि हिय हारे
देखि कंस अतिभयो दुखारो ॥ सेनापतिन कहत दै गारो ॥
कोपन लिये खड्ग बड़ क्रोधा ॥ कहत गये कित रे सब योधा ॥
लै तरवारि ढाल सब कोऊ ॥ डारहु मारि नंद सुत दोऊ ॥
डारे मारि मल्ल सब मेरे ॥ तनक छोहरा आहिरन केरे ॥
डर नहिं करत चले इत आवैं ॥ देखहु जीवत जान न पावैं ॥
असुर वीर अपनी सर जेते ॥ लै लै नाम पठाये तेते ॥
कह्यो द्वारपालन भय बाढ़ो ॥ करहु कपाट पौरि कौ गाढ़ो ॥
नृपभय मानि असुर सब धाये ॥ अस्त्र शस्त्र लै हरि पर आये ॥
भये विकल लखि पुर नर नारी ॥ मन २ देत कंस को गारी ॥
कहत कि भई कठिन यह बाता ॥ बचहु स्याम सो इ करौ विधाता
आवत लखी असुर की भीरा ॥ भिरे हांक दै दै दोउ वीरा ॥
छं० अवलोकि असुर समूह आवत हांक दै दोऊ भिरे
मनहुं गज गण निरषि के हरि धाय तिन ऊपर परे ॥
सुनत शब्द गंभीर हरि को दहिर सेनापति गये ॥
लपकि गहि महि पटकि जहं तहं क्रोध कर कलजू हिये
स्याम गौर किशोर सुंदर असुर गण बिच यों लरे ॥
जनो सांत अरु सिंगार धरि तन वीर की करनी करै ॥
जात नहिं वरनी चकट कंगहि पटक इत उत धावहीं
भूमि भार अपार अघनिधि असुर निकर नसावहीं ॥
दो० पर्यो नगर खलभल सकल अति भय व्याकुल कंस
पुनि पुनि मंत्रिन सो कहत बढ़ो अधिक डर संस ॥
सो० कीजै कछु उपाय जियत जाहि नहि बंधु दोउ
मारहु नंद बुलाय ब्रज कोउ रहन न पावहीं ॥
पुनि वसुदेव देवकी दोऊ ॥ मारहु कठिन संधुते दोऊ ॥

शिवविधिपैनगह्यौतितिन्हैमल्लचाह्तगह्न
स्यामसहजमल्लनसंगखेलै॥पकरिभुजदूहन
भयेप्रथमकोमलतनताहूी

नंदसुवनमाझ्मातवंज्ञानी

छं०परकोचरणगहिफेरिमहिचाणूरसोमिल्लनसोंवरे
धसगयोधरमासिकुंभंगस्यक्करभूल्योदोवरे॥
भयोशब्दघघातसुनिनृपकंसउरधसक्यो परो॥
निरषिपुरनरनारिनभसुरहरषिहियआनंद भर्यो
पकरियोसियभांतितवलरामसुष्टिकमारियो॥
कहतधनिधनिलोगसवजैजैतिसु रनउच्चारियो
मल्लेभस्भतिमल्लभादिकमल्लतहांजितने हते॥
रूपटिरूपटिपछारिकैपुनिनंदसुवनमारे तिते
दो०जवमारेहरिमल्लसवपरयोकरक मह्नसोर॥
जिमितारागणरविउदेछिपेअसुरचहुंओर॥
सो०सखनसहितदोउवीररंगभूमिराजत रूरे॥
हरणभक्तिभैपीरव्रजवासीप्रभुनंदके॥

बहुरि केस गहि कंस उघारो ॥ दियौ घसीट यमुन जल डारो ॥
कीन्हौ कछुक तहां विश्रामा ॥ भयो विश्रांत घाट तिहि नामा ॥
सुनि पति मरन कंस की नारी ॥ और सकल भ्राता की प्यारी ॥
रोदन कर करि विविधि विलापा ॥ सुमिरि भूप गुण रूप प्रतापा ॥
निज हित समुझ भयो दुख भारी ॥ चहत मरन पति नेह विचारी ॥
गये तहां बहुरौं दोउ भ्राता ॥ करुणामय कोमल सुख दाता ॥
करि प्रबोध बोली सब रानी ॥ रहो मरन ते सुनि प्रभु बानी ॥
बहुत भांति तिनकौं समुझाई ॥ आये महल द्वार दोउ भाई ॥
कालनेम के वंस सुहायो ॥ उग्रसेन सुनि कै उठि धायो ॥
तिन प्रभु चरण आय सिर नायो ॥ त्राहि २ कहि वचन सुनायो ॥
छं० त्राहि २ सुनाय आरत वचन प्रभु चरणन गिरयौ ॥
अब करहु करुणानिधि क्षमा अपराध यह हमतें परयो
असुर मारे कंस भायन सहित सो उचित करो ॥
पर द्रोह रति खल दलन हित अवतार यह तुम्हरो हरी
करि कै कृपा अब प्रजा पालन हेतु प्रभु चित दीजिये
वर बैठि सिंहासन सुभग यह राज मधुपुरि कीजिये
सुनि दीन वचनन हरषि हरि तब उग्रसेन उठाय कै
बहु भांति करि सनमान पुनि २ लिये हृदै लगाय कै
दो० श्री मुख सों कर जोरि पुनि कह्यो सुनो महराज
यदुवंसिन कौं श्राप है हमें उचित नहिं राज ॥ सो०
करहु देव तुम राज दूरि करौ संदेह सब ॥
हम करिहैं सब राज जो आयसु दैहौ हमें ॥
जो नहिं मानै आन तुम्हारी ॥ ताहि दंड करि हैं हम भारी ॥
और कछु चित सोच न कीजे ॥ नीत सहित परजन सुख दीजे ॥
यादौ जिते कंस के त्रासा ॥ गए सब तजि २ भये ब्रज बासा

बहुरि उग्रसेन कौ मारी ।। पिता दोष कछु उर नहिं धारे
ऐसे सुनि मुनि वचन उचारे ।। कंपित रिस नरयद्ध कर धारे
क्षण बैठत क्षण उठत अधीरा ।। मारे असुर सकल दोउ वीरा
अति बलवंत नंद के बारे ।। तब सकोप नृप और निहारे ।।
गये मचान मचा कि चढि दोऊ ।। बाज रूप इ देखत सब कोऊ
डरि गयौ चकित नृपति अभिमानी ।। आयौ काल निकट यह जानी
रहि गयौ खड्ग लिये कर माहीं ।। हरि कौ मारि सक्यौ सो नाहीं
तब हीं स्याम लात इक मारी ।। गिरि गयो मुकट सीस तें भारी
दीनौ ठेलि मंच ते भूपर ।। कूदि परे हरि ताके ऊपर ।।
तहां चतुर भुज रूप दिखायौ ।। सो मरूप दे स्वर्ग पठायौ ।।
मार्यौ कंस कहत सब बानी ।। जै धुनि सुर गन गगन बखानी

छं० जै धुनि गगन सुरगण कुसुम की वरषा भई
कहत सब हरि कंस मार्यौ सोक यह त्रिभुवन गई
ब्रम्हादि सुर मुनि सिद्धि गंधर्व मुदित मन अस्तुति भनी
भूमि सुर उपकार हित अवतार धनि त्रिभुवन धनी ।।
धन्य गज धनि मल्ल मारे धन्य कंसा सुर धनी ।।
परसि तनु अनुपम लहौ गति जात नहिं महिमा गनी
धन्य अखिल ब्रम्हांड नायक भक्त हित नर तन धर्यौ
धन्य ब्रजवासी सकल जिन प्रेम करि तुम बस कर्यौ
दो० करि अस्तुति पुनि हरषि सुमन वरषि सुर वृन्द
मुदित बजावत दुंदुभी कहि जै जै नंद नंद ।।
सो० मथुरापुर नरनारि अति प्रफुलित सब कौ हियौ
मन कुमुद वन चारि विकसत हरि ससि मुख निरखि
मार्यौ कंस जब हिं भगवाना ।। भ्रात अष्ट ताके बलवाना
करि करि कोप युद्ध कौ धाये ।। ते पुनि सब बलदेव नसाये ।।

वहारि केस गहि कंस सुरारी॥ दियौ घसीट यमुनजल डारी
कीन्हौ कछुक तहां विश्रामा॥ भयौ विश्रांत घाट तिहि वामा
सुनिपति मरन कंस की नारी॥ श्रौर सकल भ्राता की प्यारी॥
रोदन करकरि विविधि विलापा॥ सुमिरि भूप गुण रूप विधाता
निज हित समुझ भयौ दुख भारी॥ चहत मरन पति नेह विचारी
गये तहां वहारी दोउ भ्राता॥ करुणा मय कोमल सुखदाता॥
करि प्रबोध बोली सब रानी॥ रह्यो मरन ते सुनि प्रभु बानी॥
बहुत भांति तिन कौं समुझाई॥ आये महल द्वार दोउ भाई॥
कालनेम के बंस सुहायो॥ उग्रसेन सुनि के उठि धायो॥
तिन प्रभु चरण आय सिर नायो॥ त्राहि २ कहि वचन सुनायो
छं० त्राहि २ सुनाय आरत वचन प्रभु चरसान गिस्यौ॥
अब करहु करुणानिधि क्षमा अपराध यह हमतें परयौ
असुर मारे कंस भायन सहित सो उचित करी॥
पर द्रोह रति खल दलन हित अवतार यह तुम्हरो हरी
करि के कृपा अब प्रजा पालन हेतु प्रभु चित दीजिये
वर बैठि सिंहासन सुभग यह राज मधुपुरि कीजिये
सुनि दीन वचनन हरषि हरि तब उग्रसेन उठाय के
बहुभांति करि सनमान पुनि २ लिये हृदे लगाय के
दो० श्री मुखसों कर जोरि पुनि कह्यौ सुनौ महराज
यदुवंसिन कौं श्राप है हमें उचित नहिं राज॥ सो०
करहु देव तुम राज दूरि करौ संदेह सब॥॥
हम करिहै सब राज जो आयसु दैहौ हमैं॥
जो नहिं माने आन तुम्हारी॥ ताहि दंड करि हैं हम भारी॥
श्रौर कछु चित सोच न कीजे॥ नीत सहित परजन सुख दीजे
यादौ जिते कंस के त्रासा॥ गइ सब तजि२ भये व्रज वासा

सुख दै मथुरा मांझ वसायौ

विप्र धेनु सुर पूजन कीजै ॥ इनकी रक्षा मे चित दीजै ॥
यौं प्रभु उग्रसेन समुझाये ॥ राज सिंहासन पुनि बैठाये ॥
सिर पर मंजुल छत्र फिराई ॥ निज कर चंवर लिये दोउ भाई
युग २ प्रभु भक्तन सुखदाई ॥ राखत जन की सदा बडाई
वरसि सुमन सुर कहत सुखारी ॥ जै जै जै भक्तन हितकारी ॥
उग्रसेन नृप करि बैठायो ॥ लखि मथुरा लोगन सुख पायो
धनि २ कहत सकल नर नारी ॥ अव कौं रहे पितु मातु सुखारी
यहै वात सव घर घर माही ॥ इन सम और जगत कोउ नाहि

छं० नर नारि सव यह कहत घर २ और नहिं इन ते कियो
धनि मातु पितु इनि रानि धनि सो जनम जग जब हरि लियो
गहि कंस सहित समाज मारौ गै भरन नहि यानि न दियो
उग्रसेन नरेस करि पुनि छत्र कर अपने कियो ॥
विवुध हरषे सुमन वरषे सुथिर सव यदुकुल भयो
अव पावही पितु मातु सुनि सुष सकल दुष उनको गयो
हम जिये सव निरषि सुख छवि जनम को फल जग लह्यो
जियहु युग २ भ्रात दोऊ यह हरषि पुरवासिन कह्यो

दो० कंस मारि भूभार सव उग्रसेन करि भूप ॥ ॥
कहां हमारे मात पितु तव वोले सुखरूप ॥
सो० सेंगहि चले लिवाय उग्रसेन अक्रूर तव ॥
रामकृष्ण दोउ भाय व्रजवासी जन दुख हरन

उत वसुदेव सुपन निसि भाष्यो ॥ हृदय हरषि देवकि सुनायौ
रामकृष्ण जनु मधुपुरि आये ॥ सुफलक सुत संग रूप निकाये
असुर सेन हति कंसहि मारयो ॥ उग्रसेन नृप करि वैठार्यो
सुनि तिय कहत नैन भरि पानी ॥ कहत कहा हिय ऐसी वानी

सुनिहैं दूतकोऊ दुखदाई ॥ कहिहैं अवहिं कंस सो जाई ॥
हम कीं पापजन्म जगलीनौ ॥ सो फल हमहीं विधाता दीनौ ॥
वधे मात देखत हम आगे ॥ कछ्यौ एक डारि व्रज लै भागे ॥
तापर वंदि करे हम दोऊ ॥ ध्रग जीवन पर वस जग जोऊ ॥
हमकौं नीच मीच विधि भूल्यौ ॥ होइ कंसकौ वंस निर्मूल्यौ ॥
कहि वसुदेव रोव मतिनारी ॥ धोवो वदन दोन्हु जल [illegible] ॥
कहियत है दुख हरण गोपाला ॥ गर्व प्रहारी दीन दयाला ॥
कैहैं प्रगट कवहुं दुखदाई ॥ तात तुम्हारे त्रिभुवन राई ॥

दो॰ अवजिन होइ अधीर जिय धरहु धीर सुष पाइ
आय तुलानी कंस की देखत जाय विलाइ ॥
स्वप्न वृथा नहिं जाइ मातु प्रिया मेरो कह्यो ॥
आज काल्ह में आइ तोहि मिले तेरे सुवन ॥

इहि अंतर द्वारे हरि आये ॥ वज्र कपाट जहां जडि [illegible] ॥
करुणा करि हरि तिनहिं निहारा ॥ गये सहज सव उघरि [illegible] ॥
लखि वसुदेव सामुह पाये ॥ कहत कुंवर काके दोउ [illegible] ॥
दियो दरस तेहिं प्रेम सुहायो ॥ जन्म समै सो दरस दिखायो ॥
मिले धाय पितु मात निहारे ॥ कह्यो तात हम सुवन [illegible] ॥
रोवत मधुर निरखि सुत दंपति ॥ सुनहिं कंस [illegible] कोपित ॥
तवहीं कृष्ण कह्यो सुन ताता ॥ मार्यो कंस [illegible] ॥
मल्ल पछारि सुभट सव मारे ॥ छिरित कुवलिया [illegible] ॥
यह कहि करी पितु मातु सुखारे ॥ तुरत तोरि [illegible] ॥
तव जननी निश्चै करि जानी ॥ रोवन लगी [illegible] ॥
वारहि वार कहत दुलराये ॥ मैं नहिं कवहूं [illegible] ॥
द्वादस वरष कहां रहे प्यारे ॥ मात पिता जोहि वलिहारे ॥

दो॰ सुनि जे मुनी के वचन प्रभु करुणानिधि यदुराय

रोये कदली खंभ रसाला ॥ बांधी रचि रुचि वंदन माला ॥
लखि हरि जन्म अनंद वधाई ॥ निधि सिधि प्रगटी सबही आई ॥
हाटक कलस अनेक विधाना ॥ मंगल द्रव्य रचे विधि नाना ॥
गज मुक्तन के चौक बनाये ॥ मंदिर गलिन सुगंध सिंचाये ॥
सुनि सब मथुरा पुर नर नारी ॥ उमंगि उठी आनंद उर भारी ॥
घर घर सब हिन मंगल साजे ॥ द्वार द्वार प्रति बाजन बाजे ॥
नव सत साजि सकल नर नारी ॥ सजि सजि मंगल कंचन थारी ॥
गान करत कल कंठ लगावै ॥ श्री वसुदेव धाम को आवै ॥
दो॰ जाति पांति परजन प्रजा वंधु हितू सब लोग ॥
लै लै आवत भेट सजि हरषत निज निज योग ॥
सो॰ भई भवन अति भीर नट नाचत गावत गुणी ॥
धरि धरि मनुज शरीर मानहुं सुर आये सकल जन ॥
तब जननी मन अति सुख पाये ॥ उबटन करि दोउ सुत अन्हवाये ॥
निज कर अंग अंगोछि सुहायो ॥ तन दुति लखि दृग ताप नसायो ॥
केसरि मिलय मिलय रुचिकारी ॥ कियो तिलक वर भाल सुधारी ॥
भूषण वसन सिंगारत जैसे ॥ राजकुंवर वर सोहत तैसे ॥
कंचन मणि मय सुचित नवीनो ॥ कीट मुकुट शोभित सिर कीनो ॥
कलगी ललित जड़ाव जड़ाई ॥ तुर्रा मध्य अनूप सुहाई ॥
गज मुक्तन के कुंडल कानन ॥ अति विशाल छवि शोभित आनन ॥
कंठ पदिक के हार विराजै ॥ उर विशाल पुरुष ति छवि छाजै ॥
पंच रत्न के अंगद नीके ॥ शोभित भुजन भावते जी के ॥
कंचुरा नव रंजन निकाई ॥ पाणि पल्लवन छाप सुहाई ॥
किंकिणि कलित ललित रुचिकारी ॥ कटि केहरि पर वलित सवारी ॥
नूपुर चारु मनोहर पायन ॥ चरण कमल भक्तन सुख दायन ॥
दो॰ नील पीत वर वसन तन दोउ सुतन अभिमान ॥

सो॰ नरतन पाय सुजान अनुदिन गावहि हरिकथा।
सकल सुखनकी खान ब्रजवासी प्रभुको सुयश॥

अथ [illegible]बजागृहप्र[illegible]गलीला

श्री यदुकुलकुलकमलनभारी॥ दीनबंधु भक्तन हितकारी
करिकै जननी जनक सुखारी॥ तब कुबिजाकी सुरति संभारी
नृपतिभुवन तजिकै अभिरामा॥ चले बसन कुबिजाके धामा
कृष्ण कृपाल वही पै प्यारी॥ भवभंजन कुबजा भइ प्यारी
साँचो भाव हृदै जहाँ जाने॥ विवस होय तेहि हाथ बिकाने
नारि पुरुष कछु नाहिन भेदा॥ नीच ऊंच नहिं करत निषेदा
प्रथमहि आय मिली मगमाहीं॥ सो हित मान लियो यदुराई
चंदन चरचि तनक तन दीन्हो॥ मनहु कोटि तप करि शुचि कीन्हो
अति अकुलीन कंसकी दासी॥ परसत पावन भई रमा सी
आय प्रभु पुनि ताके धामा॥ भक्त पक्ष है जिनको नामा॥
जब कुबिजा जान्यो हरि आये॥ पाटंबर पांवड़े बिछाये
अति आनंद लपट उठि आगे॥ पूरण पुन्य पुंज सब जागे

दो॰ देहीते सुधी करी दियो रूप अभिराम॥
दासीते रानी भई पूरे सब मन काम॥ सो॰
कौ करि सकै प्रकास अति विचित्र हरिके गुणन
सदा सदाको दास भयो रहै प्रभु उनन को

पु[illegible] यह जानी॥ राजा हरि कुबिजा पटरानी
घर घर कहत सकल नर नारी॥ कियो कहा धौं इन तप भारी
मिली तनक चंदन दै मग मैं॥ भ[illegible]
यह [illegible]॥ कौ ताकी पटतर अब आवै
भलि कहत कुबिजा जो कोऊ॥ ताहि रिसात उठन सब कोऊ

॥ धारूमलक मूसवशिक्तनि[illegible]जातू वलिहार

सवे ॥

। विप्रवृंद वसुदेव हकारे ॥

॥ द्रव्य अनेक निछावर दीन्हो ॥

॥ वंदुन शीश्वर सुरन भय प्रगावे ॥

॥ रिद्धि सिद्धि सब ए नंद की दासी

दारुणन्नी की ।

सो० नरतन पाय सुजान अनुदिन गावहि हरिकथा
सकल सुखन [illegible]खान ब्रजवासी प्रभु को सुयश॥

अथ कुब्जा गृह प्रवेश लीला

श्री यदुकुल कुल कमल तमारी॥ दीनबंधु भक्तन हितकारी
करिकै जननी जनक सुखारी॥ तब कुबिजा की सुरति संभारी
नृपति भुवन तजिकै अभिरामा॥ चले बसन कुबिजा के धामा
कृष्ण कृपा सब ही पै न्यारी॥ भव भंजन कुबजा भई प्यारी
सांचो भाव हृदै जहां जानै॥ बिबस होय तेहि हाथ बिकानै
नारि पुरुष कछु ताहि न भेदा॥ नीच ऊंच नहिं करत निषेदा
प्रथम हि आय मिली मग आई॥ सो हित मान लियो यदुराई
चंदन चरचि तनक तन दीन्हो॥ मनहु कोटि तप कासी कीन्हो
अति अकुलीन कंस की दासी॥ परसत पावन भई सुवासी
आये प्रभु पुनि ताके धामा॥ भक्त पक्ष है जिनको नामा॥
जब कुबिजा जान्यो हरि आये॥ पाटंबर पांवडे बिछाये
अति आनंद लये उठि आगे॥ पूरण पुन्य पुंज सब जागे

दो० दै होते सूधी करी दियो रूप अभि[illegible]॥
दासी ते रानी भई पूरे सब मन काम॥ सो०
कोकरि सके प्रकास अति विचित्र हरि के गुणन
सदा सदा को दास भयो रहै प्रभु उनन को

परथा सिन सब हिन यह जानी॥ राजा हरि कुबिजा पटरानी
घर घर कहत सकल नर नारी॥ कियो कूबरो धोइ न तप भारी
मिली तनक चंदन दे मग मे॥ भ[illegible]
यह महिमा कछु कहत न आवै॥ कोत [illegible] आवै
भलि कहत कुबजा जो कोऊ॥ ताहि हरि सात उठन सब कोऊ

सोतौभई कुब्जकोप्यारी ॥ दासीकेहुतङ्करतनर नारी ॥
करतत्रासमनमेंसवप्रानी ॥ डारहिमारिसुनेजो रानी
जापरकृपाकरैयदुराई ॥ ताहिनहींयहकछुअधिकाई
सदासदाहरिकीयहरीती ॥ मानतरंकभक्तसौंप्रीती
धनिरकुबिजाहरिकीरानी ॥ धनिरकृष्णप्रीतिकरमानी
धनिरचंदनअंगलगायौ ॥ धनिरभवनजहांहरिआयौ
कहिरसवसुरनारिसिहाहीं ॥ अजकुवरीसमकोउनाहीं
दो०॥ वसेस्यामकुवजासदनतहंकरिकछुविश्राम
प्रातआयेवसुदेवगृहजनमनपूरणकाम ॥
सो०॥ तवश्रीनंदकुमारब्रजवासिनकीसुरतिकारे
मनमैंकियोविचारअवसवचालियेनंदपय ॥
लैवसुदेवसंगदोउभाई ॥ गयेजहांउग्रसेननृपराई
तहांयदुहरिजादौसवआये ॥ औरअक्रूरउद्धवहिवुलाये
नंदहिरसवचनसुनाये ॥ मनहितब्रजवासीसवआये

सो॰ अब कैसे ब्रज जाहि बल मोहन दोउ बिना।
अति व्याकुल उर माहि कब धौं नैनन देखिहैं

॥ अथ नंदबिदालीला ॥

आये तबही कुंवर कन्हाई ॥ नृप वसुदेव सहित दोउ भाई
देखत नंद मिले उठि धाई ॥ लिये लगाय कंठ सुखदाई
अब चलिहैं ब्रज कौ यह जान्यौ ॥ अति आनंद हृदय हरषान्यौ
लखि वसुदेव बहुत सुख पाई ॥ मिले नंद सौं सादर धाई ॥
उग्रसेन तब नंद जुहारे ॥ आदर सहित सकल बैठारे ॥
उग्रसेन वसुदेव उपगसुत ॥ सुफलकसुत अरु यादवगुणजुत
बैठे मिलि हरि हलधर भाई ॥ नंदहि लियै निकट बैठाई
और गोप ठाढे सब पेखें ॥ जसुमतिसुत कौ भाव न देखें
नंद मनहि अति मन अकुलाहीं ॥ चलत बेगि अब क्यों उ नाहीं
सबही के मन में यह आई ॥ हरि अब हम सों प्रीति घटाई
करत बिचार स्यामअ मन माहीं ॥ प्रीति बिवस बोलत सकुचाहीं
तब हरि यों मुख बचन उचारो ॥ बहुत कियो प्रतिपाल हमारो

दो॰ कहा कहत गोपाल नंदराय सुनि के परे
मोसों कहत कि आन सों किन कीन्हो प्रतिपाल
सो॰ चमकित जिय नंदराय भांति भांति सों मो सों कहो
गहवर हिय भरि आय टारि सकत नाहि नैनजल

तब हरि मधुर कह्यो नंदपाहीं ॥ सुनहु तात हम कहत लजाहीं
कही गर्ग तुम सों जो बानी ॥ सो तुम तब निहचै नहिं जानी ॥
पुत्र हेत हम को प्रति पारे ॥ मात तात जिमि अधिक दुलारे
खेलत हंसत बसत अजु माहीं ॥ जात इते दिन जाने नाहीं
हम कौं तुम दीन्हो सुख जेतो ॥ कह्यो न जात कहत दिन केतो

तब हलधर नंदहि समुझावत ॥ कहत न तात तुम कत दुख पावत ॥
करि कछु काज बहुरि ब्रज आवैं ॥ तुम बिन और कहा सुख पावैं ॥
हरि प्रगटे भू भार उतारन ॥ कह्यो गर्ग तुम सों सब कारन ॥
मात पिता हमरे नहिं कोऊ ॥ तुमरेई सुवन कहावैं दोऊ ॥
हमें तुमें सुत पित को नातो ॥ और परयो अब होत न हातो ॥
बहुत कियो प्रतिपाल हमारो ॥ जाव कहा उर ध्यान तुम्हारो ॥
जननि अकेली व्याकुल ह्वै है ॥ तुम्हें गये धीरज कछु पै है ॥
व्याकुल नंद सुनत यह बानी ॥ पुनि र कहत जोरि जुग पानी ॥
अब के चलहु स्याम मम गोहन ॥ ब्रज में मिलि आवो फिर ओहन ॥
मार्यो कंस कियो सुरकाजा ॥ दीन्हो उग्रसेन को राजा ॥
सुख बसुदेव देवकी पायो ॥ भयो सकल यदुकुल मन भायो ॥
तदपि जसोमति बिन गिरधारी ॥ को जानै प्रभु टेक तुम्हारी ॥

दो० ऐसे कहि अति बिकल ह्वै रहे नंद गहि पाय ।
भई छीन दुति हीन मति नैनन जल न रहाय ॥
सो० माया रहित मुकुंद नहीं बिरह संयोग तिहि ।
ब्रह्म पूरण नंद सब घटवासी एक रस ॥

देखि बिरह अति कातर नंदहि ॥ सखा व्है [illegible] सब उपनंदहि ॥
बिछुरत तजन चहत हैं प्राणा ॥ तब यह चरित रच्यो भगवाना ॥
मेरी अति दुस्तर निज माया ॥ जिन के जीव बिमुख भरमाया ॥
तिन कछु द्वंद कियो मन माहीं ॥ तब ह्वै बाधक कहत नंद पाहीं ॥
कत पछतात तात हौ राते ॥ ब्रज [illegible] केते ॥
कहा हुत तुम ते कछु जाही ॥ करि बिचार देखहु मन माहीं ॥
हैं ब्रज के नर नारि दुखारी ॥ ताते कोजत बिदा तुम्हारी ॥
ऐसे बोध कियो ब्रज नाथा ॥ तब नंद कह्यो नारि युग हाथा ॥
जो प्रभु तुम को ऐसे भाई ॥ तौ अब मेरी कहा बसाई ॥

जैहै ब्रजप्रभु कहे तुम्हारे ॥
बहुत करी तुम भस प्रभुताई ॥ नीच दसा लै ऊंच चढ़ाई
परम गंवार ग्वाल पशुपाला ॥ भयो धन्य सब जगत विसाला
दो० भेटि पाय संतप सवे कियो सुकृत को खान
भरी साखि चौदह भुवन सुर मुनि वेद पुरान ॥
सो० ऐसे कहि नंदराय परे वहुरि हरि के चरण ॥
लीन्हे स्याम उठाय कह्यो जानि सनमान तव ॥
तव वसुदेव विनय वहु भाखी ॥ भाग वहुत संपदा राखी
कियो जो हमप्रति तुम उपकारा ॥ ताको वदलो नहिं संसारा
वालक ये अपनेही जानो ॥ इहां उहां कछु भेद न मानो
सुनि नंद महर पछिताई ॥ रहे ठगे तन दसा भुलाई
उरध स्वास नैनन वहु पानी ॥ कै पितनन कत्हि जातन वानी
सो कछु संपति नंद ने लीनी ॥ विनती वहां स्याम सो कीनी
मांगत हौ प्रभु यह कर जोरी ॥ ब्रजपर कृपा होय नहि थोरी
तव सव गोप नृपति पहं आये ॥ वहुत बोध करि ब्रज हि पठाये
गोपसखा बोधे हरि सवहीं ॥ विदा किये आदर दै तवहीं
चले सकल ब्रज सोचत भारी ॥ हारे सर्वस मनहु जुवारी ॥
काहू सुधि काहू सुधि नाहीं ॥ लटपट धरत पग मग माहीं
ब्रज तन आत विलोकत मधुवन ॥ विरह वियाधा व्याकुल तन
दो० भय विरह वारिधि मगन अति अचेत अकुलाइ ॥
स्याम राम तजि मधुपुरी आये ब्रज नियराय ॥
सो० उनहि गये हरि गेह उग्रसेन वसुदेव युत ॥
ब्रजवासिन को नेह पुनि२ भो सुखते कहत ॥
पुनि२ नंद कहत पछिताई ॥ चूक परी हरि की सिवकाई
कहे लरिकाई निय यह अपराधू ॥ किये कर्म हम धीरमअसाधू

कोमल पद वन अतिकठिनाई ॥ तेहूं हरि पै हम गाय चराई
रंचक दधि के काज रिसाई ॥ बांधे यसुमति ऊखल लाई
इंद्र कोप ब्रज लोग बचाये । वरुण लोक सम हित उठि धाये
हम मति मंद तऊ नहिं जाने ॥ निकट बसत नाहिन पहिंचाने
तन धन लोभ कंस भइ पाई ॥ करि दीने आगे दोउ भाई ॥
ऐसे समुझि नंद निज करनी ॥ परे मुरछि व्याकुल अति धरनी
वार वार जोवत मग माता ॥ व्याकुल विन मोहन बलि ताता
आवत देखि गोप ब्रज ओरी ॥ हरषि हृदय आतुर उठ दौरी
धाई धेनु वत्स कों जैसें ॥ ॥ माखन प्यारे हैं धों कैसें ॥
कनियां लेवे को अतुरानी ॥ आये वलि मोहन यह जानी
दो॰ धाई अनि हरषित हिये सुनत रोहिनी आय
दरस आस धाई सबै ब्रज तिय हिय हुलसाय
सो॰ तेहि छन आरति आनंद ब्रजवासी ब्रज तिय सबै
अनि सकोच बस नंद सो दुख जान [illegible] ॥ नहीं ॥

अथ ब्रज को विरह लाल

आतुर सब [illegible] नंद पासा ॥ मन मोहन दरसन की आसा
देखे नंद [illegible] सब देखे ॥ स्याम राम दोऊ नहिं पेखे ॥
बूझत यसुमति अति अकुलाई ॥ कहं मेरे रामस्याम दोउ भाई
सुनत वचन व्याकुल नंदराई ॥ नैन नैं भरि नारि नवाई ॥
देखत सूखि गई ब्रजनारी ॥ जनु प्रफुलित कुमुदिन हिम हारी
जान्यो आन भई विधि सोई ॥ कहि गये वचन गर्ग मुनि जोई
अति व्याकुल सब हिन ब्रजनाथा ॥ भये सकल नर नारि अनाथा
परे भूमि सब दूर लगाई ॥ कौन दोष प्रभु हम विसराई ॥
जसुमति अति विलपत विलपानी ॥ कहत सरोस नंद सों वानी

ऐहै ब्रजप्रभु कहे तुम्हारे ॥ जात वचन मोपै ...
बहुत करी तुम मम प्रभुताई ॥ मोसुदसा लै ऊंच चढाई ॥
परम गंवार ग्वाल पशुपाला ॥ भयो धन्य सब जगत वि...
दो॰ भेटि पाय संतप सबै कियो सुकृत को खान
भरी साखि चौदह भुवन सुर मुनि वेद पुरान ॥
सो॰ ऐसे कहि नंदराय परे बहुरि हरि के चरण ॥
लीन्हे स्याम उठाय कह्यो जानि सनमान नव ॥
तब वसुदेव विनय बहु भाखी ॥ आगे बहुत संपदा राखी
कियो जो हम प्रति तुम उपकारा ॥ ताको बदलो नांहि संसारा
बालक ये अपने हि जानो ॥ इहां उहां कछु भेद न मानो
सुनि २ नंद महर पछताई ॥ रहे ठगे तन दसा भुलाई
उरध स्वास नैनन बहु पानी ॥ कैंपित तनक सिजात न बानी
सो कछु संपति नंद ने लीनी ॥ विनती बहुत स्याम सों कीनी
मांगत हौ प्रभु यह कर जोरी ॥ ब्रज पर कृपा होय नहिं थोरी
तब सब गोप नृपति पहं आये ॥ बहुत बोध करि ब्रजहि पठाये
गोप सखा बोधे हरि सबही ॥ विदा किये आदर दै तबही
चले सकल ब्रज सोचत भारी ॥ हारे सर्वस मनहु जुवारी ॥
काहू सुधि काहू सुधि नाही ॥ लटपटे धरण परत मगमांह
ब्रज तन आत विलोकत मुखन ॥ विरह विथा बाढी व्याकुल तन
दो॰ भये विरह वारिधि मगन अति अचेत अकुलाइ ।
स्याम राम तजि मधुपुरी आये ब्रज निय रोय ॥
सो॰ उतहि गये हरि गेह उग्रसेन वसुदेव युत ॥
ब्रजवासिन को नेह पुनि २ भी मुखते कहत
पुनि अक्रूर कहत पछिताई ॥ चूक परी हरि की सिवकाई
कहैं लीमानिय यह अपराधू ॥ किय कर्म हस धरम असाधू

रह्यौ मोहि तोहि हित लागो ॥ तब मैं बचन सक्यौ नहिं त्यागो ॥
सुनि सँदेस जसुमति दुख पागी ॥ रहे प्राण हरि चरनन लागी ॥
एक पलक बिछुरत हरि नाहीं ॥ गाहि रहे मिलन आस मन माहीं ॥
ब्रज घर घर सब कहत गुवाला ॥ किये कृष्ण मथुरा जो ख्याला ॥
मार्‍यौ रजक जाय हरि जबहीं ॥ नहिं जान्यौ निबहे कछु तबहीं ॥
चंदन बक्री कंस को लीन्हौ ॥ रूप अनूप कूबरी कीन्हौ ॥
वैसो धनुष तोरि पुनि डार्‍यौ ॥ फिरि दोउ भायन गज कौं मार्‍यौ ॥
रंगभूमि सब मल्ल पछारे ॥ असुर अनेक युद्ध करि मारे ॥
कहत हुते ब्रज मैं हरि जैसे ॥ कियो जाय कंसहि पुनि तैसे ॥
केस पकरि महि तुरत गिरायौ ॥ मारि यमुन जल माहिं बहायौ ॥

दो॰ उग्रसेन राजा कियौ निज कर चमर दुराय ॥
मथुरा नर नारी सबै आनंदे सुख पाय ॥ सो॰
पुनि भेंटे हरि जाय देवकि अरु बसुदेव सौं ॥
कह्यौ परम सुख पाय तात मात कहि भ्रात दोउ

नहीं भयो उत्सव अति भारी ॥ दियो दान बहु विप्र हँकारी ॥
हरि कौं बसन भूषण पहिराये ॥ मंगल सब नर नारिन गाये ॥
मथुरा घर घर बजी बधाई ॥ बहु संपति बसुदेव लुटाई ॥
अब नहिं गोप ग्वाल कहावैं ॥ बासुदेव सब नाम बुलावैं ॥
यदुकुल कमल सकल जग नायक ॥ बिरह बान बरनन गुण गायक ॥
भये कृष्ण मथुरा के राजा ॥ आहि न देहिं लयन अब काजा ॥
पुनि ग्वालन यह बात सुनाई ॥ बसे स्याम कूबिजा घर जाई ॥
भये जासु बस आनहि हित मानो ॥ कीन्हीं नाहि आपनी रानी ॥
राजा हरि कुबिजा भई रानी ॥ गोपिन सुनी जबहि यह बानी ॥
गई बिरह अनल पति सिराई ॥ सौति साल सार्‍यो उर आई ॥
भयो दुसह दुख ऊरध स्वासा ॥ मिटी स्याम आवन की आसा ॥

॥विदा होत फाटी नहिं छाती
अवर धै वचन सुनत उठि धाये॥ कहा लैन सुख ब्रज मैं आ[illegible]
दो॰ कैसे प्राण रहे हिये बिछुरत आनंदकंद
सुनी नहीं स्वारथ कथा कहूं श्रवण मतिमंद
सो॰ मैं मधुपुरि ही जाय पर्यो हो हरि को पाय कै
लीजे ठोकि वजाय अवश्य पनो ब्रजनंद यह
यह सुनि नंद परे मुरझाई॥ अति व्याकुल ब्रजलोग लु[illegible]
पुनि र कहत जसोमति टेरे॥ कहां छांडे दोऊ सुत मेरे॥
जीवन प्राण सकल ब्रज प्यारे॥ छोरि लियो वसुदेव हमारे
सुफलक सुत वैरी भयो भारी॥ लै गयो जीवन मूरि हमारी
हौं न गई अवशेष अभागी॥ सिखये [illegible] लागी
जो मैं जान पावती मोहन॥ तौ क्यों छांड़ि आवती मोहन
ऐसे रोवत करत विलापू॥ कहि न जात जसुमति परतापू
हरि विन सब नर नारि उदासी॥ आये ब्रज हि सकल ब्रजवासी
नहीं स्याम विन सदन सुहाई॥ मनहुं मसान भूमि धरि खाई
पूछति विलपि जसोमति मैया॥ कहां नंद कहां [illegible]
तुमको विदा [illegible] जब कीन्हो॥ हरि कछु मोहि संदेश दीन्हो
तुम कछु हरि सों विनय न भाषी॥ कह स्याम मन मैं [illegible]
दो॰ मैं अपनासौ बहु कियौ विप्र भक्त जन नाथ
जो चाहै सोई करै कहा सु मेरे हाथ॥ सो॰
हरि कहि केता [illegible] नाम वहु रि स्याम ऐसे कह्यो
करिके कछु सुर काम मिलिहौं तुमसौं आय कै
पुनि बोले ऐसे बल भैया॥ दुखी होन पावै नहिं मैया
धीरज देहु तात तुम जाई॥ कछु दिन मैं हम मिलिहैं आई

कंसमारिकै सो अवलोन्हौ ॥ ताकी प्रभुता प्रगट न कीन्ही
ब्रजवनिता त्यागी अवनातैं ॥ वूझी सकल स्याम की वातैं ॥
कहत एक तव सुन सखि री ॥ वे दिन हरि कौं विसरि गये री
लिये फिरत ही जव सद कथि ॥ पहिरावन सिखएह गत निया
घर घर डोलत माखन खाते ॥ जसुमति उरहन देत लजाते
वड़ भये जस कछु कसयाने ॥ वार घाट औ गुण वहु वाने
जो जो उन हम सो गुण ठान्यौ ॥ हम सब ता ही मैं सुख मान्यौ
जव भजि आप गोकुल मैं आये ॥ गोप भेष करि रहे छपाये ॥

दो० देव मनावन दिन गये वड़े होन की आस ॥
वड़े भये तव यह कियौ वसे कूवरी पास ॥
जसुमति लाड़ लड़ाय वारे ते सेवा करी ॥
ताहू कौं विसराइ भये देवकी पुत्र अव ॥

सुनौ सखी अव कह्यौ हमारौ ॥ नाहं कौ जो तिन कौ प्रतिपारौ
अजनु जग मैं कृन नाहिन माने ॥ निज स्वारथ लगि वहु गुण ठाने
ज्यौं भौंरा कल कंज सुहाई ॥ वैठत चाहि सुमन पर आई
रसहि चाखि पुनि हिन नहिं माने ॥ मिलन कुल हि जव होत सयाने
पालत काग पिकहि हित माने ॥ मिलन कुल हि जव होत सयाने
सोई भई हमहिं नंद हि ॥ कहिये कहा भला गोविंद हि ॥
ने खोटे मन कपट सयाने ॥ और परे परे पहिचाने ॥ ॥
वैठत अवन पआसन माहीं ॥ सुनि यत मुरली देखि लजाहीं
मोर पंख देखे नहिं भावै ॥ ब्रज को नाम लेत वहरावै ॥
सुरभी चित्र हू मैं कौं हेरत ॥ तौ लजाय इत उत मुख फेरत
हमरो नाम सुनत चपि जाहीं ॥ सुरत करत ग्वालन की नाहीं
येव कहा जाने पीर पराई ॥ जिनकी प्रकृति वरी कठिनाई

दो० भयो नयो अव राज कहां गये मात पितन गेह

नैननिजलधाराअतिवाढी॥ रहीसोचवैठीकोउ ठाढी॥
दो॰ जुरिआईं व्रजतियसबै सुनि कुविजाकीवात
लागीआपुसमें कहन मनदुखमन हरखात
सो॰ करीसुहागिनस्याम कुविजादासीकंसकी
आपुनपतिवहस्याम कियोनामतिरूपरविदित
लैग्रीसंडमिलीमगमाई॥ सुनियततानेअतिमनभाई॥
बुरीभलीकछुजातनचीन्हीं॥ वदनरूपदै समकरलीन्हीं
वेवहरखण नगरकोसोऊ॥ वन्योसंगअवनीकोदोऊ॥
कहतजुकछसोईअवमानै॥ निसदिनवाकेगुनहिं वखानै
जानिअनोरीनेहवढावै॥ अवनहिंसखीस्यामव्रजआवै
आपकह्योकछुरीसजनाई॥ स्यामसदाकेऐसे भाई॥
जवअक्रूरलेनव्रजआयो॥ कानिलागितवयहै सुनायो
नईकूवरीनारिवताई॥ तवहिंगयेताकेसंग धाई॥
वोलीएकओरतिनमाहीं॥ कुविजातुमदेखीकैनाहीं॥
दासीवेषनखजातजहांरी॥ तवनीकेहमताहिनिहारी॥
अवदेखीमालिनकीजाई॥ हंसतजाहिसवलोगलुगाई
वसतदिगनन्दमहलनजोई॥ सुनियतकेरीसुन्दरीसोई
दो॰ कोटिवारदाहीअनलकोटिकसोकिनसोइ॥
तोकतपीतरलेकहूंकैसउसोनोहोय॥ सो॰
हरितजदीन्हीलाजहमें होतसुनिकैहंसी॥
जायकुवरीकाजमथुरामारयोकंसनृप ॥
वोलीसखीऔरइकवानी॥ आलियहवातनहींतुमजानी
कुविजासदास्यामकीप्यारी॥ वेभरताउनकीवहनारी॥
तैसेंनहींताहिकरिदासी॥ राखीयेअवगातुगुराासी
रूपरतनकुवरिमेराख्यो॥ जिममोतीसीपनमैंभाख्यो

कंसमारि कै सो अवलीन्हो ॥ ताकौ प्रसुता प्रगट न कीन्ही
ब्रजवनिता त्यागी अब तातैं ॥ वूझी सकल स्याम की बातैं ॥
कहन लगी कहत सुन सखि एरी ॥ वे दिन हरि कौं बिसरि गये री
लये फिरत ही जब सब कनियां ॥ पाहि रखन सिख एह गत नूप
घर घर डोलत माखन खाते ॥ जसुमति उरहन देत लजाते
बड़े भये जब कछुक सयाने ॥ बार घाट औ गुण बहु वाने
जो जो उन हम सों गुण ठान्यौ ॥ हम सब ताही मैं सुख मान्यौ
जब भजि आप गोकुल मैं आये ॥ गोप भेष करि रहे छपाये ॥

दो० देव मनावत दिन गये बड़े होन को आस ॥
बड़े भये तब यह कियौ बसे कूबरी पास ॥
जसुमति लाड़ लड़ाय बारे ते सेवा करी ॥
ताहू कौं बिसराइ भये देवकी पूत अब ॥

सुनौ सखी अब कह्यौ हमारो ॥ नाहक कौ जौ लनु कौ पतियारो
जे जानु जग मैं कृत नाहिन माने ॥ निज स्वारथ लगि बहु अनुरागै
ज्यौं भौंरा कल कुंज सुहाई ॥ बैठत चाहि सुमन पर आई
रस लहि चाखि पुनि छिन नहिं माने ॥ मिलत कुलहि जब होत सयाने
पालत काग पिक हित माने ॥ मिलत कुल हि जब होत सयाने
सोई भई हमहिं अरु नंदहि ॥ कहिये कहा भला गोविंदहि ॥
जे खोटे मन कपट सयाने ॥ और परे परै पहिचाने ॥ ॥
बैठत अवन पर आसन माहीं ॥ सुनि यत मुरली देखि लजाहीं
मोर पंख देखें नहिं भावै ॥ कुंज को नाम लेत बहरावै ॥
सुरभी चिन्ह कमें को हेरत ॥ तो लजाय दृग उत मुख फेरत
हमरो नाम सुनत चपि जाहीं ॥ सुरत करत ग्वालन को नाहीं
यह कहु जाने पीर पराई ॥ जिन की प्रकृति परी कहु आई

दो० भयौ नयौ अब ब्रज व्हाँ गये मात पित गेह

नईनारिकुविजामिलीभयेसखानवनेह ॥ सो०॥
विसरीव्रजकीवान कुंजकेलिरस राज को ॥
गये आपनी घात दिनसुखदूनो लह्यौ॥ चौ०॥
कौन दर्द के करै यरेखौ ॥ सखि अपने जियसोच नदेखै
ना हरि नातिन यांति हमारी॥ तिनकौ दुखमानिये कहारी
गोपीनाथ नंद के लाला॥ अबन कहावत कान्हगुवाला
वासुदेव अवउहां कहावत॥ यदुकुलदीपभाटवस्गावत॥
नहिंवनमालगुंजउरमाही॥ मोरपक्ष माथे पर नाही॥
गइवनकीसवप्रीतिभुलाई॥ वासुरली संग गई सगाई
अववहसुरतहमतकवराजन॥ दिनदस प्रीतिकरीनिजकाजन
सवै अजानभई तेहिकाला॥ सुनिमुरलीकौ शब्द रसाला
अवमनजलनिधिखाज्योथाकै॥ फिरथगरगजहांजितताकै
तववहरूपाहुतीव्रजमाहीं॥ राख्योगिरधरकरतलमाहीं
कहतएकसुनियेव्रजनाथा॥ व्रजअवमानहुकियेअनाथा
वड़ेरो औरप्रतापकियोरी॥ हमहितदावानलअचितयोरी
दो० अव यह दाघ लगी हमें सछन्त सकुचत जीय
भयौवज्रहूतेकठिनविछुरतफटै न हीय॥
सो० अव लागे दिनजानसुनसखिमोहनलालविन
रहतदेहमेंप्रानविनवहमूरतिसांवरी ॥ ॥
रहतवदनदेखेविननैना॥ सखवरारहतसुनेविन वैना
रहतहियाविनहरिकरपरसे॥ वेधतवाणमनोभववरसे
अवसखियौसखिनिपदुखभारी॥ मनहुनैनतनप्राणहमारे
जवविधिवालकवतसुधारयो॥ तवहरितेसहुओरयनाथ
अनुवैसेहुकुवरकन्हाई॥ विरहअग्निब्रजओरचलाई
ऐसेमनगुनगुनिगोपाला॥ भई विरहवससवब्रजवाला

प्रीतिहिके दिन उपजौ दुख मनमें ॥ ब्यापी दई अवस्था तनमें
कोऊ कहत लोचन भरे हमारे । क्यों जीवें हरि बिन [illegible] ॥
ज्यों चकोर बिन चंद दुखारे ॥ जैसे बिन बारि जो बन वारे ॥
[illegible] ग्रीषम के खंजन ॥ जैसे दुखी भ्रमर बिन कुंजन
स्याम मिधुते बिछुर परे री ॥ तरफ़रात ज्यों मीन खरे री ॥
भरत दरत पुनि रपै कुला हीं ॥ हरि बिन धरत धीर हग नाहीं
दो० देख्यो नहीं सुहात कछु गेह बिन बननंद नंद
विरह विथा जारत नहीं भयो तपत अति चंद
सो० विना स्वांस को देह और रूप होजात जिमि
तिम लागत ब्रज गेह हरि बिन सखी भयावनो
इहिं बिरियां बनतें हरि आवत ॥ दूरहि ते कल बेणु बजावत
कबहुंक परम चतुर गोपाला ॥ गावत ऊंचे स्वर नंदलाला
कबहुंक लैलै नाम सुनावत ॥ धौरी धूमरि धेनु बुलावत
देत हगन सुख बनतें आवत ॥ हम मन मोहन रूप दिखावत
और सखी बोली इक ऐसे ॥ वह री कबहुं देखिये वैसे
बैठे ग्वाल बाल कल साथा ॥ बातन खात असन ब्रजनाथा
इक दिन दधि चोरन मम धामा ॥ मैं दूरि देखि रही इक ठामा
वे भाजन मल खिपरि कहीं ॥ तब मैं धाय लई गहि बाहीं
मुख करि पीछे लियो गहि कनियां ॥ प्रेमप्रीति रसके इष दमियां
रहत लागि छाती सो जैसे ॥ सो वह कहो जात सुख कैसे ॥
जिन धामन अब मुष अवलोके ॥ ते अब धीर २ खात बिलके
सुमिरि २ वे गुण गण नाना ॥ हरि बिन रहत अधमतम धामा
दो० [illegible] कहिये एसखी मनमोहन के खेल
उन बिनु अब गोकुल भयो ज्यों दिया बिन तेल
सो० [illegible] जल छाय सुमिरि २ गुण स्याम के

नईनाथिकुविजाभिलीभयेसखानवनेह ॥ सो०॥
विसरीब्रजकीवात कुंजकेलिरस राज्ञ कौ ॥
गये आपनी घात दिनसुखदनौ लहौ॥चौ०॥
कौन दंव के करै यरेखौ ॥ सोचि अपने जियसोच नंदसै
ना हौरेनातिन पांतिहमारी॥तिनकोदुखमानियै कहारी
गोपी नाथ नंद के लाला॥ अवन कहावतकान्हगुवाला
वासुदेव अव उहांकहावत॥यदुकुलदीपभाटवरगावत॥
न हिवनमालगुजउरमाही॥मोरपच्छ माथे पर नाहीं॥
गहवनकीसवप्रीतिभुलाई॥वासुली संग गई सगाई
अववहसुरतहमतकवरजन॥दिनदसप्रीतिकरीनिजजन
लये अज्ञानभई तेहिकाला॥सुनिमुरलीकोशब्द रसाला
अवमनजलनिधिखपज्योथाके॥फिरफिरजाहीजितहिताके
तववहरूपाकृतीब्रजमाहीं॥रास्योगिरवरकरनलमाहीं
कहतएकसुनियेब्रजनाथ॥ब्रजअवमानहुकियोअनाथ॥
वड़ीरेओरप्रतापकियोरी॥हमहितदावाअंचितयोरी॥
दो०॥अवयहदोषलगौहमैसकुचतजोय
भयौविच्चहेतुकठिनविछुरतफटैन होय॥
सो०॥अव लागेदिनजानसुनसखिमोहनलाल विन
रहतदेहमेमानविनवहसूरतिसावरी ॥ ॥
रहतवदनदेखेविननेना॥सरवरारहतसुनेविनवैना॥
रहतहियोविनहरिकरपरसे॥वेधतवाणमनोभववरसे॥
अवसखियोसखिनयदुखभारी॥मनहुनैनतनप्राणहमारे
जवविधिवालकवत्सहरयो॥तवहरितेसकुचौरवनायो
जनुवैसईकुवरकन्हाई॥विरहरूपिब्रजओरचलाई
ऐसमनसुनसुनिगोपाला॥भईविरहवससवब्रजवाला॥

देगयेवह अवलगदीती॥मिलिहौंआ बहुरी रिपुजी
हरिकैनुउतहि मग जोवत॥रोयरोयउरकंचुकि धोवत॥
जैसो दिननिस तैसी जाई॥पलभर नींद परत नहि जाई
मंदसमीरचंद्र दुखदाई॥ इनतें जरत सेज अधिकाई

दो॰ सपने हूतो देखिये नींद परे जो नैन॥
कीने विविधि उपाय मन लहत न चैन
सो॰ बोलिउठी इक वाम सुन सखि हौं तोसों कहौं
जवतें बिछुरे स्याम आज लुखे मैं सपन मैं॥

आयेजनुमम मदन गुपाला॥ हँसि भुज पारि गहे नंदलाल
कहाकहौं आरी नीं भइ री॥ एकहू छण नहि ओर रहीरी
ज्यों चकई लखि निज पर छाहीं॥ पूतिहि जानि हरषी मनमाहीं
तवहीं निठुर विधाता आई॥ दयो पवन मिसलल...
मेरी दसा भई सखि सोई॥ जो जागौं तो हिग नहि कोई॥
देखहु कहा अधिक अकुलाई॥ विरह जरे अस्लका अजराई॥
कहा कहौं केहि दोष लगाऊं॥ अपनो चूक अभागी ...ऊ
विछुरत ही नहि क्यों मरीरा॥ समुझि परी तवही यह पीरा
महा दुखित अव अंग हमारे॥ भये सखी दोउ नैन पनारे॥
अनिही भ्रम मानै विन देखे॥ चाहत रूप स्याम को पेखे॥
रसना यह नेम गहि राख्यो॥ हरि विन और न चाहत भाख्यो
जवतें विछुरे कुंवर कन्हाई॥ तवतें भये सवै दुखदाई॥

दो॰ वई निसि वई दिवस वेई ऋतु वेई मास
वेदल सवै सुभाव जनु विनहीं मदन विलास
सो॰ चली और ही चाल अवया व्रज में ए सखी
विमुख भये गोपाल भये दुखद जे सुखद सव

गृह कंदरा तेज भई मुखी॥ ...

कोहियेकहासुनाय भये पराये कान्ह अब
एक प्रलाप करत तिन माहीं॥ कहैं जाय कोउ न हरि पाहीं
लेहु आय निज गाय घनेरी॥ फिरत नाहिं ग्वालन के फेरी
विडरी फिरत सकल वन माहीं॥ तुम विन नाहिं कहिं पतियाहीं
अपने जान संभारहु आई॥ मोतिं विसरी ब्रज हित कन्हाई
विलखत गाय वत्स अरु ग्वाला॥ नेकु सुनावहु वेणु रसाला
बूडत विरह सिंधु में नारी॥ लेहु आय निज भुजनि कारी॥
कोउ कहत कहं को उजाई॥ वसौ फेरि ब्रज कुंवर कन्हाई
अब नाहिं तुम सों गाय चरावैं॥ नाहिं जगाय वन मातु उठावैं
माखन खात वरजिहैं नाहीं॥ नाहिं डरहन ब्रज सुंदरि लेजाहीं
मेहदी वरिजसुमति कोटेहू॥ नाहिं अव ऊखल सें वे धेहैं
चोरी प्रगट करैं नहिं काहू॥ नहीं जनावैं अवगुण ताहू॥
वेनी फूल गुहन नहिं कैहैं॥ नहीं महूं अवरु चूरा दिवैहैं
दो॰ मांगत दान न वरजिहैं हठ नाहिं करिहैं मान
आय दरस अब दीजिये रहत न तुम विन प्रान
सो॰ ऐसे कहिं गहि पाय त्यावहु फेरि मनाय हरि
वसहिं वहुरि ब्रज आय तो नंद नंदन सांवरे॥
एक कहत अब हरि नहिं आवैं॥ नृप पद तजि क्यों ग्वाल कहावैं
जहं गजरथ घोड़ चलत कहाई॥ वहां कहां मापय चुरावहिं भाई
उहां पाठ वरपाहरि दिखावैं॥ इहां अवकामरि क्यों मन भावैं
अब उन जसुमति मातु विसारी॥ कौन चलावै बात हमारी
बोली अपर सखी विलखाई॥ भये निठुर अब कुंवर कन्हाई
करी प्रीति हमसों हरि ऐसी॥ सुन सखि वेलि लगत मीन कों जैसी
जल फल मीन निकट अकुलाने॥ नीरक कहु उर पीर न जाने॥
इतनो दरद यानहिं कीन्ही॥ वीते अवधि खवर नहिं लीन्ही

देगये । वह अचलगरवीती ॥ मिलिहौंआयवहरीरिपुजीती

हारैमनुउतहिमगजोवत ॥ रोयरोयउरकंचुकिधोवत ॥

जैसोदिननिसतैसीजाई ॥ पलभरनींदपरतनहिंजाई

मंदसमीरचंद्रदुखदाई ॥ इनतेंजरतसेजअधिकाई

दो० सपनेहूतोदरिये नींद परे जो नैन ॥

कीनेविविधिउपायमनकोंहूलहत नचैन

सो० बोलिउठीइकबामसुनसखिहौंतोसोंकहौं

जबतेंबिछुरेस्याम आजलखे मैं सपन मैं ॥

आयेजनुममसदनगुपाला ॥ हंसिभुजपारिगहेनंदलाला

कहाकहौं आलीमुदभईरी ॥ एकक्षणनहिंऔररहीरी

ज्योंचकईलखिनिजपरछाहीं ॥ प्रीतिहिजानिहरषीमनमाहीं

तबहींनिठुरविधाताआई ॥ दियोपवनमिससलिलडुलाई

मेरीदसाभई सखि सोई ॥ जोजागींतौदि[illegible]हिंकोई ॥

देखकहाअधिकअकुलाई ॥ बिरहअगिनिअस[illegible]ाई ॥

कहाकहौं केहिदोषलगाऊं ॥ अपनोचूकस[illegible]ऊं

बिछुरतहीननहितज्योसरीरा ॥ समुझिपरीतबहींयह पीरा

महादुखितअवअंगहमारे ॥ भयेसखीदोउनैन पनारे ॥

अतिहीभ्रमभातेविन देखे ॥ चाहतरूपस्यामको पेखे ॥

रसनायहनेमगहिराख्यो ॥ हरिविनऔर नचाहतभाख्यो

जबतेंविछुरेकुंवरकन्हाई ॥ तबतेंभयेसबै दुखदाई ॥

दो० बहुईनिसबईदिवस बईं ऋतु बई मास

बदलसबैस्वभावजनुविनहीमदनविलास

सो० चलीऔरहीचाल अबयाब्रजमेंर सखी

बिसुखभयेगोपालभयेदुखदजेसुखद सब

गृहकंदरातेजभई सखी ॥ [illegible]

सीयुत अलीमिलय घसनीरा ॥ होत अधिक नातेउर पीरा
फूले ... फूल वन डारी ॥ करत दे खियत मनहु पंगारी
हरि विन फूल लगत जिन कैसे ॥ मनहु मिमूल सूरउर जैसे
नव दुनत रुन अमृत फल लागा ॥ अव ते फल सव विषरस पागा
तैपत तेल सम वारिद पानी ॥ उवत दाहु सम चातक ज्ञानी ॥
त्रिविधि समीर तीर सम लागे ॥ कोकिल शब्द अग्नि जनु दागे
सुन सखि चातक दोष न दीजे ॥ ज्यों ये पाप को सोके जीजे
जैसे पिय रहु मर टलावत ॥ तैसे ई कहि २ यह गावत ॥
अति सुकंठ पीतम हित मानी ॥ पाण न हिरदत रहत पिय वानी
आप सुधार सखी सुख पावे ॥ टेरि टेरि विरहिन कों ज्यावे
जो यह खग नाहि करत सहाई ॥ लहत प्राण तो दुख अधिकाई

दो० यापक्षी सम और को ॥ जु स्वस्थ सुकृत समाज
सुफल जन्म है तासु को जो पावे परकाज ॥

सो० मगन सकल ब्रजबाल ऐसे हरि के विरह सुन
नहिं विसरत नंदलाल सोचत जागत दिवस निस

पथिक जात मधुवन तन हेरे ॥ ताहि धाय ब्रज जियसब घेरे
कहल परे हम पाय तुम्हारे ॥ सुन हू चयह वचन हमारे
उत है वसत कूस ब्रजनाथा ॥ कहियो तिन सों ब्रज की गाथा
तुमजो इन्द्र को यज्ञ नसायो ॥ पुनि गिरि कर धर ब्रज हि बचायो
सो अब वह विरह व्है आयो ॥ चाहत है ब्रज फेरि वहायो
वरसत निसदिन दृग घन कारे ॥ वढ़त सुचन विच सलिल पनारे
ऊरध सास पवन झकझोरे ॥ गरजत शब्द पवन घन घोरे
महा वच दुख दुख द्रुम डारे ॥ व्याकुल मृग सकल अति मारे
विथा प्रवाह च ढ्यो अति भारी ॥ वूड़त विकल सकल ब्रजनारी
विन वन मगन सव नाथ तुम्हारो ॥ जानि आपनो अभय उवारो

गये मिलन काहू श्री सुखदानी ॥ अवधि दीते सच्यहि सिरानी
तुम बिन तलफत प्राण हमारे ॥ जैसे मीन सलिल तें न्यारे ॥

दो॰ एक बार फिरि आय कै देहु सुदरसन स्याम
तुम बिन ब्रज ऐसो लगत ज्यों दीपक बिन धाम

सो॰ मिलते बेन बजाय अब कहु कृपा भई कहा
पुनि कह कारि हो आय प्राण गये ब्रज आवते

सुनहु पथिक तोहि राम दुहाई ॥ कहियो यह मोहन सों जाई
तुम बिन राधेके न तनु आई ॥ भई सब विपरीति बनाई ॥
बदन छपाकर यो निछु पानी ॥ अब राहु गई कलंक निसानी ॥
आंखि थीं हुती कमल पखरीसी ॥ सो अब मनहु रंग निचुरीसी ॥
आंच लगे कंचन जिमि काची ॥ तिम तन बिरहानल की माची ॥
कदली दल सो पीठ सुहाई ॥ सो अब मानो उलटि मगाई
सुख की संपति सकल नसानी ॥ जागत भई कोकिला बानी
अब स बिसाद मान की नासी ॥ ह्वै रहि तुम्हरे दरस पियासी
चातक पिक मृगपति कुल जाता ॥ तब इनको देखन अनरदा
अब तिन सों पूछत है धाई ॥ तुम्हरे चरण कमल कुम्हलाई
ललिता दिक सखियन लखि धाई ॥ जाति अपरन्चा ति गर्व बढ़ाई
अब कहि सखी तिन्है अकुलाई ॥ मिले राय के कंठ लगाई

दो॰ सुधि बुधि सब तन की गई रह्यो बिरह दुख पाइ
हीन चहत दसई दसा बेगि मिलहु तेहि आइ

सो॰ ऐसे निज निज हेत कहत संदेस स्याम सों ॥
पथिक कहि चलन न देत [illegible] साँझ ताको तहां

बिरह बिकल सब ब्रज की बाला ॥ हरि वियोग दुरपीर बिसाला
हरि दरसन को कल नहि पावे ॥ जिन्हि [illegible] काहू रखियामन
अवधी पहा बन नत नामे आई ॥ कहत तिनहि कोउ अन्न स्वाई

सींचत अली मलयज घनसीरा॥ होत अधिक तातें उर पीरा
फूले ... फूल वन डारी॥ करत दुखित मनङ्ग पंगारी
हरि विन फूल लगत तिन कैसे॥ मनङ्ग त्रिसूल सूर उर जैसे
नव दल नत रुन अमृत फल लागे॥ अवतें फल सब विष रस पागे
तपत तेल सम वारिद पानी॥ उठत दाह सम चातक बानी॥
त्रिविध समीर तीर सम लागे॥ कोकिल शब्द अग्नि जनु दागे॥
सुन सखि चातक दोष न दीजे॥ ज्यौं ये पाप को सीके जीजे
जैसे पिय २ हम रट लावत॥ तैसे ई कहि २ यह गावत॥
अति सुकंठ पीत मह हित मानी॥ हाराम नहि रटत रटनु पिय बानी
आप सुधा रस सखी सुख पावे॥ टेरि टेरि विरहिन को ज्यावे॥
जो यह सब मनहि करत सहाई॥ लहत प्राण तो दुख अधिकाई

दो॰ या पक्षा सम और को पुन्य सहित सुकृत समाज
सुफल जन्म है तासु को जो पावे पर काज॥

सो॰ मगन सकल ब्रज वाल ऐसे हरि के विरह स्न
नहि विसरत नंद लाल सोचत जात दिवस निस

पथिक जात मधुवन तेन हेरे॥ ताहि पाय ब्रज जिय सब घेरे
कहन परी हम पाय तुम्हारे॥ सुनहु चय यह वचन हमारे
उत है बसन कूप ब्रजनाथा॥ कहियो तिन सों ब्रज की गाथा
तुम जो इन्द्र को यज्ञ नसायो॥ पुनि गिरि कर धर ब्रजहि बचायो
सो अब वह विरह ह्वे आयो॥ चाहत है ब्रज फोर बहायो
बरसत निसदिन दृग घन कारे॥ बढ़त सुखन विच सलिल पनारे
ऊरध स्वास पवन झकझोरे॥ गरजत शब्द पवन घन घोरे
महा विषम दुख दुख दुम डारे॥ व्याकुल पंग सकल अति मारे
विथा प्रवाह बढ़यो अति भारी॥ बूड़त विकल सकल ब्रजनारी
चितवत मग सब नाथ तुम्हारी॥ जानि आपनो आय उबारो

दो॰ कोऊ ऐसें कहि उठत बरजत बोलत मोर ॥
र ह्यो परत नहिं टेर सुनि बिन श्री नंदकिशोर ॥
सो॰ बोलत करत बिहाल मोर सखी बैरी भये
बसे बिशेष गुपाल ये बनतें न मरें टरे ॥ चौ॰
बिरह मगन यों ब्रजकी नारी ॥ नहीं कृष्ण सों पलभर न्यारी
रही कृष्ण छवि दृगन समाई ॥ रसना कृष्ण नाम रट लाई
मन में गुणहिं सदा गुण हरि के ॥ श्रवण रहे हरि को यश भरि के
बसी स्याम मूरति उर माही ॥ बिसरत सुरत एक पल नाही
बैठत उठत चलत घर बाहिर ॥ स्याम सनेह युत प्रभ कृपा हिर
सोवत जागत दिन अरु राती ॥ प्रीतम कृष्ण प्रीति रस माती
सब अंग कृष्ण प्रेम रस पागी ॥ भई कृष्णमय सकल सभागी
धनि सो प्रीति कृष्ण सों लागी ॥ धनि सो सुरति कृष्ण रस पागी
धनि सो सुख हरि संगति हारी ॥ धनि सो दुख हरि बिरह दुखारी
धन्य परेख्यो हरि सों जाई ॥ धन्य सरेख्यो हरि को होई ॥
धनि सो ज्ञान ध्यान धनि सोई ॥ जप तप धन्य जो हरि हित होई
धन्य जन्म जो हरि के दासा ॥ सब विधि धन्य जिन्हें हरि आसा
दो॰ नंद यशोमति गोपि कन निसवासर हरि ध्यान
ब्रजबासी प्रभुदास की आस रहै लगि प्रान ॥
सो॰ बिसरे सब ब्यवहार और न दूजी गति कछु
अंधल कुटिल आधार एक सुरति नंद नंद को ॥

अथ यज्ञोपवीत

रहे जाय मथुरा हरि जबतें ॥ नित नव मोद होत तहं तबतें
देवकि मन अभिलाष पुरावै ॥ निरखि रहै उ सुत सुख पावै
परमानंद मगन बसुदेऊ ॥ सुखी सकल यादव गण तेऊ

हौंतौविरहजरीसंतापी॥तूकतजारतरेखगपापी॥
पियपियकरिकरिअधरातपुकारै॥मूढमृतकअवलनकतमारै
तूनाहिसुखितदुखितबिननारी॥तेकुलसमुझतसवपरपीर
करतकहाइतनीकठिनाई॥हरिबिनबोलतब्रजपरआ
उपजावतबिरहिनउरआरत॥काहेअगिलेजन्मबिचारत
एककहतचातकसौंटेरी॥हेसारंगहमचेरीतेरी॥
पीउहाँहैंजहांसुखदाई॥ऊंचेटेरसुनावहुजाई॥
गईग्रीषमपावसऋतुआयो॥सबकाहूचितचावबढ़ायो
तुमबिनब्रजपतियहललतऐसे॥नावबिनाकेरियाकीजै
दो॰भलीगतेरीकह्यौतेरेहितघनस्याम॥
लेऊसुयशचातकबड़ोलखआवहुसुखधाम
सो॰सुनिचातककेवैनकोउसखिऐसेकहत
यहनिठुरसुखदैनमांगेमोहिंप्यारेपीवते
निसुदिनपियरटनबिचारो॥पीकोबिरहभयौज्योंक्वारो
स्वातिबूंदलगिरहतदुखारो॥तज्योसिंधुजलकैसेखारो
आपपीरिपरयोरहिपावै॥जियकोजीवननामसुनावै
प्रेमबारलाग्योजिमिहीरे॥जानबियाप्रेमकोसाई
कोउकहतकोकिलटेरी॥मधुरीस्वरसीसरवहुकमेरी
वसतजहांहितुरूपकन्हाई॥फिरआवहियांकिनहूपाई
तूकुलीनकोकुलासयानी॥सवाहिसुनावतमीठीवानी
तासमकोउनहींउपकारी॥जानतहैविरहिनदुखभारी
उपवनधायस्यामकोटेरी॥कहियोअवलनमन्मथघेरी॥
अवसुनायमधुरकलवानी॥ब्रजलैआवस्यामसुखदानी
जइहैतिनमोहनहमचेरी॥गावहिंगीकलकीरातनूरी
अपनउपलदीमिलतनहिंयेरी॥सतमुरविकतुअयशकेरी

दो॰ कोऊ ऐसें कहि उठत वरजहु वोलत मोर ॥
रह्यो परत नहिं टरसुनि विन श्रीनंद किशोर
सो॰ वोलत करत विनूल मोरकु सखी वैरी भये
वसे विशेश गुपाल ये वनतें न मरे टरे ॥ चौ॰
विरह मगन यौं ब्रजकी नारी ॥ नहीं कृष्ण सों पलभर न्यारी
रहीं कृष्ण छवि हगन समाई ॥ रसना कृष्ण नाम रटलाई
मन में गुणगहिं सदा गुण हरि के ॥ श्रवण रहे हरि कौ यश भरिके
वसी स्याम मूरति उर माही ॥ विसरत सुरते एक पल नाही
वैठत उठत चलत घर वाहिर ॥ स्याम सनेह गुप्त प्रकट जाहिर
सोवत जागत दिन अरु राती ॥ प्रीतम कृष्ण प्रीति रस माती
सव अंग कृष्ण प्रेम रस पागी ॥ भई कृष्णमय सकल सभागी
धनि सो प्रीति कृष्ण सों लागी ॥ धनि सो सु[illegible] पागी
धनि सो सुख हरि संग विहारी ॥ धनि सो दुख हरि विरह दुखारी
धन्य परेखो हरि सों जोई ॥ धन्य सरेखो हरि को होई ॥
धनि सो ज्ञान ध्यान धनि सोई ॥ जपतप धन्य जो हरि हितहोई
धन्य जन्म जो हरि के दासा ॥ सवविधि धन्य जिन्हें हरि आसा
दो॰ नंद यसोमति गोपि कन निसवासर हरि ध्यान
ब्रजवासी प्रभदासकी आस रहे लगि प्रान ॥
सो॰ विसरे सव व्यवहार औरन दूजी गति कछू
अंचल कुटि आधार एक सुरति नंदनंद की ॥

अथ॰ यज्ञोपवीत

रहे जाय मथुरा हरि जवतें ॥ नित नवमोद होत तहं तवतें
देवकि मन अभिलाष पुरावै ॥ निरखि रहै उ सुत सुख पावै
परमानंद मगन वसुदेऊ ॥ सुखी सकल यादवगण तेऊ

मुदितसकलमथुरापुरवासी॥ देतसबनसुखप्रभुसुखरासी॥
एकदिवसवसुदेवसुजाना॥ बोलेजेकुलमध्यप्रधाना॥
करिसादरमानतहांबडाई॥ तिनसौंकहियहबातसुनाई॥
रामकृष्णअवलौंदोउभाई॥ ग्वालनमध्यरहेहरिजाई॥
यदुवंसिनकीरीतिनजाने॥ हैंअबहूकुलधर्मअयाने॥
तातेंयहविचारउरकीजे॥ यज्ञपवीतदुहुनकोदीजे॥
सुनियेवचनसबनमनभाये॥ गर्गआदिसबविप्रबुलाये॥
पूछिसुदिनशुभलग्नधराई॥ यज्ञकाजसबसाजमगाई॥
सकलतीरथनतेंजलआये॥ रामकृष्णतासमेंन्हवाये॥

दो॰ सकलवेदविधिमन्त्रपढिधारिअवसेकपुनीत
दोउभायनकोगर्गमुनिदियोयज्ञउपवीत॥

सो॰ अंतनपावैशेशवेदलाभजाकोसकल
ताहिदियौउपदेशगायत्रीगुरुगर्गमुनि

दियोदानवसुदेवअनेका॥ पूजेसबद्विजसहितविवेका॥
सबनरनारिनमंगलगायो॥ वंदीजननद्रव्यबहुपायो॥
सखिकौतुकसुरगणसुखपावें॥ बरषिसुमनदुन्दुभीबजावें॥
अतिआनन्दभयोसबकाहू॥ माततातउरपरमउछाहू॥
पुनिइकदिनवसुदेवसुजानी॥ यहइच्छाअपनेमनठानी॥
पंडितभलोकहूंजोपैये॥ तौविद्यापढसुतनपढैये॥
काहूनवयहबातबषानी॥ सांदीपनपंडितबहुज्ञानी॥
रहैअवंतीपुरीकेमाहीं॥ तासमपंडितकोऊनाहीं॥
यहसुनिकृष्णसकलगुणखानी॥ पितुकोमनकीरुचिपहिचानी॥
ह्वैकेनम्रसहितदोउभाई॥ विद्यापढनगयेयदुराई॥
वेदविहितसबहरिकीन्ही॥ अल्पकालविद्यासबलीन्ही॥
लषिप्रभावगुरुपत्निसुखपायो॥ जानिजगतपतिप्रतिहरषायो॥

नवहरिगुरुसोंजोरिकरबोलेसहितसनेह
चाहियगुरुकछुदक्षिणामांगिसोहमसोंलेहु
सो॰तवगुरुकह्योविचारितुमप्रभुकर्त्ताजगतके
बांभनेहूंनिजनारिजोवहकहैसोदीजिये ॥
तवसंदीपनतियपैआई ॥ वचनकृष्णकेताहिसुनाई
कहिहरिदेनदक्षिणाहमकों ॥ मांगोकहसोवूझैतुमकों ॥
मरेहुतेनाके सुत दोऊ ॥ तिनमांगेहरिसोंपुनिसोऊ ॥
कृष्णसकलजीवनकेस्वामी ॥ जलथलसवजिनकेअनुगामी
गयेवहांभक्तनदुखहारी ॥ जगउतपतिपालनलैकारी
चाहैकियोहोयसवसोई ॥ आनिदियेगुरुकेसुतओई
भयेसुखीद्विजअरुद्विजनारी ॥ सुतमेंपातमिटोदुखभारी
है प्रसन्नगुरुआसिषदीन्हों ॥ नमस्कारप्रभुगुरुकोकीन्हों
गुरुआयसुलैपुनिदोउभाई ॥ आयेमधुपुरिजनसुधलाई
तातमातलखिअतिसुषपायो ॥ भयोमनोरथसवमनभायो
राजकाजपुनिप्रभुसवकरई ॥ उग्रसेनआयसुअनुसरई
हितजनपरजननरअरुनारी ॥ सुखीसकलहरिवदननिहारी
दो॰ऊधोअरुअक्रूरयेसखास्यामकेसाथ
मिलवैठनखेलतहसतइनकेसंगयदुनाथ
सो॰व्रजवासिनकोध्यानव्रजवासीप्रभुकेसदा
यदपिब्रह्मसुखखानतदपिभक्तवशप्रेमरस

अथउद्धवव्रजगमनलीला

ऊधोयदुपतिसखासज्ञानी ॥ एकब्रह्मसुखसोंरतिमानी
हरिकोनिर्गुणरूपकरिमाने ॥ प्रेमकथाकछुउरनहिंआने
तवहरीव्रजकीवातचलावें ॥ तवऊधोहंसिकैउचटावें ॥

हरिलषिमनहींमेंनपर्छिनाहीं॥ भलीवानियांकीयहनाहीं
रूपरेखजाकेनहिंकोई॥ धस्योनेमउरमेंदृढ़सोई॥
निर्गुणकथायोगकीगावै॥ जामेंकछुरसमादनपावै
मानतएकब्रह्मअविनाशी॥ जानगर्वमेंरहतउदासी॥
बिछुरनमिलनदुःखसुखनाहीं॥ नहिंप्रेमउ[illegible]
कनककलशपानीबिनजैसे॥ याकोरूपबन्योहैतैसे॥
जोहौंकहौंकहायहमानै॥ निदरिशोरहमारीठानै॥
कहियेकाहिप्रेमकीगाथा॥ बन्योहैसबयसकोमाथा॥
ब्रजकोध्यानसदाउरमेरे॥ प्रेमभजनयाकेनहिंनेरे॥

दो० कहाँयसोदानन्दकेसुखदलालनअरुमात
कहँकहँसुखब्रजधामकोनाहिंबिसरतएक
सो० कहाँसखनकोसंगकहँमैंलिवृन्दाविपिन
कहँवहप्रेमतरंगवंशीवटयमुनानिकट॥

कहांनवलब्रजगोपकुमारी॥ कहँराधावृषभानुदुलारी॥
कहँवहप्रीतिरीतिसुखसंगा॥ कहँमासरसरणधिरतरंगा॥
कहाँकुंजवनकीलीनताई॥ कहँमानकलोलसुहाई॥
कहँलगिब्रजकेसुखनसँभारौं॥ जोहौंलगिपुरवैकुंठविसारौं॥
कहियेयहरसकाकेआगे॥ ऊधौसुनतप्रेमकीभागे॥
कैसेप्रेमहोयब्रजमाहीं॥ मेरेकहेमानिहैनाहीं॥
ब्रजमेंयाकोदेहुपठाई॥ पैहैप्रेमतहाँयहजाई॥
याकेमनअभिमानबढ़ाऊ॥ कहँयुवतिनकीप्रीतिसुनाऊ॥
पहुँचातयहपातिउरआनी॥ पठऊँब्रजयहितापसज्ञानी॥
कहीचाधीतिनकोकरिआवो॥ प्रेमअमरयहज्ञानसमुझावे
जेहतुरतसुनतयहबाता॥ कहिहैहरिजानतसोहज्ञाता॥
करिअभिमानतुरतब्रजजैहैं॥ ह्वांतेजायसाधुह्वैऐहैं॥

दो॰ ऐसे हरि बैठे करत अपने मन अनुमान ॥
ऊधो के उरतें करौं दूरि ज्ञान अभिमान ॥ सो॰
आय गये तिहिं काल ऊधो जी हरि के निकट
विहँसि मिले गोपाल सखा २ कहि अंक भरि
अति सुंदर सांमल छवि छायो ॥ जनु हरि कौ प्रतिबिंब सुहायो ॥
अंश भुजा दै के यदुराई ॥ ऊधो सों व्रज बात चलाई ॥
ऊधव सुनो कहौं तुम पाहीं ॥ व्रज लोग खबो हिं विसरत नाहीं
नेकहु नहीं इहां मन लागत ॥ उठि २ पुनि उत हीं को भाजत
यह मन होत तहीं पुनि जैयै ॥ गोपी ग्वालन में सुख पैये
कहं वह हेत यशोमति मैया ॥ दै दै माखन लेत बलैया
नहिं विसरत मन तें बिसराई ॥ वह राधा की प्रीति सुहाई
गोप सखा वृंदावन गैया ॥ नहिं भूलत बंसी वट छैया ॥
त्याग सखा बहुत सुख पायो ॥ मिटत नहीं मन में पछतायो
ऊधो सुनि बोले मुसकाई ॥ कहा कहत हरि यो अकुलाई
सदा रहत यह हित थिर नाहीं ॥ जग ब्यौहार सकल मिथ्या ही
मो सो सुनो बात यदुराई ॥ एकै ब्रह्म सदा सुखदाई ॥
दो॰ जब ऊधो ऐसे कही विहँसे ज्ञान की बात
तब यदुपति सुख पाय कै पुनि बोले हरषात
भाई मो मन माहिं ऊधव कही जु बात तुम ॥
तुम समान कोउ नाहिं सखा और मेरो हितू
ऊधो तुम व्रज वेगि सिधारो ॥ करि आवहु यह काज हमारो
पूरण ब्रह्म अलख अज जोई ॥ मात पिता ताको नहिं कोई
रूप न रेख जाति कुल नाहीं ॥ व्यापि रह्यो सब घट २ माहीं
होनाकू ज्ञाता तुम ज्ञानी ॥ गोपी सकल प्रीति रस मानी
यह मति तिन्हें बाधक आवो ॥ प्रेम मेट कै ज्ञान दृढ़ावो

मेरे प्रेम विवश ब्रजबाला ॥ सहत निरंतर दुषदुसह विशाला
कासकुसुम तन तूल समाना ॥ सोच स्वास मारुत बलवाना ॥
भस्म होनि पावत सो नाही ॥ भीजि रहत नैनन जल माही ॥
ऐहै बांधि प्राण जिहि भांती ॥ विरह बिथा व्याकुल दिन राती ॥
ऐसे पै कैसे वे न्यारे ॥ समाधान बिन धीरज धारे ॥
तातें सखा वेगि तुम जाहू ॥ मेटो तिनको उर को दाहू
परउपकारिन के ढिग सारू ॥ जो तुम हो सो लायक होई

दो० इक के प्रबल विवेक रस सखा मम तुम ते ज्ञानी कौन
सो कीजै जिहि सज्जन वधू साधन सीखे कौन ॥
सो० जोहि सुख पावै नारि ज्ञान योग उपदेश ते
डारे मोहि बिसारि प्रेम अलख परची करे ॥

ऊधौ सुनो कहत मैं तुमकौं ॥ तुम सम हितू और नहिं हमकौं
कैसेहु उन गोपिन सौं माहीं ॥ उपाय की कीजियो किन नाहीं
निसदिन भोग विसारि ये उनकौं ॥ नाहिं मान तनिच केसहू तिनकौं
सर्वस सदन मोहि दै दीन्हौ ॥ तन मन प्राण समर्पण कीन्हौ ॥
मुक्ति तीन तिनकौं मैं दीन्ही ॥ सो उन हित एकहु नहिं कीन्ही ॥
रही एक सो साजुज कहिये ॥ सो वह ज्ञान बिना नहिं लहिये
सो अब देहु तिनहिं तुम ज्ञानू ॥ जिहि पावैं वह पद निर्वानू ॥
जो अनादि कृत करै न नासू ॥ तो मैं हौं उनको ऋणी दासू ॥
गाय चरावत उनको रहौं ॥ ब्रज तजि अनत कहूं नहिं जहौं
यह है बात मेरे मन भावे ॥ और न कछु मोपै बनि आवै ॥
ऊधौ जाहु विलंब करो जिन ॥ उनकौं कुशल बात तुम मो बिन
समाधान तिनको करि पावौ ॥ ब्रज मैं जाय विलंब न लावौ

दो० ऊधौ ब्रज में जाय के बहुत न रहियो जाय
तुम बिन हम एकला इहै रपम कहत चितलाय

सो० तुम हो सखा प्रवीन बार बार सिख वौ कहा ।
जियें जो जल बिन मीन सोई मतौ बिचारियो ॥
कही स्याम ऐसें जब बानी ॥ तब ऊधौ अपने मन जानी ॥
यदुपति योग सांच अब जान्यौ ॥ ज्ञान गर्व अपने मन मान्यौ ॥
बोल्यो मति अभिमान बढाई ॥ तुम आयसु सीस पर यदुराई ॥
तुम पठवत गोपिन के माहीं ॥ मैं कैसें प्रभु कहौं कि नाहीं ॥
तुमरे कहे गोकुल हि जैहौं ॥ ज्ञान कथा ब्रज लोगन कहिहौं
जो वे लहैं अम्र्त उपदेसू ॥ तौ कहिहौं समुझाय संदेसू
दिन द्वै रहि ब्रज जन सुख देहौं ॥ बहुरि आय चरण पुनि गैहौं
यह सुनि विहसि कह्यौ हरि तबही ॥ जाहु उमंगि सुत ब्रज कौं अबही
ज्ञान दृढाय युवतिनि दीजो ॥ एक पंथ द्वै कारज कीजो
आये भ्रात इते हम दोऊ ॥ तब तें ब्रज पठयो नहिं कोऊ
जाय नंद यशुमति परितोषौ ॥ ज्ञान कथा कहि युवतिनि पोषौ
सकुचौ मति हि जानि ब्रजनारी ॥ कहियो ज्ञान योग बिस्तारी
दो० वचन कहत ही समझि हैं वे हैं परम प्रवीन
ह्वै हैं सीतल विरह तें ज्यों जल पाये मीन ॥
सो० पलवत थापि महन्त ऊधौ कौं इहि काज हरि
ह्वै आवेंगे संत ब्रज भक्तन के दरसनें ॥
अपने ही रथ तुरत मंगायो ॥ दियो उपंगसुत कौं पलनायो
अपने भूषण वसन सुहाये ॥ निज कर ऊधौ कौ पहिराये ॥
अपनो मुकुट आपनी माला ॥ पहिराई उर बिसद बिसाला
ऊधौ नंद सरिस रूप सुहाये ॥ लख यदुपति कौ चिन्ह बताये
लिख्यो प्रणाम यों यदुराई ॥ नंद बबा कौ विनय बडाई
पालागन दोऊ कर जोरी ॥ यशुमति मैं यह भांति करोरी
बालक के लालन सब सुखदाई ॥ लिख्यो मिलन सबन्हि उरलाई

अरुनर नारि सकल व्रज जेते॥ प्रीति जनाय लिखे सब तेते
लिखि विगोपिन्कों येअपठाये॥ मातुजानकोहूं नहिं पाये
लेइ हटाय प्रीति व्रजवाला॥ यह जानी उरमें नंदलाल
लिखि पाती ऊधौ कर दीन्ही॥ औ सुखमार विनती कीन्ही
नीके रहियो यशुमति मैया॥ कछु दिनमें ऐहैं दोउ भैया॥

दो॰ कहा कहौं जा दिवसतें जननी बिछुरयो नाहिं
तादिनतें कोऊ नहीं कहत कन्हैया मोहि॥
सो॰ कह्यो संदेसन जात अति दुख पायो मातु तुम
अब मोको निज तात देवकि पुरु वसुदेव कह॥

कहियौ नंद बबा सों जाई॥ कहमन धरौ इती निठुराई
जबतें दियौ इतें पठवाई॥ बहुरौं सोध लयो नहिं भाई॥
वारिक बरसाने लौं जैयो॥ समाचार सब तहं के लैयो॥
ग्वाल बाल सब सखा हमारे॥ ह्वै हैं वे मम विरह दुखारे॥
तिन्है जाय मम दिशितें भेटो॥ कोहू संदेशा तिनको दुख मेट
व्रजवासी जेते नर नारी॥ गाय वत्स खग मृग वनचारी॥
जो जेहि विधि तासों तेहि भांती॥ अरस परस कहियो सुखमानी
मित्र एक मम दरशन पैहौ॥ देखत ताहि परम सुख लैहौ
वृंदावन में रहत निरंतर॥ होत नहीं कबहूं उर अंतर॥
सघन कुंज तरु लता सुहाई॥ मिलियो ताको सीस नवाई
यहि विधि ऊधो सों यदुराई॥ कान्ह सब मनकी बात सुनाई
बहु करता को प्रेम जनायो॥ ज्ञान गर्व ताको उर छायो॥

दो॰ रसरूपी सो करी प्रगट स्याम सों प्रीति
ऊधो तिनको ज्ञान लै चले करन विपरीति॥
सो॰ लखि ऊधौ को जात हलधर लियो बुलाय ढिग
समझैं न व्रज की बात आये जल भरि नैन युग॥

कहाकहौंऊधौमैंतुमसौं॥यसुमतिकरतिहेतुजोहमसौं
एकदिवसखेलतमोसाथा॥खेलकियोझगरोयदुनाथा॥
मोकोदौरिगोदतबलीन्हो॥करसोंटेलिस्यामकोदीन्हो
नंदबबातबबनतेआये॥इन्हैगोदलैमोहिखिजाये॥
लगेकहननान्होतेरोभाई॥तोकौंछोहलगतनहिंभाई
वहहितनहिंभूलतहैहमकौं॥कहतसंदेशवचनउनाहितुम्हकौ
कहियोतुमप्रणामपरजाई॥अरुदाउमैयनकौकुशलाई
कहियोहमहैंतनयतुम्हारे॥मातपितानहिंआनहमारे॥
यद्यपिहितुवसुदेवदेवकी॥सोसुखलहैंनआनसेवकी॥
मिलिहैंआयधायकेतुमकौं॥कारजकछुकऔरहैहमकौं
नाहिबिछुरनत्यागगोकुलगाई॥तुमतजिसुखकोहूमैंनहाई
सुनिवसुदेवदेवकीपायो॥ऊधोब्रजकौंजातपठायो॥

दो॰ नंदयशोमतिहितुसमुझिलिखिपातीवसुदेव
पालिदियेतुमसुतहमैंनाहिंउतरनतुमसेव॥सो॰
मतिसकुचोजियमाहिंरामकृष्णतुम्हरेतनय
हमकहिबेकोंआहिमातपितातुमदुहूनके॥

बालपनेतुमपालनहारे॥बालकेलिरसतुम्हैंदुलारे॥
हमतोपायेवैसकुमारा॥सोकेवलउपकारतुम्हारा॥
मतकलपौअपनेमनमाहीं॥हरिसोंमिलिकिनजातइहाहीं
स्यामरामनाहिंतुम्हैंभुलावें॥दिवसरैनतुम्हरोयशगावें
ऐसेंलिखिपातीसुखदाई॥ऊधोकरवसुदेवपठाई॥
तबहरिऊधौवेगिपठायो॥तुर्तअंकलैरथबैठायो॥
आयसुलियोविदाहरिकीनो॥चल्योसुफलसुतब्रजपथलीनो
ऊधौचलेगर्वमनधारी॥कहाज्ञानसमुझैगोग्वाली
देखौंधौंब्रजलोगनजाई॥मानतइतोजिन्हैयदुराई

चले उपगसुत ज्यव हरषाई ॥ गोपिन सून तबहि गयो जनाई
पुनि २ भ्रमर स्रवण ढिग आई ॥ भयो कछु दुख कछु हर्षान
ससमि सो सगुण दरस अनुरागी ॥ जहँ तहँ काग उडावन लागी

दो० जो गोकुल हरि आवहीं तो तूं उडरे काग ॥
दो० आइ नतो हि देवकी अरु भचा का पाग

सो० सुने गोपिन के वैन उरवे ठन वायस अनुन
लीं खपावत सब चैन करत परसपर आप में

सखी आज गोकुल हरि आवैं ॥ कैधों काहू ब्रजहिं पठावैं
नीकी बात सुन अबै कोऊ ॥ फरकत राम बाहु भुज दोऊ
बिन ब्यार अंबर फहराई ॥ टूटि टूटि कंचुक बंद जाई
उठि उठि बैठत कागा कहते ॥ उमगत मन आनन्द लहते
भ्रमर एक चहुँ दिस मडराई ॥ पुनि पुनि कानन लागत है आई
होत शगुन सुंदर शुभ माला ॥ आवन चहत भय नंदलाला
जानत भाग दशा विधि फेरी ॥ दूरि करी अब दुख अनतेरी
बहुरि गोपाल मिले जो आई ॥ सुख सनेह करिये जै माई
आसन हृदय कमल पै दीजे ॥ प्रेम भजन कपपना की लीजे
देखत रूप मान तजि दीजै ॥ नैनन निरषि वदन छबि लीजै
आवै जो ब्रज कुंज विहारी ॥ बडभागिनी सबै ब्रजनारी
मर यशुमति लिमा रिव मुख पावै ॥ तौ निवह भागिनि कहाइ

दो० घर घर सगुनो विचारहीं ब्रज युवती बड भाग
ब्रजवासी प्रभु दरश को सब के मन अनुराग
मथुरा तन हक लागि अनुदिन पथ निहारहीं
कब आवहिं ब्रजराय यह करत अभिलाष सब

अथ ऊधव ब्रजगमन लीला

ऊधौ चले ब्रजहिं समुहाय ॥ मथुरा तजि गोकुल नियराये

रथपरवैठेशोभित कैसें॥ दूजेनंद नंदन हैं जैसें॥
वहैमुकुटपीतांवर काछे॥श्यामरूपशोभितअंगआछे॥
दूरिहितेंरथकीउजियारी॥देखतहरषींब्रजकीनारीं॥
जान्यौआवतकुंवरकन्हाई॥आतुरजहंतहंतेंउठिधाई॥
कहतपरस्पर देखहुआली॥मधुवनतेंआवतवनमाली॥
गयेश्यामरथपरचढ़िजाई॥तैसोइरथआवतअधिकाई॥
तैसोइमुकुटमनोहरराजै॥तैसोइपटकुंडलछविछाजै॥
रथतनसवदेखतअनुरागी॥सपनेकोसुखलूटनलागी॥
ज्योंज्योंरथआतुरचलिआवै॥त्योंत्योंपीतांवरफहरावै॥
भईसकलसुखव्याकुलनारी॥प्रेमविवशआनंदउरभारी॥
जौलौंरथआवतनियराई॥तौलौंमानौंकल्पविहाई॥
दो॰ यहैश्यामब्रजवधुनआवत हैंनंदलाल
देखनकोंनिकसेहरषितआगेह्वैसवग्वाल
सो॰ सुनतयशोदानंद लेनचलेआगेहरषि
भयेपरमआनंद तेहिछनब्रजकेलोगसव
जवकछुरथआगेनियरायो॥तवसंदेहसवनमनआयौ॥
श्यामअकेलेरथकेमाहीं॥हलधरसंगदेखियतनाहीं॥
कोउकहतिनाहिंब्रजनाथा॥जोपैहलधरनाहिंनसाथा॥
इतनीकहतनिकटरथआयो॥ऊधोनिरखिनैनजलछायो॥
रहीठगीसीसवब्रजवाला॥भूतनविरहभईवेहाला॥
मनहुंगईनिधिकहूं पाई॥वड़ारिहाथतेंतुरतगंवाई॥
उड़िगइसपनेकीरजधानी॥जागतकछूनहींपछतानी॥
जवहींकह्योस्यामतौनाहीं॥जहंसोतहांरहीमुरझाई॥
परीविकलयसुमतिजोहवाई॥ब्रजतियधायतहांसवआई॥
स्यामविनारथलषिअकुलानी॥जहंतहंसवैरहीअरगानी

रुदन करत व्याकुल अति भारी॥ लई उठाय पोंछि दृग वारी
यसुदहि बोध करत सब ग्वाला॥ ऊधौ को पठयो गोपाला॥
दो॰ भली भई मारग चल्यो सखा पठायो स्याम
उत्तर बूझिये हरि कुशल कहति महरि सोंवाम
सो॰ सुफल घरी है आज कर कूंगुनि यहमन तरस
पावन कौं ब्रजराज इन के कर स्वै है लिख्यौ॥
यह सुनि उठौ कछुक सुख पाई॥ ऊधौ निकट पूछचो जाई॥
हरि को रूप निरखि सुख पायो॥ स्याम सखा कहि सबन सुनायो
ऊधौ निरखि कहत ब्रजनारी॥ सुन्दर सरल सुशील महारी
ताही तें हरि याहि पठायो॥ लै संदेश मोहन को आयो॥
नीके नीके वचन सुनैहै॥ सुनि सुनि श्रवणन हियो सिरैहै
यह जानि हैं वेगि हरि ऐहैं॥ याके मुख अब यह सुनि पैहै॥
चहुं दिशं घेर लियो रथ जाई॥ नंदगोप व्रज लोग लुगाई॥
गये लिवाय नंद निज द्वारे॥ ऊधौ रथ तें हरषि उतारे॥
अरघ देइ घर भीतर लीन्हों॥ पुनि २ दिन कहि आदर कीन्हो
चरण धोय आसन बैठाये॥ बहु प्रकार भोजन करिवाये
विविधि भांति करिके पहुनाई॥ नंद स्याम की बात चलाई
ऊधौ कहौ कुशल दोउ भैया॥ अरु वसुदेव देवकी मैया॥
दो॰ करत हमारो सुधि कबहु कहु ऊधौ बलवीर
पुलकि गात गदगद वचन पूछत नंद अधीर॥
सो॰ चूक परी अनजान कहत पछतात नन्दआज के॥
घर आये भगवान जाने हम मानि अहीर करि॥
मथ मग रस माहि कह्यो व बानी॥ भूल्यो सेंग दोष हित जानी
अब ऊधौ विछुरे गिरिधारी॥ सरियत समुझि भूल सो भारी
कह्यौ यशोमति हग भरि पानी॥ ऊधौ हम एसी नहि जानी

सुत कौं हित करिके हम माने ॥ हरि है वासुदेव प्रगटाने ॥
जासु विरह शिव ध्यान लगावै ॥ निसदिन अंग विभूति चढावै ॥
सो बालक हम अति हि अयान्यो ॥ ऊषल सों बांध्यो गहि पान्यो ॥
फाटत नहीं वज्र की छाती ॥ अव यह समुझि हृदय पछिताती ॥
वैसे भाग कवहुं अव पैहैं ॥ वहुरि श्याम को गोद खिलैहैं ॥
जवतें हरि मधुपुरी सिधारे ॥ तवतें ऊधो प्राण हमारे ॥
तलफत मीन नीर विन जैसें ॥ देख्यो श्याम मनोहर तैसें ॥
उठि के प्रात जात हैं खरिक ॥ देखत दुहत और के लरिका ॥
उठत सूल ऊधो मन माहीं ॥ क्यों धौं प्राण निकसि नाहिं जाहीं ॥

दो० ग्वाल सखा संग जोरि के गैया लै जाय ॥
के आवें संध्या समै वन ते गाय चराय ॥ सो०
काहि लेउं उर लाय आंचर सों रज झारि के ॥
का की लेउं वलाय चूम मनोहर कमल मुख ॥

मैं वलि सांची कहियो ऊधो ॥ कैसें श्याम रहत हां सूधो ॥
दही मही माखन नित जाई ॥ खात कौन के धाम कन्हाई ॥
कौन ग्वालवालन के साथा ॥ भोजन करत तहां व्रजनाथा ॥
कौन सखा लीन्हे संग डोलें ॥ खेलत हंसत कौन सों वोलें ॥
काके माखन चोरे जाई ॥ देन उरहनो को अव आई ॥
वन में यमुना तीर कन्हाई ॥ किन गोपिन सों रोकत जाई ॥
किनको दधि दहि ढरकावै ॥ किन सों दधि को दान चुकावै ॥
इतनी बूझत जसुमति माई ॥ भई विकल गुण सुमिर कन्हाई ॥
वोले विलपि नंद तव वानी ॥ कहियो ऊधो सांच वखानी ॥
श्याम कवहुं वहुरि व्रज ऐहैं ॥ व्रजवासिन को ताप नसैहैं ॥
मोहि तात यसुमति सो मातो ॥ सदा कहत हे हरि सुषदातो ॥
कहि गये चलती वार मुरारी ॥ मिलिहौं वहुरि तात इक वारी ॥

दो॰ हरिहै सो अपनो वचन कबहुँ श्याम प्रतिपाल

कहु ऊधो तुम मो कछू कह्यो कि नाहिं गुपाल ॥

सो॰ भये सकल कृश गात श्याम विरह व्रजनारि सिर

युग सम दिवस विहात ऊधो हमको हरि विना

लखि ऊधो व्रजरीति सुहाई ॥ रह्यो कछुक ऊधो सकुचाई

सुनत नंद यसुमति की वानी ॥ बोल्यो हृदय परम सुख मानी

कोह्न दोउ भाइन की कुशलाती ॥ दई श्याम दीनी सो पाती

हरि को कह्यो संदेश सुनायो ॥ हलधर को सब कह्यो सुनायो

पाती वांचि नंद उर लाई ॥ भेटे मानहु कुंवर कन्हाई ॥

लिखी श्याम के कर की पाती ॥ यसुमति लै लै लावति छाती

दुसह विरह को ताप नसावै ॥ हरि संदेश सुनत हि सुख पावै

पुनि वसुदेव लिख्यो जो होई ॥ ऊधो दियो नंद को सोई ॥

वांचत नैनन नीर भरि आये ॥ कहत श्याम अब भये पराये

सुनि वसुदेव लिखी जो वाता ॥ बोली बिलखि यशोदा माता

यद्यपि हरि वसुदेव कुमारा ॥ उदर देवकी के अवतारा ॥

तदपि मोहि धायो कहि नातें ॥ वार एक मोहन मिलि जाते

दो॰ ऊधो यद्यपि हम सबै सम भावन व्रजलोग

उतर भूल तद्यपि नरोषि माखन हरि सुखयोग

सो॰ रोटी भरू नवनीत बिन मांगे उठि प्रातहीं

कौ दैहै करि प्रीति तिन्है वानि जाने बिना ॥

यद्यपि देव गृह सब सुख भोगा ॥ है वसुदेव सदन सब योगा ॥

हम पसुपाल ग्वाल व्रजवासी ॥ दहि महि अनषाषान वासी

रजु सुखन को उकोटि लड़ावै ॥ तरु मासन नाहिं हरि सुख पावै

नित्यमिन रहत पहेर थांच ॥ देहै हरि वहां करत सकोच

एक वार गोकुल फिरि आवै ॥ मन की माखन भोग लगावै

सुपय रहैं गोकुल में नाहीं ॥ उलटि चली मधुपुरी कों जाहीं
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई ॥ ऊधौ चरण रही सिर नाई
तब ऊधौ बोले सुख पाई ॥ धन्य यशोमति धनि नंदराई
धन्य धन्य हैं भाग तुम्हारे ॥ जिनके कृष्ण प्राण ते प्यारे
पूरण ब्रह्म कृष्ण सुखरासी ॥ जगदातम प्रभु सब घटवासी
हैं व्यापक पूरण सब ठाहीं ॥ जैसें अग्नि काठ के माहीं
मति जानौ हरि हमतें न्यारे ॥ वे हैं सब जग के रखवारे

दो० मति जानौ सुत कै रहि हैं वे सब के करतार
तात मात तिन के नहीं भक्तन हित अवतार
सो० हम हैं सब अज्ञान प्रभु महिमा जानैं नहीं
वे प्रभु पूरण पुराण जन्म कर्म ता के रहित ॥

हम सब अपने भाग हैं जाने ॥ नर सम नहीं हरि को कोउ जाने
ज्यौं हरि प्रभु आप चक्र सम फिरई ॥ ता कौं निरत कछु न सब परई
तातें प्रभु जानि हरि ध्यावौ ॥ जातें मुक्ति पदारथ पावौ ॥
ऊधौ जो तुम हमें सिखावत ॥ हमहूं बहुत मनहिं समुझावत
तद्यपि वह सुंदर रूप कन्हाई ॥ देखे बिन रह्यौ न कछु जाई
सब ब्रज को जीवन हरि प्यारे ॥ ऊधौ कैसे जात बिसारे
जा दिन सों हरि बन नहिं जाते ॥ ता दिन बन खग मृग अकुलाते
नहिं अघात देखि वह मूरति ॥ रूप निधान सांवरी सूरति
सो अब गाय तृण मेंटि न खाहीं ॥ भये रहत अस स्याम बिनाहीं
मुरली धुनि खग मोह जाई ॥ सो अब सुख फल खात न कोई
अब बन फूलन फल सुख दाली ॥ ते अब सूखे जो रण माली
कोकिल कीर मोर नहिं बोले ॥ व्याकुल भये सकल बन डोले

दो० जिन्हें चरावत स्याम जो फिरत हुते बन भाइ
जहं तहं ते गोदोहन कियो सूघत तहं तहं जाइ

सो॰ सबब्रजविरहअधीरयुगसमबीततपलहमै
ऊधोमनमोहनबिना ३॰

॥भोरभयेलोचनडारतपानी

ब्रजघरसबहोतबधाई॥कहतकान्हकीपातीआई
निपटसमीपीसखासुहायो॥ऊधोकोहरिब्रजहिपठाय
कंचनकलशदूबदधिरोरी॥नंदसदनलेआवतगोरी
गोपसखासबकृष्णउपासी॥आयेधायसकलब्रजवासी
ऊधोकोहरिरूपनिहारी॥भयेसुखीसबनरअरुनारी
ब्रजयुवतीसबतिलकबनावैं॥करिप्रदक्षिणशीसनवा
कहतपाइकैदरशतुम्हारो॥भयोसुफलअबजन्महमा
बूझतकुशलसकलनरनारी॥नंदअवासभीरभइभा
ऊधोलखिब्रजप्रेमजकेसे॥बोलसकतनाहिंरहेथके
इकबकालचहूंदिशसबठाढे॥ऊधोरहेमौनगहिगाढे

दो॰ ऊधोकीलखिकैदशाब्रजजनमनअकुलात
कोऊधोतुमकहतनहिंश्यामकुशलकुशलात॥
इकक्षणयुगसमजाहिंहमकुबिनप्रीतमहरि
आवनकह्योकिनाहिंब्रजहिकृपाकरिसांवरे

तबऊधोबोलेधरिधीरा॥सदाकुशलहरिहलधरबीर
दियोतुम्हेंलिखिपत्रसंदेशू॥अरुसीमुखयहकह्योसं
करिसमाधिअन्तरमांहिध्यावो॥गोपसखाकोमातिनिक
हैअनादिअविगतिअविनाशी॥सदाएकरससबघटवा
निर्गुणज्ञानबिनमुक्तिनहोई।
तातेदृढकरियहमनधारो।

ऊधो कही जबहिं यह बानी ॥ गोपीजन सुनिकै बिलखानी ॥
इतनी दूरि बसत सुनु आली ॥ अब कछु औरै भये बनमाली ॥
रही बिरह की बात बिचारी ॥ बूडी सकल मनहु बिनवारी ॥
मिलन आस गई सुनत संदेशू ॥ उपजो उर अति कठिन अंदेशू ॥
फैल गई जहं तहं यह बानी ॥ कहत परस्पर सब अकुलानी ॥

दो॰ यह सब दोष लगौ हमैं कर्म रेख को जान ॥
प्रेम सुधा रस सानि कै अब लिखि पठयो ज्ञान
सो॰ इक ऐसे यह देह रही कुरसि बिरहानल
कैला हूंते खेह अब आयो ऊधो करन ॥

रूपराशि जो सब सुखदाई ॥ ब्रज को जीवन मूरि क[illegible]ई
बिछुरे जिन्हें इतो दुख पायो ॥ सो इन हिर[illegible]
तिन्हें कहत चितवो मन माहीं ॥ वे हैं पूरण भरि सब ठाहीं
जाको यत्न करत हैं जोगी ॥ निर्गुण निराकार निर्भोगी ॥
सो करि कृपा आय के ऊधो ॥ बीथिन मांझ बहायो सूधो
अबलन कारन श्याम पठायो ॥ व्यापक ब्रह्म गेह बन आपो
भजो आय बिरहिन सब कोई ॥ गायो निर्गुण निगमन जोई
जो समदृष्टि करै मनमोहन ॥ तौ कित चित्त चुरायो गोहन
ऊधो यह हित लागै काहे ॥ जो पै दृष्टि कृष्ण हिय माहे ॥
निश दिन स्याम दरस हित जागत ॥ कलन हि परत फलक नहिं लागत
चहुं दिश चितवत बिरह अधीरा ॥ बिलपि भरि दृग सहिं नीरा ॥
ऐसहु दुख प्रगटत क्यों नाहीं ॥ जो पै श्याम हिं कहत इहांहीं

दो॰ रहन देहु ऐसे हु हम हिं अब ध्यास की याह
फिर चाहो नहि पाइ हौ डार अगुण अथाह ॥
ल्याये युवतिन योग जो योगिन को भाग तुम
हमतन भयो बियोग भयो अधिक स्वाम्बन सुनि

एककहत दूषणनहिंयाकौं॥यह आयौपठयौकुविजाने
दानेजोकाहियाहिपठायौ॥सोईयानेआय सुनायौ॥
अवकुविजाजोजाहिसिखावैं॥सोई ताकौगायौगावै॥
कबहूंस्यामकहैं नाहि ऐसो॥कहीआयब्रजमेंइनजैसी
ऐसीवात सुने को माई॥उठैमूलसुनिसहि नहिंजाई
कहतभोगतजियोगअराधौ॥ऐसीकैसेंकहिहैं माधौ॥
जपतपसंयम नेम अपारा॥यहसवविधिवाकौविस्तारा
युग रूजीवहकुवरकन्हाई॥सीसहमारेपर सुख दाई
जेवितखसमभस्मकिनलाई॥कुह्यौकहांकीरीतिचलाई
हमरेयोगनेमव्रत एहा॥नंदनंदनपरम सदा सनेहा॥
ऊधौतुम्हैंदोषकोलावै॥यहसवकुविजानाचनचावै
नवयवातनयहवातसुनाई॥ऊधौरह्यौमौनसकुचाई
दोहा॥योगकथायुवातनकहीमनहींमनपछ्ताहि
प्रेमवचनतिनकेसुनतरहिगयौसीसनवाइ॥
सोरठा॥तवजान्यौमनमाहिपेमपराहैस्यामके
मोहिपठयौइहिठांहियाहीकारणसमझिके
ऊधौसुनिगोपिनकीवानी॥सुरुकारतिन्हैंप्रथमहींमानी
मनमनकरिप्रणामहरषाने॥ऊधौचलेवहूरिवरसाने
श्रीवृषभानकुंआरिहरिप्यारी॥औरसकलब्रजगोपकुमारी
जिनकेमनमोहनंदलाला॥सुनीसवनयहवातरसाला
कोऊहैमधुवनतेआयौ॥जिनकौंश्रीनंदलालपठायौ
सुनु२मिलिआतिअतुराई॥पियासंदेससुनतउठिधाई
मिलेउपंगसुतपंथमझारी॥रथलाधेकहतपरस्परनारी
वहूरिसखीसुफलकसुतपायौ॥वैसोईरथपरतलखायौ
लैगयौप्रथमाहिप्राणहमारौ॥अवधौंकहाकाजजियधारौ

तहिँसगरऊधौदरशदिखायौ॥तबधौरजसबकेमनआयौ
संगीसखाश्यामकौचीन्हौ॥सबनिप्रणामजोरिकरकीन्हौ
ऊधौलखिअतिभयेसुखारी॥मनकोविकलनककपायोवारी

दो०तबऊधौरथतेंउतारिबैठेतरुकीछाहिँ॥
भईभीरगोपीनकीअतिआनंदमनमाहिँ॥
अतिप्रियपाहुनजानसुधिल्यायेव्रजराजकी
करिकेअतिसनमानप्रेमसहितपूजेसबन

हाथजोरिपुनिविनयसुनाई॥कहियेऊधौनिजकुशलाई
बहुरिकहौसबउनकुशलाता॥हैंवसुदेवदेवकीमाता
कुशलछेमकहियेबलदाऊ॥अरुअक्रूरकुशलकुब्जाहू
बूझतश्यामकुशलअकुलानी॥नैननीरमुखगदगदबानी
लखिगोपिनकीप्रीतिसुहाई॥प्रेममगनभयेऊधौराई
पुलिकगातअँखियांजलछाई॥गयोज्ञानकोगर्वहिराई
पुनिरयहैकहतमनमाहीं॥ऐसीहरिकोबूझियनाहीं॥
व्रजनारिनकोयोगपठावै॥चितनेंव्रजकोप्रीतिमिटावै
पुनिऊधौउरमेंधरिधीरा॥बोलिसोधिनैनकोनीरा॥
सबविधिकहिहरिकीकुशलाती॥दीन्हीप्रथमश्यामकीपाती
लैलैकरनमिलनसबपाती॥कोउदृगकोउलावतछाती
काहूलैकरसीसचढाई॥बूझतआदरलिखोकन्हाई

दो०अतिहितपातीश्यामकीसबमिलरसुखपाइ
ऊधौकरदीन्हीबहुरिदीजेबांचसुनाइ॥सो०
ऊधौसबनसमोधिवांचिश्यामकीपत्रिका
लागेकरणप्रबोधज्ञानकथाविस्तारिके॥

मोकोंहरितुमपासपठायो॥[illegible]बनआयो
जातेपापनहींनियराई॥मननेंविषयदेहुविसराई

हरिआपुहिनरआपुहिनारी

।भ्राता।

।।आपुहिंराजाआपुहिरानी

।।आपुहिंदुहुतदुहूवनजोई

।आपुहिज्ञानविनाजगमूल

एवरंक दूजानहिंकोइ।।आपहिंआपनिरंतरहोई।।
ज्योंवहुदीपज्योतिहैएकू।।तैसेइज्ञानोब्रम्ह विवेकू।।
इहिंप्रकारजाकोमनलागे।।जरामरणनाशैभ्रमभागे
योगसमाधिब्रम्हचितलावे।।वम्हानंदसुखहितवपावे

दो०सुनतहिंऊधौकेवचनरहीसवैशिरनाय
मानहुमांगतसुधारस दीन्होगरलपियाय
सो०रहीठगीसीनारिहरिसंदेससदरससुनत
बोलीयहुरिसभारिऊधौसेकरजोरिकै।।

भलेभलेतुमऊधोराई।।भलीआइकुशलातसुनाई।।
केकुयककहतीमिलनकीआसा।।कियौआइनकौतुमनासा
इनवातनकेसंमनदीजे।।श्यामविरहतनपल२छीजे।।
विनदेखेवहमूरतिप्यारी।।कुंडलमुकुटपीनपटधारी।।
ऊधौकिहौकोनविधिजीजे।।योगयुक्तिलेकेकहकीजे।।
कोउइकनंदनंदनप्यारौ।।कोलाषिपूजेभीतिपगारै
हमअहीरगोरसरसभोगी।।योगयुक्तिजानेकोउयोगी
ऊधौतुमसेसाचवखानै।।प्रेमभक्तिअपनेमनमानै।।
हमकौभजनानंदपियारौ।।ब्रम्हानंदसुखकहाविचारै
व्यावरीवियानवंध्याजानै।।येहगहरिदरसनसुखमानै
पनिपनिहमैवहैसुधिआवै।।कृष्णरूपविनऔरनभावै

नवकिशोरको नैन निहारैं ॥ कोटि जोति ता ऊपर वारैं ॥

अधर अरुण मुरली धरे लोचन कंज विशाल

क्यों विसरत मुरली हमैं मोहन मदन गुपाल

सो० सजल मेघतन श्याम रूप राशि आनंदमय सो

मोहीं सव ब्रजवाम और न जानत ब्रम्ह हम ॥

ऊधौ सुनि गोपन की वानी ॥ वल्लभ कूर सांचि स्यानी ॥
जो लगि हृदै ज्ञान नहिं नीके ॥ तो लगि सव पानी को लीकैं ॥
वूमे विन सपनो सब होई ॥ विन विवेक सुख पावन कोई ॥
रूप रेख वाके कछु नाहीं ॥ नैन मूंदि चितवो मन माहीं ॥
हृदय कमल मैं जोति विराजै ॥ अनहद नाद निरंतर वाजै ॥
इडा पिंगला सुखमन नारी ॥ सहज सून्य मैं वसत मुरारी ॥
नाशा अग्र ब्रम्ह को वासा ॥ धरहु ध्यान तहं ज्योति प्रकाशा ॥
क्रम क्रम योगपंथ अनुसरहू ॥ यह प्रकार भव दुस्तर तरहू ॥
ऊधौ हम गोपन रू उपासी ॥ ब्रम्ह ज्ञान सुनि आवै हासी ॥
तोपै रूप रेख नहिं चीन्हा ॥ हाथ पांव मुख नैन विहीना ॥
तोय सुत कहु काको जायो ॥ काको पलना घालि झुलायो ॥
कैसे ऊखल हाथ वंधायो ॥ चोरि चोरि कैसे दधि खायो ॥

कौन खिलाये गोद करि कहे मतुतरे वैन ॥

ऊधौ ताको न्याव है जाहि न सूझै नैन ॥

सो० नटवर वेष प्रकाश श्रीवृंदावन चंद तजि

को खोजै आकाश सून्य समाधि लगाय कै

आनि वूझि मति ह्यां पश्यानी ॥ मानहु सत्य हमारी वानी ॥
भजो ब्रम्ह ब्रम्ह सव होहू ॥ छांडि देह ममता अरु मोहू ॥
माया कृति आधीन न वूझै ॥ ज्ञान अनंत नैन सव सूझै ॥
मैं यह कहत कृष्ण की भाखी ॥ देखहु वूझि वेद सव साखी ॥

लगेआगघरघूरजरावैं ॥ कोनिजगृहनाजिघूरबुझावै ॥
घरिढिकरीवलयोगसंवारौं । भक्तिविरोधीज्ञानतुम्हारौं ॥
योगकहासवछोड़िविछावैं । दुराहुवचनहमैंनहिंभावैं
अवलनआनसिषावतयोग ॥ हमभूलीकेधौंतुमलोग ॥
ऐसेंकहिगोपीअनखानी ॥ मनमेंश्यामपरेसअघानी ॥
ताहीसमैंभ्रमरइकआयौ ॥ सहज [illegible] नवगुनायौ ॥
तासौंकहिसबबातसुनावैं ॥ ऊधौप्रतिबहुवचनजनावैं ॥
वचनस्वभावत्रिगुणअनुसारी ॥ लागीकहनसकलब्रजनारी ॥

दो० कोउऊधोसोंकहतकोउअलि प्रतिबात ॥
निजनिजमनकीउक्तिकरि अपनी२घात ॥
सो० ऊधौभूलेज्ञानउत्तरबोलनआवहीं
रहेमौनसोमान सुनत वचन नारीन के ॥ चौ०

बोलिउठीऐसेंइकवारी ॥ आइसुनोरीसवब्रजनारी ॥
आयौमधुपदेनपत्नीको ॥ लीन्हेंसौगसुयशकौटीको ॥
तजनकहतभूषणपटगेहा ॥ सुतपितुबांधवसुजनसनेहा ॥
सीसजटाअरुभस्मलगावैं ॥ सगुणछोड़िनिर्गुणमनलावैं
आयोकरनतियनपरछोहा ॥ वस्तुछोड़वसावतसोहा ॥
सुनिसखिकहतऔरइकवाला ॥ येदोउमधुपुरवसतमराला
वकअक्रूरऔर वे ऊधौ ॥ निरवारक पानी अरु दूधौ ॥
जानतभलीभांतकीवाता ॥ इनहींकंसकरयौघाता ॥
इनकेकुलऐसीचलिआई ॥ प्रगटउजागरवंशसदाई ॥
सबकोरूपाक्रूरजैउठिधाये ॥ अवलनयोगसिषावनआये
ऐसेंएककहतअरुन्वारी ॥ येदोऊइकमनसुनिआली
तबअक्रूरअबहिं एऊधौ ॥ ब्रजअपस्वेटकियोइन सूधौ ॥
वचनफांसिफांसिहरिहृसनउनलियौरथवेठाय

हरिरागीलौं इन गोपिका हैतीं ग्यान गरु आइ
देखहु दियो लगाय चहूं दिश दावा योगको
भई कठिन अति आइ अब धौं कह चाहत कियो
लागी कहन और इकवारी ॥ मधुकर जानी बात तुम्हारी
तुम जो हमै जोग है आनौ ॥ करि भली करणी सो जानौ ॥
इक हरि विरह रहीं हम जरिकैं । सुनतहि अधिक उठीं हम बरिकैं
तापर अब जिन लोन लगावौ ॥ मानि हिं पराई बान चलावौ
दई श्याम तुम्हरे कर पाती ॥ सुनि कै बहुत सिरानी छाती ॥
कीन्हो उलटो न्याव कन्हाई ॥ बहे जात मांगत उतराई ॥
इक हम दुसह विरह दुष पावें ॥ दूजे लिखि योग पठावें
मधुकर श्याम भेद अब पायो ॥ नेह रतन कहं गनायो ॥
पहिले अधर सुधा रस प्यायो ॥ कियो पोष बहु लाड़ लड़ायो
बहुरौ शिशु को खेल बनायो ॥ गृह रचना रचि चलत मिटायो
सांप केंचुरि ज्यों लपटाई ॥ ऐसी हित की रीति दिखाई ॥
बहुरो सुरलल ई नाहिं जैसे ॥ तजी स्याम हम कों अब ऐसें
करहु [illegible] जहं जाउ तहं लेहु अपन शिर भार ॥
रीजत सबै पसीस यह न्हातहु खसो न वार ॥
सो॰ बहुरंगी सुख मूल जितहिं जात नितहीं सदा
इकरंगी दुख मूल चातक मीन पतंग गति
मधुप कहा काहि तुम्हैं सुनैये ॥ कारे कै प्रीति सचे पछितैये
निबहैगी ऐसी हम जानी ॥ उनलैके कछु औरै ठानी
कारे तन को कह पतियारौ ॥ मृदु मिस्कानि मन हरौ हमारौ
तब काहू मन रहत न जान्यौ ॥ हंसि हंसि सब लोगन सुष मान्यौ
बहुरि कुबिजा कीन्हा नीको ॥ सुनि मधुप मिटन दुष जीको
बदन तन का प्यास उर धरि कै ॥ औसर धंस पियो सब भरि कै

जैसे कुल हमसे हरिकीन्हो॥ ताकौं दाँव कुवरी लीन्हो
बोली और एक जो वानी॥ भामिनि ऊधौ किन जानी॥
बिलपत रहत सकल ब्रजनारी॥ कुविजा भई स्याम की प्यारी
खात बच्यो असुरन कौं जाई॥ अव कुलवधू कहावत माई
राजकुंअरि कोऊ हरि वरते॥ तौ कछु हम चित में नहि धरते
वन्यो साथ अब आनि हीं भाग॥ कागो और मराल उजागर
दो॰ अव खेलत दोऊ लाज तजि वारह मासी फाग
लौंडी कौ डौंडी वजी होंसी अरु अनुराग॥ सो॰
हमैं देन वैराग आपन दासी वस भये॥ १॥
चतुरन के घोर तन आगे ऊधौ यह अचरज बड़ौ
ऊधौ हरि ऐसे काज न करि॥ सुयश रह्यो त्रिभुवन मांही भरि
आये असुर जे व्रज माही॥ मारयो असु वच्यों कोउ नाही
विषजल सौं सब ग्वाल जिवाये॥ कालीनाग नाथ लै आये
इन्द्र मान मलि ब्रजहिं बचायो॥ गोवर्द्धन कर वाम उठायो
जब विधि वालक बच्छ चुराये॥ कर क्रिया ते और उपजाये
धनुष तोरि गज प्रबल सहारयो॥ मल्लन सहित कंस नृप मारयो
कीन्हो उग्रसेन को राजा॥ भये सकल देवन के काजा॥
ऐसी कीरति कपि सब नाशी॥ कीन्ही नारि कूवरी दासी॥
लक्ष्मीपति त्रिभुवन सुखदायक॥ अखिल लोक ब्रह्मांड के नायक
ब्रह्मा शिव इन्द्रादिक देवा॥ करत निरंतर जाकी सेवा॥
ऊधौ कहो कंस की दासी॥ यह सुनि होत सकल ब्रज हांसी
कत मारत यदुकुल कों लाजन॥ अब को रहेंगे रीस ऐसे कोजन
दो॰ गावन सब जग गीत अब वा चेरी के काज॥
ऊधौ यह अनुचित वडो चेरी पति व्रजराज॥
सो॰ ऊधौ काहे यो जाय अब है चेरी पति हरे

यह दुखकह्योनजायसोंतिकहावतिकुवरी
वोलीऊधोरवाम इक ऐसे ॥ ऊधोहरिरीझेधौं कैसे ॥ ॥
इकचेरीअरुकूवरीपाछें ॥ सोवतनहीं उतानें आछें ॥
कुटिलकुरूपजातकुलहीनो ॥ ताकोस्यामसुहागनकीनो ॥
कहासिद्धधौंकूवरमाहीं ॥ हमकोंलिखिपठवतकोंनाहीं ॥
हमहूकुवररत्नवनावें ॥ चालिकैटेढीचालिदिखावें ॥
कहेंस्यामसोईअवकीजे ॥ लोकलाजभामिनतजिदीजे ॥
होहिंआयगोकुलकेवासी ॥ तजेंनिगोड़ीकुविजादासी ॥
मधुकरजोहरिहमैंविसारे ॥ गोपीनाथनामक्योंधारे ॥
जोनहिंकाजहमारेआवत ॥ तौकलंककतहमैंलगावत ॥
जोपैप्रीतिकरीकुविजाको ॥ तोअवविरदवुलावहिंताको ॥
करतहिंसुगमसवनकीपाई ॥ प्रीतिनिवाहनअतिकठिनाई ॥
अवपरतीतिकवनविधिमानै ॥ क्षणमेंहोगयेस्यामविराने ॥
दो० ज्योंगजकोंदत्योंकरीहरिहमसोंपहिचानि
दिखरावनकोंआनहींकाजकरनकोंआनि ॥
सो० विषकीरविषखातछांड़िकहारादाषफल
मनअनकीजेवातऊधोकहियेकाहिसों ॥
ऊधोकहिकहतुम्हेंसुनावें ॥ जैसेहरिविनहमदुखपावें ॥
वररहतेमथुराघनस्यामा ॥ कलआययसुदाकेधामा ॥
कलकोंगोपवेषसुखदीनो ॥ कलगोवर्द्धनकरपरलीनो ॥
कलहिंरासरसराचेवनमाहीं ॥ कियेविविधिसुखवरनिनजाहीं ॥
कीकेऐसीप्रीतिकन्हाई ॥ अवमनधरीइतीनिठुराई ॥
जवतेतजिव्रजगयेविहारी ॥ तवतेंऐसीदसाहमारी ॥
घटेअहारविहारहूवोहिय ॥ भोगसंयोगआसआवनजिय ॥
वाहीनिशावलयआभूषण ॥ लोचनजलअंचलपतिसंजन

उर चिंता कंचुकी उसासा ॥ जीवन रहै अवधि की आसा
बीतत निशा गनत नभ तारे । दिवस कटत पथ लोचन डारे
रहीं नहीं सुधि बुधि मन माहीं ॥ विरहानल तन जरत सदाहीं
सुमिरि सुमिरि हरि गुण ग्रामा । दुख अधिकात सुहात न धामा

कहलौं कहिये निज बिथा अरु हरि की निठुराय
ता पर लाये योग अलि प्रबलन करण सहाय
सो० कठिन विरह की पीर जोहि व्यापै सो जानहीं
क्यों धरिये मन धीर सुनि अलि वचन भयावने ॥

जे कुच फूल फूलेल सवारे ॥ निज कर हरि गूथे सिर वारे ॥
कोह पठयो तिनको अस भावन । भस्म सानि के जटा बनावन
रत्न जटित ताटंक सुहाये । जिन कानन मोहन पहिराये
तिनको अब मुद्रा माटी के । ल्याये है ऊधौ गढि नीके ॥
भाल तिलक अंजन अरु बेसर । मृगमद मलयज कुमकुम केसर
उर कंचुकी मणिन के हारा । सकत जि कहत लगावन छारा ॥
जेहि थर स्याम सुभग भुज मेली । पठई तेहि सृंगी अरु सेली
पहिरे जात न चीर सुहावन । नाहिं भगौहैं कहत रंगावन ॥
जा मुख पान सुगंध सुहाये । निज हाथन ब्रजराज खवाये
रस विवाद करते नानरंगा । भाखत कहत रहत हरि संगा
मदन विलास हास रस भरयो । हरि सुख पय अधर सुधा निष
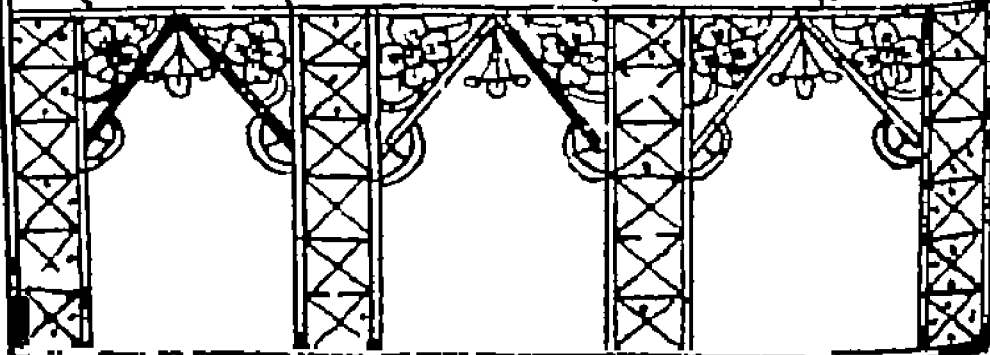
तिनसुखमौनकौनविधिकीजै। ऊरधस्वास ॰ टीकीमिजीजै

दो॰ वेतौहरिअतिनिठुरकोविनजानीतिनकीघात
मधुपतुम्हेनहिंचाहियेकहतकठिनयोंवात
तवव्रजायमृदुवैनअधरातनवोलीवनहिं
कियरासरसऐनअवकटुवचनसुनावहीं

मधुकरमधुमाधौकीवानी। सहसवजिमिमाखीलपटानी
उड़िनहिंसकीफसीहींतामें। आवतशोचकहतअवतामें
जिमिअहारवशमीनविचारे। करकलगतकोविनअनियारे
अटकतकुटिलहृदेदुखवाढ़े। वड़रीकौनविधिनिनकौकाढ़े
जैसेंविधिकसुनादसुनावै। मृगमनमोहिसमीपवुलावै
वड़रीकरतधनुशरसंधाना। तुरतहिंमारिहरतहैप्राना
जिमिसनेहवलदीपप्रकाशै। रजनीकेतमकोदुखनाशै
रूपलोभशलभहिंनिदिखाई। क्षणमेंतिनकोदेतजराई
जिमिठगमदमोदकनखवावै। पथिकजननसोंप्रीतिजनावै
रसविश्वासवढ़ावतभारी। प्राणसहितग्रंथहरतपछारी
जिमिमृदुमसकानिकनहिंचुगाई। वकगजिमहमव्रजनायकआई
पाछअवकरणीवहकीनी। योगछुरीसवकेगरदीनी

दो॰ हरिहमसोंऐसीकरीकपटप्रीतिविसराइ
वईविरहविषवेलिव्रजरसकीऊखउखार॥
कीजैकहावखानजिनसोंहितयहभांतिन्हि
हरेहमारेप्रान हमहरिकेभायेनहीं॥ चौ॥

यहसुनिकह्योऔरइकग्वाली। कहतकहामधुप[illegible]
इनहींकोसंगीयहजोऊ। चंचलचित्तश्यामतनदोऊ॥
वेमुरलीधुनिजगमनमोहन। इनकीगुंजसुमनदलजोहन
वेनिशअनतप्राँतकढ़आनै। राववासकमलअनतरुचिमानै

वे द्वै चरण सुभग भुजचारी ॥ ये षटपद दोउ विपिन विहारी
वे पटपीत मंजु दोउ काछे ॥ इनके पीत पंख दोउ आछे ॥
वे माधौ ये मधुप कहावत ॥ काहु भांति भेद नहिं आवत
वे ठाकुर ये सेवक उनके ॥ दोऊ मिले एकही गुनके ॥
कहा प्रतीति कीजिये इनकी ॥ परी प्रकृति ऐसी यें जिनकी
निरखि जात भाजत पलमाही ॥ दया धरम इनके कछु नाही
मन दै सर्वस मथ्थ न पावे ॥ वह ऐतन के काम न आवै ॥
इनको प्रीति किये यों माई ॥ ज्यों भुज पर की भीति उठाई

दो० कही एक तिय सुन सखी कारे सब एकसार
इनसों प्रीति न कीजिये कपटिन को व्यवहार ॥
देखो मन अनुमान करि आहि कारे जलद ॥
कविजन करत बखान भ्रमर काग को इलकपट

पूरिख भेद टारे जो अहि कारो ॥ पय पिवाय श्रुति हित प्रतिपारो
कुल सुभाव सो हंसि भजि जाही ॥ यद्यपि तिन्हें लाज कछु नाही
जलद सलिल धर रवत चंद्र एही ॥ भरत सकल सर सरिता माही
निशदिन ताहि पपीहा धावे ॥ एक बूंद को तोहि तरसावै ॥
भ्रमर मालती सो मन लावै ॥ भांवरि दै दै प्रीति बढावै ॥
जब रस हीन होत ही नवा माही ॥ निरमोही तजि ताहि पराही
सुनियत कथा काग पिक केरी ॥ अंडन सेक करावत हेरी ॥
बडे होत निजकुल उड़ि जाही ॥ वे उन जाइ मातु पितु माही
ये सब कारे हरि पर वारे ॥ सब इन से अति ही ये न्यारे
सब को उपमा रूप गुण योग ॥ न्याय देत पटतर सब लोग ॥
अलिकुल अलक कोकिला वानी ॥ भुज भुजंग गति जलद बखानी
सगुण घात भाजय हृ सारी ॥ खान कपट को कुंज विहारी ॥
मृदु मुसकनि विष डारि कै ये भुजन लोभाग

नंद यशोदा योंतजी ज्यों कोकिल को काग॥सो॰
गये प्रीति यों तोरि जिमि अलि रस लै सुमन सों॥
घन लौं भये कठोर चातक लौं हम रटत सब॥
ऊधौ सुनो एक और बखानो॥ वाजी लागत संग पहिचानो॥
हरि आगे तुमसे अधिकारी॥ क्यों नहिं दुख पावैं ब्रजनारी॥
कहत सुनत लागत हौ ऐसे॥ मीठो कहत गरल सों जैसे॥
पायो छोर कपट को तबही॥ लिखि आयौ निर्गुण पद जबही॥
योग जहां अधिकारहिं पाये॥ क्यों नहिं तू बात हग बुझाये॥
सुनि लीजे ऊधौ जी हमसों॥ राज काज चलिहै नहिं तुमसों॥
करिये पोष आपनी काया॥ आये दूत करी बड़ि दाया॥
जो तुम है हमरे हित आन्यो॥ सो हम सिर चढाय सब मान्यो॥
सुनि के सब ब्रज लोग अनंद्यो॥ नर नारी पर क्यों करवंयो॥
अब सम्हारि अपनो यह लीजे॥ जिन तुम पठये तिनही दीजे॥
उनही में यह जोग समै है॥ इहां न काहू पै निरवै है॥
हम ब्रज बसन अहीर गुवारी॥ योग सोग की नहिं अधिकारी॥
दो॰ अंध आरसी वो [illegible] मनभोग
ऊधौ तिनको न्याव है हमें सिखायो योग॥सो॰
हमें योग जो योग सोई योग मिलाइये॥
केहे भजाने रोग कहा वैद सो कीजिये॥
ऊधौ जाउ भले तुम ओऊ॥ अपने स्वारथ के सब कोऊ॥
निर्गुण ज्ञान कहां तुम पायो॥ कौन या ब्रज [illegible] पठायो॥
औरौ कह्यो संदेशो कोऊ॥ कहिहि निवरो [illegible]
तब अक्रूर आय वह कीनो॥ सिगरे ब्रज को सुख हरि लीनो॥
तुम आये ऊधौ यह ठाटो॥ अन्न छुड़ाय खवावत माटो॥
जो पै हतो ज्ञान की गाथा॥ तौ कित रास नच्यो ब्रजनाथा॥

मन हरि लीनों बेनु बजाई ॥ आधी निसि सब नारि बुलाई
रस लीला बृंदावन ठानी ॥ अब मथुरा है बैठे ज्ञानी ॥
तब समता को नाहि उर धारी
बूझि परे नीके सब कोई ॥ इतनी कछुक आस सब सोई
पढे सबै एकै पर पाटी ॥ अधिक एक तें एक न घाटी ॥
हम बावरी चली नहि त्यौंही ॥ ज्यौं जग चलत आपनी गौंही
मनकी मन ही में रही कहिये काहि बिचार ॥
हम गुहार जित तें चही तिनतें आई धार ॥
जानत हैं सब कोइ जैसी तुम हम सों करी
हम सों ही लीनी सोइ पावो गे अपनो कियो
ऊधौ जू पूछत हम तुम कौं ॥ यो हरि योग सिखावत हम कौं
तौ करि कृपा आप किन आवै ॥ योग ज्ञान को हम अनरसुगम
जो उपदेश निकट न आवै ॥ तो क्यौं ताकिहि बिधि मन लावै
अब लगि सुनी न काहू आनन ॥ संप्रदा न लाग बिकानन
जब लगि सिद्ध न सिद्ध बनावै ॥ तब लगि साधक कैसे पावै
हम गोकुल वे मथुरा माही ॥ खबरी होत भेद सत नाही
जो पै करो श्याम यह मायो ॥ करे और तो इतनो दाय
दरशन प्रथम दिखावै आई ॥ करहि पवित्र चरण पद पाई
योग जानि कै नगर तियागौं ॥ सघन कुंज बन मन अनुरागौं
आसन मौन नेम आचारा ॥ जप तप संजम ब्रत ब्यौहारा
योग अंग कहियत है जेते ॥ उनही मैं यनि आवे तेते ॥
फिरि प्रबोध करि माथ छुवावै ॥ होहि सिद्ध फल नाम अपावै
तब तौ खेलत सौं हकार राख्यो कछु न सुहाय
अब पहू योग मिल्यो कहा ऊधो कहिये जाय
सो० हमको निर्गुण ज्ञान जहं स्वारथ तहं सगुण है

लिखि पठयो निर्वान चारै महन लगाय कै

बोली और एक रिस मानी ॥ मधुकर समुझि कहत किन बानी
परमधुपि ये जात नहिं दीजे ॥ मुख देखो कौन्याव न कीजे
बीचहि परै सत्य सो भाषै ॥ राव रंक की शंक न राखै ॥
भूमन परै दिवस औ राती ॥ बात कहत हो ठकुर सुहाती
ब्रज युवतिन को योग सिखावत ॥ वृषभ जोनि सुरभी न भावत
रेक नक्र लंपट विभचारी ॥ कीरति यह आनि विस्तारी
हम जान्यो अलि है रस भोगी ॥ कत सीख्यो यह योग कुयोगी
जे भय भीत होइ लषि माला ॥ ते क्यों छुये भयानक व्याला
कौ सठ वकन छांडि लंगाडर ॥ कहं अबला कहं दशा दिगंबर
साधु होय तो उत्तर दीजे ॥ कहा तोहि कहि अपयश कीजे
भई वायु सी देखत तोही ॥ इन बातन डर लागत मोहीं
प्रथमहि यत्न आपनो कीजे ॥ तापाछे औरन सिख दीजे

कत श्रम करि बक बक मरत सुनत कौन तुव बात
बनको रोयो होत है उदि किन ह्यां ते जात ॥ सो०
देखु मूढ चित चाय कहं परमारथ कहं बिरह
राजरोग कफ जाहि ताहि खवावत हो दही ॥

बोली और एक कोउ नारी ॥ सुनिये ऊधो बात हमारी
प्रथमहिं ब्रज की दशा बिचारो ॥ पाछे योग सिद्ध बिस्तारो
जा कारण पठयो है माधो ॥ सो विचार कछु जिय में साधो
केतिक बीच विरह परमारथ ॥ देखो जो में समुझ यथारथ
परम चतुर हरि के निज दास ॥ रहत सदा संतन के पास
जल बूड़त प्रानि अकुलाई ॥ कहा फेन पकरत हो धाई
सुन्दर श्याम कमल दल लोचन ॥ सब बाधि सुषद सकल दुख मोचन
ब्रज को जीवन नंद दुलारो ॥ कैसे उर ते जात बिसारो ॥

थेगमुक्तिकेहिकाजेहमारे॥वांकीमुरलीपरसवारे
तुमनिर्गुणगुणकीरतिगाई॥कैकहमोवहनवुडाई
अधिअगाधपैहनाहिपारा॥मनुवांधिकर्मसवनकेसारा
रूपरखवपुवरणनजासो॥कैसेनेहनिवाहेतासो॥
दो॰विनहीतोहितस्वरूपविनचेतनचतुराय
सवलोगव्रजमेनाहिंकृतीमधुपकरौतुमआय
सोकहौविविधिविधिकोइनहिंसुहातनसुरीन
अभसुधारतजोहसाधिचंदनक्यौंसुखलहे॥
जगोकहनओरसवन्वाली॥कोनवकजपकनहैआर
कहियेतोहिंजोहोयविवेकी॥यहूअलिनिजवातनकोटेकी
गासोवककोमूडपचावे॥फरकेमुसीहाथकहआवे
तजिरसगोहनेहहरिपीको॥सिखवतनीरसनिर्गुणफीको
देखतप्रगटनैनकछुनाही॥ज्योतिरखोजततममाही
श्रवणसुनतजाकीमुरलीधुनि॥मुलिरहेथिरसेयगीमुनि
सोप्रभुभुजग्रीवापरडारी॥वनफलमाकुडारमिहारी
रासविलासविविधउपजायो॥सगहमारेनाचदिखायो
लोकलाजकुलकाननसाई॥हमसवतिनकेहाथविकाई
काटिसुवमाप्रेमकोहेली॥वोविनयोगजहरकोवेली
चोपदहांइताहिसमुझये॥कौनभांतिखटपदहिमुखैहै
लागीकौनकहैअववाके॥छाकोदूधवरावरजाके॥
दो॰हमोविरहिनविरहाजरीजारीवदरिअग
सुखतोनवहीपाइयैजवनाचेफिरसंग॥सो
कोइजगतउपहासहदवजकोनोस्यामसो
सोईहमैसुहातऔरमुक्तिचाहैनही॥
सुनिरेमधुपकुटिलकुपचारी॥जिव्रजलोगकृष्णरतधारी

सुन्दर स्यामरूप रससाने ॥ श्रीगुपालनतजिऔरनजाने
जो तजि स्यामसरोरकौं ध्यावै ॥ विभिचारीनैभक्त कहावै
विद्यमाननतजि सुरसरितीरा ॥ चाहतकूपखोद कैनीरा ॥
सुनैकौन यह सीखतुम्हारी ॥ अतिअनन्य मंडली हमारी
योगमोटतुमशिरधरिआली ॥ सोनहिंब्रजवासिनमनभाली
इतनी दूरजाइलैकाशी ॥ चाहतमक्ति कहां के वासी ॥
हमकहंकरैमुक्तिलैरूखी ॥ अबलास्याम संगकी भूखी
औरन प्यासकौनविधिजाई ॥ जबलगिनीरपियेनअघाई
ऐसंबातकहांअलिहमसों ॥ तजोशोचमिलिहैंहरितुमसों
हैंनहमारे जो पग धारे ॥ तौहितकरिदुखहरौहमारो ॥
करोसोयतस्यामजिमिआवै ॥ प्रगटदेखिजिमिहमसुषपावै

दो० सत्यज्ञानअरुध्यानअलिसांचोयोगउपाय
हमकोंसांचोनंदसुतधर्मकह्यौसमुझाय सो ॥
वशकीन्हीमदहासहमचेरीनंदनंदकी ॥
नखशिखअंगविलासतिनहींदेखेजीजिये

इतनेही सो काज हमारो ॥ मिलिहैंफेरब्रजचंददुलारो
औरअनेकउपायनिहारो ॥ राजकरउअलि हमैनप्यारो
तुमतौमधुपप्रीतिरससानौ ॥ हमकाजेकनहोतअयानौ
सबसुमननमेंफिरआवत ॥ क्योंकमलनमेंआपबंधावत
जोहिबलकाठफोरिघरकरहू ॥ क्योंनकमलदलदारतवरहू
रंगेश्यामरंगजेपहिलेसे ॥ चढ़तअरोरंगतिनपरकैसे
पारसपरसजोलाहसुहायो ॥ सोफिरकिमचुंबकिलपटायो
श्रीजिननमुरलीधुनिकमनन ॥ सोकिमसुनकोगुरितानन
वसैजासुउरकुंअरकन्हाई ॥ कैसेनिगुणतहांतमाई
यहमनश्यामस्वरूपलुभान्यो ॥ कहाकरैलैयोगलियानो

सिंहसदाश्यामिषरुचिमानै ॥ तृगनभषैवरप्राणपरानै
हरितज्यौरनहमैसुहाई । कोटिभांतिकोउकहैबुराई ॥
दो॰ द्वैदृगरूपविराटकेकहियतएकसमान ॥
साहमेहितचंद्रमा नहीं केचोराहै मान ॥ सो॰
लोचनरूपअधीनसगुणसलोनेश्यामके ॥
क्यौंसचुपावैमीनजज्यविनडारेदूधमे ॥
नहिमानतयेनैनहमारे ॥ सचुनलहतविनकान्हपिहारे
भयेश्यामछविजलकेमीना ॥ मुरलीधुनिकेरंगअधीना
अलिदृगलोभिकंजपदकरके ॥ कोकिकोकनदद्युतिमिकरके
वदनइंदुकेकुमुदचकोरा ॥ तनधनछविकेचातकमोरा
यहैरूपपरिगटजवदेखे ॥ जीवनसुफलजन्मकरलेखे
विगारपरेमनमधुपहमारे ॥ ज्ञानवचननहिंसुनतउम्हारे
ललितत्रिभंगरूपरससानै ॥ खरेचकिततातेजगजानै
स्वानपूंछलौंसमनहिंहोई ॥ जोवहुयत्नकरैपचिकोई
सोमनगयेश्यामकेसाथा ॥ सुनैकौनअवनिर्गुणगाथा
एकेमनएकैवहमूरति ॥ अटक्योताहिनतजैमहूरति
जोहोतोदूजोमनकोऊ ॥ तौहमलैधरतीनहसोऊ
ऊधौहरिहैंईशहमारे ॥ तेअवकैसेजातविसारे ॥
जोगदेजियेलैतिन्हैजिनकेमनदसवीस
कितडारतनिर्गुणइतैऊधौव्रजमेंखीस
सो॰ गुणकरमोहींश्यामकोनिवाहैंनिर्गुणहि
कियेजन्मकेकामक्योंतजियेनंदनंदविन ॥
कहतमधुपतुमवातसुहाई ॥ कहनाहसुगमकरतकठिनाई
मधमजायचंदनसीजानी ॥ सतोहोनउमहसुखमानी
ताकोतनपतअपरसियएई ॥ कहकौन पाछेनेआई ॥

वैठत सुभट यथा रण जाई ॥ कुसुम लता सम खड्ग सुहाई ॥
दियो अपनपो सूर उदारा ॥ को अब करै तासु निरवारा ॥
ये मन मोहन सो उरझाने ॥ दुख सुख लाभ हानि नहिं जाने ॥
प्रेम पंथ सूधो अति ऊधो ॥ मति निर्गुण कंटक लै गूंधो ॥
नेह न होय पुरानो क्यों हू ॥ सरित प्रवाह नयो नित ज्यों हीं ॥
निरखे आनंद रूप छकी जल ॥ रवि प्रति नित नहिं मीन उचरे पल ॥
बूड़त उमगहिं सिंधु के माहीं ॥ येत उनीर न पियत अघाहीं ॥
दिन २ बढ़त कमल जल जैसे ॥ हरि छवि दृगन लालसा तैसे ॥
बसे गुपाल हृदै अंबुज आलि ॥ निकसत नाहिं सनेह रहे रलि ॥

योग कथा अब मति कहो ऊधो बारहिं बार ॥
भजे आन नंदनंदन तजि ताको जननी छार ॥
यहै हमारे भाव अब कोउ कछु वे कहौ ॥
जैसो होय सुजाव रहो प्रीति नंदलाल की ॥

रहैं प्राण तन प्रेम माहिं खोई ॥ कौन काज आवै पुनि सोई ॥
बिन प्रेम शोभा नहिं पावै ॥ निशा गये शशि जिमि न सुहावै ॥
बिना प्रेम जग खग बूड़ने रे ॥ चातक यश गावत सब टेरे ॥
प्रेम सहित मीनन की करणी ॥ नैनन अछत देख जग वरणी ॥
हमते प्रेम जात नहिं दीन्हो ॥ दुहूं भांति हम तो यश लीन्हो ॥
मिले श्याम तो अधिक सुहायो ॥ नातरु सकल जगत यश गायो ॥
कहहु मया गोकुल की नारी ॥ बूरन होन घट जात गंवारी ॥
कहिवे श्री कमला के नाथा ॥ बैठे पौनि हमारे साथा ॥
निगम ज्ञान मुनि ध्यान अतीता ॥ सो व्रज भये हमारे मीता ॥
तिन्हें संग लै रास विलासी ॥ मुक्ति इते पर का की दासी ॥
यह सुनि बोल उठी इक आनी ॥ मेरी बुधि न कोउ रुमानी ॥
रस की बात रसिक ही जाने ॥ निरस कहा रस को पहिचाने ॥

दो॰ दादुरकमलनितिगवसतजन्ममरणपहिचान
अलिअनुरागीजानिके आपवधावतआन॰ सो॰
जानैकहामिठास गूगैबातसवाद्की ॥
॥ मानहुकाटोघास इतनसोकहिवोप्रेमरस ॥
धनिरऊधौतुमवड्भागी॥हरिसोहितनाहिंमनअनुरागी
अरइनवसनतयगजलमांही॥जलकोदागलग्योकछुनांहि
गागरनेहनीरमें जैसे॥अपरसरहतनभीजतजैसे॥
पैरतनदीवूंदनहिलागी॥नेकरूपसोदृष्टनपागी॥
हमसववृजकीनारिअयानी॥ज्योगुड़मेचेंटीलपटानी
अवकासोंवहलगनवखानें॥लागोविनऊधौकोजानै
हृदैदहैनितयोचतरहिये॥पसुवेदनज्योमनरसहिये
सवतेंपीरलगनकीभारी॥यत्नरहितसुखदुखतेन्यारी
मंत्रयंत्रउपचारनपावै॥वैदकहोलगिनाहिवतावै
घायलपीरजानिहैसोई॥लाग्योघावजाहितनहोई
प्रेमनरुकतहमारेवूतें॥गजकहुंवंधतकम्लकेसूते
कैसेंविरहसमुद्रसुखाई॥योगअग्निकीतनकलुकाई
दो॰ यद्यपिसमुझायेवहुतहमफेरमनहिंकठोर
तदपिनक्योंहूभूलई ऊधौनंदनदंकेशोर
सो॰ क्योंसुखपावैप्रानपलकुलगततेवसहतनहिं
लागेवरपोविहान अव विन देखे श्याम के ॥
तवषटमासरासकेमाहीं॥एकनिमिषसमजानेनाहीं
अवकिसोरैगनिविनाकन्हाई॥राकएकपलकल्पविहाई
नववनवनहरिसंगविहारी॥पवव्रजमेंयहदशाहमारी
ज्योदेवीउजारपुरमाही॥कोपूजैकोउमाननताही॥
कहतअरिजोवनअवऐसो॥चित्रलिखेघरकोजैसो

तव श्रीश अति शीरो अवतारो॥ भयो सकल सुख कीर्तन हारो॥
कृतकारि प्रीति गाये मन भावन॥ जासों हम लागो दुख पावन॥
फिरि २ यह समुझि पछताहीं॥ कह्यो ऊनो आवन हम पाहीं॥
यायो आस प्राणन तन माहीं॥ वारिक वड़ ...यो है चाहीं॥
ऊधो हृदय कठोर हमारे॥ फटे न बिछुरत नंद दुलारे॥
हमते भली जलचरी होई॥ अपनो नेह निवाहत जोई॥
जो हम प्रीति रीति नहिं जानी॥ तो ब्रजनाथ न जो दुख मानी॥

दो॰ कहलौं गकहिये आपनी ऊधो तुम सों चूक
हम ब्रजवास वसी भनो सबै सासहै मूक॥ सो॰
ऊधो कह्यो न जाय मोहन मदन गुपाल सों॥
नैनन देखो आइ एक वार ब्रज की दशा॥

बोली और एक ब्रजवाला॥ ऊधो भली करी गोपाला॥
अब ब्रज में आवै न कन्हाई॥ मथुरहि रहैं सदा सुखदाई॥
इहां चली अब उलटी चाली॥ देखत दुख पैहैं वनमाली॥
तपत इंदु सूरज की भांती॥ चंदन पवन सेज सब ताती॥
भूषण वसन अनल सम दागे॥ गृह वन कुंज भयानक लागे॥
जित तित मार द्रुमन को डारन॥ धनु शर लिये करत है मारन॥
हम तो न्याय सहत दुख एतो॥ ब्रजवासिनी ग्वालि जइ तेतो॥
वे नभ भोग संयोग भुवाल॥ क्यों सहिहैं कोमल तन ज्वाल॥
ऊधो कह्यो संदेश सिधारो॥ जान्यो सब परपंच तिहारो॥
वातन कहा हमैं भरिवावत॥ जल मथ सुन्यो न माखन आवत॥
सगुण निकट लखत है जिनको॥ निर्गुण ओट वतावत तिनको॥
जो ये ... जलु मय है वखानो॥ प्रभु पूरण सब में हम जानो॥
तौ तुम का पै करत हो ऊधो आवा गौन॥
को नेरे को दूर है उहां कौन ह्यां कौन॥

उरझ रह्यो नंदलाल प्रेम रस। नेकु न चलत गयो गाढ़े फस॥
जो हरि मिलत जानि हूं परते। तो लै योग सीस पर धरते॥
पहलै लेहु तिनहिं फिर जाई। जिन पठये तुम इतहिं सिखाई॥
लेहिं न वेहु ज्ञान हमारे। देखियत माथे परत्यो तुम्हारे॥

भूलै योगी योग जिन तुम सो कियो बखान।
जान्यो गयो न पचमरे ब्रम्ह रंध्र तजि प्रान॥
हम उर जाको ध्यान हमहिं दिखावो ज्योति सो।
निपटहि छुछो ज्ञान ऊधो कहा सुनावही॥

ऊधो जबतें श्याम निहारे॥ तबतें योगी नैन हमारे॥
[illegible] गुरुजन की टारी॥ धस्यो जनेऊ लाज उतारी॥
पलक वसन घूंघट गृह त्यागे॥ दशा दिगंबर मन अनुरागे॥
सजत समाधि रूप टकलाये॥ भये सिद्ध नहिं डिगे डिगाये॥
ताके बीच विघन के करता॥ पचि श रहे मातु पितु भरता॥
अब ये और योग नहिं जानैं॥ वही श्याम छवि मुरति भलानैं॥
भये कुम मयन नयन हमारे॥ नहीं कछु हमतें कछु न्यारे॥
हम सो कहत कौन की बातैं॥ गयो कौन हमको तजि ह्यांतैं॥
मथुरा जाय रजक किन मास्यो॥ धनुष तोरि कपि हृदय छार्यो॥
किन मल्लन पथिक सब हार्यो॥ उग्रसेन किन बंद छुड़ायो॥
को वसुदेव देवकी जायो॥ तुम किनके पठये ब्रज आये॥
कुंडल मुकर गुंज उर राजे॥ गोकुल यमुदा नंद विराजे॥

को पूरण को अलख गति को गुण रहित अपार।
करत वृथा बकवाद कत निरखो वह नंद कुमार॥
जात चरावन धेनु दिन उठि ग्वालन संग मिल।
मधुर बजावत बेनु आवत संध्या के समै॥

जिन ऊधो मथुरा तन देखो॥ ब्रजवासी जन्म सुफल लेखो॥

॥परीहौघोरराज्ञविपरामै
॥घरर्मारवनरवानचएइ

कैसेंगोपग्वालसवआये॥नितेंतवेषविचित्रवनाये॥
कैसेंदधिकीकीचमचाई॥व्रजसवभई अनंदवधाई
वालविनोदकौनविधिकीन्हो॥कैसेगोवर्द्धनकरलीन्हो
कैसेंदधिकोदानचुकायो॥शारदाशिसुषकिनउपजायो
यहरसप्रेमकथाचितलावौ॥अपनीनीरसकथाकहमावौ
निगमनेतिनिर्गुणक्योंधावौ॥कैसनाहिंप्रगटदर्सनिकसौ

भावतहैजोकृष्णकोंयोगसोहमसोंदेख॥
ऊधौसघनसनखेहकोसुमतिहृदकेपेष॥
सकसंगकोरिकेकानवैठौमनहिवटोरके
तजज्ञानअभिमाननोयहअर्थसुनावही

नहीजटानाहिंभस्मलगावैं॥रूधेस्वांसनशृंगवजावै
नहीवेदनाहिंपढ़ेपुराना॥समदमनेमनसंजमज्ञाना
हमेंश्रीगोकुलचंदअराध्यौ॥प्रेमयोगतनपनिसोंसाध्यौ
मनवचकर्मओरनहिंजानैं॥लोकवेददुखसुखसमानै
मानपमाननिंदकुलकरसौ॥आर्यपंथगुरुजनवचसरसौ
हमनितापचहुंदिशनदेखौ॥पियतप्रेमउपहासविशेखौ
वोरिसुप्रेमनदनजगवेदन॥कर्मधर्मकोमननिकंदन
हमजुसमाधिप्राप्तिवानिकहरि॥अंगमाधुरीहृदैंरहीधरि
निरषतरहतनिमषनत्यागत॥यहकृष्णानुरागयोगनितजागत
सरषुराखरूपरगरसरागे॥भृकुटिनैननैननलागिलागे

हसन प्रकाश सुभग कुंडल दुति॥ श्रीश अरु सुर देषि ये स्तुति
मुरली अधर मधुर सुर गाजै॥ शब्द अनाहद धुनि सो ई बाजै
बरषत रस रुचि मन अचैरह्यो परम सचुमान
अति अगाधु सुख संग को पद आनंद समान
सो भल दियो रति पीन भजन ज्ञान हरि को मर्म
गुरु करै अब कौन कौन सुनै फीको मर्म॥
ऊधो ब्रज की रीति निहारी॥ भये विवश निज नेम बिसारी
लाग्यो कहन धन्य ब्रजवाला॥ जिनको रस वश मदन गुपाल
धन्य २ यह प्रेम तुम्हारो॥ धन्य कृष्ण पद दृढ व्रत धारो॥
मैं जड़ कीनी और उपाई॥ अब तुम दरश भक्ति निज पाई
तुम मम गुरु मैं दास तुम्हारो॥ दीनी भक्ति कियो निस्तारो॥
ऊधो आयो योग सिखावन॥ सीखे प्रेम भक्ति अति पावन
भये मगन रस प्रेम विशाला॥ लागे गावन गुण गोपाला
लोटत कबहुं कुंज महं जाई॥ कबहूं विटपन भेटत धाई
कबहूं ब्रजरस सीस चढ़ावै॥ कबहूं गोपिन पद शिर नावै
पुनि २ कहत धन्य ब्रजनारी॥ धन्य ग्वाल गैयां वनचारी॥
धन्य भूमि यह सुखद सुहावन॥ धन्य धाम वृंदावन पावन॥
ऐसे प्रेम मगन मन फूल्यो॥ कोहौं कित आयो सुधि भूल्यो
ऊधो मन आनंद अति लोष के प्रेम विलास
आयो हो दिन दोय को बीत गये षट मास॥
सो तुव उपज्यो उर शोच वचन कृष्ण के सुरत करि
मन में करत संयोग बोल्यो हो प्रभु वेग मुहिं
तब रथ गोसुत त्याहिं पलान्यो॥ मथुरा चालिबे को अतुरान्यो
ऊधो जात गोपिकन जानी॥ आई धाय सकल अकुलानी
तब ऊधो सब को शिर नाई॥ हाथ जोरि कै विनय सुनाई

प्रभु दीनन पतिदीनहित यही हमारे आस
कबहुं के दरस दिखाइ के हरिहैं लोचनप्यास
सो० ऐसे कहि ब्रजबाम भई विरहसागरमगन
ऊधौ करि परनाम आये यशुमतिनंद पै ॥
मांगी विदा जोरि कर दोऊ ॥ तुम सम धन्य और नहिं कोऊ
रामकृष्ण सुत करि जिन पाये ॥ बालभाव करि गोद खिलाये
धनि गोकुल धनि गोकुलवासी ॥ किये प्रेमवश जिन अविनासी
मोहि कृपा करि कृष्ण पठायो ॥ जाते दरस सबन को पायो
अब तुम मोको देहु निदेशू ॥ जाय स्याम सो कहौं संदेशू
सुनि सप्रीति ऊधो की बाता ॥ बबा और यशुमति माता ॥
उमग्यो प्रेम नयन जल बाढ़े ॥ भये जोरि कर आगे ठाढ़े ॥
उरवर स्याम विरह की पीरा ॥ कहत संदेस बहत दृग नीरा
ऊधौ हरि सो कहियो जाई ॥ यशुमति की आसीस सुनाई
कमलनैन सुंदर सुखदाई ॥ कोटि युगन जीवहु दोउ भाई
कहियो बहुरि इतो समुझाई ॥ तुम बिन दुषित यसोदा माई
इतनी दया मातु पर कीजे ॥ एकबार दरशन फिरि दीजे ॥
दो० नंद दाहनी भरि दई कह्यो नैन भरि नीर ॥
वा धौरी को दूध यह भावत हो बलवीर ॥ सो०
दई यशोमति माय मुरली ललित गुपाल की
ऊधो दीजो जाय प्यारी ही अति लाल को ॥

अथ ऊधो मथुरा गमन लीला

ऊधौ लै माथे पर लीन्ही ॥ लीष सुभ प्रीति दंडवत कीन्ही
चल्यो योग की नाव बुडाई ॥ ह्वै गयौ आप गोप ब्रज आई
जाइ कृष्ण पद शीस नवायो ॥ प्रभु सादर उठि कंठ लगायो
कहिये सखा कुशल सों आये ॥ ब्रज में जाय बहुत दिन लाये

तिनकी दशा विलोकि मोहि युग सम बीती राति
नंद यशोदहि पाय गयो प्रात वृषभान पुर ॥
सुनि सब आइ धाय धाम काम तजि वाम तहँ ॥
मोहि तुमारो निज जन जानी ॥ सन मान्यो सबही सुख मानी
लषि पट भूषण चिन्ह तुम्हारी ॥ भइ प्रेम वश सुरति सम्हारी
शिथिल अंग भरि आये नैना ॥ पूछी कुशल सुगद्‌गद बैना
जब मैं कह्यो संदेश तुम्हारो ॥ सुनतहि आयो सबन तमारो
बीती घरिक धीर उर आन्यो ॥ मेरो कह्यो सांच नहिं मान्यो
दूषण सब कुबिजा को दीनो ॥ कछुक परखो तुम सों कीनो
तैन की बात न जात बखानो ॥ प्रेम पंथ वे सकल सयानी
बहुरस रीति देखि उनकेरी ॥ कटुक कथा लागी मुहिं मेरी
यद्यपि मैं बहु विधि समुझाइ ॥ ग्रंथ उक्ति सब कथा सुनाई
काहि वे मैं कछु शंक न राख्यो ॥ भयो पवन ज्यों भुस में भाख्यो
ज्ञान पंथ जो मो मुख बानी ॥ सो सब तिनको भई कहानी
कैके कहे वनाय अनेका ॥ उनके हद व्रत पति व्रत एका ।
गह्यो एक ही ज्ञान उन मोरे वेद विधि नीति
गोपी वेष भोते सांवरे रह्यो विस्वर जीति
सो नहिं सीखे सिख आन जो विध जाइ सिखावहीं
तुमहू बड़े सुजान उहां जाउ तौ जानहूं ॥
सभा करो आयसु जो पाऊं ॥ तो अपनी सब विपति सुनाऊं
कृथा योग [illegible] पाहीं ॥ उपजे इतो दुःख कोनाहीं
मैं निर्गुण गुण एकु बखानो ॥ सोऊ पूरो को नहिं जानो
वे सब उमग हिं बारिध ज्यों हीं ॥ जामे थाह न पावे क्यों हीं
वही एक मैं पहर कमाही ॥ वे कोटिक क्षण मैं कहि जाहीं
कौन कौन को उत्तर आवे ॥ सनन सब उनही के भावे

॥मैं शठ्यों रहस्यो पराऊं
॥भई अग्नि ज्यों घृतकेपरे

दो॰ सगुण प्रेम हठ उनगह्यो पायपपीहा फेर
जानिलेइ प्रभु तुम यहै कहा निरगाहि वेर॥
सो॰ तिन्है निरंतर ध्यान स्यामसुन्दर कंजनयन
लागो फीको ज्ञान भव लोक तउन को भजन
मै देखो खट मास खोज कर॥एकुरीति सबै ब्रज घर घर
ज्यौं कुरखेत दियेवा द्युतधन
प्रगट तुम्हारे गुण चित दीन्हे॥
कोऊ कहत गये गो चारण॥कोउ कहत गये अघासुर मारण
कोऊ कहत इन्द्र जल जाई॥गोवर्द्धन कर लियो कन्हाई
कोऊ कहत यमुन सुनि काली॥नाथन गये नाग्हि बनमाली
घर २ दुहत कहत कोउ वाला॥कोउ कहत वन खेलत नंदलाल
कोऊ कहत कुटिल लंपट हरि॥वसे जाय री पौ काके घर
एक कहत बन बेणु बजावहिं॥चलो सुनन पौ कहि उठि धावहिं
ऐसी लीला प्रगट बखानें॥ मेरो कह्यो न कोऊ मानें॥
हरि मानी निज मति घट ज्ञानी॥सुन लीनी उनकी मैं बानी
प्रीति रीति लखि चित्त होइ लाज्यो॥नाथ तुम्हारी सुरति भुलान्यो
दो॰ तुमसो आवन कहि गयो वेगा है ब्रजतें नाथ
उनलगि उनसो हूइ गयो गावन उन के साथ॥
सो॰ बीत गये खटमास सखा स्यप री आयो बहू।

तृण के अग्र ओस कण जैसे ॥ स्वास स्वांस पवन तन वैसे ॥
अच रज मोहि वड यह आवै ॥ प्रभु तुम को कैसे यह भावै ॥
करुणामय प्रभु सुत जामी ॥ भक्तन हित धारी तन स्वामी ॥
योगि रूप करि दर्शन दीजै ॥ ब्रज जन मृतक जाय सब लीजै ॥

दो० यह सुनि लीन्हे विलाप के वाक्य सुमति माय ।
एकवार हित नंद के दर्श दिखावो आय ॥ सो०
जिन गैयन को श्याम आप चराई हित करी ॥
वृझारे न पाई धाम बिडरी कुंजन में फिरत ॥

सुनि के प्रभु ऊधो के बैना ॥ उमंग प्रेम भर दोउ नैना ॥
ब्रज जन प्रीति पाइ उरशाली ॥ भयो विवश जन प्रण विसारी ॥
लेउ राय मुरली उर लाई ॥ धरि ब्रज ध्यान रहे मुरझाई ॥
सहज स्वभाव कृपाल ऐसे ॥ होत तुरत जैसे को तैसे ॥
पुनि हरि ब्रज का हुं छोड उदासा ॥ पोंछि पीतपट जल सो पास ॥
ऊधो सों यों वचन सुनाये ॥ भले सखा शुभ दे ब्रज आये ॥
मन मैं यों प्रभु कियो विचारो ॥ ब्रज भक्तन मम रूप अधारो ॥
मेरे भक्ति वडो निधि जोई ॥ सो वह नहीं आदरत कोई ॥
तातें जो जन के मन भावे ॥ सोइ सोइ करन वन आवे ॥
भक्ताधीन सो प्रण हमारे ॥ ब्रजवासी मो को अति प्यारे ॥
सदा वसत ता ब्रज माहीं ॥ इन सम मोहि और कहूं नाहीं ॥
सब समर्थ प्रभु सो गुण आगर ॥ ब्रजवासी जन के सुख सागर ॥

दो० मन को हरि ब्रज गोपी मिलि ब्रज जन मन माय ।
तिनको हितवत काज हित भये द्वारिका नाथ ॥ सो०
सदा वसत ब्रज श्याम नन्द स्वरूप मुरली धरे ॥
ब्रजे जन पूरण काम कोटि काम लावण्य निधि ॥

रहत सदा ब्रज कुंजर न्हाई ॥ ब्रजवासी जन के सुखदाई ॥

कृष्णप्रेमपूरितिब्रजनारी ॥ कबहूंनहींकृष्ण तें न्यारी ॥
नित्यनवलनितवनहिंविहारा ॥ ब्रजविलासनितनवलउदारा ॥
नित्यधामवृंदावनपावन ॥ नित्यरासरस परम सुहावन ॥
शिवसनकादिकजेहिंगावैं ॥ सुरनरमुनिसब ध्यानलगावैं ॥
ब्रजगोपिनकीमहत्तवड़ाई ॥ एकसमयब्रह्मासन गाई ॥
भृगुनारदआदिकहरिभक्ता ॥ पूछतभये विनय संयुक्ता ॥
तिनसों विधि यह बातबखानी ॥ वेद व्यासशुकादिकजानी ॥
इनसमसत्यकहौंतुमपाहीं ॥ मोतियशिवालक्ष्मीनाहीं ॥
नहींकृष्णतेंएकक्षणन्यारी ॥ इनतेंऔरन कोउअधिकारी ॥
इनकेभावकृष्ण जो ध्यावे ॥ प्रीतिरीति दृढकरिमनलावे ॥
नारिपुरुषकोईकिनहोई ॥ वेदरिचागति पावे सोई ॥

दो० परसे इनके चरणरज वृंदावन मांहिंमांहिं ॥
सोऊगति इनकीलहै यामें संशय नाहिं ॥ सो०
यौंविधिकहीबुझाय महिमाब्रज गोपीन की ॥
व्यासकहीसो गाय वावन वृहद्पुराण में ॥

तातेंभृगुआदिकनारदमुनि ॥ इंद्रादिकरु शिवविरंचिपुनि ॥
अरु हरिभक्तजगततेंअहहीं ॥ वृंदावनरजवांछितरहहीं ॥
ब्रजरजअतिदुर्लभस्मृतिगावैं ॥ बड़भागीजनतेई पावें ॥
हितधरिसोइब्रजरजरासा ॥ ब्रजविलासगायोब्रजदासा ॥
कृष्णचरितब्रजवनानिकुंजकौ ॥ सारसकलसुखसुकृतपुंजकौ ॥
सारध्यानविज्ञान ज्ञानकौ ॥ वेदशास्त्रअसमस्तपुराणकौ ॥
सारवदरीइतिहासभजनकौ ॥ योगजापअरुअन्यतनकौ ॥
सारभोमतमानिसंतजनकौ ॥ हरिपदपंकजप्रेमरतनकौ ॥
सारजन्मअरुसुगतिमुक्तिकौ ॥ परमानंदरूपविमलभक्तिकौ ॥
सारसकलरसरसकाईकौ ॥ परममधुरसुंदरताईकौ ॥

सारसारकौपरम सुहायो
सहितस्वभावप्रीतिजोगैहै
छं॰ यह ब्रजविलासहुलाससोनरनारि सुनहिंजेगावही ॥
सीखैंसिखावैपढैरुचिकरि प्रेम मन उपजावही ॥
धरिभाव भक्तारूप सोंउर कमलपदनिकेलहै है
हरिराधिकापरसादतेंब्रजगोपिका गति पाइ है ॥
पूरण सकलमनकामसव सुखधामयश्नंदलालकौ
दलनदारिद दोष दुषभवभय हरणयककालकौ॥
यहजानगावहि सुजनगायौजिन्हेआनंदपूलहीं
तिनकीकृपावलपायकछु इकदासब्रजवासकह्यौ
दो॰ ब्रजविलासब्रजराजकौकोकहि पावैपार॥
भक्तिभाव गावत भगतभजन प्रभाव विचार
सिगरे दोहा आठसौ और न वासी आहि॥
और इतने सोरटा ब्रज विलास के माहि
दससहस्र छहसौअधिक चोपाई विस्तार
छंद एक शतखटअधिकमधुरमनोहरचार
सवको नृष्टुप छंद यर दशसहस्र परमान
खंडित होन न पावई लिखियो जान सुजान
विधिनिषेधजानेनकछुजन ब्रजवासी दास
ज्यौंजानैत्यौराखिहै नंद नंदन की आस॥
नाहिंनपतीरथ दानवलनहीं कर्म व्योहार
ब्रजवासीकेदासकौ ब्रजवासी आधार॥
ब्रजवासीगाऊसदाजन्मजन्मकरि नेह॥
मेरेजपतपव्रत इहै फल दीजे पुनि एह॥
इतिश्रीब्रजविलासेसवसुखरूपेभक्तिप्रकाशेकृतब्रजवासीद

अथसूचीपत्रब्रजविलासकोलिख्यते

सारसारकौपरम सुहायौ ॥ ब्रजविलास भक्तनमन भायौ
सहितस्वभावप्रीतिजोगेहै। तेजनगतिगोपिनकीपैहै

छं॰ यह ब्रजविलासहुलाससोनरनारिसुनहिंजेगावहीं ॥
सीखैसिखावैपढैरुचिकरिप्रेम मन उपजावहीं ॥ १ ॥
धरिभाव भरताकृष्णसोंउरकमलपदनिकलाइहैं
हरिराधिकाप्रसादतेब्रजगोपिका गति पाइ हैं ॥
पूरण सकलमनकामसव सुखधामयश्नंदलालको
दलनदारिद दोषदुषभवभय हरणयककालको ॥
यहजानगावहिं सुजनगायौं जिन्हेंआनंदपदलह्यौ
तिनकोंकृपावलपायकछु इकदासब्रजवासीकह्यौ

दो॰ ब्रजविलासब्रजराजकौकोकहि पावैपार ॥
भक्तिभावगावतभगतभजनप्रभावविचार
सिगरे दोहा आठसौ और न वासी आहि ॥
और इतनेसोरटा ब्रज विलास के माहि
दस सहस्र छहसोंअधिक चोपाई विस्तार
छंद एकशत खटअधिकमधुर मनोहरचार
सबको नृष्टुपछंद शर दशसहस्र परमान
खंडित होननपावई लिखियोजानसुजान
विधिनिषधजानेनकछुजनब्रजवासीदास
ज्योंजानैत्योंराखिहैनंद नंदन को आस ॥
नहिनपतीरथदानवलनहींकर्मव्योहार
ब्रजवासीकेदासको ब्रजवासी आधार ॥
ब्रजवासीगाऊसदाजन्मजन्मकरि नेह ॥
मेरेजपतपव्रतइहै फल दीजे पुनि एह ॥

इतिश्रीब्रजविलासेसवसुखरासेभक्तिप्रकाशेब्रजवासीदासे

अथसूचीपत्रव्रजविलासकालिख्यते

सूचीपत्र